वार्षिक रिपोर्ट

1986-87

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

आभार-ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन०सी०ई०आर०टी०) अपने अध्यक्ष, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री के प्रति उनके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन के लिए ऋणी है। परिषद् के कार्यों में अभिरुचि दिखाने और सहायता करने के लिए शासी निकाय के विशिष्ट सदस्यों के प्रति परिषद् आभारी है। परिषद् उन विशेषज्ञों को धन्यवाद देती है जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर परिषद् की विभिन्न समितियों की बैठकों में भाग लिया और अनेक निधियों से सहायता ली। राज्य शिक्षा विभागों और राज्य परिषदों/शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थानों/राज्य शिक्षा संस्थानों सहित सभी संगठन और संस्थाएँ धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के साथ सहयोग किया और कार्यकलापों को पूरा करने में पूरी सहायता दी। प्रायोजित कार्यक्रमों के कार्यान्वियन में यूनेस्को, यूनीसेफ, यू०एन०एफ०पी०ए०, जी०टी० जेड्० और ब्रिटिश काउन्सिल द्वारा दी गई सहायता के लिए परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है। परिषद् अपने स्टाफ के सभी सदस्यों द्वारा किए गए कार्य की भी प्रशंसा करती है, जिनके सहयोग और निष्ठा के बिना परिषद् के कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करना संभव नहीं हो सकता था। परिषद् उन हज़ारों अध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और जनता के सदस्यों के प्रति आभारी है जिन्होंने 1986–87 वर्ष के प्रकाशनों और कार्यक्रमों पर अपने विचार से अवगत कराने के लिए परिषद् के विभिन्न घटकों को अनेक पत्र भेजे, जोकि उत्तम कार्यान्वियन के लिए सदा ही प्रेरणास्रोत बने रहे।

विषय-सूची

परिशिष्ट

1986-87

अध्याय 1

राष्ट्रीय शैक्षि
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिष
भूमिका और संरचन

1 सितम्बर, 1961 को स्थापित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन०सी०ई०आर०टी०) संस्था पंजीकरण अधिनियम (1860) के तहत एक स्वायत्त संगठन है।

भूमिका और प्रकार्य

परिषद् मानव संसाधन विकास मंत्रालय के एक अकादमिक सलाहकार के रूप में कार्य करती है। स्कूली शिक्षा में अपनी नीतियों व कार्यक्रमों को प्रतिपादित एवं कार्यान्वित करने **के लिए मंत्रालय ज्यादातर परिषद् की विशेषज्ञता पर निर्भर रहता है।** परिषद् का सारा वित्तीय भार सरकार ही वहन करती है।

संस्था के ज्ञापन-पत्र के अनुसार परिषद् के लक्ष्य मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा) को शिक्षा-क्षेत्र में और विशेष रूप से स्कूली शिक्षा संबंधी नीतियों एवं मुख्य कार्यक्रमों को लागू करने में सहायता तथा सलाह प्रदान करना है।

कार्यक्रम और कार्यकलाप

उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए परिषद् निम्नलिखित कार्यक्रमों और कार्यकलापों को लागू करती है:

- स्कूली शिक्षा की सभी शाखाओं से संबद्ध अनुसंधान कार्य में सहायता पहुँचाती है, उसे प्रोन्नत करती है और उसे समन्वित करती है,
- मुख्यतः ऊँची कक्षाओं के अध्यापकों का सेवा-पूर्व और सेवारत प्रशिक्षण आयोजित करती है,
- शैक्षिक पुनर्निर्माण में संलग्न संस्थाओं, संगठनों और अभिकरणों के लिए विस्तार सेवाएँ व्यवस्थित करती है,
- परिष्कृत शैक्षिक प्रविधियों, अभ्यासों और नवोत्पादों की सहायता से विकास व प्रयोग कार्य करती है,
- शैक्षिक सूचना को एकत्रित, संकलित, संसाधित तथा प्रसारित करती है,
- स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए राज्यों और राज्यस्तर की संस्थाओं, संगठनों और अभिकरणों को कार्यक्रम विकसित एवं कार्यान्वि करने के लिए सहायता प्रदान करती है,
- **यूनेस्को, यूनीसेफ,** जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा अन्य देशों की राष्ट्रीय स्तर शैक्षिक संस्थाओं से सहयोग स्थापित करती है,
- दूसरे देशों के शैक्षिक कार्मिकों को प्रशिक्षण व अध्ययन की सुविधाएँ प्रद करती है, और
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.), एशिया का राष्ट्रीय विक समूह (एन.डी.जी.) और विकास का प्रशांत शैक्षिक नवीन प्रक्रिया कार्य **(ए.पी.ई.आई.डी.), बैंकांक के अकादमी सचिवालय के रूप में काम करती है**

अनुसंधान कार्य

स्कूली शिक्षा की एक शीर्ष राष्ट्रीय संस्था होने के नाते परिषद् अनेक महत्वपूर्ण क करती है, जैसे शैक्षिक अनुसंधान आदि में कर्मचारी-वर्ग को प्रशिक्षित करने के लि **अनुसंधान कार्य को व्यवस्थित करना है। इसके लिए परिषद् की शैक्षिक अनुसंधान अ नवीन प्रक्रिया समिति (ई.आर.आई.सी.) राज्यों की अन्य अनुसंधान संस्थाओं अ** स्कालरों के लिए अनुसंधान क्षेत्र का पता लगाने में सहायता करती है और वित्तीय सहाय देती है।

विकास

स्कूली शिक्षा में विकास क्रियाकलापों का परिषद् के कार्यों में एक महत्वपूर्ण स्थ है। परिषद् को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई.) और कार्यान्वयन कार्य (पी.ओ.ए.), 1986 का कार्य भी सौंपा गया है। इनमें उल्लेखनीय है स्कूली शिक्षा विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रमों व अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा उनसे संबंधित सम और बच्चों की बदलती तथा बढ़ती हुई आवश्यकताएँ। शिक्षा व्यवसायीकरण अ अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रमों व अनुदेशी सामग्रियों का विकास परिषद् नवोत्पादी विकासात्मक कार्यकलापों के रूप में समाविष्ट हैं। दूसरे महत्वपूर्ण क्रियाकल जो इसके अधिकार-क्षेत्र में हैं, वे हैं शैक्षिक प्रौद्योगिकी और जनसंख्या शिक्षा।

1986-87

प्रशिक्षण

विभिन्न स्तरों जैसे प्राथमिक-पूर्व, प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर और ऐसे क्षेत्रों में जैसे व्यावसायिक शिक्षा, मार्गदर्शन और विशिष्ट शिक्षा में सेवा-पूर्व और सेवारत अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करना भी परिषद् के कुछ महत्वपूर्ण क्रियाकलाप हैं। क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के कार्यक्रमों में कुछ नवोत्पादी विशिष्ट विशेषताएं सम्मिलित की गई हैं, जैसे विषयवस्तु का एकीकरण और शिक्षण-क्रियाविधि, वास्तविक क्लास-रूम सेटिंग में अध्यापक-प्रशिक्षणार्थियों की दीर्घकालिक स्थानबद्धता तथा समुदाय कार्य में विद्यार्थियों की दीर्घकालिक स्थानबद्धता तथा समुदाय कार्य में विद्यार्थियों व संकायों की सहभागिता। राज्यों तथा राज्यस्तर संस्थाओं के मौलिक कर्मचारी-वर्ग के प्रशिक्षण पर भी बल दिया जाता है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के अकादमी सचिवालय के रूप में परिषद् के कार्यों में विभिन्न स्तरों पर अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यविवरणों व अनुवर्ती शिक्षा का संशोधन करना शामिल है।

अप्रशिक्षित अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए प्रारंभिक और माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए ग्रीष्मकालीन विद्यालय एवं पत्राचार पाठ्यक्रम लागू किए गए हैं।

विस्तार

परिषद् के शिक्षा संबंधी अनेक विस्तार-कार्यक्रम हैं, जिन्हें लागू करने एन.आई.ई. के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और राज्यों के क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालय कई तरीकों से कार्यरत हैं। परिषद् राज्यों के विभिन्न अभिकरणों एवं संस्थाओं के साथ सीधे कार्य करती है और विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारी-वर्गों, जैसे अध्यापकों, निरीक्षकों, प्रशासकों, प्रश्न-पत्र बनाने वाले पाठ्यपुस्तक लेखकों आदि को सहायता प्रदान करने हेतु विस्तार सेवा-विभागों और स्कूलों व कालेजों के अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ विस्तारपूर्वक कार्य करती है। सम्मेलन, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं नियमित रूप से चलने वाले **कार्यक्रमों** की भाँति आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों को ग्रामीण और पिछड़े हुए इलाकों में करने के लिए भी विशेष ध्यान दिया जाता है ताकि इन कार्यक्रमों से सम्बद्ध कार्यकर्ता वहाँ की विशिष्ट समस्याओं को जांच सकें और आवश्यक उपायों का पता लगा सकें। विकलांगों तथा समाज के कमजोर वर्गों के बच्चों की शिक्षा के लिए परिषद् के पास विशेष कार्यक्रम हैं। परिषद् के विस्तार कार्यक्रम देश के सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में लागू किए जाते हैं।

प्रकाशन तथा प्रसार

परिषद् स्कूली शिक्षा की सभी विषयों की पुस्तकें प्रकाशित करती है। इनमें कक्षा 1 से 12 तक के विभिन्न स्कूली विषयों और अध्यापक शिक्षा की पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तकें, अध्यापक मार्गदर्शिकाएं, संपूरक पाठमालाएं, अनुसंधान रिपोर्टें इत्यादि शामिल हैं। अनुसंधान और विकास कार्य के बाद तैयार की गई अनुदेशी सामग्रियाँ राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के विभिन्न अभिकरणों के लिए आदर्श सामग्री का कार्य करती हैं जिन्हें अपनाने व रूपांतरण हेतु उपलब्ध कराई जाती हैं। पाठ्यपुस्तकें अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में प्रकाशित की जाती हैं।

शैक्षिक सूचना के प्रसार हेतु परिषद् पाँच पत्रिकाएँ प्रकाशित करती है: (1) प्राइमरी टीचर (अंग्रेजी और हिंदी में) का लक्ष्य है कक्षा में सीधे प्रयोग के लिए प्राथमिक स्कूल अध्यापकों को अर्थपूर्ण और प्रासंगिक सामग्री प्रदान करना, (2) स्कूल साइंस विज्ञान-शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हेतु एक खुला मंच प्रदान करती है, (3) दि जरनल ऑफ इंडियन एजूकेशन चर्चा द्वारा वर्तमान शैक्षिक समस्याओं पर मौलिक और समीक्षात्मक सोच-विचार के लिए मंच प्रदान करता है, (4) दि इंडियन एजूकेशनल रिव्यू में अनुसंधान लेख होते हैं और यह अनुसंधान कार्यकर्ताओं के लिए मंच प्रदान करता है और (5) आधुनिक भारतीय शिक्षा (हिंदी में प्रकाशित) समकालीन समस्याओं पर शिक्षा विषयक समीक्षात्मक सोच-विचार को प्रोत्साहन देने के लिए मंच प्रदान करती है तथा शैक्षिक समस्याओं एवं अभ्यासों के लिए विचारों को प्रसारित करती है।

एन.सी.ई.आर.टी. न्यूज लैटर नाम की एक कार्यालय पत्रिका भी हर मास प्रकाशित की जाती है। इसके अलावा, प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अपनी-अपनी पत्रिका प्रकाशित करता है।

पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों और दूसरी सामग्रियों का मूल्यांकन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया के आधार पर किया जाता है। मूल्यांकन की क्रियाविधियों, साधनों व प्रविधियों को विकसित किया गया है। पाठ्यपुस्तकों की रूपरेखा और विषय-वस्तु के मूल्यांकन के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को प्रतिपादित किया गया है। पाठ्यपुस्तकों के संशोधन में स्कूलों से सहायता मिलती रहती है।

प्रतिभाशाली छात्रों की पहचान और सहायता

प्रति वर्ष परिषद् 750 प्रतिभा छात्रवृत्तियां प्रदान करने के लिए (जिनमें 70 अनुसूचित जातियों/जनजातियों के लिए हैं) भारतीय संविधान के तहत मान्यता प्राप्त सभी भाषाओं में परीक्षा आयोजित करती है। दसवीं कक्षा की परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थी, इस छात्रवृत्ति की परीक्षा में भाग ले सकते हैं। यह छात्रवृत्ति विज्ञान, गणित और समाजविज्ञान में पी-एच.डी. तक या फिर इंजीनियरी और आयुर्विज्ञान जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम तक जारी रह सकती है।

विनिमय कार्यक्रम

शिक्षा के गुणात्मक सुधार के अपने प्रयासों में परिषद् अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों जैसे

1986-87

यूनेस्को, यू.एन.डी.पी. और यू.एन.एफ.पी.ए. से सहायता प्राप्त करती है। इन अभिकरणों के अनुरोध पर परिषद् अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, परिसंवादों आदि में भाग लेने के लिए अपने संकाय सदस्यों को नामित करती है। विदेशी राष्ट्रों के लिए भी परिषद् प्रशिक्षण का प्रबंध करती है।

शैक्षिक नवोत्पाद और विकास संबंधी एशियाई केन्द्र के राष्ट्रीय विकास समूह (ए.सी.ई.आई.डी.) के लिए परिषद् सचिवालय का कार्य करती है। भारत सरकार द्वारा देशों के साथ हस्ताक्षरित किये जाने वाले द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के जहाँ तक स्कूली शिक्षा के प्रावधानों का संबंध है, उन्हें कार्यान्वित करने के लिए परिषद् एक मुख्य अभिकरण के रूप में कार्य करती है। परिषद् दूसरे देशों के साथ शैक्षिक सामग्रियों का विनिमय करती है।

संरचना और प्रशासन

साधारण निकाय परिषद् की नीति-निर्माण निकाय है। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष हैं और सभी राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री इसके सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, शिक्षा मंत्रालय के सचिव, विश्वविद्यालयों (प्रत्येक क्षेत्र से एक-एक) के चार कुलपति, कार्यकारी समिति के सभी सदस्य (जो ऊपर सम्मिलित नहीं हैं) और ऐसे व्यक्ति (बारह से अधिक नहीं) जिन्हें अध्यक्ष समय-समय पर नामित (इनमें कम-से-कम दो स्कूल अध्यापक होने चाहिए) करें, इसके सदस्य होते हैं।

परिषद् की मुख्य साधारण निकाय है कार्यकारिणी समिति, जिसके अध्यक्ष केन्द्रीय शिक्षा मंत्री (पदेन) हैं और जिसके सदस्य शिक्षा मंत्रालय के राज्यमंत्री (पदेन उपाध्यक्ष के रूप में), शिक्षा मंत्रालय के उपमंत्री, शिक्षा मंत्रालय के सचिव, परिषद् के निदेशक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, स्कूली शिक्षा में रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद् (जिनमें से दो स्कूल अध्यापक होंगे), परिषद् के संयुक्त निदेशक, परिषद्-संकाय के तीन सदस्य (जिनमें से कम-से-कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्षों के स्तर के होंगे) और वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जोकि परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा) होते हैं।

कार्यकारी समिति के कार्य में सहायता देने के लिए निम्नलिखित स्थायी समितियां हैं:

1- कार्यक्रम सलाहकार समिति
2- वित्तसमिति
3- स्थापना समिति
4- भवन और निर्माण समिति
5- शैक्षिक अनुसंधान और नवोत्पाद समिति
6- क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों की प्रबंध समितियाँ।

परिषद् के मुख्यालय के अंतर्गत निम्नलिखित आते हैं:

1- परिषद् का सचिवालय और
2- लेखा शाखा।

चार वरिष्ठ पदाधिकारी जो सरकार द्वारा नियुक्त किये जाते हैं, वे हैं निदेशक, संयुक्त निदेशक, संयुक्त निदेशक, (सी.आई.ई.टी.) और सचिव, आलोच्य वर्ष [illegible] निम्नलिखित अधिकारियों ने ये पद संभाले:

1- डा० पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक
2- डा० ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक
3- डा० एम.एम. चौधरी, संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी.)
4- श्री एच.के.एल. चुघ, सचिव 19-2-86 से 5-10-86 तक
5- श्री ओ.पी. केलकर, आई.ए.एस., सचिव 6-10-86 से।

अकादमी कार्यों में निदेशक के सहायतार्थ तीन डीन हैं:

नाम और पद	दायित्व
प्रो.पी.एन. दवे डीन (अकादमी)	एन.आई.ई. के विभागों में अकादमी कार्यों का समन्वयन।
प्रो. आत्मानन्द शर्मा डीन (अनुसंधान)	अनुसंधान कार्यक्रमों का समन्वयन और शैक्षिक अनुसंधान नवोत्पाद समिति के कार्य की देखभाल करना।
प्रो. बाकर मेहदी, डीन (समन्वयन)	सेवा/उत्पादन विभागों, क्षेत्र कार्यालयों और क्षेत्रीय शिक्षा काले[illegible] के कार्यकलापों का समन्वयन।

वर्ष 1985-86 में परिषद् के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यरत थे:

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.)
केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)
क्षेत्रीय कालेज (4)
क्षेत्र एकक (17)।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

मई 1984 में एन.आई.ई. के विभाग/एकक पुनर्व्यवस्थित किये गये। 1986-[illegible] के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली के निम्नलिखित विभाग/एकक थे जिन[illegible] संबंध अपने-अपने क्षेत्रों के अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार, मूल्यांकन और प्र[illegible] से था:

1- सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.

2- क्षेत्र सेवाएं और समन्वयन विभाग (डी.एफ.एस.सी.)
3- अध्यापक शिक्षा एवं विशेष शिक्षा और प्रसार सेवा विभाग (डी.टी.ई.एस.ई.ई. एस.)
4- विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)
5- शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग (डी.ई.पी.सी.एंड जी)
6- विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
7- मापन मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग (डी.एम.ई.एस. एंड डी.पी.)
8- शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.)
9- नीति, अनुसंधान, नियोजन और प्रोग्रामन विभाग (डी.पी.आर.पी.पी.)
10- प्रकाशन विभाग (पी.डी.)
11- कार्यशाला विभाग (डब्ल्यू.डी.)
12- पुस्तकालय प्रलेखन व सूचना विभाग (डी.एल.डी.आई.)
13- पत्रिका सेल (जे.सी.)
14- अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक (आई.आर.यू.)
15- योजना समन्वयन एवं मूल्यांकन एकक (पी.सी.ई.यू.)।

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) की स्थापना 1984 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्कालीन शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र और शिक्षण सहायक सामग्री विभाग को एक-दूसरे में मिलाकर की गई थी,ताकि देश में शिक्षा के सुधार व विस्तार के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी को बढ़ाया जा सके।

सी.आई.ई.टी. एक स्वायत्त संस्था के रूप में परिषद् का एक अंग है जिसका विभागाध्यक्ष संयुक्त निदेशक होता है। अपने कार्यक्रमों व कार्यकलापों के बारे में संस्थान के मार्गदर्शन के लिए एक सलाहकार परिषद् है।

सी.आई .ई.टी. के निम्न प्रमुख प्रभाग हैं:

1- शैक्षिक प्रौद्योगिकी व प्रशिक्षण प्रभाग, टी.वी. प्रभाग, और सुदूर शिक्षा विभाग (ई.टी.टी.डी.).
2- अनुसंधान, शिक्षा और समन्वयन प्रभाग (आर.ई.सी.डी.)
3- तकनीकी नियोजन, संचालन और रखरखाव प्रभाग (टी.पी.ओ.एम.डी.)
4- आलेखिकी, प्रदर्शनी और मुद्रण प्रभाग (जी.ई.पी.डी.)
5- पुरालेख, सूचना व प्रलेखन प्रभाग (ए.आई.डी.डी.)
6- फिल्म और फोटो प्रभाग (एफ.पी.डी.)
7- श्रव्य-रेडियो प्रभाग (ए.आर.डी.)।

क्षेत्रीय कालेज और क्षेत्र एकक

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित हैं। इन कालेजों में निम्न पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते हैं:-

बी.ए. (ऑनर्स) (पास) बी.एड.
बी.एस.सी. (ऑनर्स) बी.एड.
बी.एड. आर्टस (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
बी.एड. साइंस (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
बी.एड. (कृषि/वाणिज्य/समाजविज्ञान)
बी.एड. (अंग्रेजी/हिंदी/उर्दू)
बी.एड. (ग्रीष्म स्कूल व पत्राचार पाठ्यक्रम)
एम.एड. (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
एम.एस-सी.एड. (भौतिकी/रसायन/गणित/जीवविज्ञान)
पी-एच.डी. (शिक्षा)।

जबकि अजमेर का कालेज केवल चार-वर्षीय बी.एस-सी.बी.एड. पाठ्यक्रम प्रदान करता है। भुवनेश्वर और मैसूर के कालेज एम.एस-सी.एड. कार्यक्रम प्रदान करते हैं। प्रथम जीवविज्ञान में और दूसरा भौतिकी, रसायन और गणित में। चारों कालेजों में पी-एच.डी. कार्यक्रमों तथा साथ ही एक-वर्षीय बी.एड. और एम.एड. पाठ्यक्रमों का प्रावधान है।

ये कालेज आवासीय संस्थाएं हैं और उनमें प्रयोगशाला, पुस्तकालय और दूसरी सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था है। प्रत्येक कालेज के साथ एक निर्देशन बहुद्देश्य स्कूल सम्बद्ध है जहाँ विकास क्रियाविधियों को वास्तविक कक्षा स्थितियों में परीक्षित किया जाता है। राज्य शिक्षा प्राधिकारियों तथा राज्यस्तर संस्थाओं, जिन्हें शिक्षा प्रणाली में अकादमिक और प्रशिक्षण निवेश प्रदान करने हेतु स्थापित किया गया है, के साथ प्रभावी तालमेल रखने के लिए निम्नलिखित स्थानों पर 17 क्षेत्र कार्यालय स्थापित किये गये है:

अहमदाबाद	इलाहाबाद	बंगलौर
भोपाल	भुवनेश्वर	कलकत्ता
चण्डीगढ़	गुवाहाटी	हैदराबाद
जयपुर	मद्रास	पटना
पुणे	शिलांग	शिमला
श्रीनगर	त्रिवेन्द्रम	

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) की संरचना
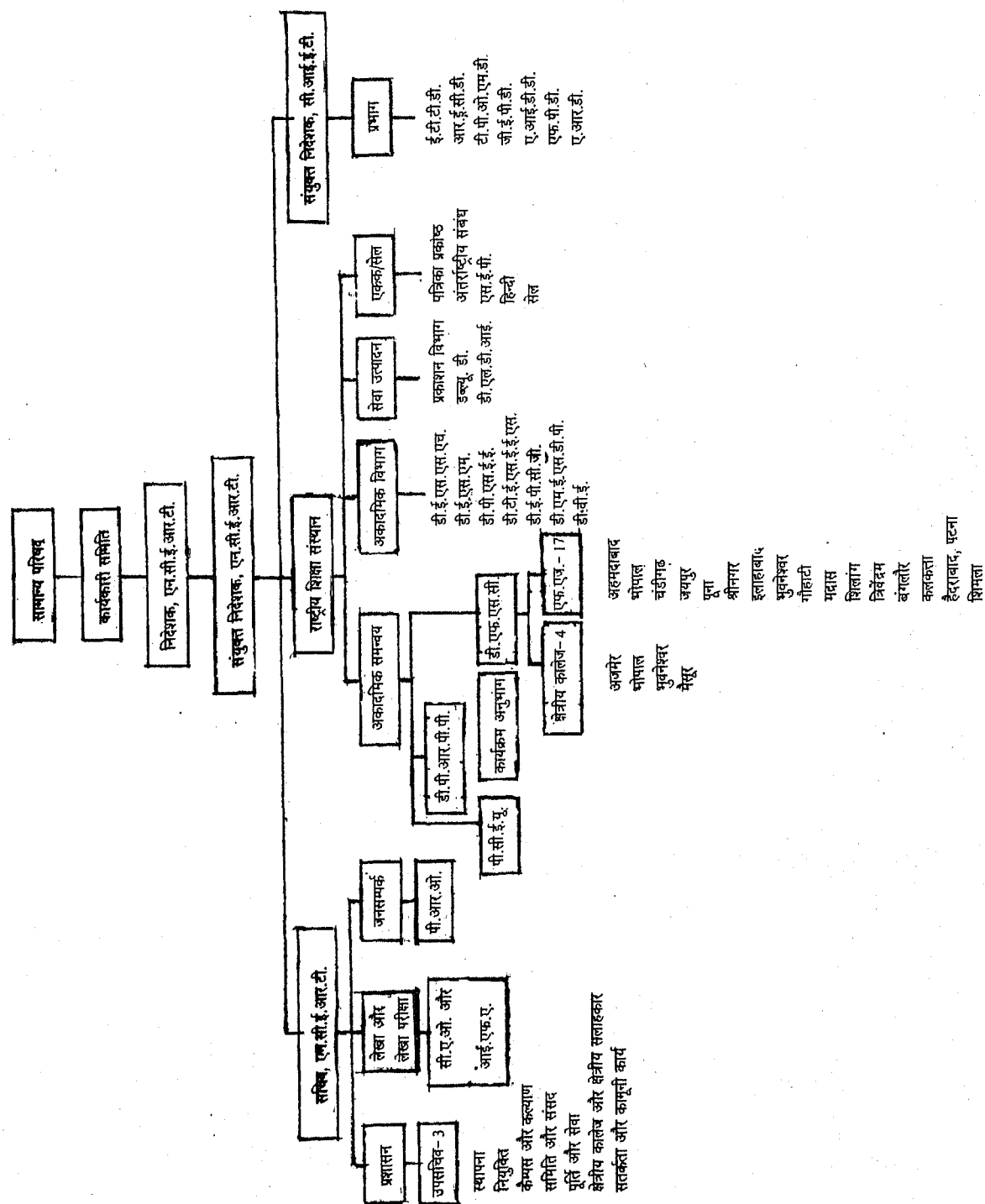
अध्याय 2

1986-87 वर्ष के कार्यकलापों पर एक विहंगम दृष्टि

आलोच्य वर्ष में 1986 की नई शिक्षा नीति एवं भारतीय संसद द्वारा अनुमोदित कार्यान्वियन कार्यक्रम को बनाने तथा उन्हें लागू करने से संबद्ध कार्यकलापों को करने में परिषद् की मुख्य भूमिका रही है। देश में स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के स्तर में सुधार लाने में परिषद् लगातार प्रयास करती रही है। 1986-87 के दौरान परिषद् के कुछ मुख्य कार्यकलाप, पाठ्यचर्या के विकास के लिए मार्ग निर्देशिका विकसित करना, विभिन्न विषयों में पाठ्यचर्या के विकास के साथ-साथ अनुदेशी और निदर्शनी सामग्री का विकास करना, औपचारिक तथा गैर-औपचारिक कार्यक्रमों के लिए प्रशिक्षण पैकेज तैयार करना, प्रारंभिक शिशु-शिक्षा-विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण के संदर्भ में कार्यक्रम विकसित करना, शिक्षा का व्यावसायीकरण, मूल्यांकन तकनीक में सुधार लाना, राष्ट्रीय एकता से संबद्ध विचारों को बढ़ावा देना, अध्यापक और अध्यापक-शिक्षकों की व्यावसायिक सामर्थ्य को बढ़ाना और शैक्षिक-प्रौद्योगिकी का उपयोग करना था। विभिन्न राज्यों/संघशासित प्रदेशों में लागू की जा रही शिक्षा के क्षेत्र में यूनीसेफ से सहायता प्राप्त परियोजनाओं, इण्डो-एफ.आर.जी. परियोजना, राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना और कम्प्यूटर साक्षरता तथा विद्यालय अध्ययन (क्लास) परियोजना को तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने के लिए परिषद् एक केन्द्रीय समन्वयकारी एजेन्सी की भूमिका भी निभाती रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और पाठ एवं अन्य अनुदेशी सामग्री का विकास

(क) पाठ्यचर्या का विकास

परिषद् ने 1986 के शुरू में 'प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा' नाम का एक प्रलेख प्रकाशित किया था। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचे को विकसित करने की आवश्यकता की अभिव्यक्ति राष्ट्रीय शिक्षा नीति और कार्यान्वियन कार्यक्रम 1986 में की गई जिससे कि उच्चतर माध्यमिक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा के पाठ्यचर्या पुनर्जनन विकास के चक्र को पूरा किया जा सके। इस ढाँचे से संबद्ध एक अन्य कार्य पाठ्यचर्या का विकास करना था। परिषद् ने पाठ्यचर्या के विकास के लिए मार्गनिर्देशिका विकसित की और उन भाषाओं के क्षेत्रों में ब्यौरेवार पाठ्यचर्या विकसित की जिनके अंतर्गत मातृभाषा के रूप में हिंदी (प्राथमिक), मातृभाषा के रूप में हिंदी (उच्च प्राथमिक और माध्यमिक), दूसरी भाषा के रूप में हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और अर्थशास्त्र सहित समाज विज्ञान, कला, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा आती है। + 2 स्तर के लिए भी इतिहास, राजनीति विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र और समाज विज्ञान की पाठ्यचर्या विकसित की गई।

(ख) पाठ्यपुस्तक और अनुदेशी सामग्री तैयार करना

1986-87 के दौरान विभिन्न स्तरों की स्कूली शिक्षा में विद्यालयों और अध्यापकों के प्रयोग के लिए पाठ्यपुस्तक, संपूरक रीडर और अन्य अनुदेशी सामग्री तैयार करना परिषद् का एक महत्वपूर्ण कार्यकलाप रहा है। इनमें से कुछ का विकास केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) के सहयोग से किया गया। विकसित पाठ्यचर्या ढाँचा और नई शिक्षा नीति को ध्यान में रखकर परिषद् ने उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, और उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए समेकित विज्ञान, भौतिकी, रसायन, जैविकी और गणित में नई पाठ्यचर्या और छठी कक्षा के लिए विज्ञान और गणित की नई पाठ्यपुस्तकें विकसित कीं। इनके अतिरिक्त विज्ञान में अध्यापक निर्देशिका और गणित में प्रश्न-पुस्तक भी विकसित किए गए। विकसित की गई अन्य महत्वपूर्ण पाठ-सामग्री के अंतर्गत तीसरी कक्षा के लिए अंग्रेजी और हिन्दी में पर्यावरण अध्ययन भाग-1, छठी कक्षा के लिए इतिहास, नागरिक शास्त्र और भूगोल की पाठ्य-पुस्तकें, और किशोर भारती भाग-1, बारहवीं कक्षा के लिए इंडियन सोसायटी, बारहवीं कक्षा के लिए नेशनल इनकम एकाउन्टेन्सी, बारहवीं कक्षा के लिए ऐन इन्ट्रोडक्शन टू इकोनामिक थ्योरी, छठी कक्षा के लिए संस्कृत और उर्दू की पाठ्यपुस्तकें आती हैं। इस वर्ष परिषद् ने विज्ञान और गणित में अनुदेशी सामग्री विकसित करने के लिए प्रधानमंत्री की विज्ञान सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो० सी.एन.आर. राव की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया। प्रो० सी.एन.आर. राव ने समेकित विज्ञान (8-10), गणित (4-12), भौतिकी (9-12), रसायन (11-12), और जैविकी (11-12) में पाँच उपसमितियों का और गठन किया। ये समितियाँ अपने निर्धारित कार्यों को करने में लगी हुई हैं।

विद्यालय अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय एकता को बढ़ाना, मूल्य शिक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण अध्ययन (प्राथमिक), अंग्रेजी का अध्यापन और अधिगम (प्राथमिक), प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा शिक्षण, जनसंख्या शिक्षा (माध्यमिक), सामाजिक विज्ञान का अध्यापन (माध्यमिक), और द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के

1986-87

शिक्षण पर 12 माड्यूल विकसित किए गए। आलोच्य वर्ष में परिषद् ने कार्यान्वियन कार्यक्रम 1986 के निर्देशों के अनुसार 11 मूल पाठ्यचर्या क्षेत्रों में निदर्शनी सामग्री विकसित कीं। आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित ग्यारह अनुदेशी पैकेज विकसित किए गए: (1) ब्यूटीफुल थिंग्स एराउंड अस, (2) आॅवर स्ट्रगल फाॅर फ्रीडम, (3) रेस्पेक्टिंग आॅवर नेशनल सिम्बल्स, (4) सेलिब्रेटिंग आॅवर नेशनल फेस्टिवल्स, (5) अंडरस्टेंडिंग आॅवर नेशनल गोल्स, (6) नैचुरल रिसोर्सेज एण्ड देयर कंजर्वेशन, (7) सेविंग द एनवायरनमेण्ट फ्राॅम पाॅलुशन, (8) विमन्स रोल इन इंडियन स्ट्रगल फाॅर इन्डिपेन्डेन्स, (9) रिमूवल आॅफ सेक्सिस्ट वायस, (10) वैल्यू बिलीफस एण्ड फेमिली और (11) मैरेज एण्ड फेमिली।

इसके अतिरिक्त कार्यान्वियन कार्यक्रम (पी.ओ.ए.) 1986 के अनुसार परिषद् ने शारीरिक शिक्षा की साधन पुस्तक का एक प्रायोगिक संस्करण विकसित किया। आलोच्य वर्ष में 'सीखने के लिए पढ़ना' परियोजना के अंतर्गत बच्चों के लिए पठन-सामग्री तैयार करने का काम जारी रखा गया।

(ग) 1987–88 के विद्यालय सत्र के लिए नई पाठ्य-पुस्तकें

नई शिक्षा नीति के निर्देशों के अनुसार परिषद् ने पहली से बारहवीं कक्षा तक के लिए नई पाठ्य पुस्तकें विकसित करने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ली है। अपने कार्यक्रम के प्रथम चरण में परिषद् ने 1987–88 के शैक्षिक सत्र की पहली, तीसरी छठी कक्षाओं के लिए पाठ्य पुस्तक/अभ्यास पुस्तक/अध्यापक दीपिका विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया। पहली बार परिषद् ने पहली और तीसरी कक्षाओं के लिए हिन्दी भाषा में विकल्प पाठ्यपुस्तकें और तीसरी कक्षा के लिए सामाजिक विज्ञान की एक निदर्श पाठ्य पुस्तक प्रकाशित करने का निर्णय लिया था। लगभग 45 नई पुस्तकें निर्माणाधीन हैं जिममें से 6 पुस्तकें आलोच्य वर्ष में प्रकाशित की गईं।

प्रारंभिक शैशव शिक्षा

यूनीसेफ से सहायता प्राप्त परियोजनाओं, प्रारंभिक शैशव शिक्षा (ई.सी.ई.) और बाल माध्यम प्रयोगशाला (सी.एम.एल.) के अंतर्गत प्रारंभिक शैशव शिक्षा के लिए अनुदेशी सामग्री तैयार करने और इस शिक्षा में लगे अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों और पर्यवेक्षी कार्मिकों के प्रयोग के लिए प्रशिक्षण पैकेज तैयार करने से संबंधित अनेक कार्य किए गए। उड़ीसा के जनजातीय और नगरी क्षेत्रों में बाल-विकास में गृह कार्यक्रमों पर अध्ययन किया जा रहा है। नगर निगम, दिल्ली के 32 प्राथमिक विद्यालयों में 'बाल-कार्यक्रम' पर एक और अध्ययन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अध्यापक शिक्षण की नवीन प्रक्रियात्मक विधियाँ विकसित की गई हैं, स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण के क्षेत्र में 14 कार्यकारी शीट तथा प्रभावशाली अनुदेशी सामग्री विकसित की गई हैं और कार्यान्वियन, मानिटरन, पर्यवेक्षण तथा शिक्षा के लिए तर्कसंगत युक्तियाँ विकसित की गई हैं। परिषद् ने क्षेत्रीय भाषाओं में सचित्र पुस्तकें, श्रव्य, दृश्य कार्यक्रमों तथा अन्य प्रासंगिक अनुदेशी सामग्री विकसित करने का कार्य जारी रखे हुए है। बाल माध्यम प्रयोगशाला (सी.एम.एल.) के अंतर्गत हिन्दी और असमिया में 20 और श्रव्य स्क्रिप्ट तैयार किए गए और हिंदी के श्रव्य कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार का काम शुरू किया गया। इसके अतिरिक्त परिषद् नें मुख्य-मुख्य व्यक्तियों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया और अध्यापकों के लिए एक राष्ट्रीय खिलौना-निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए सीखने-पढ़ने की उपयुक्त सामग्री तैयार करना, 1986–87 के दौरान परिषद् का एक महत्वपूर्ण कार्यकलाप बना रहा। परिषद् ने प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित और भाषा पर आठ पुस्तकें प्रकाशित कीं। परिषद् के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत 13 राज्यों और संघशासित प्रदेशों के 200 विशेषज्ञों को सीखने-पढ़ने के प्रति समेकित दृष्टिकोण पर प्रशिक्षित किया गया और राज्यों के 165 अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में लगे व्यक्तियों और स्वैच्छिक संगठनों के साधन व्यक्तियों को परिषद् द्वारा आयोजित पाँच अभिविन्यास कार्यक्रमों के माध्यम से अभिविन्यस्त किया गया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति और कार्यान्वियन कार्यक्रम 1986 की दृष्टि से अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों को लागू करने से संबद्ध युक्तियों पर चर्चा करने के लिए राज्य के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के प्रभारी अधिकारियों और स्वैच्छिक एजेन्सियों के प्रतिनिधियों का एक दो-दिन का वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया।

परिषद् ने 17 राज्यों और एक संघशासित प्रदेश में यूनीसेफ से सहायता प्राप्त परियोजना प्राथमिक शिक्षा में व्यापक अधिगम (केप) लागू करने का काम जारी रखे हुए है। इस परियोजना के अंतर्गत साक्षरता संख्यांकता में सामग्री के विकास पर और पर्यावरण अध्ययनों पर आधारित समस्या/स्थिति से संबद्ध 30 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके अतिरिक्त परिषद् ने अधिगम घटनाओं पर आधारित परीक्षण मदों के विकसित करने की कार्यविधि पर एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का और प्रशिक्षण सुविधा की कार्यविधि पर आर.डी.आर.सी. दल के सदस्यों के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया। परिषद् ने आंध्र प्रदेश, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, मध्य प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, राजस्थान और उत्तर प्रदेश से संबद्ध साक्षरता, सांख्यिकता और पर्यावरण अध्ययन में अधिगम घटनाओं के विकास में भी सहायता प्रदान की। इस परियोजना के अंतर्गत विकसित की गई अधिगम सामग्री स्वैच्छिक संगठनों को भी उपलब्ध करायी जा रही है। इसी प्रकार 19 राज्यों और एक संघशासित प्रदेश में स्थापित केन्द्रों के माध्यम से एक अन्य यूनीसेफ से सहायता प्राप्त परियोजना सामुदायिक शिक्षा में विकासी कार्यकलाप और भाग लेना (डी.ए.सी.ई.जी.) लागू की गई। 57 केन्द्रों में इस परियोजना के अंतर्गत कार्य करने वालों की संख्या 6276 थी। इसके अतिरिक्त भाग लेने वाले 14 राज्यों के लिए अभिविन्यास इन्टर्नशिप प्रशिक्षण और कार्यशाला आदि के 70 कार्यक्रम आयोजित किए गए और 40 पुस्तकें प्रकाशित की गईं।

विद्यालयों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का अध्यापन

आलोच्य वर्ष में परिषद् ने विद्यालयों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अध्यापन के लिए शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गठित किए गए कार्यकारी दल की रिपोर्ट प्रकाशित की।

मन, मस्तिष्क और चेतना पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

परिषद् ने मन, मस्तिष्क और चेतना पर एक तीन दिन की राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जिसमें एन.आई.एम.एच.एन.एस., बंगलौर, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली, कृष्णामूर्ति फाउण्डेशन इंडिया, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के वैज्ञानिकों और विद्वानों तथा परिषद् के संकाय के सदस्यों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा

परिषद् ने विद्यालय की पाठ्य पुस्तकों में से राष्ट्रीय एकता में रुकावट डालने वाली सामग्री को हटाने से संबद्ध कार्यकलाप जारी रखे हुए हैं। परिषद् ने राष्ट्रीय एकता निर्देशिका की दृष्टि से 'इवेलुएशन ऑफ टेक्स्ट बुक्स' नामक पुस्तक प्रकाशित की। राज्यों संघशासित प्रदेशों के सहयोग से परिषद् द्वारा विकसित की गई इन निर्देशिकाओं के आधार पर विभिन्न विषयों की अनेक पाठ्यपुस्तकों का पुनरीक्षण किया गया। 1986-87 के दौरान महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, मिजोरम, हरियाणा और आंध्र प्रदेश ने कार्यक्रम के दूसरे चरण के कार्य को पूरा कर लिया। परिषद् ने नमूने के आधार पर भी पाठ्य पुस्तकों का मूल्यांकन किया और पाठ्य पुस्तकों के लेखकों और पुनरीक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। इस तरह राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पाठ्य पुस्तकों का मूल्यांकन संबंधी कार्यक्रम संस्थापित हो गया है। परिषद् ने विद्यालय पाठ्यपुस्तकों पर आठवाँ राष्ट्रीय सम्मेलन भी आयोजित किया जिसमें विभिन्न पाठ्य पुस्तक एजेन्सियों के 70 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार पाठ्य पुस्तक लिखने के विषय पर चर्चा हुई।

परिषद् राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा से संबद्ध एक अन्य कार्यक्रम 15 क्षेत्रीय भाषाओं में समूह गान गाने की कला और विधि के बारे में अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए शिविरों को आयोजित करती रही है। 1986-87 के दौरान राज्य/संघशासित प्रदेशों की विभिन्न एजेंसियों के सहयोग से परिषद् ने अध्यापकों को समूहगान में प्रशिक्षित करने के लिए 31 शिविर आयोजित किए। इन शिविरों में राज्यों/संघशासित प्रदेशों के लगभग 850 अध्यापकों ने भाग लिया। विभिन्न लिपियों में लिखे गए इन गानों और उनके स्वरों की पुस्तकों और श्रव्य टेपों को विद्यालयों में बाँटने के साथ-साथ इन शिविरों का आयोजन हो जाने से देश के अनेक विद्यालयों में समूह गान को संस्थापित करने में सहायता मिली है।

कम्प्यूटर साक्षरता

परिषद् ने 'विद्यालयों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन (क्लास)' परियोजना के अंतर्गत साधन व्यक्तियों के अभिविन्यास कार्यक्रम के साथ-साथ विद्यालय के अध्यापकों और परिषद् के स्टाफ के लिए अनेक उन्नत स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। 'क्लास' परियोजना के अंतर्गत चौदह नई देशी प्रक्रिया सामग्री के पैकेजों का परीक्षण किया गया और उन्हें विद्यालयों में लगाया गया। वीडियो टेप कार्यक्रम भी विकसित किए गए। 'क्लास' परियोजना के अंतर्गत परिषद् के स्टाफ के तीन सदस्यों ने कम्प्यूटर शिक्षा में एक महीना प्रशिक्षण यू०के० से प्राप्त किया। 1986-87 के दौरान 'क्लास' परियोजना 436 विद्यालयों में चलायी गई है। दिसम्बर 1986 में अध्यापक प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए वर्तमान 50 साधन केन्द्रों के अतिरिक्त आठ नए साधन केन्द्र अभिज्ञापित किए गए। 23 राज्यों/संघशासित प्रदेशों में कार्यक्रमों के नोडल अफसर के रूप में कार्य करने के लिए राज्य सरकार द्वारा एक वरिष्ठ अधिकारी को नामित करके राज्यों/संघशासित प्रदेशों में कार्यक्रम को दी जाने वाली प्रशासन सहायता को और मजबूत बनाया गया है।

जनसंख्या शिक्षा

परिषद् ने राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना को और तेजी से लागू करने की दृष्टि से अनेक उपाय अपनाए हैं। पुरी में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में +2 स्तर की पाठ्यचर्या को अंतिम रूप दिया गया। जनसंख्या शिक्षा के सभी 6 क्षेत्रों– अर्थात् (1) जनसंख्या गतिकी, (2) आर्थिक विकास और जनसंख्या, (3) सामाजिक विकास और जनसंख्या, (4) स्वास्थ्य, पोषण और जनसंख्या, (5) परिवार में सदस्यों की संख्या, जैविक कारक और जनसंख्या तथा (6) पर्यावरण और जनसंख्या, में अभिज्ञापित मुख्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों/विषयवस्तुओं के अनुसार पाठ्यचर्या विकसित की गई हैं। प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण स्तर की पाठ्यचर्या को विकसित करने का कार्य भी शुरू कर दिया गया है। त्रिभागीय पुनरीक्षण समिति की बैठक में मार्गनिर्देशन के साथ-साथ कार्य के नए प्रणोद और भावी योजना अभिज्ञापित की गई जिसमें यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकॉक, स्थानीय यू.एन.एफ.पी.ए. कार्यालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

शिक्षा का व्यावसायीकरण

1986-87 वर्ष के दौरान परिषद् ने राज्यों/संघशासित प्रदेशों को दो महत्वपूर्ण योजना, अर्थात् (क) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा और (ख) सामान्य शिक्षा के एक अभिन्न अंग के रूप में कार्य अनुभव के लिए आवश्यक शैक्षिक निवेश उपलब्ध कराने के लिए अनेक कार्यकलाप अपने हाथ में लिए हैं। व्यावसायिक अध्यापकों को अपने-अपने व्यवसाय विशेष रूप से व्यवसाय और वाणिज्य, प्रौद्योगिकी, कृषि और शिक्षाशास्त्र में ज्ञान और विशेषज्ञता को अद्यतन बनाने की दृष्टि से परिषद् ने 6

1986-87

अल्पकालिक पाठ्यक्रम आयोजित किये। इन पाठ्यक्रमों के द्वारा एक सौ अड़तालीस अध्यापक प्रशिक्षित किए गए। चलाए गए अन्य कार्यक्रमों में +2 स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाले राज्यों के राज्य स्तर के मुख्य व्यक्तियों के लिए है–अभिविन्यास कार्यक्रम, कार्य-अनुभव के क्षेत्र में राज्य स्तर के मुख्य व्यक्तियों के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम और जिला व्यावसायिक सर्वेक्षणों में लगे मुख्य व्यक्तियों को अभिविन्यस्त करने के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम शामिल है। इन अभिविन्यास कार्यक्रमों से उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, मणिपुर, मेघालय, गोवा, दमन और दीव के 380 मुख्य व्यक्तियों को लाभ हुआ है। इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त परिषद् पर कार्यान्वियन कार्यक्रम 1986 के अंतर्गत निदर्श पाठ्यचर्या, मार्गदर्शिका तथा अन्य पाठ्यचर्या संबंधी सामग्री विकसित करने की जिम्मेवारी है। विभिन्न व्यवसायों से संबंधित न्यूनतम व्यावसायिक योग्यता पर आधारित पाठ्यचर्या, पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए व्यापक निर्देशिका, व्यावसायिक सर्वेक्षण कार्यकर्ताओं की पुस्तिका के संशोधित संस्करण, विद्यालय-उद्योग में संबंध स्थापित करने की निर्देशिका, पूर्व-व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की निदर्शनी अनुदेशी सामग्री, उच्च प्राथमिक स्तर के कार्य-अनुभव के पाठ्यक्रमों में संशोधित अनुदेशी सामग्री, नवोदित विद्यालयों में कार्य अनुभव पर शिष्यों के मूल्यांकन की निर्देशिका और ऐच्छिक संगठनों के माध्यमिक शिक्षा में उत्पादी कार्य की एकीकरण की योजना पर अनेक कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इस वर्ष में इन सामग्रियों को विकसित तथा प्रकाशित किया गया।

अध्यापक शिक्षा

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में परिषद् ने बी.एड. के विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास और भारत में अध्यापकों की अवस्थिति पर दो अनुसंधान परियोजनाएं पूरी कर लीं। आजकल 'अध्यापक शिक्षा की फ्रुटोलाजी, विद्यार्थी शिक्षण के लिए साधनों का विकास' और 'शिक्षा कालेजों के साथ सहयोजिता की अवस्था' पर कार्य चल रहा है। शिक्षण के निदर्शों पर प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परियोजना शुरू की गई और अध्यापकों की अनुसंधान परियोजनाओं के नियोजन और अभिकल्पना पर दो कार्यशालाएं आयोजित की गईं। सेवा-पूर्व और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की अनुदेशी सामग्री विकसित करने के लिए कार्यशाला कार्यकारी दल की अनेक बैठकें आयोजित की गईं। कार्यकारी दल की बैठकों में सामग्री के विकास के अंतर्गत प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या, अध्यापक शिक्षा पर साधन पुस्तक, 'टीचर एण्ड एजूकेशन इन दि एमर्जिंग इंडियन सोसायटी' नामक पाठ्यपुस्तक का हिंदी संस्करण अनौपचारिक शिक्षा पर साधन पुस्तक विद्यालय आधारित सेवाकालीन शिक्षा और अध्यापक प्रशिक्षण की निर्देशिका विकसित करना था।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देश पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 को तुरंत लागू करने के लिए परिषद् ने देश के 5 लाख प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों को प्रशिक्षित करने का कार्य अपने हाथ में लिया। परिषद् ने प्रतिरूपी अनुदेशी सामग्री विकसित की और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में टी.वी. की सहायता प्राप्त की। प्रशिक्षण कार्यक्रम तीन स्तरों पर आयोजित किए गए। मुख्य व्यक्तियों को परिषद् में प्रशिक्षित किया गया जबकि लगभग 10,000 साधन व्यक्तियों को राज्य स्तर पर प्रशिक्षित किया गया। राज्य स्तर पर पूरे देश में 2500 प्रशिक्षण केन्द्र खोले गए। तब दस दिन की अवधि के 9000 शिविर आयोजित किए गए। मुख्य एजेन्सियों तथा परिषद् ने भी अपने संकाय से प्राप्त सामग्री की प्रक्रिया के मूल्यांकन किए। पुनरीक्षण के लिए बैठकें आयोजित की गईं और अगले वर्ष किए जाने वाले कार्यक्रमों का निर्धारण किया गया।

1986–87 के दौरान परिषद् ने सतत शिक्षा केन्द्रों के कार्यकलापों का समन्वय कार्य जारी रखा, 64 सतत शिक्षा केन्द्रों ने जिनमें 6 नए सतत शिक्षा केन्द्र, पंजाब के 3 सतत शिक्षा केन्द्र और हिमाचल प्रदेश के 3 सतत शिक्षा केन्द्र शामिल हैं, अपने कार्यकलाप किए।

परिषद् द्वारा चलाए जा रहे क्षेत्रीय शिक्षा कालेज एक-वर्षीय बी.एड. कोर्स, बी.ए.एड. या बी.ए.बी.एड. और बी.एस–सी.एड. या बी.एस–सी. (आनर्स/पास) बी.एड. डिग्री दिलाने वाला चार वर्षीय समेकित अध्यापक शिक्षण कार्यक्रम और एक वर्षीय एम.एड. कोर्स चलते रहे। भुवनेश्वर और मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में दो-वर्षीय एम.एस–सी.एड. कोर्स भी चलते रहे। अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में चार वर्षीय समेकित कोर्स में कुल भर्ती क्रमशः 236, 380, 524 और 350 थी जबकि बी.एड. कोर्स में कुल भर्ती क्रमशः 190, 116, 199 और 49 थी। अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में एम.एड. कोर्स में कुल भर्ती क्रमशः 14, 10, 19 और 26 थी। भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में जीवन विज्ञान में एम.एस–सी.एड. कोर्स में कुल भर्ती 41 थी। जबकि मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज भौतिकी, रसायन और गणित एम.एस–सी.एड. कोर्स में कुल भर्ती 106 थी। इसके अतिरिक्त अजमेर, भोपाल और भुवनेश्वर के कालेजों में बी.एड. डिग्री के लिए ग्रीष्मकालीन विद्यालय एवं पत्राचार पाठ्यक्रम में 192, 316 और 355 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया।

अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों से संलग्न प्रदर्शन बहु-उद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पहली से बारहवीं कक्षा तक भर्ती हुए विद्यार्थियों की कुल संख्या क्रमशः 854, 908, 1164 और 1968 थी। क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों ने विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबद्ध विभिन्न क्षेत्रों पर विस्तार कार्यक्रम/कार्यशाला/संगोष्ठी भी आयोजित किए। अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की कुल संख्या क्रमशः 12, 38, 13 और 23 थी। इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या क्रमशः 305, 723, 258 और 683 थी। इनके अतिरिक्त प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों ने विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबद्ध अनुसंधान अध्ययन भी किया। विज्ञान और शिक्षा में पी-एच. डी. करने के लिए अनेक विद्यार्थियों ने क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों से मार्गदर्शन प्राप्त किए।

विकलांगों की शिक्षा

आलोच्य वर्ष में परिषद् ने विकलांगों की समेकित शिक्षा से संबद्ध अनके कार्यकलाप अपने हाथ में लिए। महाराष्ट्र में विकलांग की समेकित शिक्षा (आई. ई.डी) का वृत्ति अध्ययन पूरा कर लिया गया। समेकित और विशेष विद्यालयों में विकलांगों की भाषायी सक्षमता का पता लगाने के लिए एक अन्य अनुसंधान अध्ययन भी शुरू किया गया। समेकित व्यवस्था में दृष्टि की खराबी वाले बच्चों के लिए परिषद् द्वारा विकसित 30 अनिवार्य अनुदेशी सहायता साधनों की एक आदि प्ररूपी किट की जाँच चल रही है। परिषद् ने समेकित विकलांग शिक्षा के अंतर्गत पहली और दूसरी कक्षा के सुनने की खराबी वाले बच्चों को भाषा सिखाने के लिए एक निर्देश पुस्तक विकसित की है। इसके अतिरिक्त, विकलांगों के अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए अनुदेशी सामग्री और समेकित व्यवस्था में विकलांग बच्चों के शिक्षण के लिए प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों की एक पुस्तिका भी विकसित की गई। विशेष शिक्षा में शैक्षिक टेक्नोलॉजी के प्रयोग से संबद्ध राष्ट्रीय शिक्षा-नीति 1986 के अनुसार 'दिशाएं', 'कहते-सुनते-स्वर' और 'खेल में मेल' नाम की तीन वीडियो फिल्म विकसित की गई जो कि चार विकलांगता क्षेत्रों अर्थात् हड्डी, दृष्टि, श्रवण और मानसिक हीनता का उल्लेख है। परिषद् ने सुनने की कमी वाले बच्चों की शिक्षा पर सामान्य अध्यापकों के लिए जागरूक माड्यूल भी विकसित किया है। समेकित विकलांग शिक्षा की योजना को और अधिक प्रबल बनाने के लिए परिषद् ने समेकित विकलांग शिक्षा के योजना एवं प्रबंध प्रशासकों के लिए एक पुस्तिका प्रकाशित की है।

इसके अतिरिक्त परिषद् ने समेकित विकलांग शिक्षा में 3 मास का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया था जिसमें बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश के 19 व्यक्तियों ने भाग लिया। परिषद् ने समेकित विकलांग शिक्षा पर यूनीसेफ से सहायता प्राप्त परियोजना को भी अपने हाथ में लिया है।

अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा

परिषद् ने जनजातीय विद्यार्थियों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की विधियों, प्रक्रिया और व्यवहार संबंधी अध्ययन पूरा कर लिया है और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और गैर अनुसूचित जाति/गैर अनुसूचित जनजाति की पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों और विद्यार्थी अध्यापकों पर किए जा रहे चार अन्य अनुसंधान अध्ययन जारी रखे और पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना की भौतिक सुविधाओं और मूल्यांकन का तुलनात्मक अध्ययन किया। आंध्र प्रदेश की गोंडा जनजाति के जनजातीय बच्चों के लिए उनके बोलचाल की भाषा और तेलुगु लिपि में पाठ्य पुस्तक की पांडुलिपि विकसित की गई। सरोरा प्राइमर पार्ट–।। को 120 प्रायोगिक विद्यालयों में बांटा गया। परिषद् ने जनजातीय क्षेत्रों में जनजातीय बच्चों की संस्कृति और शिक्षा की समस्याओं तथा जनजातीय जीवन में और अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों पर सात-सात दिन के 6 अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किए। इनमें से तीन कार्यक्रम प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए थे और शेष तीन अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के मुख्य व्यक्तियों के लिए थे।

नारी शिक्षा

परिषद् ने पाठ्य पुस्तक और संपूरक रीडरों में लिंग-भेद वाले क्षेत्रों का पता लगाने के लिए एक अनुसंधान अध्ययन अपने हाथ में लिया है। लिंग-भेद दूर करने की दृष्टि से भाषा-सामग्री के मूल्यांकन के संदर्भ में पाँच-पाँच दिन के चार कार्यक्रम आंध्रप्रदेश, मिजोरम, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में आयोजित किए गए। आलोच्य वर्ष में व्यापक रूप से महिलाओं में जागरूकता पैदा करने और विशेष रूप से महिला अनुदेशकों के अधिकार के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने के साथ-साथ अनौपचारिक शिक्षा के लिए अनुदेशी सामग्री भी विकसित की गई। लड़कियों की शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े इलाके को अभिज्ञापित करने के लिए परिमाणात्मक एवं गुणात्मक सूचकों को अंतिम रूप दिया गया और उन्हें राज्यों/संघशासित प्रदेशों में बांट दिया गया। परिषद् ने 'इमेज आँफ विमन इन करीकुलम इन इंग्लिश' पर एक प्रकाशन प्रकाशित किया। एक अन्य प्रकाशन 'आर्केस्ट्रल हार्मोनी' की पांडुलिपि भी विकसित की गई। 1986–87 वर्ष के दौरान लिंग-भेद से संबद्ध मुल्कों की दृष्टि से 270 पुस्तकों का पुनरीक्षण किया गया।

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 को लागू करने की दृष्टि से स्थायी नारी शिक्षा समिति की तीसरी बैठक की गई।

शिक्षा मूल्यांकन

विद्यालयों में मापन और मूल्यांकन की प्रक्रिया में सुधार लाने के लिए परिषद् ने शिक्षा मूल्यांकन से संबद्ध संकल्पनात्मक सामग्री विकसित करने, निकष संदर्भित परीक्षण तैयार करना और विभिन्न विषयों के लेखकों का प्रशिक्षण करने का काम शुरू किया। विकसित की गई सामग्री में शिक्षण/निदानन और निराकरण के लिए भौतिकी, रसायन, जैविकी, गणित, इतिहास अर्थशास्त्र भूगोल और नागारिक शास्त्र की परीक्षण सामग्री, बुद्धि-योग्यता परीक्षण की सामग्री, परिषद् की पाठ्य पुस्तकों पर आधारित नवीं और दसवीं कक्षाओं के लिए भौतिकी, रसायन, जैविकी और गणित में इकाई परीक्षण, 'ओपन बुक एकजामिनेशन–क्वेश्चन्स इन इकौनोमिक्स' नामक पुस्तक और भूगोल में प्रायोगिक कार्य के मूल्यांकन के लिए एक फर्मा शामिल है। इनके अतिरिक्त, शिक्षा मूल्यांकन के पारिभाषिक शब्दों की शब्दावली को अंतिम रूप दिया गया।

परिषद् ने विभिन्न विषयों में परीक्षण सामग्री लेखकों और विभिन्न माध्यमिक शिक्षा परिषदों द्वारा आयोजित बाह्य परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र बनाने वालों के प्रशिक्षण के लिए तीन/ चार/पाँच दिवसीय पाँच कोर्स चलाए। इनके अतिरिक्त, परिषद् ने माध्यमिक स्तर की बाह्य परीक्षाओं के स्तर में सुधार लाने के लिए राज्य स्तर कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए तीन कोर्स और शिक्षा संस्थाओं के स्टाफ के शिक्षा-मूल्यांकन के लिए चौदह दिन का एक कोर्स आयोजित किया। कुल मिलाकर इन कोर्सों के जरिए 333 कार्मिकों को प्रशिक्षित

किया गया।

परिषद् ने शिक्षा मूल्यांकन के लिए चलाए जा रहे वार्षिक पाठ्यक्रम के स्थान पर व्यापक निरंतर मूल्यांकन पाठ्यक्रम चलाने की पहल की है। परीक्षा सुधार कार्यक्रमों की दृष्टि से मूल्यांकन करने की अपारंपरिक तथा पूर्णतः उपयोगी विधि और प्रक्रिया के प्रशिक्षण कार्यक्रम और विकास किए गए।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति दिए जाने के लिए चुनाव करने के लिए परिषद् ने भारत के 30 केन्द्रों पर 11 मई, 1986 को दूसरे चरण की परीक्षा आयोजित की। अक्तूबर/नवंबर 1985 में राज्यों/संघशासित प्रदेशों पर ली गई लिखित परीक्षा के आधार पर चुने गए दसवीं कक्षा के 3047 विद्यार्थी दूसरे चरण की परीक्षा में बैठे। राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्तियाँ दिए जाने के लिए सामान्य वर्ग के 680 विद्यार्थियों को और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित बच्चों के वर्ग में से 70 विद्यार्थी चुने गए।

परिषद् के प्रेक्षणों के साथ-साथ प्रोफेसर रईस अहमद की अध्यक्षता वाली राष्ट्रीय प्रतिभा खोज पुनरीक्षण समिति की सिफारिशों को मानव संसाधन विकास मंत्रालय को अग्रेषित किया गया।

शैक्षिक सर्वेक्षण

विद्यालयों में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की सुविधाओं से संबद्ध किए जा रहे चार अध्ययनों के अतिरिक्त मिडिल स्कूलों में शिक्षण सहायता पर एक गहन अध्ययन करने का काम शुरू किया गया। 30 सितंबर 1986 को आधार तिथि मानकर नवंबर 1986 से पांचवाँ अखिल भारतीय सर्वेक्षण भी शुरू किया गया।

नवोदय विद्यालयों को तकनीकी सहायता

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा अभिकल्पित नवोदय विद्यालय योजना प्राथमिक स्तर पर प्रतिभा को पहचानना और उन्हें नवोदय विद्यालयों के जरिए अच्छी शिक्षा प्रदान करके उनका बौद्धिक विकास करना है। नवोदय विद्यालयों के कार्यों की देखभाल करने के लिए परिषद् में नवोदय विद्यालय कक्ष खोला गया है। 1986-87 के दौरान नवोदय विद्यालय कक्ष ने इन विद्यालयों के लिए तीन प्रवेश परीक्षण लिए। झज्जर (हरियाणा) और अमरावती (महाराष्ट्र) के विद्यालयों के लिए पहली परीक्षा जून 1986 में ली गई। 81 नवोदय विद्यालयों के लिए दूसरी परीक्षा सितम्बर 1986 में ली गई। जिला चंपारन के बध्या–।। के एक विद्यालय के लिए तीसरी परीक्षा जनवरी 1987 में ली गई। इन विद्यालयों में दाखिले के लिए भाषा और अंकगणित में 20–20 नंबर के मौखिक परीक्षण और 60 नंबर के सामान्य बुद्धि योग्यता के अमौखिक परीक्षण थे। ये परीक्षण भारत की 19 भाषाओं में लिए गए। इससे परीक्षा में 1,172 केन्द्रों पर कुल 1,21,151 विद्यार्थी बैठे जिनमें 6,227 विद्यार्थी चुने गए। इनमें से 4,459 विद्यार्थी सामान्य वर्ग में चुने गए। चुने गए अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति वर्ग के बच्चों की संख्या क्रमशः 1,129 और 639 थी। विद्यालयों के लिए चुने गए बच्चों में 4,810 ग्रामीण बच्चे थे और 1,108 लड़कियां थीं।

शिक्षा टेक्नोलॉजी

राज्य शिक्षा टेक्नोलॉजी संस्थानों (एस.आई.ई.टी.) के सहयोग से केन्द्रीय शिक्षा टेक्नोलॉजी संस्थान ने शिक्षा-टेक्नोलॉजी के उपयोग और सूदूर अधिगम की विधियों से संबद्ध अनेक परियोजनाएं और कार्यक्रम, जिनमें शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने तथा शिक्षा के क्षेत्र को और विस्तृत करने के लिए रेडियो और टेलिविजन का प्रयोग शामिल है, अपने हाथ में लिए। उपकरण, परामर्श और प्रशिक्षण के लिए यू.एन.डी.पी./यूनेस्को/यूनीसेफ की सहायता भी ली गई। केन्द्रीय शिक्षा-टेक्नोलॉजी संस्थान ने वर्तमान अनुसंधान परियोजना के अतिरिक्त पाँच नए अनुसंधान अध्ययन अपने हाथ में लिए हैं। अध्ययन मुख्यतः विकलांग बच्चों की सहायता साधन के उपयोग, इन्सेट–1 के ई.टी.वी. कार्यक्रम, आडियो-रेडियो कार्यक्रम और सुदूर शिक्षा पर केन्द्रित थे। केन्द्रीय शिक्षा टेक्नोलॉजी संस्थान ने संगीत शिक्षा, स्वतंत्रता आंदोलन, लोक कथाओं और हंसिकाओं पर आडियो–रेडियो टेपों की प्रक्रिया सामग्री से संबद्ध 119 कार्यक्रम विकसित किए। आलोच्य वर्ष में 'गोपाल पढ़ने लगा', 'सोलर इक्लिप्स' और 'डेजर्ट गोल्ड' नामक शिक्षा फिल्में पूरी कर ली गईं। 'देश और निवासी' पर तीन फिल्में और पश्चिमी तट पर तीन फिल्में निर्माणाधीन हैं। इन दो फिल्मों के अतिरिक्त दो फिल्मों 'एटर्नल साउन्ड्स' और 'डेजर्ट गोल्ड' को हिंदी में दिया गया है। केन्द्रीय शिक्षा टेक्नोलॉजी ने 5–8 वर्ष, 9–11 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों, अध्यापकों और अन्य लोगों के लिए 139 ई.टी.वी. कार्यक्रम निर्मित किए हैं।

केन्द्रीय शिक्षा-टेक्नोलॉजी संस्थान राष्ट्र नेताओं के पोर्ट्रेटों को विकसित करने की परियोजना जारी रखे हुए है। केन्द्रीय शिक्षा टेक्नोलॉजी संस्थान ने विभिन्न कार्यशालाएं/संगोष्ठियां आयोजित कीं जिनसे इस क्षेत्र के 246 मुख्य कार्मिकों को लाभ हुआ है। केन्द्रीय शिक्षा टेक्नोलॉजी संस्थान ने (1) अलाभान्वित एवं विद्यालय में न पढ़ने वाली जनसंख्या के लिए शैक्षिक एवं विकासी रेडियो की युक्तियों और प्रक्रियाओं पर और (2) अलाभान्वित और विद्यालय में न पढ़नेवाली जनसंख्या के लिए मिडिया सामग्री के विकास पर दो यूनेस्को कार्यशालाएं भी आयोजित कीं। इसमें मिडिया के 50 विशेषज्ञों ने भाग लिया। इन कार्यकलापों के अतिरिक्त केन्द्रीय शिक्षा टेक्नोलॉजी संस्थान ने मणिपुर और दिल्ली में दो शिक्षा फिल्म उत्सवों का आयोजन किया जिनसे लगभग 18,500 विद्यार्थियों और अध्यापकों को लाभ हुआ।

शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन

परिषद् शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यकलापों को जारी रखे हुए है। आलोच्य वर्ष में 'ए स्टडी ऑफ साइकोलॉजिकल कैरेक्टरिष्टिक्स विस-ए-विस एजुकेशनल एण्ड वोकेशनल प्लानिंग ऑफ शिड्यूल्डकास्ट हाई स्कूल ब्वायज' और 'इम्प्रूविंग कॉग्निटिव फंक्शन्स एण्ड क्लास रूम विहेवियर ऑफ एलिमेन्टरी

स्टुडेन्ट्स बाई कान्टेंन्जेन्सी मैनेजमेण्ट' नामक दो अनुसंधान अध्ययन पूरे कर लिए गए। शैक्षिक एवं व्यावसायिक योजना और विद्यार्थियों के व्यावसायिक व्यवहार से संबद्ध अन्य दो अध्ययन लगभग पूरा होने वाले हैं। परिषद् शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन में डिप्लोमा कोर्स जारी रखे हुए है और मार्ग दर्शन में व्यावसायिक अध्यापकों को अभिविन्यस्त करने के लिए साधन व्यक्तियों की एक तीन दिवसीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला का, मार्गदर्शन और परामर्श में अनुसंधान पर एक पांच दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम एवं उत्पादन कार्यशाला पांडिचेरी के प्रिंसिपलों/हैडमास्टरों के लिए मार्गदर्शन और परामर्श पर एक दो-दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम, प्रारंभिक और माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों और एस.आई.ई./एस.आई.ई.आर.टी. कार्मिकों के लिए अधिगम और विकास पर दो दस-दिवसीय समृद्धि पाठ्यक्रम, विद्यालयों में व्यवहार परिवर्तन तकनीक के अनुप्रयोग पर दस-दस दिन की दो कार्यशालाएं और प्रारंभिक स्तरों में सर्जनात्मक रुचि का पता लगाने और प्रोत्साहित करने पर अध्यापक शिक्षकों के लिए एक दस-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन संगोष्ठियों/कार्यशालाओं में कुल 171 मुख्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों द्वारा अनुरक्षित विद्यालयों के अध्यापक-वर्ग

शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के व्यावसायिक अध्यापकों का एक 26 दिन का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। चालीस अध्यापकों को विद्यालयों की व्यावसायिक सूचना सेवा के नियोजन एवं प्रबंध में प्रशिक्षित किया गया। इनके प्रिंसिपलों/हेडमास्टरों को पहले ही अभिविन्यस्त किया जा चुका है। अल्पसंख्यक द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के प्रबंधकों और प्रिंसिपलों के लिए तीन-तीन दिन की तीन संगोष्ठी एवं कार्यशाला आयोजित की गईं। इस कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों/संघशासित प्रदेशों के इक्यावन प्रिंसिपलों/प्रबंधकों ने भाग लिया। इन्हें (1) विद्यालयों में शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन, सेवा दर्शन एवं प्रक्रियाओं में और (2) विद्यालयों में मार्गदर्शन सेवाओं के प्रभावशाली निष्पादन के लिए अपेक्षित संगठनात्मक सुविधाओं में अभिविन्यस्त किया गया। देश में शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के स्तर को ऊपर उठाने की दृष्टि से अलीगढ़, विश्वविद्यालय, जामिया मिलिया इस्लामिया, कश्मीर, मराठवाड़ा और उस्मानिया में पाँच साधन केन्द्र खोलने का प्रस्ताव है जो उच्च विद्यालय और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अंग्रेजी, विज्ञान और गणित के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेंगे।

शैक्षिक अनुसंधान

परिषद् के शैक्षिक अनुसंधान एवं नवीन प्रक्रिया समिति (एरिक), अनुसंधान के प्राथमिकता क्षेत्रों का पता लगाने और विद्यालय शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान परियोजनाओं पर आधारित आवश्यकताओं को आयोजित एवं प्रायोजित करने का कार्य जारी रखे हुए है। एरिक उप समिति ने एरिक से वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए बारह परियोजनाओं की सिफारिश की थी।

इसके अतिरिक्त परिषद् के अध्यक्ष के आदेश पर शिक्षा के क्षेत्र में केरल का एक वृत्ति अध्ययन नियोजित किया गया था। जनवरी 1987 में आयोजित कार्यशाला में अनुसंधान अभिकल्पना विकसित की गई और चरण-1 पर कार्य शुरू कर दिया गया है। प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य करने के संबंध में एरिक द्वारा लिए गए निर्णय की दृष्टि से +2 स्तर की शिक्षा के व्यावसायीकरण क्षेत्र में चार बैठकें/संगोष्ठियां आयोजित की गईं। इनमें 610 व्यक्तियों ने भाग लिया और इनमें अनुसंधान अभिकल्पनाएं विकसित करने की दृष्टि से प्रणोद क्षेत्रों, समस्याओं और मामलों को अभिज्ञापित करने से संबद्ध राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला के लिए समृद्धि आंकड़ा/सूचनाएं उपलब्ध करायी गईं।

देश में सक्षम अनुसंधानकर्ताओं की एक सूची बनाने के लिए परिषद् ने चार अनुसंधान क्रियाविधि पाठ्यक्रम आयोजित किए जिनसे भाग लेने वाले 57 व्यक्तियों को लाभ हुआ। यह पी-एच.डी. थीसिस/मोनाग्राफ के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता देने की योजना भी चला रही है। इस योजना के अंतर्गत 15 प्रकाशन प्रकाशित हुए और इस वर्ष में वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए अन्य 11 प्रकाशनों को चुना गया है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

परिषद् विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में द्विपक्षीय.सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के प्रावधानों को लागू करने के लिए एक मुख्य अभिकरण की अपनी भूमिका निभा रहा है। 1986-87 के दौरान विभिन्न देशों के अनेक प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने परिषद् का दौरा किया। परिषद् ने यूनेस्को द्वारा प्रायोजित अनेक परियोजना कार्यक्रमों को अपने हाथ में लिया है और एशिया एवं प्रशांत शैक्षिक विकास प्रक्रिया कार्यक्रम (ए.पी.ई.आई.डी.) के एक साहचर्य केन्द्र के रूप में और शैक्षिक प्रक्रिया के राष्ट्रीय विकास समूह (एन.डी.जी.) के सचिवालय के रूप में एक मुख्य भूमिका निभायी है।

रजत जयंती समारोह

परिषद् ने एन.आई.ई. परिसर में 1 सितंबर, 1986 को अपने स्टाफ के सदस्यों और स्कूली बच्चों से पौधे लगवाकर अपने रजत जयंती समारोह का शुभारंभ किया। रजत जयंती का मुख्य समारोह 11 सितम्बर, 1986 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन प्रधान मंत्री ने किया। मानव संसाधन विकास मंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव ने इस समारोह की अध्यक्षता की। इस शुभ अवसर पर प्रधान मंत्री ने 'स्कूल एजूकेशन इन इंडिया-प्रेजेन्ट स्टेट्स एण्ड फ्यूचर नीड्स' और 'एन.सी.ई.आर.टी. के 25 वर्ष' (एक एलबम) नामक दो खंडों का विमोचन किया।

परिषद् की रजत जयंती के अवसर पर प्रधान मंत्री ने 19 सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों को राष्ट्रीय फेलोशिप से सम्मानित किया। ये शिक्षा-शास्त्री, श्री अमाडू माहटर एमबो, महानिदेशक यूनेस्को, श्री पी.वी. नरसिंह राव, श्री के.एल. श्रीमाली, प्रो० डी.एस.

विज्ञान भवन में 11 सितम्बर 1986 को हुए परिषद् के रजत जयंती समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी

Prime Minister Rajiv Gandhi inaugurating the Silver Jubilee celebrations of the NCERT at Vigyan Bhawan on 11 September 1986
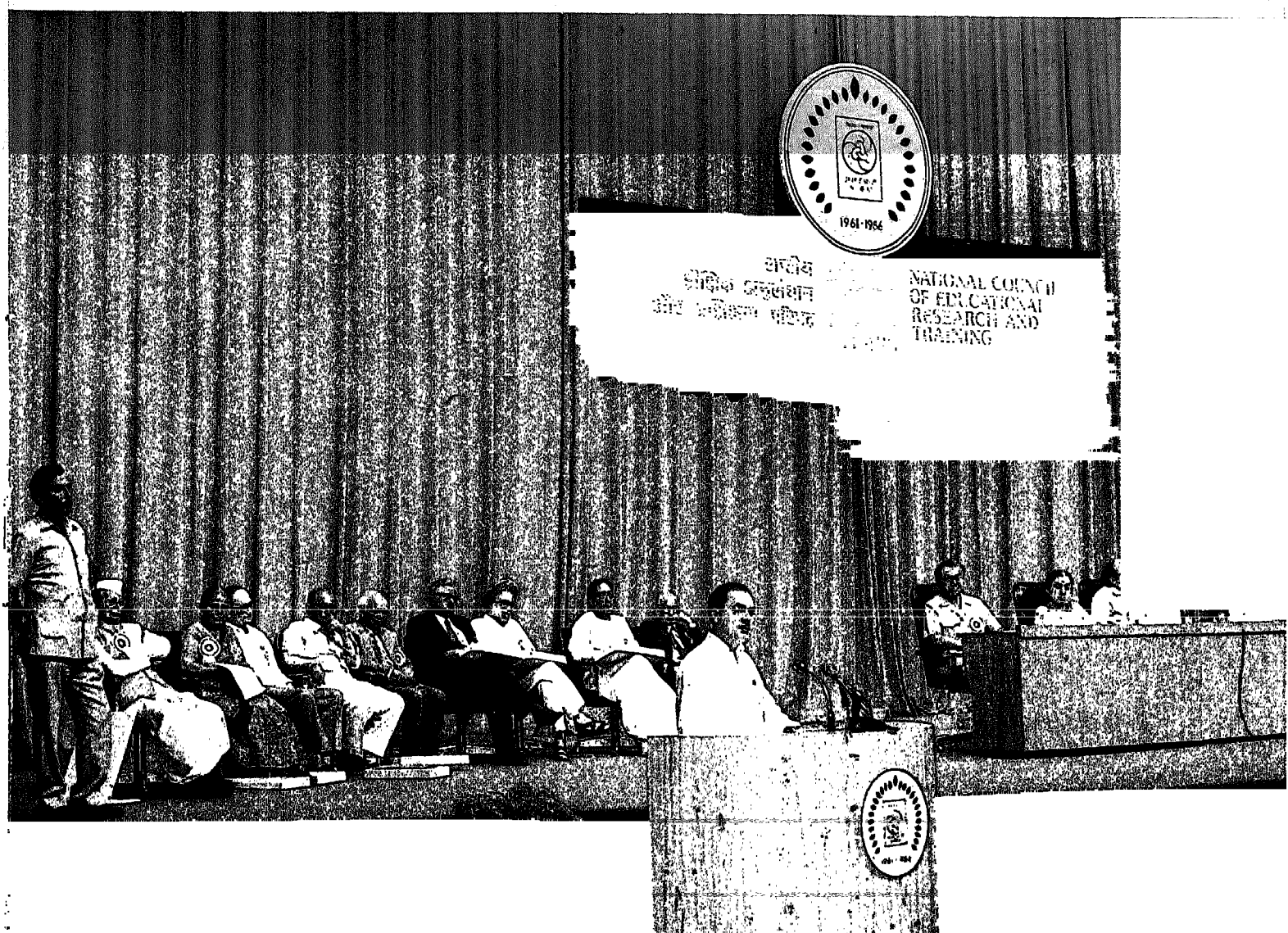
परिषद् के रजत जयंती समारोह के अवसर पर विज्ञान भवन में एकत्र विशिष्ट जनों को सम्बोधित करते हुए प्रधान मंत्री

रजत जयंती समारोह के अवसर पर प्रधान मंत्री द्वारा एन.आई.ई. राष्ट्रीय फ़ेलोशिप से समादृत 19 विख्यात शिक्षाविदों में से कुछ

Some of the 19 eminent educationists whom the Prime Minister honoured with National Fellowships of NIE, marking the Silver Jubilee celebrations
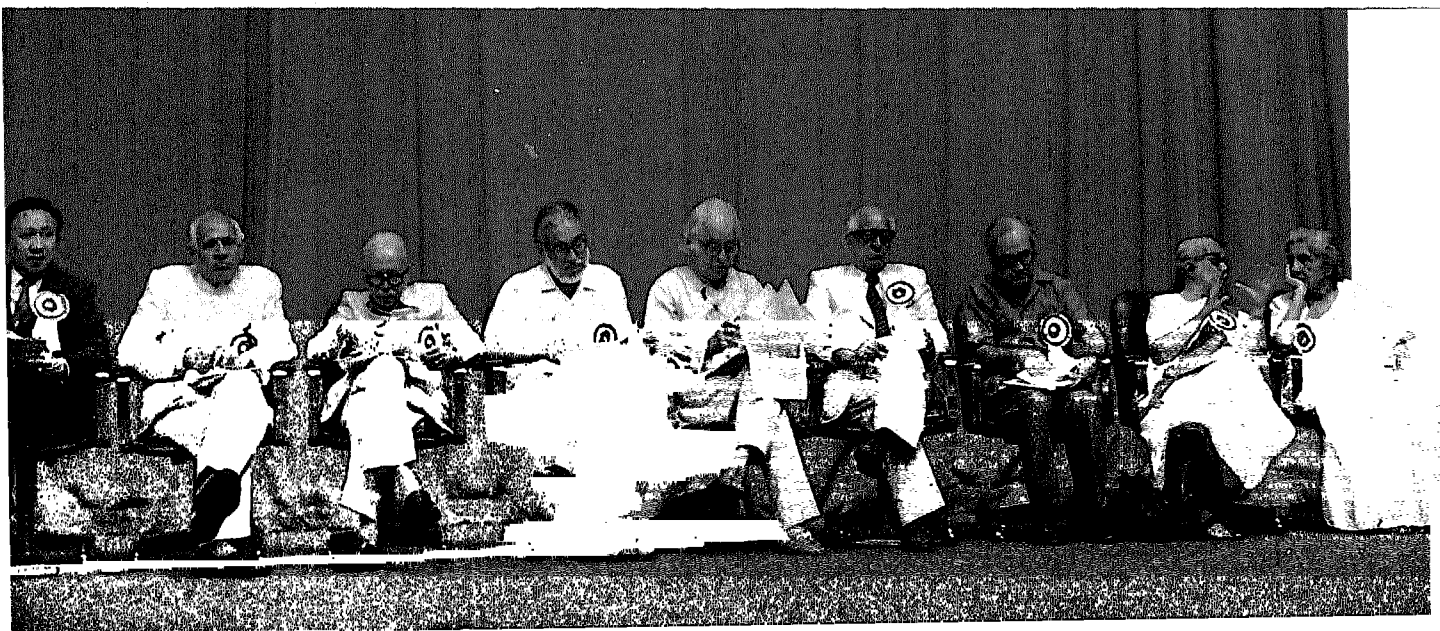
The Prime Minister addressing a distinguished gathering at Vigyan Bhawan on the occasion of the Silver Jubilee of the NCERT

परिषद् के तीन विशिष्ट प्रकाशनों को विमोचित करते हुए प्रधान मंत्री

Three special publications of the NCERT were released by the Prime Minister
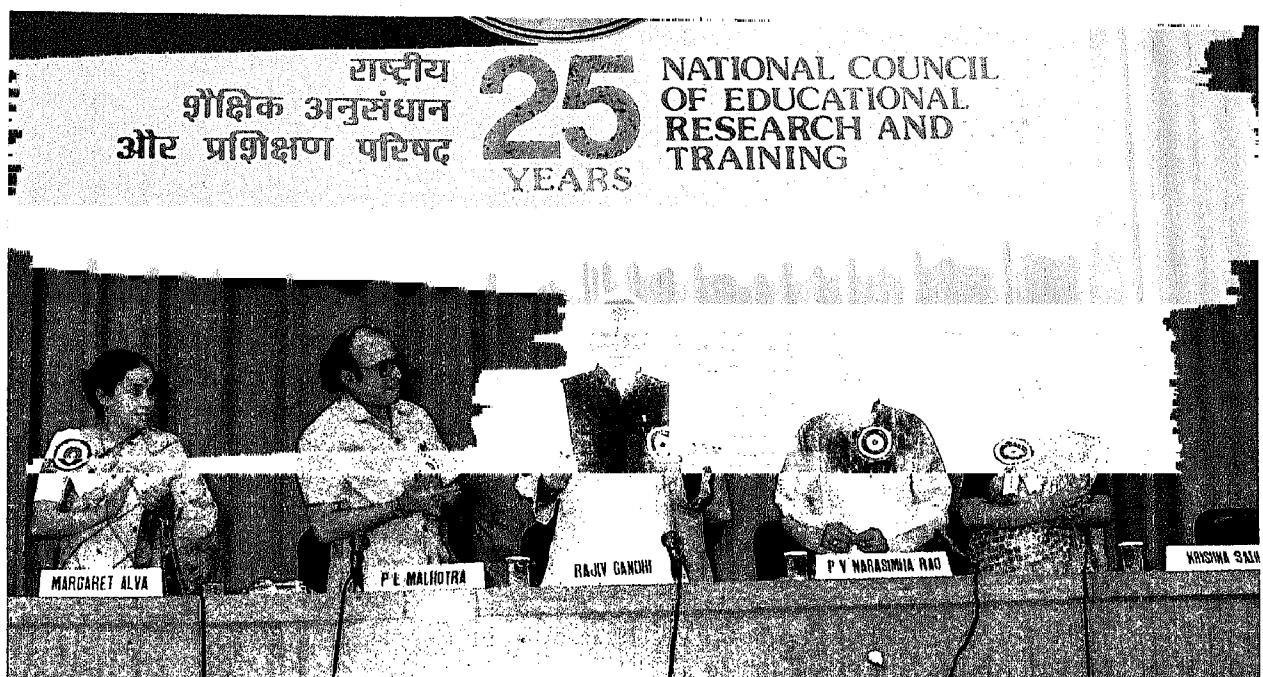
राष्ट्रीय फ़ेलोशिप पाने वाले महानुभावों के साथ प्रधान मंत्री

The Prime Minister with the National Fellows

विख्यात स्वतंत्रता सेनानी प्रो. एन. जी. रंगा और श्रीमती अरुणा आसफ़ अली को परिषद् के गौरवशाली प्रकाशन *'इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस : विजुअल्स एंड डाक्यूमेंट्स'* की प्रतियाँ भेंट करते हुए प्रधान मंत्री

The Prime Minister honoured two eminent freedom fighters, Prof. N.G. Ranga, and Mrs. Aruna Asaf Ali, by presenting them with copies of *'India's Struggle for Independence: Visuals and Documents'*, a prestigious publication of the NCERT

1986-87

कोठारी, डा० मनमोहन सिंह, प्रो० एम.जी.के.मेनन, प्रो० राजा रमन्ना, प्रो० यशपाल, प्रो० सी.एन.आर. राव, प्रो० वी.वी. जॉन, डा० पी.एन. कृपाल, प्रो० एस.वी.सी. अय्या, प्रो० रईस अहमद प्रो० शिव के. मित्रा, प्रो० (श्रीमती) चित्रा नायक, प्रो० (श्रीमती) राजामल पी. देवदास, श्री ए.आर. दाउद, प्रो० वी.के.आर. वी. राव और प्रो० डी.पी. चट्टोपाध्याय थे।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने दो सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, प्रो० एन.जी. रंगा और श्रीमती अरुणा आसफ अली को भी सम्मानित किया। उन्होंने उन्हें परिषद् का अति महत्वपूर्ण प्रकाशन 'इंडियाज स्ट्रगल फॉर इन्डिपेन्डेन्स-विजुअल्स एण्ड डॉकुमेन्ट्स' प्रदान किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो० यशपाल ने रजत जयंती संभाषण दिया।

परिषद् ने 11 सितंबर, 1986 को अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के बड़े-बड़े समाचार पत्रों में दो पृष्ठ का एक विशेषांक निकाला। इस विशेषांक में सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों द्वारा लेख थे। इस अवसर पर 'एन.सी.ई.आर.टी. न्यूजलेटर' के एक विशेषांक में भी इन लेखों को छापा गया और इन विशेषांकों को विज्ञान भवन में आए लोगों में बांटा गया। रजत जयंती समारोह के बारे में समाचार-पत्रों में काफी कुछ छपता रहा। इस संबंध में आकाशवाणी और दूरदर्शन ने भी विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

परिषद् के सभी चार क्षेत्रीय शिक्षा-कालेजों और राज्यों के फील्ड कार्यालयों में भी रजत जयंती समारोह पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर वेरायटी प्रोग्राम, प्रदर्शनी आदि भी आयोजित किए गए।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) के विभिन्न विभागों और परिषद् के अन्य इकाइयों द्वारा 1986-87 में किए गए कार्यकलापों/कार्यक्रमों का ब्यौरा अगले अध्यायों में दिया गया है।

अध्याय 3

स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के कार्यान्वियन की दिशा में परिषद् के उत्तरदायित्व के तौर पर डी.पी.एस.ई.ई. को पहली और तीसरी कक्षाओं की अनुदेशी सामग्रियां तथा प्रारंभिक स्तर पर पाठ्यचर्या विकास संबंधी मार्गदर्शी सिद्धांत तैयार करने का कार्य सौपा गया। अन्य मुख्य क्रियाकलाप जो इस वर्ष किये गये, वे अनौपचारिक शिक्षा और शैशवकालीन शिक्षा संबंधी अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण क्रियाकलाप थे। इस विभाग ने विभिन्न राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण कार्यक्रम के संदर्भ में शिक्षा सेक्टर में कार्यान्वित की जा रही सभी यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजनाओं के लिए एक केन्द्रीय, तकनीकी और समन्वयकारी अभिकरण के रूप में कार्य करना जारी रखा। राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में विभिन्न विकासशील अभिकरणों द्वारा कार्यान्वित की जा रही विभिन्न शैक्षिक परियोजनाओं को समन्वित एवं समेकित करते हुए एक नई यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना को हाथ में लेने के लिए कार्रवाई शुरू की गई। परियोजना प्रस्ताव एम.एच.आर.डी./यूनीसेफ द्वारा अनुमोदित किया जा चुका है। कार्य-योजना तैयार करने के लिए 'मानव संसाधन विकास संबंधी क्षेत्र-गहन शिक्षा परियोजना' नाम अभिलेख को अंतिम रूप दिया गया तथा उसे सभी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों को प्रेषित किया गया।

प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु मार्गदर्शी सिद्धांत

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वियन हेतु प्रारंभिक वर्गों के तौर पर इस विभाग ने प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या विकास संबंधी मार्गदर्शी सिद्धांत तैयार करने का कार्य हाथ में लिया। परिषद् की अकादमिक समिति द्वारा अंतिम मार्गदर्शी सिद्धांतों पर चर्चा कर उन्हें अनुमोदित किया और बाद में सारे देश के शिक्षाविदों के सुझावों तथा समिति की सिफारिशों को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें सशोधित किया गया। नवंबर 1986 में मार्गदर्शी सिद्धांतों का संशोधित रूपांतर निकाला गया। इन मार्गदर्शी सिद्धांतों में मातृभाषा (या प्रथम भाषा) गणित, पर्यावरणीय अध्ययन, कार्य अनुभव और कला शिक्षा संबंधी विषय क्षेत्रों में प्रोटोटाइप पाठ्य विवरण भी सम्मिलित हैं। इस विभाग ने नई पाठ्यचर्या पर आधारित प्रोटोटाइप अनुदेशी सामग्रियां (पहली और तीसरी कक्षाओं के लिए) के विकास को भी अपने हाथ में लिया। पहली और तीसरी कक्षाओं की विभिन्न पाठ्यपुस्तकों व अध्यापक मार्गदर्शिकाओं की पाण्डुलिपियों को विकसित करने एवं उन्हें अंतिम रूप देने के लिए अनेक बैठकें व कार्यशालाएं आयोजित की गईं। विवरण तालिका–1 में उल्लिखित है।

तालिका –1

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथि/अवधि	स्थान	कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों की संख्या
1.	प्रारंभिक शिक्षा के कार्यदल की बैठक	11–6–86 (एक दिन)	एन. आई.ई. कैम्पस, नई दिल्ली	8
2.	हिंदी विशेषज्ञ समिति की बैठक	3 से 4 नवंबर, 86 (दो दिन)	–वही–	2
3.	पहली और तीसरी गणित कक्षाओं के लिए अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु बैठक	17 से 22 नवंबर, 86 (6 दिन)	आर.सी.ई., भोपाल	4
4.	तीसरी कक्षा हेतु सिक्किम राज्य के लिए सामाजिक अध्ययन के लिए अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु बैठक	11 से 13 नवंबर, 86 (3 दिन)	एन.आई.ई. कैम्पस, नई दिल्ली	6
5.	पहली कक्षा हेतु गणित पाठ्य पुस्तकों के लिए समिति की बैठक	12 से 15 नवंबर, 86 (4 दिन)	–वही–	13
6.	तीसरी कक्षा के लिए सामाजिक अध्ययन (के.वी.एस.) संबंधी अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु बैठक	14 से 21 नवंबर, 86 (8 दिन)	–वही–	2
7.	पहली कक्षा हेतु हिंदी पाठ्यपुस्तकों के लेखकों की बैठक	17 से 21 नवंबर, 86 (5 दिन)	–वही–	4
8.	अध्यापक हस्तपुस्तक व क्रियाकलाप पुस्तक, एस.सी.ई.आर.टी., पुणे, की अंतिम पाण्डुलिपि को पुनरीक्षित करने के लिए समिति की बैठक	19 से 26 नवंबर, 86 (8 दिन)	एस.सी.ई.आर. टी., पुणे	9
9.	तीसरी कक्षा के लिए पर्यावरणीय अध्ययन की पाठ्यपुस्तक	24 से 28 नवंबर, 86	एन.आई.ई. कैम्पस, नई दिल्ली	10

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथि/अवधि	स्थान	कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों की संख्या
	(विज्ञान) की पांडुलिपि पुनरीक्षित करने के लिए विशेषज्ञ समिति की बैठक	(5 दिन)		
10.	पहली कक्षा की हिंदी पाठ्य-पुस्तकों के पुनरीक्षण हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	27 से 28 नवंबर, 86 (2 दिन)	–वही–	4
11.	प्राथमिक स्तर पर स्वास्थ्य शिक्षा शारीरिक शिक्षा में मार्गदर्शी पाठ्यचर्या विकसित करने के लिए विशेषज्ञों की बैठक	1 से 5 दिसंबर, 86 (5 दिन)	–वही–	5
12.	तीसरी कक्षा (गणित) की पांडु-लिपियों को पुनरीक्षित करने के लिए पुनरीक्षण समिति की बैठक	19 से 23 दिसंबर, 86 (5 दिन)	–वही–	15
13.	पहली और दूसरी कक्षाओं के लिए कार्य अनुभव संबंधी अध्यापक मार्गदर्शिका के विकास के लिए कार्यशाला	20 से 27 दिसंबर, 86 (8 दिन)	–वही–	7
14.	पहली, तीसरी और चौथी कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी पैकेजों की पाण्डुलिपियों को अंतिम रूप देना। विशेषज्ञों, अध्यापकों और ग्राफ अभि-कल्पकों की बैठक	10 से 14 जनवरी, 1987 (5 दिन)	एन.सी.ई.आर.टी.	29
15.	पहली और तीसरी कक्षाओं हेतु पर्यावरणीय अध्ययन पाठ्य-पुस्तकों के हिंदी रूपांतर तैयार करने संबंधी कार्यशाला	7 से 14 मार्च, 87 (8 दिन)	इलाहाबाद	13
			कुल प्रतिभागी	141

मार्च 1987 के अंत तक हिंदी, गणित, पर्यावरणीय अध्ययन, कार्य अनुभव और कला शिक्षा विषय क्षेत्रों में पाठ्यपुस्तकों व अध्यापक मार्गदर्शिकाओं की 19 पाण्डुलिपियों को अंतिम रूप दिया गया। अनुदेशी सामग्रियाँ जो विकसित की गईं, वे निम्न प्रकार हैं:

क्र.सं.	शीर्षक	कक्षा
1.	किरण भारती	I
2.	किरण भारती	III
3.	लेट अस लर्न **मैथमैटिक्स** बुक–1 (अंग्रेजी रूपांतर)	I
4.	आओ गणित सीखें पुस्तक–1 (हिंदी रूपांतर)	I
5.	लेट अस लर्न **मैथमैटिक्स** बुक–3 (अंग्रेजी रूपांतर)	III
6.	आओ गणित सीखें पुस्तक–III (हिन्दी रूपांतर)	III
7.	टीचर्स गाइड–एनवायरनमेंटल स्टडीज़ (अंग्रेजी रूपांतर)	I
8.	परिवेशीय अध्ययन–अध्यापक दर्शिका	I
9.	एनवायरनमेंटल स्टडीज–I	III
10.	एक्सप्लोरिंग एनवायरनमेंटल बुक–I (अंग्रेजी रूपांतर)	III
11.	परिवेशीय **अन्वेषण** पुस्तक–1 (हिंदी रूपांतर)	III
12.	हैंडबुक फार टीचर्स इन वर्क एक्सपीरियन्स (अंग्रेजी रूपांतर)	I और II
13.	कार्यानुभव अध्यापक **दर्शिका**	I और III
14.	हैंडबुक फार टीचर्स इन वर्क एक्सपीरियन्स (अंग्रेजी रूपांतर)	III
15.	कार्यानुभव अध्यापक **दर्शिका** (हिंदी रूपांतर)	III
16.	टीचर्स हैंड बुक इन आर्ट एजूकेशन (अंग्रेजी रूपांतर)	I
17.	कला शिक्षा की शिक्षक पुस्तिका (हिंदी रूपांतर)	I
18.	टीचर्स हैंडबुक इन आर्ट एजूकेशन (अंग्रेजी रूपांतर)	III
19.	कला शिक्षा की शिक्षक पुस्तिका (हिंदी रूपांतर)	III

पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों के विकास में इस विभाग ने राज्य अभिकरणों को सहायता देना जारी रखा। पाठ्यचर्या विकसित करने संबंधी मार्गदर्शी सिद्धांत राज्य अभिकरणों को भी भेजे गये ताकि वे उन्हें देख सकें और मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें या फिर उन्हें ग्रहण/अनुकूलन कर सकें।

शैशवकालीन शिक्षा (ई.सी.ई.)

रिपोर्टाधीन वर्ष में शैशवकालीन शिक्षा में कार्यरत **स्कूल-पूर्व**अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के लिए अनुदेशी सामग्री (प्रकाशित व अप्रकाशित) के विकास तथा **स्कूल-पूर्व**अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों और पर्यवेक्षण कार्मिकों के अभिविन्यास से संबंधित क्रियाकलाप भी चलते रहे। ये क्रियाकलाप दो यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजनाओं–शैशवकालीन शिक्षा (ई.सी.ई.) और बाल माध्यम प्रयोगशाला (सी.एम.एल.) के तहत सम्पन्न किये गये।

(क) अनुसंधान

1986 में परिषद् स्तर पर दो अनुसंधान परियोजनाएं तालिका-2 में दिये गये विवरणों के अनुसार शुरू की गईं।

तालिका-2

क्र.सं.	परियोजना का नाम	परियोजना की अवधि	प्रधान जांचकर्ता	शुरू होने की तिथि	पूरा होने की तिथि	अभ्युक्तियाँ
1.	बाल विकास में गृह-आधारित	3 वर्ष	प्रो. आर. मुरलीधरन	दिसंबर 1989	दिसंबर 1989	उड़ीसा की जनजातीय व शहरी

क्र.सं.	परियोजना का नाम	परियोजना की अवधि	प्रधान जांचकर्ता	शुरू होने की तिथि	पूरा होने की तिथि	अभ्युक्तियाँ
	कार्यक्रम का एक पूर्व-परीक्षण					गंदी बस्तियों में
2.	हर बालक तक कार्यक्रम	3 वर्ष	प्रो. आर. मुरलीधरन	जनवरी 1986	जनवरी 1989	एम.सी.डी.के सहयोग से परियोजना

गृह आधारित अध्ययन शैशवकालीन प्रेरणा के लिए एक वैकल्पिक कार्यनीति है। शिक्षक की भूमिका लेने के लिए धारणा यह है कि परिवार (माताएं/दादियाँ-नानियाँ/सहोदर भाई या बहिनें) में अपेक्षित विश्वास विकसित करने से बच्चे के ज्यादा सीखने की संभावना रहती है। सशक्त शिक्षक के रूप में मां-बाप की जागृति प्रोन्नत करने के लिए तथा उनमें आवश्यक कौशल विकसित करने हेतु एक मध्यवर्ती तरीका अपनाने का ध्येय है– एक गृह-आधारित अनुदेशी पैकेज विकसित करना। इस पैकेज में 0–6 आयुवर्ग के बच्चों के लिए स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा क्षेत्र आ जाते हैं। इस अध्ययन को उड़ीसा के जनजातीय व शहरी क्षेत्रों में किया जा रहा है। बालक-बालक तक कार्यक्रम में अनिवार्य रूप से स्कूल-आयु के बच्चों के साथ कार्य करना पड़ता है ताकि उन्हें स्वस्थ जीवन संबंधी साधारण नियमों को समझाया जा सके जिससे वे न केवल अपने स्वास्थ्य को सुधार सकें बल्कि अपने छोटे भाइयों व बहिनों के स्वास्थ्य सुधार में भी सहायता कर सकें।

यह संकल्पना इस दृढ़ विश्वास पर आधारित है कि बड़े बच्चे बहुत प्रभावी रूप से शिक्षकों की भूमिका अदा कर सकते हैं, विशेषकर उन घरों में जहां मां-बाप अनपढ़ व निर्धन हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि इन बच्चों को न केवल समुचित ज्ञान से बल्कि परिवार व समुदाय में प्रभावी संदेश देने की विधि से भी प्रशिक्षित एवं सज्जित किया जाए।

इस ध्येय को ध्यान में रखते हुए "बालक-बालक" तक कार्यक्रम जनवरी 1986 में दिल्ली नगर निगम के प्राथमिक स्कूलों में शुरू किया गया और अब यह कार्यक्रम नगर निगम के 32 प्राथमिक स्कूलों में चल रहा है। यह कार्यक्रम प्राथमिक स्कूलों की चौथी व पाँचवीं कक्षाओं के बच्चों व अध्यापकों से संबंधित है और प्राथमिक स्कूलों के सामान्य शैक्षिक ज्ञान में "बालक-बालक" की ओर ध्यान केन्द्रण प्रस्तुत करता है। इस कार्यक्रम के अवयव हैं स्वास्थ्य, सफाई स्वास्थ्य विज्ञान और पोषण जो कि खासकर कक्षा चौथी व पांचवीं के वर्तमान पाठ्यविवरणों में से चुने गये हैं।

जनवरी 1986 में जब से यह कार्यक्रम शुरू किया गया तभी से "बालक-बालक" परियोजना ने अध्यापक प्रशिक्षण हेतु नई पद्धतियां/कार्यशालाएं/अभिविन्यास कार्यक्रम प्रभावी अनुदेशी सामग्री (स्वास्थ्य, स्वास्थ्य विज्ञान और पोषण क्षेत्रों से संबंधित 14-गतिविधियों वाला एक सेट) और कार्यान्वयन अनुवीक्षण, पर्यवेक्षण और शिक्षा के लिए प्रासंगिक कार्यनीतियां विकसित कीं।

(ख) विकास और प्रशिक्षण

दस राज्य (बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा, तमिलनाडु, कर्नाटक, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, नागालैंड और गोआ, दमन व दीव) जो ई.सी.ई. कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं, प्रगति के विभिन्न चरणों पर हैं। 1986 में शैशवकालीन शिक्षा की संकल्पनाओं और प्रविधियों में नागालैंड, गोआ, दमन व दीव के अध्यापक शिक्षक और अन्य 8 स्टेजों के एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के ई.सी.ई. सेलों के नये सदस्यों को अभिविन्यस्त किया गया। परियोजना के तीसरे चरण में राज्यों के 12 अध्यापक शिक्षकों को प्राथमिक स्कूलों की पहली कक्षा के लिए खेल पद्धतियों व गतिविधि दृष्टिकोण में अभिविन्यस्त किया गया। ई.सी.ई. केन्द्र इन्हीं स्कूलों से सम्बद्ध हैं। बैठकें/कार्यशालाएं/अभिविन्यास पाठ्यक्रम जो आयोजित किये गये, वे तालिका–3 में उल्लिखित हैं।

तालिका–3

क्र.सं.	शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान	उपस्थित प्रतिभागियों की संख्या
1.	दिल्ली नगर निगम स्कूलों के पहली कक्षा के अध्यापकों के लिए खेल पद्धतियों पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम	10 दिन	दिल्ली नगर निगम प्राथमिक स्कूल, भीमनगरी	41
2.	मराठी में श्रव्य रचनाओं (12) के विकास पर कार्यशाला	अप्रैल 12 से 21, 1986	एस.सी.ई.आर.टी., पुणे	25
3.	बाल साहित्य पर राष्ट्रीय गोष्ठी	दिसंबर 2 से 4, 1986 तीन दिन	एन.आई.ई. कलाकार, लेखक, प्रकाशक,	27
4.	मां-बाप के लिए श्रव्य रचनाओं (10) का विकास	पूरे वर्ष चालू किये गए		15
5.	बाल पुस्तकों संबंधी क्षेत्रीय कार्यशाला	जून 16 से 25, 1986 दस दिन	एस.आई.ई., उदयपुर	19 हिंदी भाषी राज्यों से प्रतिनिधि
			कुलः	127

बाल माध्यम प्रयोगशाला (सी.एम.एल.) के अंतर्गत हिंदी में पहले से विकसित श्रव्य कार्यक्रमों के प्रसार को शुरू किया गया। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों द्वारा प्रसार हेतु इन श्रव्य टेपों की प्रतिलिपियां बनाई जा रही हैं। हिंदी और असमिया में 20 और श्रव्य रचनाएं तैयार की गईं। एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के साथ संगठन के सभी स्तरों पर घनिष्ठ सहयोग विचाराधीन है– स्कूलों के प्रधानों व पर्यवेक्षण स्टाफ के अभिविन्यास के लिए, पुतली-निर्माण, **खिलौना-निर्माण** आदि विभिन्न पहलुओं में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यशालाएं तथा साथ ही मां-बाप के लिए शिक्षा कार्यक्रम जिनमें स्थानीय समुदाय को

शैशवकालीन शिक्षा के महत्व व फैलाव के बारे में अभिविन्यस्त किया जाता है। परिषद् संकाय राज्य टीमों को कार्यशालाएं, पाठ्यक्रम आदि आयोजन में सहायता करती है।

(ग) दिल्ली नगर निगम के स्कूलों में शैशवकालीन शिक्षा परियोजना

इस विभाग द्वारा दिल्ली नगर निगम के दस स्कूलों में शैशवकालीन शिक्षा परियोजना को कार्यान्वित किया गया है। रिपोर्टाधीन अवधि में परियोजना स्कूलों के नर्सरी अध्यापकों के लिए एक 10 दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया गया ताकि उन्हें अपने ढांचे में बच्चों के साथ काम करने के लिए पूरी जानकारी दी जा सके। पाठ्यक्रम में परियोजना स्कूलों के 22 अध्यापकों तथा दिल्ली नगर निगम के एक पर्यवेक्षक ने भाग लिया। इस सबके बाद दिल्ली नगर निगम की पहली कक्षा के 28 अध्यापकों के लिए एक 10 दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम किया गया जहां अध्यापकों को खेल माध्यम पद्धति और गतिविधि दृष्टिकोण में प्रकाशित किया गया ताकि वे नर्सरी से प्राथमिक कक्षाओं में बड़ी आसानी से जा सकें।

(घ) खिलौना-निर्माण संबंधी राष्ट्रीय कार्यशाला

स्कूल-पूर्व तथा आरंभिक प्राथमिक स्टेजों पर अध्यापकों के मध्य खिलौनों की महत्ता और शैक्षिक खेलों और खेल द्वारा शिक्षण-विधि की जागृति विकसित करने के लिए एक पांच दिवसीय खिलौना-निर्माण राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। खिलौनों के माध्यम से विज्ञान संकल्पनाओं को विकसित करना एवं संवेदी विकास को विकसित करना एवं संवेदी विकास को प्रोत्साहित करना इस कार्यशाला का मुख्य सार था। इस कार्यशाला में 16 स्कूल-पूर्व और प्राथमिक स्कूल अध्यापक उपस्थित थे जो कि इस विभाग द्वारा परिषद् के क्षेत्र सलाहकारों के सहयोग से आयोजित राज्य स्तर खिलौना-निर्माण प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार विजेता थे।

कार्यशाला के दौरान छोटे बच्चों के लिए एक-दो दिवसीय शैक्षिक खिलौना-निर्माण संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें खिलौना निर्माताओं को आमंत्रित किया गया। उद्देश्य यह था कि अध्यापकों द्वारा दिए गए विचारों के आधार पर निर्माताओं को और अधिक खिलौने बनाने के लिए प्रेरित किया जाए और उन उपायों की पहचान की जाए जिससे कि परिषद् खिलौना निर्माताओं – **अखिल** भारतीय खिलौना निर्माता संस्था, शिक्षक व निर्माता संस्था और राष्ट्रीय बाल-शिक्षा व विकास संस्था से सहयोग कर सर्वश्रेष्ठ खिलौनों पर नकद पुरस्कारों में योगदान दे सकें।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम

इस विभाग ने अनौपचारिक शिक्षा व समुदाय शिक्षा कार्यक्रमों तथा इन कार्यक्रमों में संलग्न कार्मिकों के प्रशिक्षण/अभिविन्यास से संबंधित अनुसंधान व विकास गतिविधियां जारी रखीं। सम्पन्न की गई मुख्य गतिविधियों में निम्नलिखित शामिल हैं—

भारत सरकार द्वारा कार्यान्वित केन्द्र प्रायोजित

एन.एफ.ई. कार्यक्रम में सहायता

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत यह विभाग अनुसंधान, प्रोटोटाइप सामग्री के विकास और कार्मिकों के अभिविन्यास से संबंधित अनेक गतिविधियों में कार्यरत रहा।

(क) अनुसंधान

1986 में दो नई अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की गईं और 1985 में शुरू की गई तीसरी परियोजना जारी रही। इन्हें निम्नलिखित तालिका–4 में उल्लिखित किया गया है।

तालिका–4

क्र.सं.	परियोजना का नाम	शुरू करने की तिथि	पूरा होने की अपेक्षित तिथि	प्रधान जांचकर्ता
1.	एन.एफ.ई. केन्द्रों (चालू) में बाल उपलब्धि मूल्यांकन हेतु मानकीकृत उपकरणों व प्रविधियों को तैयार करना	मार्च, 86	जून, 87	डा० नीरजा शुक्ला
2.	एन.एफ.ई. के ढांचों को प्रशासनिक अध्ययन तथा पर्यवेक्षण व अनुवीक्षण योजना (ई.आर.आई.सी. प्रोजेक्ट)	मार्च, 86	–	डा०एस.आर. अरोड़ा
3.	नौ शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े राज्यों में अनौपचारिक शिक्षा के अकादमिक पहलुओं का एक मूल्यांकन अध्ययन	मार्च, 85	मार्च, 87	डा० के.जी. रस्तोगी डा०एन.के. अम्बष्ट डा०एस. आर. अरोड़ा

(ख) विकास व प्रशिक्षण

रिपोर्टाधीन अवधि में अनुदेशी सामग्री के विकास, एन.एफ.ई. कार्यक्रमों के कार्मिकों के अभिविन्यास संबंधी क्रियाकलापों को जारी रखा गया।

आयोजित बैठकों/कार्यशालाओं/कार्य बैठकों/ अभिविन्यास कार्यक्रमों के विवरण तालिका–5 में दिये गये हैं।

तालिका-5

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/ अवधि	स्थान	उपस्थित प्रतिभागियों की संख्या
1.	उर्दू में अनुदेशी सामग्री का विकास	2 से 6 सितंबर, 86 (5 दिन) 12से 21 जनवरी 1987 (10 दिन)	एन.आई.ई. कैम्पस	14
2.	पहली, दूसरी और तीसरी कक्षाओं के लिए कार्यानुभव में अध्यापक हस्त-पुस्तक के ग्रंथाकार के विकास हेतु कार्यशाला	1 से 5 दिसंबर, 1986 (5 दिन)	नई दिल्ली	6
3.	विज्ञान पुस्तक, जीवन और विज्ञान भाग-3 के लिए अध्यापक दर्शिका और कार्यपुस्तक के विकास हेतु कार्यशाला	6 से 13 दिसंबर, 1986 (8 दिन)	गुजरात	8
4.	मिडिल स्तर (गणित पुस्तक-1) के लिए (एन.एफ.ई.) अनुदेशी सामग्री का विकास	8 से 12 सितंबर 1986 (5 दिन)	एन.आई.ई. कैम्पस	11
5.	एन.एफ.ई. भाषा-आधार भाषा सुमन के लिए अध्यापक दर्शिका और कार्य-पुस्तक के विकास हेतु कार्यशाला	3 से 10 मार्च, 1987 (8 दिन)	नई दिल्ली	9
6.	एन.एफ.ई. अध्यापकों के टिलोनिया दल के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	10 नवंबर, 86 (1 दिन)		50
7.	राज्यों व संघशासित क्षेत्रों के प्राथमिक स्तर के एन.एफ.ई.स्रोत व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	16 से 20 फरवरी, 87 (5 दिन)		35
8.	जम्मू के एन.एफ.ई. अनुदेशकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	9 से 13 मार्च, 87 (5 दिन)		40
9.	स्वयंसेवी संस्थाओं के एन.एफ.ई. कर्मचारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	31-3-87 से 2-4-87 तक (3 दिन)		30
10.	किये गये कार्यों/दायित्वों संबंधी एन.एफ.ई. के अनुदेशकों के प्रशिक्षण/ अभिविन्यास के लिए विकासात्मक कार्यनीतियों व सामग्री हेतु ग्रुप बैठक	22 से 24 अक्तूबर 1987 (3 दिन)		10
			कुलः	201

इस विभाग ने प्राकृतिक विज्ञानों, सामाजिक विज्ञान, गणित और भाषा के क्षेत्र में 8 पुस्तकें प्रकाशित कीं। **सामग्रियों** के विकास के दौरान शिक्षण व अधिगम के प्रति समेकित दृष्टिकोण अपनाते हुए 13 राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के लगभग 200 विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया गया। इसी प्रकार की सामग्रियों के विकास कार्य में राज्यों की सहायता भी की गई।

राज्यों के एन.एफ.ई. कर्मचारियों तथा स्वैच्छिक अभिकरणों के स्रोत व्यक्तियों के अभिविन्यास के लिए इस विभाग ने 5 अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों में लगभग 165 व्यक्तियों ने भाग लिया।

एन.एफ.ई. फिल्म "गोपाल पढ़ने लगा" इस अवधि में पूरी की गई तथा दिखाई जाने लगी। यह फिल्म एन.एफ.ई. कार्यक्रमों की आवश्यकताओं और निष्पादन के बारे में जागृति उत्पन्न करती है।

एक त्रि-दिवसीय वार्षिक सम्मेलन भी आयोजित किया गया जिसमें राज्यों के एन.एफ.ई. कार्यक्रम के प्रभारियों तथा स्वैच्छिक अभिकरणों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। एन.पी.ई.-1986 के प्रकाश में संस्तुत एन.एफ.ई. कार्यक्रमों के कार्यान्वियन के लिए कार्यनीतियों पर इस सम्मेलन में विस्तार रूप से चर्चा की गई।

प्राथमिक शिक्षा संबंधी व्यापक पहुँच (सी.ए.पी.ई.)

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना "प्राथमिक शिक्षा संबंधी व्यापक पहुँच" (सी.ए.पी.ई.) के खास उद्देश्य हैं- शिक्षा का अनौपचारिक दृष्टिकोण विकसित करना तथा समस्या-केंद्रित कार्य आधारित विकेंद्रित पाठ्यचर्याओं और विभिन्न बाल समूहों की जीवन-स्थितियों व आवश्यकताओं से संगत अधिगम सामग्रियों का निर्माण करना। यह परियोजना 17 राज्यों और एक संघशासित क्षेत्र में कार्यान्वित की जा रही है।

विकास व प्रशिक्षण

प्रतिभागी राज्यों में परियोजना गतिविधियों के नियोजन, प्रबंध, अनुवीक्षण और मूल्यांकन में तकनीकी सहायता प्रदान करने के अलावा परियोजना टीम ने साक्षरता गणना और समस्या/स्थिति आधारित पर्यावरणीय अध्ययनों की सामग्री के विकास संबंधी 30 कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों में परियोजना से संबद्ध 49 व्यक्तियों ने भाग लिया। किये गये कार्यक्रमों के विवरण निम्नलिखित तालिका-6 में उल्लिखित हैं।

तालिका-6

कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि/तिथि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
हिंदी में कार्य पुस्तक के पुनरीक्षण के लिए कार्यशाला	14 से 17 अप्रैल, 86 (4 दिन)	एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	1

1986-87

कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि/तिथि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
हिंदी में अधिगम सामग्रियों से संबंधित कार्यपुस्तक तैयार करने के लिए विशेषज्ञों की कार्यशाला	28 अप्रैल से 2 मई, 86 (5 दिन)	–वही–	4
हिंदी में कार्यपुस्तक के पुनरीक्षण के लिए कार्यशाला	22 से 26 जून, 86 (5 दिन)	एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	1
हिंदी में अधिगम सामग्रियों के विकास के लिए विशेषज्ञों की कार्यशाला	22 से 26 जुलाई, 86 (5 दिन)	–वही–	4
द्वितीय, स्तर के लिए हिंदी में अधिगम घटनाओं का विकास	25 से 28 अगस्त, 86 (4 दिन)	–वही–	5
हिंदी में अधिगम सामग्रियों का विकास	30 अगस्त से 2 सितंबर, 86 (4 दिन)	–वही–	1
हिंदी में स्तर–1 के लिए ई.वी.एस. से संबंधित अधिगम सामग्रियों को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	16 से 22 सितंबर, 1986 (7 दिन)	–वही–	5
स्तर–1 के लिए अधिगम सामग्रियों को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	9 से 16 अक्तूबर, 1986 (8 दिन)	–वही–	6
हिंदी में अधिगम सामग्रियों को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	8 से 10 दिसंबर 1986 (3 दिन)	–वही–	6
हिंदी में अधिगम सामग्रियों को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	24 से 31 दिसंबर, 86 (8 दिन)	–वही–	1
उर्दू में कार्यशाला की रूपरेखाओं के विकास व उन्हें अंतिम रूप देने के लिए कार्यदल की बैठक	10 से 12 सितंबर, 86 (3 दिन)	एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	7
एस.आई.ईज. श्रीनगर और जम्मू द्वारा विकसित गणना सामग्रियों और उर्दू में साक्षरता सामग्रियों को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	5 से 9 मई, 1986 (5दिन)	के.यू.डी. जिला–जम्मू	25
उर्दू में साक्षरता सामग्रियों को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	19 से 25 मई, 1986 (7 दिन)	एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	3
स्तर–1 के लिए उर्दू में साक्षरता सामग्रियों को अंतिम रूप देना	5 से 7 और 11 से 13 अगस्त, 1986 (6 दिन)	–वही–	2
जम्मू और कश्मीर में उर्दू में सी.ए.पी.ई. अधिगम सामग्रियों के परिष्कार के लिए विशेषज्ञों के कार्यदल की बैठक	9 से 11 जुलाई 1986 (3 दिन)	–वही–	2
गणना से संबंधित अधिगम सामग्रियों को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	23 से 27 जून 1986 (5 दिन)	–वही–	14
स्तर I और II से संबंधित गणना सामग्रियों को अंतिम रूप देने के लिए विशेषज्ञों की बैठक	12 से 14 नवबंर, 1986 (3 दिन)	एन.सी.इ.आर.टी. कैम्पस	
मिज़ोरम में गणना सामग्रियों संबंधी विकास	25 से 29 अगस्त, 1986 (5 दिन)	एस.सी.ई.आर.टी., शिलांग	6
बाल्यावस्था अपंगताओं संबंधी अधिगम घटनाओं के पुनरीक्षण एवं अंतिम रूप दिये जाने के लिए विशेषज्ञों की बैठक	18 जनवरी, 1986 (1 दिन)	एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	1
तेलुगु में गणना सामग्रियों के विकास एवं रूपांतरण हेतु कार्यशाला	3 से 7 अक्तूबर, 1986 (5 दिन)	–वही–	13
अधिगम घटनाओं पर आधारित टैस्ट आइटमों के विकास संबंधी क्रियाविधि पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	28 अप्रैल से 2 मई, 1986 (5 दिन)	–वही–	14
एस.सी.ई.आर.टी., पटना/उदयपुर द्वारा विकसित अधिगम सामग्रियों/घटनाओं पर आधारित पाठ्यचर्या ढांचे के विकास की बैठक	2 से 6 जून 1986 (5 दिन)	–वही–	5
अधिगम सामग्रियों संबंधी पाठ्यचर्या ढांचा स्तर विकसित करने हेतु बैठक	16 से 27 जून, 1986 (12 दिन)	–वही–	3
प्रशिक्षण सुलभीकरण संबंधी क्रियाविधि पर आर.डी.आर.सी. टीम सदस्यों का अभिविन्यास पाठ्यक्रम	1 से 4 जुलाई, 86 (4 दिन)	एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	1
1987 वार्षिक कार्ययोजना को अंतिम रूप देने के लिए समन्वयकर्ताओं की बैठक	10 से 12 नवंबर, 1986 (3 दिन)	–वही–	18

उपर्युक्त के अतिरिक्त प्रश्न-बैंक हेतु टैस्ट आइटम विकसित करने की क्रियाविधि पर भी अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किये गये। आंध्र प्रदेश, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, मध्यप्रदेश, मेघालय, मिजोरम, राजस्थान और उत्तर प्रदेश की राज्य टीमों को साक्षरता, गणना और पर्यावरणीय अध्ययनों की अधिगम घटनाओं के विकास में सहायता और मार्गदर्शन दिया गया। सुगमीकर्ताओं के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में केन्द्रीय टीम ने बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. को भी सहायता प्रदान की। सी.ए.पी.ई. परियोजना के अंतर्गत लगभग 175 अधिगम केन्द्रों और सुगमीकर्ताओं के आंकड़े और 134 केन्द्रों से नौसिखियों के आधार रेखा आंकड़े एकत्रित किये गये। एन.एफ.ई. में प्रयोगार्थ तीन स्वैच्छिक संस्थाओं को भी इस योजना के अन्तर्गत विकसित अधिगम सामग्रियां प्रदान की गईं। इन अधिकरणों द्वारा रात्रि स्कूल केन्द्र भी चलाए जाते हैं। अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं की आवश्यकताओं को भी पूरा किया जा रहा है।

समुदाय शिक्षा और प्रतिभागिता में विकासात्मक गतिविधियां (डी.ए.सी.ई.पी.)

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना समुदाय शिक्षा और प्रतिभागिता में विकासात्मक गतिविधियां (डी.ए.सी.ई.पी.) उन समूहों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्यक्रम विकसित करता है जो आंशिक या पूर्ण रूप से शिक्षा पाने से वंचित हैं। साथ ही यह परियोजना इस बात को भी परीक्षित करती है कि क्या स्कूल बड़े पैमाने पर अपनी गतिविधियां विकसित कर सकता है ताकि वह सामाजिक परिवर्तन में वास्तविक रूप से उत्प्रेरणात्मक अभिकर्ता बन सके। वर्ष में यह परियोजना 19 राज्यों तथा एक संघशासित क्षेत्र में कार्यान्वित की गई। इस परियोजना के अधीन लगभग 82 समुदाय शिक्षा केन्द्रों ने कार्य किया। 57 केन्द्रों में 6,276 नाम दर्ज थे (3-6 वर्ष के आयुवर्ग में 1,356, 6-14 वर्ष के आयु वर्ग में 1,677 और 15-35 वर्ष के आयुवर्ग में 3,216)। कुछ गांवों ने शतप्रतिशत साक्षरता प्राप्त की जबकि कुछ अन्यों में 6-14 वर्ष के आयुवर्ग में, औपचारिक स्कूल के बाहर, कोई बच्चा नहीं था।

विकास और प्रशिक्षण

14 प्रतिभागी राज्यों द्वारा अभिविन्यास, शिशिक्षु अध्यापक प्रशिक्षण, कार्यशाला इत्यादि के 70 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस वर्ष 40 से अधिक पुस्तकें विकसित एवं प्रकाशित की गईं। मुख्यालय स्तर पर तीन कार्यक्रम, जिसमें दो क्षेत्रीय सम्मेलन (उदयपुर और मद्रास में एक-एक) थे, आयोजित किये गये। आयोजित बैठकों/सम्मेलनों/कार्यक्रमों के विवरण तालिका-7 में नीचे दिये गये हैं।

तालिका-7

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि/ तिथियां	स्थान	उपस्थित प्रतियोगियों की संख्या
1.	आंतरिक मूल्यांकन के अध्याय तथा सारणी आदि को अंतिम रूप देने के लिए परिषद् में बैठक	27 से 30 मई, 1986 (4 दिन)	एन.आई.ई., नई दिल्ली	2
2.	उदयपुर में किया गया क्षेत्रीय अभि-विन्यास पाठ्यक्रम	15 से 17 जुलाई, 1986 (3 दिन)	उदयपुर	41
3.	मद्रास में परियोजना समन्वयकर्ताओं का क्षेत्रीय सम्मेलन	11 से 13 नवंबर, 1986 (3 दिन)	मद्रास	53
			कुलः	96

परियोजना की प्रगति पर एक स्थिति प्रतिवेदन (जून 1985 की तरह) भी प्रकाशित किया गया। योजनाओं पर चर्चा हेतु तथा उन्हें अंतिम रूप देने के लिए पंजाब, आसाम, उत्तर प्रदेश और जम्मू की परियोजना टीम ने मुख्यालय का दौरा किया। 13 राज्यों ने आंतरिक मूल्यांकन के प्रतिवेदनों को प्रस्तुत किया जो कि परिषद् स्तर पर विश्लेषण स्थिति में है।

प्राथमिक शिक्षा का नवीकरण

प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या में गुणवत्ता सुधार तथा इसे प्रासंगिक बनाने के प्रयास जारी रखे गये। साथ ही सहायक गतिविधियां जैसे पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता से संबंधित पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों का विकास, चल रही परियोजनाओं के अन्तर्गत, जारी रखी गई हैं।

(क) प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी.ई.सी.आर.)

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना "प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण" (पी.ई.सी.आर.) इस उद्देश्य से शुरू की गई कि नवोद्भावक विचारों, जो कि परियोजना में परीक्षित हैं, को प्राथमिक स्कूल पाठ्यचर्या में उत्प्रेरित करते हुए विभिन्न बाल समूहों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके तथा वर्तमान शिक्षा को अधिक अर्थपूर्ण बनाया जा सके। पाठ्यचर्या नवीकरण अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा इस परियोजना में संलग्न कार्मिकों के अभिविन्यास संबंधी गतिविधियों को प्राथमिकता दी गई। आयोजित बैठकों/कार्यशालाओं/कार्यदल बैठकों/अभिविन्यास कार्यक्रमों के विवरण तालिका-8 में उल्लिखित हैं।

तालिका-8

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/ अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	सर्जनात्मक अभिव्यक्ति संबंधी शिष्य मूल्यांकन में एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. विशेषज्ञों के लिए अभिविन्यास	12 से 19 जून, 86	मद्रास	12
2.	गणित किट के विकास के लिए कार्यशाला	7 से 12 जुलाई, 86	अहमदाबाद	15
3.	परियोजना स्कूलों में हिंदी पाठ्यपुस्तकों में शब्द-संपदा के अध्ययन पर कार्यशाला	8 अगस्त, 1986	एन.आई.ई.	15
4.	पी.ई.सी.आर. के अधीन एन.आई.ई. में हुई कार्यदल बैठक	6 से 8 अक्तूबर, 1986	-वही-	2

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
5.	सामाजिक विज्ञानों की पाठ्यपुस्तकों के पुनरीक्षण के लिए कार्यशाला	16 से 25 अक्तूबर, 86 (10 दिन)	सिक्किम	1
6.	पी.ई.सी.आर. परियोजना की हिंदी पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त शब्द संपदा के अध्ययन संबंधी कार्यशाला	25 से 29 अक्तूबर, 1986 (5 दिन)	जैसलमेर	28
7.	योजना को अंतिम रूप देने के लिए परियोजना समन्वयकर्ताओं की बैठक	5 से 7 नवंबर, 1986 (3 दिन)	एन.आई.ई.	10
8.	पी.ई.सी.आर. परियोजना की हिंदी पाठ्यपुस्तकों में शब्द संपदा के अध्ययन की बैठक	5 से 9 जनवरी, 1986 (5 दिन)	पोरबन्दर	16

परियोजना गतिविधियों के अनुवीक्षण और समन्वय के अतिरिक्त, पी.ई.सी.आर. समूह ने सिक्किम, राजस्थान हरियाणा, जम्मू और कश्मीर आदि राज्यों/संघशासित क्षेत्रों को पाठ्यचर्याओं और अनुदेशी सामग्रियों के विकास में सहायता प्रदान की। सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के शिष्य मूल्यांकन क्षेत्र में मूल व्यक्तियों का अभिविन्यास कार्यक्रम भी जारी रखा गया। सर्जनात्मक अभिव्यक्ति हेतु गतिविधि पुस्तक तैयार करने के लिए एक कार्यशाला की गई।

अध्ययन की अंतरिम रिपोर्ट "नामांकन अवरोधन, प्रगतिरोध और शिष्य उपलब्धि अध्ययन" जुलाई 1986 में प्रकाशित की गई और संदर्भ तथा कार्रवाई के लिए राज्यों/संघशासित क्षेत्रों को प्रेषित की गई। दूसरी अंतरिम रिपोर्ट "पी.ई.सी.आर. परियोजना के अंतर्गत तैयार हिंदी पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त शब्द-संपदा का अध्ययन" तैयार की गई जो कि ग्यारह पाठ्यपुस्तकों के विश्लेषण पर आधारित थी।

पी.ई.सी.आर. समूह ने "सर्जनात्मक अभिव्यक्ति में शिष्य मूल्यांकन की प्रक्रियाएं तथा प्रविधियां एवं मार्गदर्शिका" नामक पुस्तिका की एक अनुलिपिन प्रति प्रकाशित की। हरियाणा, महाराष्ट्र, उड़ीसा, तमिलनाडु और त्रिपुरा राज्यों को भेजने के लिए विक्रम साराभाई सामुदायिक विज्ञान केंद्र के सहयोग से गणित किट के प्रयोग संबंधी एक दीपिका भी विकसित की गई। उपर्युक्त राज्यों को पहले भी किटें भेजी गई थीं।

(ख) राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में पी.ई.सी.आर. का कार्यान्वियन

पी.ई.सी.आर. परियोजना 24 राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में चल रही है। परियोजना प्रगति के विभिन्न चरणों पर थी। 24 राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में से गतिविधियों का चक्र 1986 में 10 राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में पूरा किया गया। राज्यों ने परियोजना में रत अध्यापकों तथा अन्य कार्मिकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम लेना जारी रखा। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार विभिन्न राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में 353 अभिविन्यास कार्यक्रमों में 6318 प्रतिभागी शामिल हुए। इन प्रतिभागियों में परियोजना स्कूल अध्यापक, अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के अध्यापक शिक्षक, पर्यवेक्षण स्टाफ, बी.डी.ओ. आदि सम्मिलित थे।

परियोजना स्कूलों के प्रयोग के लिए राज्यों ने विभिन्न प्रकार की अनुदेशी सामग्रियों को विकसित करना जारी रखा। लगभग 130 शीर्षक राज्यों द्वारा विकसित/प्रकाशित किए गये। वे सामग्रियां जिन्हें स्कूलों में लागू किया गया उन्हें कुछ चुने हुए स्कूलों में भी परखा गया।

राज्य प्रणाली में राज्य पाठ्यपुस्तक अभिकरणों ने अनुदेशी सामग्रियों के व्यापक अनुप्रेरण के उपाय लेना जारी रखा। राजस्थान राज्य ने इस परियोजना के अधीन तैयार पाठ्यचर्याओं को ग्रहण किया और राज्य स्कूल प्रणाली में अनेक विषयों की पाठ्यपुस्तकें लागू कीं। अन्य राज्यों जैसे तमिलनाडु, महाराष्ट्र, सिक्किम, नागालैंड, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा ने पी.ई.सी.आर. परियोजना के अधीन तैयार सामग्रियों को पूर्णतः या अंशतः पहले से ही लागू कर दिया है।

(ग) पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता (एन.एच.ई.ई.एस.)

परियोजना "पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता" (एन.एच.ई.ई.एस.) का उद्देश्य है,प्राथमिक स्कूल के बच्चों हेतु अनुदेशी सामग्रियों के पैकेजों का विकास एवं परीक्षण करना, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण सामग्रियों का विकास करना और इन क्षेत्रों से संबंधित समुदाय के सदस्यों, विशेषकर लड़कियों और महिलाओं को संदेशों के प्रेषण हेतु कार्यनीतियां खोजना। इस वर्ष यह परियोजना दस राज्यों–आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, आसाम, बिहार, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, मिजोरम, उड़ीसा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के लगभग 1,000 स्कूलों में कार्यान्वित की गई।

1986 में मुख्यालय में जो मुख्य गतिविधियां हाथ में ली गई वे निम्न प्रकार हैं:

परियोजना का शीर्षक	शुरू करने की तिथि	पूरा होने की अपेक्षित तिथि	प्रधान जांचकर्ता
एन.एच.ई.ई.एस. परियोजना के अधीन शिष्य उपलब्धि का अध्ययन	मई 1986	मई 1988	श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्या

(घ) विकास

विकासात्मक कार्यक्रमों के अन्तर्गत उपर्युक्त अनुसंधान प्रस्ताव को अंतिम रूप देने, पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता के टैस्ट आइटमों के विकास तथा 1987 की कार्ययोजनाओं को अंतिम रूप देने हेतु पांच बैठकें की गईं। राज्यों के परियोजना समन्वयकर्ता इन बैठकों में शामिल हुए। बैठकों के विवरण तालिका–9 में आगे प्रस्तुत हैं।

तालिका-9

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि/ तिथियां	स्थान	उपस्थित प्रतिभागियों की संख्या
1.	1987 की कार्ययोजना को अंतिम रूप देने के लिए उ.प्र. के परियोजना समन्वयकर्ता की बैठक	12 फरवरी, 86 (1 दिन)	एन.आई.ई. कैम्पस	1
2.	1987 की कार्ययोजना को अंतिम रूप देने के लिए आसाम के परियोजना समन्वयकर्ता के साथ बैठक	15 फरवरी, 86 (1 दिन)	-वही-	1
3.	पहली से चौथी कक्षाओं के लिए एन.एच.ई.ई.एस. में टैस्ट आइटमों के विकास हेतु कार्यदल की बैठक	5 से 9 मई, 1986 (5 दिन)	-वही-	13
4.	टैस्ट आइटमों को अंतिम रूप देने के लिए कार्यदल की बैठक	25 से 29 अगस्त, 86 (5 दिन)	-वही-	10
5.	शिष्य सूचना प्राप्त करने हेतु उपकरणों और शिष्य मूल्यांकन के लिए अनुसंधान प्रस्ताव को अंतिम रूप देने के लिए राज्य के परियोजना समन्वयकर्ताओं की बैठक	13 से 17 सितंबर, 86 (5 दिन)	-वही-	21
			कुल	46

(ङ) राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वयन

रिपोर्टाधीन वर्ष में विभिन्न राज्यों द्वारा हाथ में ली गई मुख्य गतिविधियां एक से चौथी कक्षाओं के लिए अनुदेशी पैकेजों के विकास से संबंधित थीं। वे थीं: चार्टों का विकास, सामुदायिक सम्पर्क कार्यक्रमों के लिए पोस्टर और अन्य सामग्रियां, परियोजना की अनुदेशी सामग्री और अन्य पहलुओं को लागू करने के लिए अध्यापकों का अभिविन्यास, प्रत्येक राज्य के 25 चुने हुए गाँवों में सामुदायिक सम्पर्क कार्यक्रमों के लिए कार्यशालाएं तथा सामुदायिक सम्पर्क कार्यक्रमों के बारे में आंकड़े समेकन हेतु कार्यशालाएं।

कुल मिलाकर 42 कार्यशालाएं और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम किये गये। इन कार्यशालाओं/प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में कुल प्रशिक्षित किये गये प्रतिभागी 2,332 थे। 112 प्रकाशन, जिनमें पाठ्यपुस्तकें, अध्यापक दर्शिकाएं, चार्ट, फोल्डर और प्रश्नावलियां शामिल हैं, राज्यों द्वारा विकसित तथा मुद्रित किए गये। अध्यापकों द्वारा घर-घर जाकर पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता संबंधी संदेश दिये गये।

काफी राज्यों ने पहली से पांचवीं कक्षाओं तक अनुदेशी सामग्रियों को लागू करने का कार्य पूरा किया। सभी राज्यों द्वारा चुने हुए गांवों में व्यापक सामुदायिक सम्पर्क कार्यक्रम भी पूरा कर लिया गया है। राज्यों ने प्राथमिक शिक्षा की राज्य प्रणाली में परियोजन के अनुभवों के व्यापक अनुप्रेरण संबंधी कार्य को शुरू कर दिया है।

एस.बी. विश्वविद्यालय तिरुपति ने 1986 में परियोजना मूल्यांकन कार्य को पूरा किया और एक व्यापक रिपोर्ट एन.एच.ई.ई.एस. पाठ्यक्रम संबंधी पैकेज के मूल्यांकन पर रिपोर्ट नामक शीर्षक से प्रकाशित की है।

अन्य गतिविधियां

डीन अकादमिक के कार्यालय ने इस विभाग से अपना काम करना जारी रखा। इस वर्ष इसका सबसे महत्त्वपूर्ण दायित्व था: एन.पी.ई. 1986 के प्रकाश में विभिन्न विषयों में मार्गदर्शी सिद्धांतों और पाठ्यविवरणों के विकास से संबंधित परिषद् की गतिविधियों का समन्वयन परिषद् की अकादमिक समिति की बैठक परिषद् के विभिन्न विभागों द्वारा विकसित अंतिम मार्गदर्शी सिद्धांतों और पाठ्यविवरणों पर चर्चा करने के लिए विशेष रूप से बुलाई गई। राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के पाठ्यचर्या विशेषज्ञों को विशेष आमंत्रितों के रूप में बैठक में बुलाया गया। संशोधित मार्गदर्शी सिद्धांतों और पाठ्यविवरणों को राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के मार्गदर्शन एवं संदर्भ हेतु प्रसारित किया गया।

अकादमिक समिति की दूसरी बैठक 1987-88 वर्ष के लिए परिषद् के अकादमिक कार्यक्रमों पर चर्चा करने तथा अनुमोदन प्रदान करने के लिए आयोजित की गई।

डीन (अ.) के कार्यालय ने संसद में उठाये गये प्रश्नों से संबंधित एम.एच.आर.डी. के सभी पत्रों, एन.पी.ई. के कार्यान्वयन, देश और विदेश से प्राप्त विविध-पत्रों को निपटाया।

एम.एच.आर.डी. के निवेदन पर डीन के कार्यालय ने आप्रेशन ब्लेक बोर्ड (ओ.बी.) स्कीम के अंतर्गत सर्वेक्षण करने के लिए प्रश्नावली का प्रारूप तैयार किया।

एम.एच.आर.डी. द्वारा सौंपा गया दूसरा कार्य "शिक्षा में चुनी हुई नवोद्भावनाओं का एक गहन विश्लेषण" था जिसके तहत परिषद् द्वारा विभिन्न समयों में नवोद्भावक/प्रयोगात्मक परियोजनाओं संबंधी प्रकाशित आठ प्रकाशनों का परीक्षण था। इन प्रकाशनों के सारों को नवोद्भावनाओं के प्रभाव, प्रारंभिक शिक्षा में इनके सर्वीकरण की प्रासंगिकता, पारंपरिक रुटीन, स्कूल अभ्यासों से विचलन तथा एक व्यापक जनसंख्या द्वारा ग्रहण की गई क्षमता जानने हेतु परीक्षित किया गया। अंतिम विश्लेषण में 25 नवोद्भावक परियोजनाओं को गहन अध्ययन के लिए चुना गया। अध्ययन की विस्तृत रिपोर्ट एम.एच.आर.डी. को प्रस्तुत की गई।

1986-87

प्रकाशन

1986–87 में डी.पी.एस.ई.ई. द्वारा प्रकाशित प्रकाशन तालिका–10 में उल्लिखित हैं।

तालिका–10

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रतियों की संख्या
	शैशवकालीन शिक्षा		
1.	10 वार्तालाप चार्ट (दैनिक जीवन के दस पहलुओं पर)	अप्रैल, 1986	3,000 अंग्रेजी 2,000 हिंदी
2.	ई.सी.ई. अनुदेशी सामग्री,2 पुस्तिकाएं		
	(क) व्यक्तिगत और सामाजिक विकास	मई, 1986	3,000
	(ख) छोटे बच्चों में सर्जनात्मकता विकास	मई, 1986	3,000
3.	श्रव्य टेप 5 (संख्या में)	सितंबर-अक्तूबर, 1986	
	अनौपचारिक शिक्षा		
4.	स्वैच्छिक संस्थाओं में रत स्रोत व्यक्तियों के अभिविन्यास के लिए सामग्री का विकास	मई, 1986 (साइक्लोस्टाइल)	–
5.	एन.एफ.ई. अनुदेशकों के प्रशिक्षण के लिए नौकरी उन्मुख मॉडल का विकास	फरवरी, 1987 (साइक्लोस्टाइल)	–
6.	भाषा सुमन भाग–2	जुलाई, 1987	5,000
7.	9 शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े राज्यों में मूल्यांकन के प्रयोगाश्रित अध्ययन की 9 रिपोर्टें	जुलाई, 1987	–
8.	9 शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े राज्यों में मूल्यांकन के विवेकी अध्ययन की 9 रिपोर्टें	–वही–	–
9.	9 शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े राज्यों में एन.एफ.ई. के अकादमिक पहलुओं के मूल्यांकन पर एक राष्ट्रीय रिपोर्ट	–वही–	–
10.	पढ़ो और बढ़ो पुस्तक–III	मुद्रणाधीन	
11.	पढ़ो और बढ़ो पुस्तक III की गाइड	–वही–	
12.	पढ़ो और बढ़ो पुस्तक–4	सुलेख के लिए तैयार	
13.	पढ़ो और बढ़ो पुस्तक–4 की गाइड	–वही–	
14.	एन.एफ.ई. बुलेटिन	जून, 1986	–
	खंड–1		–
	खंड–2	सितंबर, 1986	–
	खंड–3	दिसंबर, 1986	–
	खंड–4	मार्च, 1987	–
15.	मापांक 2–10 कुछ और संयुक्त अक्षर पढ़ना-लिखना सीखें (हिंदी)	अप्रैल, 1986	60,000
16.	मापांक 3–10 आओ सीखें 9 तक की संख्या और उनके जोड़ घटाव	जनवरी, 1986	30,000
	पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता		
17.	पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता स्थिति और कार्यान्वियन 1975–84	जनवरी, 1987	3,000

उपर्युक्त प्रकाशनों के अतिरिक्त ई.सी.ई. के अन्तर्गत "व्यक्तिगत और सामाजिक विकास और बच्चों में विकासशील सर्जनात्मकता" भी छापी गई और अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों के मध्य वितरित की गई।

परामर्श

इस विभाग ने ई.सी.ई. क्षेत्र में निम्नलिखित संस्थानों/अभिकरणों को परामर्श प्रदान किया:

1. गृह विज्ञान कालेज, पुणे– स्नातकोत्तर डिप्लोमा कोर्स में ई.सी.ई. अवयवों का निर्धारण
2. एन.आई.पी.सी.सी.डी.– स्कूल-पूर्व शिक्षा
3. आई.सी.एम.आर.–प्रोन्नति में अनुसंधान अध्ययन
4. कम्पूचिया से शिष्टमंडल– भारत में ई.सी.ई. कार्यक्रमों से टीम को अवगत कराया गया।

1986-87

अध्याय 4

समाजविज्ञान एवं मानविकी शिक्षा

स्कूल स्तर पर पाठ्यचर्या के प्रतिपादन और कार्यान्वियन से संबंधित अनुसंधान एवं प्रौद्योगिक अध्ययन, पाठ्यविवरणों, समाजविज्ञान व मानविकी से संबंधित विभिन्न विषय क्षेत्रों की पाठ्यपुस्तकें व अन्य अनुदेशी सामग्रियों का विकास, अध्यापक शिक्षकों, अध्यापकों और स्कूल स्तर पर पाठ्यचर्या के कार्यान्वियन में लगे अन्य कार्मिकों का प्रशिक्षण तथा राज्य/संघशासित क्षेत्र स्तर के अभिकरणों व संस्थाओं के सहयोग से विस्तार एवं प्रसार गतिविधियों का आयोजन समाजविज्ञान एव मानविकी शिक्षा विभाग (डी०ई०एस०एस०एच०) की मुख्य गतिविधियों में से कुछ हैं। विभाग कुछ विशेष परियोजनाओं के कार्यान्वियन में संलग्न रहा है और राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के कार्यान्वियन के लिए केन्द्रीय तकनीकी समन्वयकारी और अनुवीक्षी अभिकरण के रूप में काम आ रहा है।

आलोच्य वर्ष की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यूनेस्को-परियोजना का पूरा होना है जिसकी रिपोर्ट "अंतर्राष्ट्रीय जानकारी और मानव अधिकार की शिक्षा : प्रतिदर्श पाठ्यचर्या और शिक्षण इकाई" शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित हुई है।

विभाग की एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि उपरि प्राथमिक, माध्यमिक और +2 स्तर के लिए पाठ्यचर्या निर्देशिका, वृहत् अध्यापक अभिविन्यास कार्यक्रम के लिए साधन सामग्री, मूल पाठ्यचर्या क्षेत्रों में निदर्शनी सामग्री और "शारीरिक शिक्षा की साधन पुस्तक" का प्रायोगिक संस्करण का विकसित करना है।

पाठ्यचर्या का विकास

परिषद् ने निम्नलिखित क्षेत्रों में उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के लिए पाठ्यचर्या और ब्यौरेवार पाठ्यचर्या विकसित करने के लिए मार्गनिर्देशिका विकसित की है:

1- भाषाएं जिनके अंतर्गत मातृभाषा के रूप में हिंदी (प्राथमिक), मातृभाषा के रूप में हिंदी (उच्च प्राथमिक और माध्यमिक), दूसरी भाषा के रूप में हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत आते हैं,
2- समाज विज्ञान जिसके अंतर्गत इतिहास, भूगोल नागरिक शास्त्र और अर्थशास्त्र आते हैं,
3- कला
4- स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा

+2 स्तर के लिए इतिहास, राजनीति विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र और समाज विज्ञान की पाठ्यचर्या विकसित की गई है।

अनुदेशी सामग्री का विकास

(क) विद्यालय-अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की राष्ट्रीय योजना के लिए साधन-सामग्री

परिषद् ने विद्यालय अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की राष्ट्रीय योजना में भाग लेने वाले अध्यापकों को बांटने के लिए तीन खंड अर्थात् साधन सामग्री भाग-1 (सामान्य), साधन सामग्री भाग-।। (प्राथमिक), और साधन सामग्री भाग-।।। (माध्यमिक) प्रकाशित किया है।

डी.ई.एस.एस.एच. ने निम्नलिखित क्षेत्रों में इन खंडों के माड्यूल बनाए हैं :

1- राष्ट्रीय एकता को बढ़ाना
2- मूल्य शिक्षा
3- स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा
4- कला शिक्षा
5- जनसंख्या शिक्षा
6- पर्यावरण अध्ययन (प्राथमिक)
7- अंग्रेजी का शिक्षण और अधिगम (प्राथमिक)
8- प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा (प्रथम भाषा) शिक्षण
9- जनसंख्या शिक्षा (माध्यमिक)
10- समाज विज्ञान का शिक्षण (माध्यमिक)
11- अंग्रेजी का शिक्षण और अधिगम (माध्यमिक)
12- द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का शिक्षण (माध्यमिक)।

(ख) मूल पाठ्यचर्या क्षेत्रों पर निदर्शन सामग्री

कार्यान्वियन कार्यक्रम 1986 के अंतर्गत 10 मूल पाठ्यचर्या क्षेत्रों पर निदर्शन अनुदेशी पैकेज का निर्माण करने की जिम्मेवारी परिषद् को सौंपी गई है। निम्नलिखित मूल

1986-87

क्षेत्रों पर ग्यारह अनुदेशी पैकेज ये थेः

1- ब्यूटीफुल थिंग्स एराउण्ड अस
2- ऑवर स्ट्रगल फॉर फ्रीडम
3- रेस्पेक्टिंग ऑवर नेशनल सिम्बल्स
4- सेलिब्रेटिंग ऑवर नेशनल फेस्टिवल्स
5- अण्डरस्टैंडिंग ऑवर नेशनल गोल्स
6- नैचुरल रिसोर्सेज एण्ड देयर कंजरवेशन
7- सेविंग द एन्वायरनमेण्ट फ्राम पॉलुशन
8- विमन्स रोल इन इंण्डियन स्ट्रगल्स फॉर इन्डेपेन्डेन्स
9- रिमूवल ऑफ सेक्सिस्ट बायस
10- वैल्यू, बिलीफस एण्ड द फेमिली,
11- मैरज एण्ड फेमिली।

इन पैकेजों को विभिन्न राज्य एजेन्सियों में बांटने के लिए परिषद् इन पैकेजों को एक खंड में प्रकाशित कर रही है। इन पैकेजों को चित्रों सहित अलग-अलग पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित करने का प्रस्ताव है।

पाठ्य पुस्तकों और पूरक रीडरों का विकासः 1986-87 के दौरान विकसित की गई पाठ्य-सामग्री

क्र.स.	शीर्षक	कक्षा	विवरण
1-	समाज विज्ञान : एन्वायरनमेण्टल स्टडीज पार्ट-1 (हिंदी और अंग्रेजी)	3	
2-	इतिहासः टेक्स्ट बुक इन हिस्टरी (हिंदी और अंग्रेजी में)	6	
3-	नागरिक शास्त्रः टेक्स्ट बुक इन सिविक्स (हिंदी और अंग्रेजी में)	6	
4-	भूगोलः टेक्स्ट बुक इन जियोग्राफी (हिंदी और अंग्रेजी में)	6	
5-	समाज विज्ञानः इंडियन सोसाइटी	12	
6-	अर्थशास्त्र		
	1- नेशनल इन्कम एकाउन्टेन्सी	12	
	2- ऐन इन्ट्रोडक्शन टू एकोनामिक थ्योरी	12	
7-	हिंदी (मातृभाषा के रूप में):		
	किशोर भारती भाग-1	6	परिशोधित संस्करण
	संक्षिप्त रामायण		(प्रेस में है)
8-	अंग्रेजी :		
	रीडिंग इन फन टेक्स्ट बुक-।	6	नवोदय विद्यालयों के लिए
	रीडिंग इन फन वर्क बुक-1	6	,,
	रीडिंग इन फन सप्लीमेंटरी रीडर-1	6	,,
	रीडिंग इन फन टेक्स्ट बुक-II	6	,,
	द वेब ऑफ ऑवर लाइफ (कोर कोर्स)	12	,,
	रीडिंग टू लर्न		
	क- मिस्टर मुगर एण्ड मिस्टर स्टेपस		
	ख- एवरेस्ट वेयर द स्नो नेवर मेल्ट्स		
	ग- वेयर इज माई हम्प		
	घ- द शिप ऑफ द डेजर्ट		
	न्यू डॉन रीडर्स टेक्स्ट बुक्स	2 और 3	प्रेस में है
	न्यू डॉन सप्लीमेण्टरी रीडर	2	,,
	न्यू डॉन वर्क बुक	2	,,
9-	संस्कृत पाठ्य पुस्तक	5 और 6	एन.पी.ई., 1986 के अनुसार परिशोधित और
10-	उर्दू पाठ्य पुस्तक	6, 9, 12	जामिया मिलिया
	उर्दू पाठ्य पुस्तक	9 और 11	इस्लामिया, नई
	अन्य उर्दू पाठ्य पुस्तक	1, 2, 3, और 12	दिल्ली द्वारा निधारित सी.बी.एस.ई. द्वारा निधारित

ऊपर उल्लेख की गई अनुदेशी सामग्री के अतिरिक्त कक्षा-6 के लिए एक नई पाठ्य-सामग्री रेनबो सीरिज विकसित की जा रही है। परिषद् ने संस्कृत साहित्य संदर्भ कोष, बाल संस्कृत कोष और सुक्ति सौरभम् को विकसित करने का कार्य भी अपने हाथ में लिया है। कक्षा 12 के लिए परिभाषा सहित श्लोकों की एक श्रव्य सामग्री विकसित की गई और प्रकाशित की गई। कक्षा 12 के लिए परिभाषा सहित श्लोकों की कक्षा 4,5,7,10 और 12 के लिए उर्दू पाठ्य पुस्तकों को मुद्रण के लिए अंतिम रूप दिया गया है।

विद्यालयों में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का शिक्षण

शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने विद्यालयों में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के बारे में अध्यापन कराने के लिए निर्देशिका विकसित करने के लिए एक कार्यकारी दल बनाया था। परिषद् ने "विद्यालयों में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के शिक्षण पर कार्यकारी दल की रिपोर्ट" प्रकाशित की है। डी.ई.एस.एस.एच. ने अपने पाठ्यचर्या एवं पाठ-कार्यक्रमों में प्रासंगिक सिफारिशों का समावेश कर लिया है।

शारीरिक शिक्षा की साधन पुस्तक और स्वास्थ्य शिक्षा पर अध्यापकों के लिए पुस्तिका

कार्यान्वियन कार्यक्रम (पी.ओ.ए.) 1986 के अंतर्गत एक कार्यशाला में, जिसमें

शारीरिक शिक्षा के अध्यापक, अनुशिक्षक, शारीरिक शिक्षा निदेशक और अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया, शारीरिक शिक्षा की साधन पुस्तक का एक प्रायोगिक संस्करण विकसित किया गया। शारीरिक शिक्षा की पुस्तिका के प्रायोगिक संस्करण की पांडुलिपि डी.ई.एस.एस.एच. में तैयार की गई।

पाठ्यचर्या समन्वय: उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा

परिषद् ने '1986 के शुरू में'**प्राथमिक** और माध्यमिक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा' नामक एक प्रलेख प्रकाशित किया था। एन.पी.ई. और पी.ओ.ए. 1986 में उच्चतर माध्यमिक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा विकसित करने की आवश्यकता अनुभव की गई जिससे कि पाठ्यचर्या पुनर्जनन चक्र को पूरा किया जा सके। परिषद् में विकसित किए गए पृष्ठभूमि लेख पर 16-17 फरवरी 1987 को एन.आई.ई., नई दिल्ली में आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में चर्चा की गई। परिषद् ने राष्ट्रीय संगोष्ठी में विकसित "चर्चा लेख" का पुनरीक्षण करने और विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों की राष्ट्रीय स्तर की बैठक में अंतिम रूप में चर्चा करने की दृष्टि से एक उपगमन लेख विकसित करने के लिए विशेषज्ञों का एक-एक कार्यकारी दल का गठन किया है।

अध्यापकों का प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रम

(क) हिंदी में अभिविन्यास पाठ्यक्रम/कार्यशाला

एस.आई.ई., जम्मू और दक्षिण हिंदी प्रचार सभा में हिंदी में दो अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें भाग ले रहे 116 अध्यापकों को हिंदी भाषा और साहित्य का अध्यापन करने की नई प्रविधियों से परिचित कराया गया। एक विद्यार्थी साहित्य कोष के लिए और एक उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए अध्यापक निर्देशिका विकसित करने के लिए दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

(ख) अंग्रेजी के अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम

नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों, केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अध्यापकों, अरुणाचल प्रदेश के अध्यापकों और दिल्ली तथा उसके आस-पास के क्षेत्रों के अध्यापकों के लिए, अंग्रेजी अध्यापकों के लिए अलग-अलग प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

(ग) उर्दू में कार्यशाला

पांडुलिपि को अंतिम रूप देने के लिए केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और सी.आई.आई.एल. मैसूर में चार कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

(घ) कला शिक्षा केन्द्र और कला अध्यापक शिविर

परिषद् ने विभिन्न कला शिक्षा कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए एन. आई.ई. में कला शिक्षा केन्द्र स्थापित किया। इसमें मूर्तिकला/मृतिका प्रतिरूपण तथा मृदभांड कला जैसी कला, पेंटिंग और मुद्रण सर्जनकता, कठपुतली कला और सर्जनात्मक नाटक, सर्जनात्मक फोटोग्राफी, नृत्य और संगीत के कार्यक्रमों की व्यवस्था है। फरवरी और मार्च, 1987 में रविवार के दिन विद्यार्थियों, अध्यापकों और अभिभावकों के लिए सर्जनात्मक सप्ताहांत क्लब भी चालू किए गए। विशेष रूप से कर्नाटक राज्य के अध्यापकों के लिए 20 से 29 दिसम्बर, 1986 तक बंगलौर में एक कला-अध्यापक शिविर आयोजित किया गया' जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों के कुछ अनुभवी अध्यापकों ने भी भाग लिया।

(ङ) नैतिक शिक्षा के मुख्य व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

1 से 9 जून 1986 तक नैनीताल में नैतिक शिक्षा के मुख्य व्यक्तियों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में पैंतीस व्यक्तियों ने भाग लिया।

(च) प्रौढ़ शिक्षा के पर्यवेक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

डी.ई.एस.एस.एच. ने परिषद् द्वारा हरियाणा की ग्रामीण महिलाओं के लिए तैयार किए गए "अनमोल गहना" के संबंध में हरियाणा राज्य के परियोजना अधिकारियों और सहायक परियोजना अधिकारियों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। डी.ई.एस.एस.एच. ने प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में प्रयुक्त होने वाली अनुदेशी सामग्री को तैयार करने में हरियाणा राज्य और मध्य प्रदेश राज्य की सहायता की। मध्य प्रदेश के बिलासपुर मंडल में भी "विद्यादान अभियान" नामक एक कार्यक्रम चलाया गया।

विशेष परियोजनाएं

विभाग सामाजिक विज्ञान और मानविकी के क्षेत्रों में कुछ विशेष परियोजनाओं को लागू करने में भी लगा रहा। 1986-87 के दौरान निम्नलिखित परियोजनाओं के अंतर्गत अनेक कार्यकलाप किए गए।

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना

पाठ्यचर्या विकास

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के अंतर्गत परिषद् ने +2 स्तर की पाठ्यचर्या विकसित की जिसको कि 16 से 22 फरवरी, 1987 तक पुरी में आयोजित की गई एक

1986-87

राष्ट्रीय कार्यशाला में अंतिम रूप दिया गया। पाठ्यचर्या में विषयवार मुख्य एवं विशेष उद्देश्यों का ब्यौरा दिया गया है और जनसंख्या शिक्षा के निम्नलिखित सभी 6 क्षेत्रों की अंतर्वस्तु दी गई है। (क) जनसंख्या गतिकी, (ख) आर्थिक विकास और जनसंख्या, (ग) सामाजिक विकास और जनसंख्या, (घ) स्वास्थ्य पोषण और जनसंख्या, (ङ) परिवार जीवन, जैविक कारक और जनसंख्या और (च) पर्यावरण और जनसंख्या।

8 मे 13 अगस्त, 1986 तक शिमला में प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षण स्तर की पाठ्यचर्या विकसित करने के लिए एक राष्ट्रीय कार्यशाला भी आयोजित की गई।

त्रिमार्गीय पुनरीक्षण समिति की बैठक

त्रिमार्गीय पुनरीक्षण समिति का गठन 30 अक्तूबर, 1986 को किया गया। इस बैठक में यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक, स्थानीय यू.एन.एफ.पी.ए. कार्यालय, नई दिल्ली और मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के भाग ले रहे प्रतिनिधियों ने एन.जी.ई.जी. का पुनरीक्षण किया और भावी कार्य-योजना के लिए मार्गनिर्देशन तथा नए प्रणोद प्रस्तुत किए।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन

परिषद् 1986-87 के दौरान कार्यक्रमों का समन्वयन और मौनियन का कार्य करती रही। इसने राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन एक "मार्ग निर्देशिका" नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की। परिषद् ने राज्य पाठ्यपुस्तकों के प्रतिदर्श मूल्यांकन का कार्यक्रम चलाया। 1986 के दौरान हिंदी में लिखी पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन किया गया। हिंदी में लिखी पाठ्यपुस्तकों के लेखकों और पुनरीक्षकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। अगस्त, 1986 में परिषद् ने विद्यालय पाठ्यपुस्तकों पर आठवें सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में विभिन्न पाठ्यपुस्तक एजेन्सियों के लगभग 70 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में शिक्षा की राष्ट्रीय नीति के अनुसार पाठ्यपुस्तक लिखने के बारे में चर्चा की गई।

1986-87 के दौरान महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, मिजोरम, हरियाणा और आंध्र प्रदेश ने कार्यक्रम के दूसरे चरण के कार्य को पूरा कर लिया। 1986 की शिक्षा की राष्ट्रीय नीति की दृष्टि में होने वाले परिवर्तनों के कारण कुछ राज्यों ने इस कार्यक्रम को या तो बीच में रोक दिया या शुरू ही नहीं किया।

विद्यालयों में संगोष्ठी पाठ-नवीन प्रक्रिया

परिषद् ने विद्यालय कार्यक्रमों में अपनी संगोष्ठी पाठ-नवीन प्रक्रियाओं को जारी रखा। 1986-87 के दौरान पुरस्कार के लिए भारत के 13 राज्यों और संघशासित क्षेत्रों से 37 अध्यापकों को चुना गया। परिषद् ने इन अध्यापकों को 8 से 10 अप्रैल, 1987 तक आयोजित की गई तीन दिन की कार्यशाला में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जिसमें अध्यापकों द्वारा प्रस्तुत किए गए पत्रों और लेखों पर चर्चा हुई। इस अवसर पर ही प्रत्येक अध्यापक को 1000/- रुपए का नकद पुरस्कार और योग्यता प्रमाण-पत्र दिया गया।

बाल साहित्य पर 24 वीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता हर दो वर्ष बाद आयोजित की जाती है। बाल साहित्य पर 24 वीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता 1986-87 में आयोजित की गई। दो आयु वर्गों 5-8 वर्ष और 9-15 वर्ष के बच्चों से देश की सत्रह भाषाओं में प्रविष्टियां मांगी गईं। 16 भाषाओं में लगभग चार सौ प्रविष्टियां प्राप्त हुईं- कश्मीरी भाषा में कोई भी प्रविष्टि प्राप्त नहीं हुई। छत्तीस पुरस्कारों के परिणामों की घोषणा अभी होनी बाकी है।

पढ़ें और सीखें - सीखने के लिए पढ़ना - हिंदी परियोजना

बच्चों, विशेष रूप से 11 से 14 आयु वर्ग के बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि पैदा करने और उन्हें नई-नई जानकारी उपलब्ध कराने की दृष्टि से "सीखने के लिए पढ़ना" परियोजना चलायी गई है। इस परियोजना के अंतर्गत विभाग ने निम्नलिखित विषयों पर पुस्तक विकसित करने का कार्य अपने हाथ में लिया है:

1- बाल पुस्तक
2- कथा साहित्य, लोकवार्ता आदि
3- जीवनी
4- अपने देश और विश्व की जानकारी
5- मूल्य अभिविन्यास
6- विज्ञान की पुस्तकें
7- समाज विज्ञान की पुस्तकें

अभी तक प्रकाशन के लिए 50 पुस्तकें भेजी जा चुकी हैं।

विभाग का अगले दो वर्ष में लगभग 200 पुस्तक प्रकाशित करने का प्रस्ताव है। इनमें से एक-तिहाई पुस्तकें विज्ञान के विषयों पर होंगी।

मन, मस्तिष्क और चेतना पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में बच्चों के शरीर और मस्तिष्क में समान रूप से विकास लाने की दृष्टि से सभी स्कूली बच्चों के लिए योग-शिक्षण पर अधिक बल दिया गया है। समाज विज्ञान और मानविकी में शिक्षा विभाग ने 25 से 27 फरवरी, 1987 तक मन, मस्तिष्क और चेतना पर तीन दिन की एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी में परिषद् के अनेक संकाय सदस्यों के अतिरिक्त एन. आई.एम.एच.ए.एन.एस. बंगलौर, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर, भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली, कृष्णामूर्ति फाउन्डेशन, भारत और जवाहरलाल नेहरू

विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के वैज्ञानिकों और विद्वानों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी की रिपोर्ट हाल ही में प्रकाशित होने वाली है।

अन्य प्रकाशन

1986-87 के दौरान पाठ्यचर्या बुलेटिन के दो अंक प्रकाशित होने के अतिरिक्त जून 1986 में अर्ध मासिक पत्रिका "पापुलेशन एजूकेशन न्यूजलेटर" का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ।

परामर्श

पाठ्यक्रम तैयार करने और संबंधित सामग्री विकसित करने में सी.बी.एस.ई., ओपन स्कूल और इंदिरा गांधी ओपन विश्वविद्यालय को सहायता दी गई।

1986-87

अध्याय 5

विज्ञान और गणित में शिक्षा

विद्यालय स्तर पर विज्ञान और गणित की शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाना विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) के लिए एक चिन्ता का विषय है। डी.ई.एस.एम. विभिन्न कार्यकलाप करता रहा है जैसेः पाठ्यचर्या सामग्री का विकास, अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों का प्रशिक्षण, विज्ञान और गणित शिक्षा से संबद्ध विस्तार कार्यकलाप। यह विद्यालय में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन (क्लास) परियोजना को लागू करने में राष्ट्रीय स्तर की समन्वयकारी और मॉनिटरन एजेन्सी के रूप में और अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना (ए.आई.एस.ई.पी.) और अखिल भारतीय गणित शिक्षा परियोजना (ए.आई.एम.ई.पी.) के लिए एक मुख्य एजेन्सी के रूप में कार्य करता है। यह विभाग विज्ञान और गणित में पाठ-सामग्री तैयार करने और पाठ्यचर्या के पुनरीक्षण में विभिन्न राज्यों की सहायता करता रहा है और विज्ञान तथा गणित शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में संस्थाओं और संगठनों की सहायता करता रहा है।

डी.ई.एस.एम. विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को परामर्श की सुविधा उपलब्ध कराता रहा है। नई शिक्षा नीति लागू करने में यह एक सक्रिय और महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 1986-87 वर्ष में किए गए महत्वपूर्ण कार्यकलाप निम्नलिखित हैंः

विकास कार्यक्रम

विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और प्रवर माध्यमिक कक्षाओं के लिए समेकित विज्ञान, भौतिकी, रसायन , जैविकी और गणित में नई पाठ्यचर्या विकसित करने तथा अंतिम रूप देने के लिए और छठी कक्षा के लिए विज्ञान और गणित की नई पाठ्य पुस्तकें विकसित करने के लिए अनेक कार्यशालाएं आयोजित की हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और परिषद् द्वारा विकसित पाठ्यचर्या ढांचे को ध्यान में रखकर छठी कक्षा के लिए विज्ञान और गणित की प्रश्न पुस्तिका की अध्यापक गाइड भी विकसित की गई। इस वर्ष परिषद् विज्ञान और गणित में अनुदेशी सामग्री विकसित करने के लिए प्रधान मंत्री, विज्ञान सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर सी.एन.आर. राव की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया। प्रोफेसर सी.एन.आर. राव ने समेकित विज्ञान (7-10), गणित (6-12), भौतिकी (11-12), रसायन (11-12) और जैविकी (11-12) में पांच उपसमितियों का गठन किया। समेकित विज्ञान की समिति को विज्ञान (7-10) और गणित (7-12) की अनुदेशी सामग्री विकसित करने का कार्य सौंपा गया। भौतिकी, रसायन और जैविकी की समितियों को ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तक और अन्य संबंधित सामग्री विकसित करने का काम सौंपा गया। पाठ्यचर्या को अंतिम रूप देने, लेखन की योजना बनाने और अंतिम सामग्री विकसित करने के लिए विभिन्न विषय-समितियों ने अनेक बैठकें कीं। इन समितियों के गठन का उल्लेख नीचे किया गया हैः

विषय	अध्यक्ष	कक्षाएं जिनके लिए सामग्री विकसित की जाएगी
समेकित विज्ञान	डा० डी. वालासुब्रमनियम, संयुक्त निदेशक सेलुलर माइक्रोबायोलॉजी केन्द्र, हैदराबाद	7 - 10
गणित	प्रो० जे.एन. कपूर	7 - 8
	प्रो० यू.एन. सिंह	9 - 10
	प्रो० इजहार हुसैन (सार्व अध्यक्ष प्रो० यू.एन. सिंह)	11 - 12
रसायन	प्रो० सी.एन.आर. राव, निदेशक, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर	11 - 12
भौतिकी	प्रो० बी.जी. भिडे, कुलपति, पुणे विश्वविद्यालय	11 - 12
जैविकी	प्रो० मोहन राम, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	11 -12

विभाग ने विशाल अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के माड्यूल विकसित करने के लिए अध्यापक शिक्षा – विभाग के साथ और प्राथमिक विद्यालयों के लिए विज्ञान और गणित में पाठ्यचर्या विकसित करने के लिए पूर्व विद्यालय और प्रारंभिक शिक्षा विभाग के साथ मिलकर कार्य किया है। कम्प्यूटर साक्षरता माला (क्लास परियोजना) के अंतर्गत वीडियो टेप कार्यक्रम विकसित किए गए। अध्यापक प्रशिक्षण की एक दीपिका भी शुरू की गई है जिसमें कार्यकलाप के विवरण सारणी-1 में दर्शाए गए हैं।

1986-87

सारणी-1

कार्यशाला/संगोष्ठी

कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या
नवोदय विद्यालय की छठी कक्षा के लिए विज्ञान में अधिगम माड्यूल विकसित करने पर कार्यशाला	28 अप्रैल से 7 मई 1986 तक	ओसिस स्कूल, हैदराबाद	27
नवोदय विद्यालय की सातवीं कक्षा के लिए विज्ञान में स्व-अधिगम माड्यूल विकसित करने पर कार्यशाला	18 से 27 जून, 1986	विज्ञान केंद्र, शिक्षा निदेशालय, करोलबाग, नई दिल्ली	33
नवोदय विद्यालय की छठी कक्षा के लिए गणित में स्व-अधिगम माड्यूल विकसित करने पर कार्यशाला	20 से 29 मई, 1986	एटोमिक इनर्जी सेन्ट्रल स्कूल, नरोरा (उ.प्र.)	14
छठी कक्षा की गणित की पाठ्यपुस्तक के लिए पांडुलिपि विकसित करने पर कार्यशाला	17 से 23 सितंबर, 1986	एन.आई.ई.	14
छठी कक्षा की गणित की पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि के पुनरीक्षण पर कार्यशाला	17 से 21 नवंबर, 1986	एन.आई.ई.	14
+2 स्तर की भौतिकी पाठ्यचर्या पर कार्यशाला	7 से 8 जनवरी, 1987	पुणे विश्वविद्यालय	7
छठी कक्षा के विज्ञान की पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि विकसित करने पर कार्यशाला	25 अगस्त से 8 सितंबर 1986 तक	विक्रम साराभाई कम्युनिटी साइन्स सेंटर, अहमदाबाद	7
नवीं, कक्षा के रसायन में अनुदेश का अनुक्रमण और ठोस सामग्री विकसित करने पर कार्यशाला	9 से 13 मार्च, 1987	एन.आई.ई.	5
नवीं, दसवीं कक्षा के लिए विज्ञान में पाठ्यचर्या विकसित करने पर कार्यशाला	15 से 24 सितंबर, 1986	आर.सी.ई., मैसूर	21
नई शिक्षा नीति की दृष्टि से छठी से दसवीं कक्षा के लिए गणित की पाठ्यचर्या को अंतिम रूप देने पर कार्यशाला	27 से 31 अक्तूबर, 1986	एन.आई.ई. परिसर, नई दिल्ली	14
ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के लिए गणित की पाठ्यचर्या को अंतिम रूप देने पर कार्यशाला	27 से 31 अक्तूबर, 1986	-वही-	23
छठी कक्षा की विज्ञान पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि को अंतिम रूप देने पर राष्ट्रीय कार्यशाला	11 से 14 नवंबर, 1986	दिल्ली पब्लिक स्कूल, दिल्ली	25
ग्यारहवीं कक्षा के लिए रसायन की पाठ्यपुस्तक लिखने पर कार्यशाला	10 से 17 नवंबर, 1986	भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर	8
छठी कक्षा की विज्ञान पाठ्यपुस्तक की अध्यापक पुस्तिका विकसित करने पर कार्यशाला	2 से 11 जनवरी, 1987	एन.आई.ई., नई दिल्ली	20
+2 स्तर के अनुदेशी पैकेज का नियोजन तैयार करने के लिए भौतिकी के लेखन दल की बैठक	23 से 21 जनवरी, 1987	एन.आई.ई.	14
अनुदेशी पैकेज के नियोजन तैयार करने के लिए भौतिकी के लेखन दल की बैठक	21 से 22 फरवरी, 1987	भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर	7
छठी कक्षा की नई गणित पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि के पुनरीक्षण पर कार्यशाला	29 जनवरी से 4 फरवरी 1987 तक	कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता	14
छठी कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेज का विकास	6 से 10 जनवरी, 1987	विक्रम साराभाई कम्युनिटी साइन्स सेंटर, अहमदाबाद	14
छठी कक्षा के लिए गणित में प्रश्न-पुस्तक विकसित करने पर कार्यशाला	-वही-	-वही-	13
छठी कक्षा की गणित की पाठ्यपुस्तक का हिंदी संस्करण विकसित करने पर कार्यशाला	26 से 30 नवंबर, 1987	एन.आई.ई.	10
प्रवर माध्यमिक स्तर के लिए रसायन पाठ्यचर्या विकसित करने पर कार्यशाला	27 सितंबर से 10 अक्तूबर, 1986	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय	27
छठी कक्षा के लिए विज्ञान में समेकित विज्ञान पाठ्यपुस्तक का विकास (दूसरा चरण)	27 से 30 अक्तूबर, 1986	एन.आई.ई.	5
प्रो० सी.एन.आर. राव की अध्यक्षता में विज्ञान और गणित की पुस्तकों का निर्माण	23 अगस्त, 1986	भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर	
विज्ञान, गणित शिक्षा में सामान्य सलाहकार परिषद् की दूसरी बैठक	18 अक्तूबर, 1986	एन.जी.आर.आई., हैदराबाद	10
आठवीं से दसवीं कक्षाओं के लिए समेकित विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों के लेखन दल की बैठक	24 से 25 नवंबर, 1986	एन.जी.आर.आई., हैदराबाद	8
ग्यारहवीं कक्षा की जैविकी-पाठ्यपुस्तक की लेखन दल की बैठक	10 से 11 जनवरी, 1987	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	10
छठी कक्षा के लिए विज्ञान की अध्यापक-गाइड को अंतिम रूप देने पर कार्यशाला	25 से 30 मार्च, 1987	एन.आई.ई.	6

जोड़: 370

ऊपर उल्लेख की गई कार्यशालाओं बैठकों के अतिरिक्त एक और कार्यशाला नई पाठ्यचर्या के अनुसार नवीं और दसवीं कक्षा की भौतिकी (खगोलिकी) की निदर्शन सामग्री के विकास पर आयोजित की गई।

1986-87

प्रशिक्षण कार्यक्रम

परिषद् ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में अध्यापकों को अभिविन्यस्त करने के लिए बड़े पैमाने पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का कार्य अपने हाथ में लिया। विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग ने विज्ञान और गणित शिक्षा से संबद्ध अपने कार्यक्रमों में अध्यापकों का प्रशिक्षण करने के लिए माड्यूल विकसित किए और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने के लिए अध्यापक शिक्षा-विभाग और क्षेत्रीय शिक्षा कालेज का सहयोग लिया। विभाग ने + 2 स्तर के अपने अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में हरियाणा, पंजाब और अरुणाचल प्रदेश की सहायता की। डी.ई.एस.एम. द्वारा आयोजित विज्ञान/गणित के अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के विभिन्न पाठ्यक्रमों का उल्लेख सारणी-2 में किया गया है।

सारणी–2

प्रशिक्षण/अभिविन्यास पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या
"क्लास" परियोजना पर अध्यापकों और परिषद् के स्टाफ के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	2–13 जून 1986	एन.आई.ई.	10
"क्लास" परियोजना के अधीन केन्द्रों के साधन व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	21–25 अप्रैल, 1986	–वही–	40
"क्लास" परियोजना के अधीन केन्द्रों के साधन व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	28 अप्रैल से 2 मई, 1987 तक	एन.आई.ई.	40
क्लास परियोजना के अधीन अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	6 जून, 86 से 4 जुलाई, 1986 तक	–वही–	24
–वही–	4 जुलाई से 13 जुलाई, 1986 तक	वेल्हम ब्यायज स्कूल, देहरादून	20
ए.पी.ई.आई.डी. कार्यक्रम के अंतर्गत अध्यापन-अधिगम सामग्री के निर्माण के के लिए राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला	2 से 11 सितंबर, 1986	एन.आई.ई.	14
"क्लास" परियोजना में नए विद्यालयों के लिए अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	15 दिसंबर 86 से 6 जनवरी 87 तक	–वही–	33
परिषद् के पुस्तकालय संकाय के सदस्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	9–13 फरवरी, 1987	–वही–	17
कम्प्यूटर की सहायता से भाषा सीखने पर (ब्रिटिश काउन्सिल के सहयोग से) कार्यशाला	17–19 फरवरी 1987	–वही–	20
ढाका, बंगलादेश में भारत के उच्चायोग से संलग्न विद्यालयों के अध्यापकों का प्रशिक्षण	26–31 जुलाई, 86	भारतीय उच्चायोग बंगलादेश	8
		कुल जोड़:	234

ऊपर उल्लेख किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम के अतिरिक्त डी.ई.एस.एम. ने राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की एजेन्सियों द्वारा, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा, एन.आई.ई. के विभागों द्वारा और परिषद् के क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी सहायता उपलब्ध करायी है। इन कार्यक्रमों की सूची नीचे दी गई है:

'क' राज्यों के कार्यक्रम

(1)	एन.ई.सी.–1000 तंत्र के प्रयोग और अनुप्रयोग	राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, नई दिल्ली
(2)	रसायन के अध्यापकों का अभिविन्यास	स्टील अथारिटी स्कूल, राउरकेला
(3)	+ 2 स्तर की भौतिकी के अध्यापकों का अभिविन्यास	गवर्नमेंट इन-सर्विस टीचर्स ट्रेनिंग सेन्टर, जालन्धर
(4)	उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों का अभिविन्यास	एस.आई.ई. गुड़गाँव, (हरियाणा)
(5)	गणित के अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम	एस.आई.ई., दिल्ली
(6)	भौतिकी, रसायन, गणित और जैविकी के +2 स्तर के अध्यापकों का अभिविन्यास	नाभा (हिमाचल प्रदेश)
(7)	विज्ञान शिक्षा में अध्यापकों का अभिविन्यास	विवेकानंद केन्द्र शिक्षा प्रसार विद्यालय, जयरामपुर (अरुणाचल प्रदेश)
(8)	विद्यालय अध्यापकों के लिए उपकरणों और सहायता साधनों की आशुक्रिया पर विज्ञान और गणित के अध्यापकों का अभिविन्यास	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
(9)	"एपल"–2 कम्प्यूटरों के प्रचालन पर दो कार्यशालाएं	राबा कन्टेल
(10)	7 फ्रेंच कम्प्यूटर के प्रचालन पर कार्यशाला	एसोशिएटेड इलेक्ट्रानिक्स रिसोर्स डेवलेपमेंट

'ख' अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियां

(11)	ए.आई.एस.ई.पी. परियोजना के अंतर्गत प्रशिक्षणोत्तर कार्यशाला की योजना बैठक	ए.आई.एस.ई.पी.
(12)	प्रेसीडेन्सी कालेज, कलकत्ता में ए.आई.एस.ई.पी. प्रशिक्षणोत्तर कार्यशाला	–वही–

(13)	विकासशील विवृत सक्षमता में विज्ञान के अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों को शिक्षा जारी रखने पर यूनेस्को की सहायता से उन्नत स्तर की कार्यशाला	यूनेस्को

'ग' परिषद् के अन्य विभागों के कार्यक्रम

(14)	जैविकी के प्रयोगशाला उपकरणों के प्रयोग और रख-रखाव की साधारण विधियों पर अभिविन्यास कार्यक्रम	एफ.ए. कलकत्ता
(15)	एस.आई.ई. अरुणाचल प्रदेश में अध्यापकों के सेवा-कालीन प्रशिक्षण की राष्ट्रीय योजना	डी.टी.ई.एस.ई.ई. एस,एन.आई.ई.
(16)	नाहर, अंबाला, रोहतक, चण्डीगढ़ और बिहार में राष्ट्रीय अध्यापक अभिविन्यास शिविर	–वही–
(17)	राष्ट्रीय शिक्षा-नीति 1986 पर मुख्य व्यक्तियों का प्रशिक्षण और अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों तथा एस.सी.ई.आर.टी., शिलांग में बड़े पैमाने पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम।	–वही–

विस्तार कार्यकलाप

विभाग ने गुवाहाटी (असम) में पंद्रहवीं राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की। इसका उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने किया। हर रोज लगभग 20,000 लोगों ने इस प्रदर्शनी को देखा। यूनेस्को- ए.पी.ई.आई.डी. की सहायता से विभाग ने विद्यालयेत्तर विज्ञान कार्यकलाप, खुली सक्षमता और जैविकी के शिक्षण उपकरण की प्रयोगशाला तकनीक और रख-रखाव पर तीन कार्यशालाओं, दो अंतर्राष्ट्रीय और एक राष्ट्रीय का आयोजन किया। विभाग ने नई शिक्षा नीति के अंतर्गत, जिनमें गैर सरकारी स्वैच्छिक संगठन और सरकारी संगठन शामिल हैं, विज्ञान और गणित शिक्षा को लागू करने पर संगोष्ठी आयोजित की। विस्तार कार्यकलाप के ब्यौरे सारणी–3 में दिए गए हैं।

सारणी–3

1986–87 वर्ष में डी.ई.एस.एम. के विस्तार कार्यकलाप

कार्यक्रम	तारीख	स्थान
नियोजन बैठक	25 अप्रैल, 1986	चिल्ड्रेन रिसोर्स सेंटर, आर.के. पुरम, नई दिल्ली
डी.ई.एस.एम. द्वारा विकसित बहुउद्देशीय बैरोमीटर सहित कुछ वैज्ञानिक उपकरणों का मानकीकरण	24–25 अप्रैल, 86	सी.एस.आई.ओ. चण्डीगढ़ और आई.एस.आई, नई दिल्ली
द्वितीय आई.टी.टी. सम्मेलन में परिषद् में विकसित लागत प्रभावी उपकरण पर प्रस्तुत किया गया लेख	4–6 मई, 1986	अलगप्पा विश्वविद्यालय
विद्यालयेत्तर विज्ञान के कार्यकलाप	27 मई, 1986	डेविड हरे ट्रेनिंग कालेज, कलकत्ता
शैक्षिक नवीन प्रक्रिया पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	1 से 5 जुलाई, 1986	आर.सी.ई., भोपाल
गैर सरकारी और सरकारी एजेन्सियों की सहायता से विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम लागू करने पर कार्यशाला	25 से 28 जुलाई, जुलाई, 1986	डी.ई.एस.एम. (एन.सी.ई.आर.टी.)
राज्य विज्ञान प्रदर्शनी, प्रदर्शों का निर्णय	23 नवंबर, 1986	शिक्षा निदेशालय, दिल्ली
स्वास्थ्य व्यावसायिओं के प्रशिक्षण में साधन-सामग्री के अधिगम पर कार्यशाला	24 से 25 नवंबर, 1986	राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी, दिल्ली
जैविकी में ई.टी.वी. के लिए पाठ्यचर्या का विकास	2 मार्च, 1987	शिक्षा निदेशालय, दिल्ली
भारत की खगोलिकी संघ की वार्षिक बैठक	7 से 9 दिसंबर	भारतीय तारा भौतिकी संस्थान, बंगलौर
राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी	17 से 24 नवंबर, 1986	गुवाहाटी
विद्यालय शिक्षा में रुचि लेने वाले खगोलिकीविदों की बैठक	10 दिसंबर, 1986	भारतीय तारा भौतिकी संस्थान, बंगलौर
विवृत विद्यालयों के लिए भौतिकी में +2 स्तर के पाठों के लिए लेखकों की नियोजन बैठक	10 से 12 दिसंबर, 1986	भौतिकी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
गणित में शिक्षण सहायता साधनों और प्रदर्शन प्रयोगों में नवीन प्रक्रियाओं पर कार्यशाला	सितंबर, 1986	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
गुजरात राज्य पाठ्यपुस्तक परिषद्, गांधी-नगर द्वारा परिषद् की छठी कक्षा की गणित और विज्ञान की पुस्तकों को अपनाने/अनुकूलन करने की बैठक	मार्च 1986	गुजरात राज्य पाठ्यपुस्तक परिषद्, गांधीनगर (गुजरात)
एस.आई.ई. कोहिमा, नागालैण्ड द्वारा प्राथमिक कक्षाओं के लिए गणित की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण	अगस्त, 1986	एस.आई.ई., कोहिमा

परामर्श

डी.ई.एस.एम. द्वारा उपलब्ध कराए गए परामर्श के ब्यौरे सारणी–4 में दिए गए हैं।

सारणी–4

1986–87 के दौरान डी.ई.एस.एम. द्वारा उपलब्ध कराया गया परामर्श

ए.पी.ई.आई.डी. यूनेस्को,	26 नवंबर से 3 दिसंबर,	खुली सक्षमता विकसित करने के लिए

बैंकाक	1986	विज्ञान के अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों की शिक्षा जारी रखने पर राष्ट्रीय कार्यशाला
-वही-	15-24 दिसंबर, 1986	जैविकी शिक्षण उपकरण के रख-रखाव और प्रयोगशाला तकनीक पर क्षेत्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला
ए.पी.ई.आई.डी.	20-23 जनवरी, 1987	ए.पी.ई.आई.डी. की कार्य योजना के संदर्भ में दक्षिण एशिया के देशों का उप-क्षेत्रीय सम्मेलन
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय	2-12 सितंबर, 1986	माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए उपकरण और सहायता साधनों की आशुक्रिया पर विज्ञान और गणित के अध्यापकों का अभिविन्यास

प्रकाशन

सारणी-5

1986-87 में डी.ई.एस.एम. द्वारा प्रकाशित किए गए प्रकाशन

शीर्षक	प्रकाशन मास
प्रथम दस वर्ष के विद्यालय की पढ़ाई में विज्ञान की शिक्षा-उच्च-प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के लिए मार्गदर्शन	जून 1986
कार्यक्रम पर विज्ञान-शिक्षा को लागू करने पर आयोजित की गई कार्यशाला की रिपोर्ट	जून 1986
विद्यालयेतर विज्ञान कार्यकलापों से संबद्ध मुख्य कार्मिकों और युवा व्यक्तियों के विस्तार कार्य पर आयोजित की गई क्षेत्रीय कार्यशाला की रिपोर्ट	अक्तूबर 1986
खुली सक्षमता विकसित करने के लिए विज्ञान के अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों की शिक्षा जारी रखने पर आयोजित की गई उन्नत स्तर की राष्ट्रीय रिपोर्ट	दिसंबर 1986
जैविकी शिक्षण उपकरण के रख-रखाव और प्रयोगशाला तकनीक पर आयोजित की गई क्षेत्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला की रिपोर्ट	दिसंबर 1986
ए.पी.ई.आई.डी. की कार्य योजना के संदर्भ में दक्षिण एशियाई देशों के उप-क्षेत्रीय सम्मेलन में प्रोफेसर बी. गांगुली द्वारा सभी के लिए विज्ञान सहित विज्ञान-शिक्षा पर प्रस्तुत किया गया लेख	जनवरी 1987

आलोच्य वर्ष में ऊपर उल्लेख किए गए प्रकाशनों के अतिरिक्त "स्कूल साइंस" नाम की पत्रिका भी प्रकाशित की गई।

विद्यालयों के लिए विज्ञान उपकरण

कार्यशाला विभाग (डब्लू.डी.) विभिन्न शिक्षा स्तरों के लिए विज्ञान किट, इलेक्ट्रॉनिक्स किट, और औजार किट विकसित करने में लगा रहा है। इस विभाग के डिजाइन एवं विकास अनुभाग, मशीन शोप, फिटिंग और शीट धातु, गर्म धातु अनुभाग, पेंटिंग, इलेक्ट्रोप्लेटिंग, बढ़ईगिरी, प्रेस औजार, बिजली तथा इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और एकत्रण तथा प्रेषण अनुभाग जैसे तकनीकी अनुभाग हैं। इनके अतिरिक्त इस विभाग में भंडार और खरीद अनुभाग भी हैं। यह विभाग गर्म और ठंडे मौसम के उपकरणों को खरीदने और उनका रख-रखाव करने का काम करता है और साथ ही यह विभाग परिषद् के लिए वाहनों के खरीद-फरोख्त का काम भी करता है। इस विभाग को विज्ञान इलेक्ट्रॉनिक्स किट के डिजाइन विकास और उत्पादन में प्रशिक्षण देने के लिए यूनेस्को, यूनीसेफ आदि जैसी अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों से मान्यता प्राप्त हुई है। यह विभाग ऊपर उल्लेख किए गए क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों, अन्य देशों, राज्यों और संघशासित प्रदेशों के शिक्षुओं और कार्मिकों को प्रशिक्षित करता रहा है। यह विज्ञान क्लब में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता है और राज्यों/संघशासित प्रदेशों को अपनी विशेषज्ञता उपलब्ध कराता है। इन्डो-एफ. आर. जी. परियोजना के अंतर्गत यह विभाग उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के प्राथमिक और मिडिल स्कूल के स्तर पर विज्ञान-शिक्षा में सुधार लाने के उद्देश्य से इलाहाबाद और भोपाल में कार्यशालाएँ लगाने में लगा रहा है।

1986-87 में किए गए अनुसंधान और विकास कार्यकलाप

कार्यशाला विभाग के अनुसंधान और विकास कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

- पुराने किटों में सुधार।
- एक नया प्राथमिक विज्ञान किट तैयार किया जा रहा है जो कि पाठ्यचर्या में हुए परिवर्तन के लिए उपर्युक्त हो।
- एक प्रदर्शनी व्यवस्था स्थापित की गई है जिससे कि परिषद् के कार्यकलापों की जानकारी एक स्थान पर हो सके।
- 'ऑपरेशन ब्लेकबोर्ड' की आवश्यकता के अनुसार एक मिनी टूल किट बनायी गई है और इस पर एक पुस्तक प्रकाशित की गई है।

प्रशिक्षण

यह विभाग विज्ञान और इलेक्ट्रॉनिक्स के किटों के विकास और उत्पादन के क्षेत्र में यूनेस्को द्वारा भेजे गए प्रशिक्षणार्थियों को नियमित रूप से प्रशिक्षित करता रहा है और शिक्षक अधिनियम 1961 के अधीन शिक्षुकों को प्रशिक्षण देना इस विभाग का नियमित कार्यकलाप रहा है।

1986-87

विकास संगोष्ठियाँ

(क) नवंबर 1986 में इण्डो-एफ.आर.जी. परियोजना को लागू करने की युक्ति पर जेड.ओ.पी.पी. संगोष्ठी।
(ख) दिसम्बर 1986 में प्राथमिक विज्ञान के किट का विकास।

विस्तार

यह विभाग परिषद् के परिसर में और उसके बाहर परिषद् के कार्यकलापों/प्रदर्शनियों का आयोजन करता रहा है। प्रदर्शनी के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेने के अतिरिक्त इस विभाग ने राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी में परिषद् की सामग्रियों को प्रदर्शित करने की भी व्यवस्था की थी।

परामर्श

यह विभाग इण्डो-एफ.आर.जी. परियोजना के अंतर्गत भोपाल (मध्यप्रदेश) और इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में विज्ञान और शिक्षा के किटों की कार्यशालाओं को स्थापित करने के लिए मशीनों, औज़ारों और उपकरणों को पहचानने में सहायता कर रहा है।

उत्पादन और प्रसार

1986-87 के दौरान बनाए गए किटों और विभिन्न राज्यों में भेजे गए किटों के ब्यौरे निम्नलिखित हैं:

1-	प्राथमिक विज्ञान के किट	1,383
2-	समेकित विज्ञान के किट	76
3-	विज्ञान क्लब के किट	102

प्रकाशन

1986-87 के दौरान शैक्षिक क्षेत्रों में निम्नलिखित लेख और पत्र परिचालित किए गए:

(क) सूचना टेक्नोलॉजी।
(ख) विज्ञान शिक्षा उपकरण का विकास।
(ग) तंत्र का दृष्टिकोण।
(घ) विद्यालयों में तकनीकी शिक्षा के प्रति जागरूकता।
(ङ) विद्यालयों में इलेक्ट्रॉनिक्स शिक्षा के प्रति जागरूकता।

1986-87

अध्याय 6

शिक्षा का व्यावसायीकरण

शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.) दो महत्वपूर्ण योजनाओं (क) उच्च माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा, (ख) सामान्य शिक्षा के अनिवार्य अंग के रूप में कार्यानुभव के माध्यम से देश में कार्य शिक्षा की गुणवत्ता को उन्नत करने के कार्य में रत है। इस मिशन को कार्य शिक्षा के विभिन्न तथ्यों जिनका व्यापक रूप से शैक्षिक प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ता है, को ध्यान में रखना होता है।

शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग के विभिन्न कार्यक्रम जिनमें विकास, विस्तार, प्रशिक्षण, अनुसंधान और परामर्श कार्य शामिल हैं, 1986–87 में लिए गये और वे निम्न प्रकार से हैं:

प्रशिक्षण

इस विभाग ने व्यापार और वाणिज्य (2) प्रौद्योगिकी (2), कृषि (1) और शिक्षाशास्त्र (1) में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। ये तालिका–1 में नीचे उल्लिखित हैं:

तालिका–1

1986–87 में किये गये शिक्षा व्यावसायीकरण संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण

पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
प्रौद्योगिकी विद्युत उपकरणों की मरम्मत और रखरखाव में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के अप्रशिक्षित अध्यापकों हेतु शिक्षाशास्त्र में अल्पकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	15 मई से 4 जून, 1986	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर	45
बैंकिंग में अल्पकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	16 से 30 मई, 1986	एम.ई.एस. विज्ञान कालेज, मालेश्वरम, बंगलौर	27
वाणिज्य विषय कार्यालय सचिवता में अध्यापकों के लिए अल्पकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	2 से 29 जून, 1986	राजकीय महिला जूनियर कालेज नामपल्ली, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)	25
इलैक्ट्रानिक सेवाओं में अल्पकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	10 से 25 जून, 1986	रूपरल कालेज, बंबई	15
मछली पालन में अल्पकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	12 जून से 1 जुलाई 1986	सी.आई.ई.एफ. ई.एफ.डब्ल्यू.एफ. एफ. बालमद्रपुरम (आंध्र प्रदेश)	10
यांत्रिक [illegible] अल्पकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	21 से 30 जून, 1986	आई.टी.आई., औंध पुणे	26

विस्तार

इस विभाग ने 5 दिनों की अवधि के 9 अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। राज्यों के मूल कार्मिकों,जिन्होंने पहले ही से +2 स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा ले रखी है, उनके लिए शिक्षा व्यावसायीकरण पर 6 अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किये गये। इससे मध्यप्रदेश, मणिपुर, गोवा, दमन और दीव, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश के 220 मूल व्यक्तियों को लाभ हुआ। जिला व्यावसायिक सर्वेक्षण करने के लिए मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा और बिहार के लगभग 40 मूल व्यक्तियों को अभिविन्यस्त करने के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके पश्चात् कार्यानुभव क्षेत्र में मूल व्यक्तियों के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किये गये। राजस्थान और मेघालय के 120 मूल व्यक्तियों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया। विस्तार कार्यक्रमों के विवरण तालिका-2 में दिये हैं।

तालिका-2

विस्तार कार्यक्रमों के विवरण

पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
राजस्थान के मूल व्यक्तियों के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. और सामुदायिक सेवाओं में अभि-विन्यास कार्यक्रम	18 से 22 अप्रैल, 1986 1986	सम्मर हायर सेकेंड्री स्कूल मानडर, जोधपुर (राजस्थान)	30
शिक्षा व्यावसायीकरण पर मध्य-प्रदेश के मूल कार्मिकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	6 से 9 सितंबर, 1986	राजकीय शिक्षा कालेज, खंडवा (मध्यप्रदेश)	49
गोवा के मूल व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यावसायीकरण पर अभि-विन्यास कार्यक्रम	26 से 29 सितंबर, 1986	राजकीय पालिटैक्नीक, पणजी (गोवा)	41
आंध्र प्रदेश के प्रिंसिपलों के लिए शिक्षा व्यावसायीकरण में अभि-विन्यास कार्यक्रम	16 से 18 दिसंबर, 1986	ए.पी. बोर्ड आफ इंटरमीडिएट एजूकेशन, हैदराबाद	50
मणिपुर के मूल व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यावसायीकरण में अभि-विन्यास कार्यक्रम	9 से 11 जनवरी, 1987	बोर्ड आफ सेकेंड्री एजूकेशन, मणिपुर, इम्फाल	21
उ.प्र. में +2 स्तर पर चल रहे गृहविज्ञान आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम के स्कूलों के प्रिंसिपलों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	3 से 6 फरवरी, 1987	रीजनल बोर्ड आफ सेकेंड्री एजूकेशन, वाराणसी	40
उ.प्र. में +2 स्तर पर शिक्षा व्यावसायीकरण में मूल कार्मिकों व प्रिंसिपलों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	17 से 20 फरवरी, 1987	माध्यमिक परिषद्, इलाहाबाद	44
मेघालय के मूल व्यक्तियों के लिए कार्यानुभव तथा एस.यू.पी. डब्ल्यू. में अभिविन्यास पाठ्यक्रम	23 से 27 फरवरी, 1987	स्टेट लाइब्रेरी डाइ-रेक्टोरेज पब्लिक इंस्ट्रक्शंस, शिलांग	74
व्यावसायिक सर्वेक्षण करने के लिए मूल व्यक्तियों के लिए अभि-विन्यास कार्यक्रम	18 से 20 मार्च, 1987	एस.सी.ई.आर. टी., पटना	39

विकास

कार्य-योजना ने परिषद् को आदर्श पाठ्यचर्या, मार्गदर्शी सिद्धांत और दूसरी पाठ्यक्रम संबंधी सामग्रियों के विकास का दायित्व सौंपा है। डी.वी.ई. ने विभिन्न क्षेत्रों से उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञों और अनुभवी व्यक्तियों को शामिल कर पाठ्यक्रम संबंधी सामग्रियों के विकास में एक सुनिश्चित दृष्टिकोण अपनाया है। समानता, परिधि, स्तर और अन्य गुणों की दृष्टि से अनुदेशी सामग्रियों की गुणवत्ता आश्वस्त की जाती है। 1986-87 में किये गए डी.वी.ई. के विभिन्न कार्यक्रम व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में निम्नलिखित पाठ्यक्रम संबंधी सामग्रियां विकसित करने हेतु रचित किये गये:

1. छः व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्याएँ।
2. दो व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए अनुदेशी सामग्रियाँ।
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लिए व्यापक मार्गदर्शी सिद्धांत।
4. व्यावसायिक सर्वे कार्यकर्ताओं के लिए हस्तपुस्तक का संशोधित संस्करण।
5. स्कूल उद्योग संयोजनों की स्थापना के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत।

इसी प्रकार कार्यानुभव के लिए पाठ्यक्रम संबंधी सामग्रियाँ विकसित करने के लिए डी.वी.ई. ने इस कार्य को हाथ में लिया, जिसके लिए निम्नलिखित पाठ्यक्रम संबंधी सामग्रियों के विकास हेतु 13 कार्यशालाएँ आयोजित की गई:

1. डब्ल्यू.ई. के अन्तर्गत सभी 15 पूर्व व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए आदर्श अनुदेशी सामग्रियाँ।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के लिए डब्ल्यू.ई. के अन्तर्गत 5 पाठ्यक्रमों में संशोधित अनुदेशी सामग्रियाँ।
3. नवोदय विद्यालयों में डब्ल्यू.ई. में शिष्य मूल्यांकन हेतु मार्गदर्शी सिद्धांत।
4. स्वैच्छिक संस्थाओं को शामिल करते हुए माध्यमिक शिक्षा में उत्पादक कार्य के एकीकरण के लिए योजना।

तालिका -3 में विकासात्मक कार्यक्रमों के विवरण दिये गये हैं।

तालिका-3

1986-87 में डी.वी.ई. के विकासात्मक कार्यक्रम

पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
	चरण-1		
दो चरणों में कार्यानुभव हेतु अनुदेशी सामग्रियों के विकास की कार्यशाला	8 से 12 सितंबर, 1986	एस.सी.ई.आर. टी. कैम्पस	96

पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की सख्या
	चरण–2 15 से 19 सितंबर, 1986		
फोटोग्राफी में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या का विकास	22 से 26 सितंबर, 1986	बाल भवन सोसाइटी, नई दिल्ली	11
कार्यानुभव में अनुदेशी सामग्रियों के विकास एवं संशोधन के लिए कार्यशाला (उच्चतर माध्यमिक स्तर)	22 से 26 अक्तूबर, 1986	आर.सी.ई., भोपाल	10
टैक्सटाइल और डिज़ाइनिंग में न्यूननम क्षमता आधारित पाठय-चर्याओं के विकास के लिए कार्यशाला	24–28 नवंबर, 1986	एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	10
पाठ्य मूल्यांकन हेतु मार्गदर्शी सिद्धांतों के विकास हेतु कार्यशाला	2 से 5 दिसंबर, 1986	–वही–	18
लेखाशास्त्र और लागत-निर्धारण में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास की कार्यशाला	8 से 12 दिसंबर, 1986	–वही–	11
स्वैच्छिक संस्थाओं के सहयोग से माध्यमिक शिक्षा में उत्पादक कार्य के एकीकरण के लिए राष्ट्रीय कार्यशाला	8 से 11 दिसंबर, 1986	मित्र निकेतन, त्रिवेन्द्रम	24
श्रेष्ठ फसल किस्मों और बीज उत्पादन में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास हेतु कार्यशाला	12 से 17 दिसंबर, 1986	जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर	16
स्कूल/उद्योग समुदाय संयोजनों को विकसित करने हेतु मार्गदर्शी सिद्धांतों को तैयार करने संबंधी कार्यशाला	26 फरवरी से 1 मार्च, 1987	आई.टी.आई., पुणे	29
गृह-रखरखाव में न्यूनतम क्षमता आधारित विकास हेतु कार्यशाला	23 से 27 मार्च, 1987	गृह अर्थशास्त्र संस्थान, साउथ एक्सटेंशन नई दिल्ली	10
फोटोग्राफी में अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु कार्यशाला	30 मार्च से 3 अप्रैल 1987	एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	11
प्रविधियों, उपकरणों व प्रक्रियाओं के विकास हेतु कार्यदल परीक्षण तथा नवोदय विद्यालयों हेतु कार्यानुभव एस.यू.पी.डब्ल्यू. में शिष्य मूल्यांकन संबंधी योजना	23 से 27 मार्च, 1987	आर.सी.ई., अजमेर	15

परामर्श सेवाएँ

किये जा रहे कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम के रूप में डी.वी.ई. बतौर चर्चा बैठकों, संगोष्ठियों और सम्मेलनों आदि में प्रतिभागिता प्रदान कर विभिन्न राज्य सरकारों और अन्य अभिकरणों को परामर्श सेवाएँ भी देता है। अप्रैल 1986 से मार्च 1987 के बीच इस विभाग ने विभिन्न संस्थाओं को निम्नानुसार परामर्श सेवाएँ प्रदान कीं:

क्र.सं.	संस्था	अवधि	परामर्श प्रकृति
1.	आर.एल.एस. शिक्षा कालेज, सिघरावती	23–6–86व 24–6–86 तथा 27–6–86	विशाल अध्यापक अभिविन्यास कार्यक्रम
2.	सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली	27–6–86	नर्सरी अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संबंधी समिति
3.	बंग्लादेश से शिष्टमंडल	3–7–86	परिषद् की गतिविधियों से परिचय, खासकर वी.ई. से संबंधित
4.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	4–7–86	कृतिक बल–2 की बैठक स्कूली शिक्षा की विषयवस्तु और संसाधन
5.	अन्ना विश्वविद्यालय, मद्रास	5–7–86	कृतिक बल–2 की बैठक
6.	सी.बी.एस.ई.	–	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की बैठक
7.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	10–7–86	कृतिक बल–2 की बैठक
8.	सैनिक पब्लिक स्कूल, दिल्ली	17–7–86	वाणिज्य में स्नातकोत्तरों का चयन
9.	सी.बी.एस.ई.	19–7–86	व्यावसायिक वाणिज्य विषयों संबंधी समिति की बैठक
10.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	20–7–86	विज्ञान भवन में शिक्षा सचिवों के, किए गये सम्मेलन
11.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	25–7–86 व 26–7–86	शिक्षा व्यावसायीकरण संबंधी कृतिक बल प्रतिवेदन को अंतिम रूप दिये जाने के विषय में बैठक
12.	एन.आई.ई.पी.ए. (नीपा)	29–7–86	नीपा में जिला शिक्षा अधि-कारियों हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम
13.	रोजगार सेवाओं में केन्द्रीय अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, पूसा रोड, नई दिल्ली	30–7–86	रोज़गार केन्द्र प्रक्रियाओं और नीतियों में छः साप्ताहिक एकीकृत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम
14.	नीपा, नई दिल्ली	31–7–86	आई.ए.एस. अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

1986-87

क्र.सं.	संस्था	अवधि	परामर्श प्रकृति
15.	नीपा, नई दिल्ली	5-8-86	शिक्षा व्यावसायीकरण विषय पर आश्रम स्कूलों संबंधी कार्यक्रम
16.	मित्र निकेतन, त्रिवेन्द्रम (केरल)	6-9 अगस्त, 1986	कार्यानुभव और शिक्षा कार्यक्रम के व्यावसायीकरण के बारे में राज्य स्तर कर्मचारियों से चर्चाएँ
17.	ओपन स्कूल (सी.बी.एस.ई.), नई दिल्ली	8 से 12 व 16-8-86	टंकण, आशुलिपि, लेखा-शास्त्र तथा +2 स्तर के वाणिज्य नियमों के पाठ्य विवरण संबंधी विषय समिति की बैठक
18.	सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली	20-8-86	व्यावसायिक बैंकिंग पाठ्य-क्रम में नमूने के प्रश्नपत्रों को अंतिम रूप देना
19.	फरदर एजूकेशन यूनिट, लंदन	22-8-86	विभाग तथा परिषद् द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों से लंदन से आई टीम को अवगत कराया गया
20.	टी.टी.टी.आई., चण्डीगढ़	25-8-86	शिक्षा व्यावसायीकरण पर फिल्म स्ट्रिपों का विकास
21.	निदेशक, मित्र निकेतन, त्रिवेंद्रम (केरल)	26-8-86	विभाग ने मित्र निकेतन के निदेशक का स्वागत किया और उन्हें इस विभाग की गतिविधियों से अवगत कराया
22.	बाल सहयोग, नई दिल्ली	28-8-86	शैक्षिक और व्यावसायिक कार्यक्रम का मूल्यांकन
23.	एन.आई.पी.सी.डी., नई दिल्ली	28-8-86	रैगप्लकिंग बच्चों पर राष्ट्रीय गोष्ठी
24.	सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली	28-8-86	कृषि आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम में पाठ्यक्रमों की समिति
25.	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	28-8-86	वाणिज्य में पूर्वव्यावसायिक पाठ्यक्रमों हेतु अनुदेशी सामग्रियों को तैयार किया जाना
26.	सी.ओ.बी.एस.ई., जयपुर	28-30 अगस्त, 1986	सम्मेलन शिक्षा व्यावसायीकरण पर एक लेख प्रस्तुत किया गया
27.	वाणिज्य व व्यवसाय प्रबंध विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय	29-31 अगस्त, 1986	वाणिज्य में स्नातकों और स्नातकोत्तरों के लिए आदर्श पाठ्यचर्या का विकास
28.	शिक्षा कालेज, फिलीपीन विश्वविद्यालय	9-11 सितंबर, 86	यूनेस्को, प्रशिक्षण समितियों के विकास को दृष्टिगत रखे हुए आप्रेशनल प्रोजेक्ट में कार्यरत शैक्षिक कार्मिकों की क्षेत्रीय कार्यशाला
29.	श्रीलंका में जीवन कौशल परियोजना में लगे विशेषज्ञ	10-12 सितंबर, 86	यू.एन.डी.पी. और यूनेस्को सहयोग के साथ जीवन कौशलों में पाठ्यचर्या में कार्यरत तीन विशेषज्ञों की टीम ने परिषद् का दौरा किया, विभाग में किये जा रहे कार्य से उन्हें अवगत कराया गया
30.	ओपन स्कूल, दिल्ली	20-9-86	टंकण और आशुलिपि +2 स्तरों में पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देने के लिए पाठ्यक्रम समिति की बैठक
31.	डी.ई.एस.एस.एच. (एन.सी.ई.आर.टी)	25-9-86	+2 स्तर के लिए ढांचा पाठ्यचर्या के विकास हेतु बैठक
32.	नवोदय से विकास	26-9-86	सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम
33.	नवोदय विद्यालय, अराह, भैजपुर जिला	21-9-86	प्रवेश हेतु चयन टैस्ट के लिए जिला शिक्षा अधिकारियों, के.वी.एस.प्रेक्षकों और अधीक्षकों संबंधी अधि-विन्यास कार्यक्रम
34.	-वही-	28-9-86	-वही-
35.	शिक्षा मंत्री और डी.पी.आई. मेघालय राज्य	3-10-86	नई शिक्षा नीति का कार्यान्वियन
36.	एस.सी.ई.आर.टी. पटना (बिहार)	6-8 अक्तूबर, 1986	शिक्षा व्यावसायीकरण में प्रिंसिपलों और राज्य कर्म-चारियों हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम
37.	ओपन स्कूल, सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली	8-14 अक्तूबर, 1986	टंकण और आशुलिपि क्षेत्र में अधिगम समता की पहचान हेतु कार्यशाला
38.	स्वास्थ्य मंत्रालय	22-25 अक्तूबर, 1986	अध्यक्ष, डी.वी.ई. पैरा-मैडिकल पाठ्यक्रम की दौरा टीम के साथ मैनपावर कमेटी के अध्यक्ष प्रो.जे.एस. बजाज ए.आई.आई.एम. एस., के एक अंग के रूप में गये
39.	बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई	8-12 नवंबर, 1986	अखिल भारतीय विश्व-विद्यालय वाणिज्य व अनु-

1986-87

क्र.सं.	संस्था	अवधि	परामर्श प्रकृति
			संधान परिषद् और भारतीय प्रबंध विकास संस्था की बैठकें
40.	पुणे का बैंक संस्थान	11–14 नवंबर, 1986	बैंकिंग कार्य के विभिन्न पहलुओं संबंधी कार्यक्रम
41.	सी.बी.एस.ई.	12–11–86	कार्यानुभव पाठ्यचर्या विकास संबंधी विषय पर चर्चा के लिए बैठक
42.	इलाहाबाद विश्वविद्यालय	15–17 नवबंर, 1986	वाणिज्य में यू.जी.सी. पाठ्यचर्या विकास की बैठक
43.	सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली	17–11–86	शिक्षा व्यावसायीकरण में कार्यदल की बैठक
44.	गुजरात राज्य सरकार, अहमदाबाद	19–21 नवंबर, 1986	शिक्षा व्यावसायीकरण की बैठक
45.	ओपन स्कूल, सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली	28 नवंबर और 6 दिसंबर, 1986	उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य पाठ्यक्रम हेतु पाठ लेखन की बैठक
46.	चीनी शिष्टमंडल	1–12–86	भारत और चीन में शैक्षिक पहलुओं पर चर्चा हेतु बैठक
47.	रोजगार सेवाओं में केन्द्रीय अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली	24–9–86	राज्यों के रोजगार अधिकारियों हेतु पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में सातवीं योजना में व्यावसायिक शिक्षा संबंधी चर्चा
48.	गृह अर्थशास्त्र संस्थान, नई दिल्ली	17–12–86	रजत जयंती समारोह के अवसर पर अन्तर कालेज फूल व्यवस्था प्रतियोगिता
49.	अखिल भारतीय भारत–जी.डी.आर. मित्र संस्था, नई दिल्ली	19–12–86	शिक्षा पर भारत –जी.डी.आर. संगोष्ठी
50.	राष्ट्रीय जन सहयोग व बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली	15–1–87	आवासीय संस्थाओं में वंचित बच्चों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण
51.	ओपन स्कूल, सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली	17–1–87	विशेषकर व्यावसायिक शिक्षा को ध्यान में रखते हुए उच्च माध्यमिक स्तर हेतु, गृहविज्ञान पाठ्यविवरण में अधिगम सक्षमताओं की जांच के लिए पुनरीक्षण बैठक
52.	आकाशवाणी, नई दिल्ली	19–1–87	शिक्षा व्यावसायीकरण विषय पर चर्चा
53.	सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली	–वही–	नेत्र प्रविधियों में पाठ्यक्रम समिति की बैठक
54.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	फरवरी 1987	शिक्षा मंत्री सम्मेलन हेतु प्रारूप देश प्रतिवेदन के विकास पर विभागीय संकाय ने कार्य किया
55.	पर्यटन निदेशालय	फरवरी, 87	पर्यटन व यात्रा प्रविधियों संबंधी पाठ्यक्रम हेतु कार्यान्वियन नीति का विकास
56.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	13–2–87	उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा व्यावसायीकरण कार्यान्वियन संबंधी शिक्षा सचिवों के सम्मेलन में परिषद् का प्रतिनिधित्व डी.वी.ई.के अध्यक्ष ने किया
57.	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, गोवा	फरवरी, 1987.	कार्यानुभव व व्यावसायीकरण हेतु उचित अनुदेशी सामग्रियों का विकास और स्कूल प्रणाली में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का प्रवेश
58.	यू.एस.आई.एस., नई दिल्ली	25–2–87	शिक्षा व्यावसायीकरण पर संगोष्ठी
59.	प्रेरणा भवन, फरीदाबाद	2–3–87	व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में संस्था के प्रतिनिधि को डी.वी.ई. ने मार्गदर्शन प्रदान किया
60.	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परिषद्	6–8 फरवरी, 1987	भुवनेश्वर में डी.वी.ई. के अध्यक्ष ने उनकी वार्षिक कान्फ्रेंस में एक स्रोत व्यक्ति के रूप में हिस्सा लिया
61.	अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो, यूनेस्को, जेनेवा	9–12 मार्च, 1987	शिक्षा मंत्री सम्मेलन की तैयारी हेतु अध्यक्ष ने विशेषज्ञों की अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श बैठक में भाग लिया
62.	सी.बी.एस.ई. नई दिल्ली	18–3–87	सामान्य बीमा के व्यावसायिक पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देना
63.	पर्यटन मंत्रालय	25–3–87	+2 स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम के रूप में पर्यटन और यात्रा प्रविधियों के कार्यान्वियन के कार्यक्रम को अंतिम रूप देने हेतु डी.वी.ई. के संकाय सदस्यों ने एक दिवसीय संगोष्ठी में अकादमिक मार्गदर्शन प्रदान किया

क्र.सं.	संस्था	अवधि	परामर्श प्रकृति
64.	व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण निदेशालय, महाराष्ट्र	26-27 मार्च, 87	श्री क.एम. गादम, निदेशक और श्री पिम्पल खोटे, संस्था के उपनिदेशक, ने विभाग का दौरा किया और महाराष्ट्र के व्यावसायीकरण कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई

प्रकाशन

अप्रैल 1986 से मार्च, 1987 के मध्य डी.वी.ई. द्वारा अपनी विभिन्न विकासात्मक तथा अन्य गतिविधियों के माध्यम से गहन प्रयास कर अनेक प्रकाशन निकाले जो किन केवल व्यावसायिक विद्यार्थियों और अध्यापकों को बल्कि शैक्षिक नियोजकों और प्रशासकों के लिए भी बहुत लाभकारी हैं। रिपोर्टाधीन अवधि में विकसित किये गये प्रकाशन निम्न प्रकार हैं:

1. 23 व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्यानुभव हेतु आदर्श अनुदेशी सामग्रियाँ।
2. फोटोग्राफी में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या।
3. टैक्स्टाइल और डिजाइनिंग में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या।
4. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु मार्गदर्शी सिद्धांत।
5. लेखाशास्त्र और लागत निर्धारण में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या।
6. उच्च फसल किस्मों और बीज उत्पादन में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या।
7. स्कूल/उद्योग/सामुदायिक संयोजनों के विकास हेतु मार्गदर्शी सिद्धांत।
8. गृह रखरखाव में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या।
9. फोटोग्राफी में अनुदेशी सामग्रियाँ।

1986-87

अध्याय 7

अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवाएँ

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के सचिवालय के रूप में काम करने के अतिरिक्त अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग (डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.) का संबंध अध्यापक शिक्षकों के संकाय सुधार कार्यक्रम के साथ-साथ विद्यालय अध्यापकों को पूर्वसेवा और सेवाकालीन प्रशिक्षण में गुणात्मक सुधार लाने से है। लड़कियाँ और महिलाएँ, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और विकलांग लोगों जैसे समाज के शिक्षा से वंचित वर्ग के लोगों को शिक्षा की सुविधाएँ प्रदान करने की दृष्टि से अध्यापकों को इस योग्य बनाने के विशेष प्रयास किए गए हैं। आलोच्य वर्ष में विभाग में अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई.) 1986 और कार्यान्वयन कार्यक्रम (पी.ओ.ए.) को लागू करना रहा है। संबंधित क्षेत्रों में तैयारी का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। विद्यालय अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण और अनुदेशी सामग्रियों के विकास जैसे कुछ क्षेत्रों में काफी प्रगति हुई है।

विभाग के मुख्य कार्यकलाप अनुसंधान और प्रायोगिक अध्ययन, अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या का संशोधन और अध्यापक शिक्षकों तथा विद्यार्थी अध्यापकों के लिए अनुदेशी सामग्री का विकास, विकलांग व्यक्तियों की शिक्षा में मुख्य व्यक्तियों का प्रशिक्षण, अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रक्रियाओं के प्रचार प्रसार के जरिए सूचना का आदान-प्रदान, और अध्यापक शिक्षा पर आंकड़ा संचय के विकास से रहे हैं।

अनुसंधान और प्रायोगिक अध्ययन

आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित चार अनुसंधान अध्ययन पूरे किए गए: (1) बी.एड. के विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास में मूल्य स्पष्टीकरण युक्तियों से प्रभावित अनुसंधान परियोजना से यह पता चला है कि मूल्य स्पष्टीकरण का दृष्टिकोण विद्यार्थी–अध्यापकों में शिक्षण-व्यवसाय, सहयोग और राष्ट्रीयता के प्रति समर्पित होने जैसे मूल्यों के पारंपरिक अध्यापक की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होता है, (2) भारत में अध्यापकों की अवस्थिति पर अध्ययन करने से यह पता चला है कि प्राथमिक विद्यालयों के लगभग 25 प्रतिशत अध्यापक मैट्रिक पास नहीं हैं। यह बात भी देखने को मिली है कि प्रारंभिक विद्यालयों के 54.22 प्रतिशत अध्यापकों ने अपने अध्यापन जीवन के दौरान ही अपनी शैक्षिक योग्यता में सुधार कर लिया। प्राथमिक, मिडिल, उच्च और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर प्रशिक्षित अध्यापकों का प्रतिशत क्रमशः 86.9%, 85.9%, 89.3% और 89.6% था, (3) महाराष्ट्र में समेकित विकलांग शिक्षा (आई.ई.डी.) कार्यक्रम के अध्ययन से पता चला है कि कम सुनने वाले और कम दृष्टि वाले बच्चों को सामान्य विद्यालयों में सफलतापूर्वक पढ़ाया जा सकता है। इन विद्यालयों में विकलांग और गैरविकलांग विद्यार्थियों की सामाजिक मितीय इच्छाओं से यह पता चलता है, न केवल विकलांग विद्यार्थी ही बल्कि गैर विकलांग विद्यार्थी भी शैक्षिक और गैर-शैक्षिक कार्य में विकलांग विद्यार्थियों को छोटा सामूहिक कार्य कराना चाहते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यान्वयन कार्यक्रम की सिफारिशों के अनुसार विकलांगों की शिक्षा का सर्वीकरण करने के लिए इसे एक कार्यान्वियन कार्यक्रम के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है, जनजातीय विद्यार्थियों के अनौपचारिक शिक्षा (एन.ई.एफ.) कार्यक्रमों की विधियों, प्रक्रिया और व्यवहार का अध्ययन करने से यह पता चला है कि आंध्र प्रदेश मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में भर्ती किए गए जनजातीय बच्चों की कुल संख्या 52,272 थी। **पश्चिम** बंगाल सरकार द्वारा दिन में चलाए जा रहे एक एन.एफ.ई. केन्द्र को छोड़कर सभी राज्यों में एन.एफ.ई. केन्द्र संध्या अथवा रात्रि में चलाए जाते हैं।

चल रही अनुसंधान परियोजनाओं की सूची सारणी-1 में दी गई है।

सारणी-1

क्रमांक	परियोजना का नाम	मुख्य अन्वेषक
1.	अध्यापक शिक्षा की फ्यूचोरोलोजी : **एक मार्गदर्शी अध्ययन**	डा० जे.सी. गोयल डा० एल.सी. सिंह
2.	विद्यार्थी शिक्षण के साधनों का विकास और शिक्षा कालेजों में प्रायोगिक कार्य	डा० सी.एस. सुब्बाराव
3.	शिक्षा कालेजों के संबंधन की स्थितियों का अध्ययन	डा० टी.एन.एस. भटनागार
4.	भारत में अध्यापकों की स्थिति	डा० (श्रीमती) आर.के. चोपड़ा
5.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और गैर-अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की उपलब्धि के साथ स्व-संकल्पना, प्रवृति और समंजन के संबंध का अध्ययन	डा० (श्रीमती) आर.के. चोपड़ा
6.	**पाठ्यपुस्तकों और संपूरक रीडरों में लिंगभेद वाले भागों का पता लगाना**	डा० आई. कुलश्रेष्ठ
7.	उत्तर प्रदेश में दसवीं कक्षा की अनुसूचित जाति और गैर-अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का **तुलनात्मक अध्ययन**	डा० बी.एम. गुप्ता

क्रमांक	परियोजना का नाम	मुख्य अन्वेषक
8	प्राथमिक स्तर के जनजातीय विद्यार्थियों की कमजोरी और मजबूती वाले क्षेत्रों का पता लगाने के लिए उनकी विषयवार निष्पत्ति	डा० बी.एस. गुप्ता
9,	जनजातीय और गैर जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों में दी जाने वाली भौतिक सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन	डा० एल.आर.एन. श्रीवास्तव
10.	पूर्व-मैट्रिक छात्रवृति योजना का मूल्यांकन अध्ययन	डा० एल.आर.एन. श्रीवास्तव
11,	चुने हुए राज्यों और संघशासित प्रदेशों में आई.ई.डी. कार्यक्रमों के वृत्ति अध्ययन	डा० एन.के. जंगीरा
12.	समेकित और विशेष विद्यालयों के कम सुनने वाले बच्चों की भाषायी सक्षमता का पता लगाने के लिए अध्ययन	डा. श्रीमती पी.एल. शर्मा

अध्यापन मॉडल पर प्रशिक्षण एवं अनुसंधान

इस परियोजना का लक्ष्य शिक्षा कालेजों के माध्यम से अध्यापन के विभिन्न मॉडलों की प्रभाविता पर सहकारी अनुसंधान कार्य करना है। इंदौर में एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और राजस्थान के अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। अध्यापक शिक्षकों ने व्यवहार अभिविन्यस्त अनुसंधान कार्य करने के अतिरिक्त मॉडलों को लागू करने की क्षमता भी विकसित कर ली।

माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों की बारहवीं अखिल भारतीय संगोष्ठी रीडिंग

इस योजना के अंतर्गत एक अखिल भारतीय प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें अध्यापक शिक्षकों ने उनके द्वारा किए गए अनुसंधान और नवीन प्रक्रिया पर लेख प्रस्तुत किए। इस प्रतियोगिता के विजयी उम्मीदवारों में से प्रत्येक को 1,000 रुपये नकद और एक प्रमाण-पत्र दिया जाता है। डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस. ने इस वर्ष माध्यमिक अध्यापक-शिक्षकों की बारहवीं अखिल भारतीय संगोष्ठी कार्यक्रम के अधीन पुरस्कार विजेताओं का एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया।

शिक्षा में अनुसंधान को बढ़ावा

दक्षिणी और उत्तरी क्षेत्रों के अध्यापकों के लिए शिक्षा में अनुसंधान परियोजनाओं के नियोजन और अभिकल्पना पर दो कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में अध्यापक शिक्षकों को सामान्य रूप से शिक्षा की समस्याओं से और विशेष रूप से अध्यापक शिक्षा से अभिविन्यस्त किया गया। इन्हें संगत एजेन्सियों द्वारा नियमित अनुसंधान परियोजनाओं की अभिकल्पनाएँ विकसित करने में सहायता दी गई।

विकासी कार्यक्रम

विकास कार्यकलाप मुख्यतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति और कार्यान्वियन कार्यक्रम के संदर्भ में अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या के विकास से संबंधित मामलों की परीक्षा को ध्यान में रखकर किये गए हैं। अध्यापक शिक्षकों और विद्यार्थी-अध्यापकों के लिए अनुदेशी सामग्री का विकास, विकासी कार्यकलापों का एक अन्य क्षेत्र है। विद्यालय अध्यापकों की सेवाकालीन शिक्षा के लिए मीडिया सहयोग का विकास और विकलांगों की शिक्षा के लिए कार्मिकों का प्रशिक्षण, महिलाओं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए सुअवसर, समता की दृष्टि से पाठ-सामग्री के मूल्यांकन की निर्देशिकाओं के विकास संबंधी कार्यकलाप भी किए गए। विभिन्न परियोजनाओं में हुई विशेष प्रगति का विवरण नीचे दिया गया है।

प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या का विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों की दृष्टि से अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या के अभिविन्यास की निर्देशिका का निर्माण करने के लिए 16 से 21 फरवरी 1987 तक प्रारंभिक शिक्षा पाठ्यचर्या के विकास पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। इन निर्देशिकाओं का उपयोग प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या ढाँचा के विकास में किया जायेगा।

अध्यापक शिक्षा की स्रोत पुस्तक

अध्यापक शिक्षा की स्रोत पुस्तक के विकास का कार्य जो गत वर्ष शुरू किया गया था, वह इस वर्ष पूरा हो गया। यह स्रोत पुस्तक अध्यापक शिक्षकों के लिए सहायक होगी।

"टीचर एण्ड एजूकेशन इन इमर्जिंग इंडियन सोसायटी" नामक पाठ्यपुस्तक का हिंदी संस्करण

प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के मतलब की "टीचर एण्ड एजूकेशन इन इमर्जिंग इंडियन सोसायटी" नामक पाठ्यपुस्तक का हिंदी में अनुवाद कर दिया गया है। अब यह पुस्तक प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

शिक्षा-कालेजों में विद्यार्थी-शिक्षण और अन्य प्रायोगिक कार्य के मूल्यांकन के साधनों का विकास

विद्यार्थी शिक्षण के प्रायोगिक कार्य का निर्धारण करने के लिए कुछ साधन विकसित किए गए हैं। इन साधनों के अंतर्गत हैं:(1) अध्यापक शिक्षा व्यापक निर्धारण रेकार्ड,

1986-87

(2) विद्यालय दौरे के मूल्यांकन रेकार्ड, (3) पाठ-योजना, (4) शिक्षण व्यवहार पाठ का निर्धारण, (5) शिक्षण सहायता-साधन और दृश्य-श्रव्य पाठ, (6) प्रेक्षण/आलोचना रेकार्ड, (7) अन्वेसी रिपोर्टों का मूल्यांकन, (8) सत्र पेपर्स। आलोचनात्मक अध्ययनों का मूल्यांकन, (9) पुस्तक पुनरीक्षण रेकार्ड, और (10) वृति अध्ययन रेकार्ड।

अनौपचारिक शिक्षा पर स्रोत पुस्तक का विकास

अध्यापक शिक्षा के लिए अनौपचारिक शिक्षा पर स्रोत पुस्तक विकसित करने के लिए एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। पुस्तक के लिए विषय-वस्तु की जानकारी प्राप्त कर ली गई है और लेखकों के लिए निर्देशिका विकसित की गई है।

अध्यापकों का विद्यालय आधारित सेवाकालीन शिक्षा और प्रशिक्षण

अध्यापकों के विद्यालय आधारित सेवाकालीन शिक्षा और प्रशिक्षण की निर्देशिका के विकसित करने के लिए जम्मू, सोलन और चण्डीगढ़ में तीन कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इस प्रक्रिया के अंतर्गत कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रिंसिपल भी विद्यालय आधारित सेवाकालीन शिक्षा की संकल्पना और व्यवहार के प्रति अभिविन्यस्त हो गए। स्टाफ विकास के संस्थागत कार्यक्रम विकसित किए गए। भाग लेने वाले राज्य जम्मू और कश्मीर, उत्तर प्रदेश और संघशासित प्रदेश दिल्ली के लिए भी सुदूर अधिगम मॉडलता के कार्यक्रम विकसित किए गए।

समेकित व्यवस्था में दृष्टि की कमी वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या का विकास और अनुदेशी विधियों तथा सामग्री का अनुकूलन

पिछले वर्ष सामान्य विद्यालयों में अन्य बच्चों के साथ पढ़ रहे दृष्टि की कमी वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या, अनुदेशी विधि और सामग्री के समायोजन का ढाँचा विकसित कर लेने पर आलोच्य वर्ष में इस क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुसार परिषद् द्वारा विकसित विशिष्ट पाठ्यचर्या का विश्लेषण एक कार्यशाला में किया गया जिसमें दृष्टि की कमी वाले बच्चों की शिक्षा में लगे व्यक्तियों और सामान्य अध्यापकों ने भाग लिया। समेकित व्यवस्था में दृष्टि की कमी वाले बच्चों के शिक्षण में प्रयुक्त विधाओं की जाँच की गई। जाँच से पता चला कि इनके लिए अतिरिक्त अनुदेशी सामग्री और सहायता साधन की आवश्यकता है और इन बच्चों को सामान्य कक्षा के अतिरिक्त बाहर भी साधन कक्षा में और अधिक अनुभव प्रदान करने की आवश्यकता है। दृष्टि की कमी वाले बच्चों को पढ़ने का अनुभव प्रदान करने के लिए उनकी शिक्षा में अनिवार्य अनुदेशी सामग्री का होना आवश्यक है। इसके लिए एक प्रोटोटाइप किट, जिसमें 30 अनिवार्य अनुदेशी सहायता साधन हों, की अभिकल्पना की गई। किट की व्यावहारिक उपयोगिता की जाँच अगले वर्ष करने की योजना है।

समेकित व्यवस्था में सुनने में कमी वाले बच्चों की आवश्कताओं के प्रति भाषा पाठ सामग्री का समायोजन

सुनने में कमी वाले बच्चों के लिए भाषा का विकास एक प्राथमिकता निवेश है। समेकित व्यवस्था में सुनने में कमी वाले बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति अनुदेशी सामग्री और विधियों के अनुकूलन और समायोजन की दृष्टि से, प्रथम भाषा, जो कि पढ़ाई की भाषा भी है, के अध्यापन की जाँच की गई। गत वर्ष सामान्य अध्यापकों के लिए निर्देशिका विकसित की गई। इस वर्ष पहली और दूसरी कक्षाओं के लिए आई.ई.डी. कार्यक्रम के अंतर्गत सुनने में कमी वाले बच्चों के लिए अध्यापन भाषा की एक निर्देशिका विकसित की गई। निर्देशिका में सुझाई गई युक्तियाँ भाषा की पढ़ाई में कठिनाई का अनुभव करने वाले बच्चों के लिए भी सहायक सिद्ध होंगी।

समेकित व्यवस्था में विकलांग बच्चों के अध्यापन और प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए पुस्तिका का विकास

गत वर्ष विकसित की गई प्रतिरूपी अनुदेशी सामग्री को छपने के लिए प्रेस में भेजा गया है। कार्यान्वियन कार्यक्रम (पी.ओ.ए.) में भी सामान्य बच्चों के साथ लोकोमोटर तथा मामूली रूप से विकलांग बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा के सर्वीकरण पर बल दिया गया है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सामान्य बच्चों के साथ अधिक से अधिक विकलांग बच्चों को पढ़ाया जाएगा। विशेष शिक्षा की आवश्यकताओं से अच्छी तरह से परिचित हो जाने की दृष्टि से प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए एक पुस्तिका विकसित की गई।

विकलांग बच्चों के अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए प्रतिरूपी अनुदेशी सामग्री का विकास

गत वर्ष विकसित की गई प्रतिरूपी अनुदेशी सामग्री को छपने के लिए प्रेस में भेजा गया है। सुनने में कमी वाले बच्चों के अध्यापकों के प्रशिक्षण की स्रोत पुस्तक, जिसमें 10 माड्यूल वाले 23 कैप्सूल हैं, प्रकाशित हो गई है। इस पुस्तक को एन.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई., राष्ट्रीय विकलांग संस्थान, विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा विभाग, और अध्यापकों के सेवा-पूर्व तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण में लगी एजेन्सियों को बांटा गया है। यूनेस्को और यूनीसेफ भी यह पुस्तक प्रशिक्षण सामग्री के रूप में प्रयोग करने के लिए सदस्य देशों को भेज रहे हैं। इस स्रोत पुस्तक के सहयोग के लिए "कहते सुनते स्वर" नाम की एक वीडियो फिल्म विकसित की गई जिसका प्रसारण दूरदर्शन से भी किया गया था। दृष्टि की कमी वाले बच्चों के अध्यापकों के प्रशिक्षण पर विकसित की गई

स्रोत पुस्तक को भी छपने के लिए प्रेस में भेजा गया है। इस स्रोत पुस्तक के साथ भी "आलोक पथ पर" नाम की वीडियो फिल्म विकसित की गई है।

वीडियो फिल्मों का विकास

विशेष शिक्षा में टेक्नोलॉजी के प्रयोग से संबद्ध राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सुझाव को लागू करने की दिशा में "दिशाएँ" शीर्षक के अंतर्गत वीडियो फिल्मों को विकसित करने का काम हाथ में लिया गया। पहली वीडियो फिल्म "दिशाएँ" में हड्डी, दृष्टि, सुनने और मानसिक दृष्टि से विकलांग बच्चों के लिए समेकित शिक्षा का एक परिदृश्य दिखाया गया है। दूसरी वीडियो फिल्म "कहते सुनते स्वर" में विशेष रूप से समेकित व्यवस्था में सुनने में कमी वाले बच्चों की शिक्षा के बारे में बतलाया गया है। तीसरी वीडियो फिल्म "आलोक पथ पर" समेकित व्यवस्था की सामान्य कक्षाओं में दृष्टि की कमी वाले बच्चों के लिए निर्देशिकाएँ बतायी गई हैं। खेल नृत्य और संगीत के जरिए सुनने में कमी वाले बच्चों के समेकन को दर्शाने वाली एक अन्य वीडियो फिल्म "खेल में मेल" पूरी हो गयी है। पहली तीन वीडियो फिल्मों को दूरदर्शन से प्रसारित किया गया था और समाचार-पत्रों आदि में इन फिल्मों पर काफी चर्चा की गई है। ये फिल्में विकलांग बच्चों के अध्यापकों के लिए छपी सामग्री भी प्रस्तुत करती हैं।

विकलांग बच्चों की शिक्षा पर सामान्य अध्यापकों के लिए जागरूकता माड्यूल का विकास

पी.ओ.ए. में किए गए सुझाव के अनुसार विद्यालय अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण को राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत बड़े पैमाने पर चलाए जाने वाले अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए "सुनने में कठिनाई का अनुभव करने वाले बच्चों को शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति" नामक एक जागरूकता माड्यूल विकसित किया गया। यह माड्यूल सामान्य विद्यालयों में कार्य कर रहे चार लाख से भी अधिक अध्यापकों को पहुँचाया गया।

आई.ई.डी. कार्यक्रमों के नियोजन और प्रबंध के प्रशासकों के लिए एक पुस्तिका का विकास

एन.पी.ई.-पी.ओ.ए. ने विकलांग बच्चों की समेकित शिक्षा की योजना और प्रकाशकों के अभिविन्यास को और तेजी से लागू करने का सुझाव दिया है। प्रकाशकों के लिए आई.ई.डी. कार्यक्रम के नियोजन और प्रबंध पर एक पुस्तिका तैयार की गई है। इस पुस्तिका में विकलांगों की शिक्षा के लिए एन.पी.ई. के सुझाव, विकलांगों की परिभाषा का शैक्षिक अर्थ; ढाँचा का नियोजन, मॉनिटरन और मूल्यांकन के लिए युक्तियों और विधाओं को लागू करने का उल्लेख है। यह पुस्तक छपने की प्रक्रिया में है।

यूनीसेफ से सहायता प्राप्त विकलांग समेकित शिक्षा परियोजना (पी.आई.ई.डी.) का विकास

आई.ई.डी.सी. परियोजना को और तेजी से लागू करने के लिए विकलांगों की समेकित शिक्षा नियोजित की गई है। इस परियोजना के अंतर्गत दूर-दूर फैले हुए गाँवों के सामान्य विद्यालयों में विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए सेवा वितरण विद्या विकसित करना है। यह परियोजना इस क्षेत्र में कार्य कर रहे विभागों और एजेन्सियों के बीच परस्पर संबंध बनाए रखने का मॉडल भी उपलब्ध करेगी। परियोजना के प्रलेख को अंतिम रूप दे दिया गया है।

जनजातीय बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों का विकास

आन्ध्र प्रदेश के जनजातीय बच्चों के लिए **गोंड** जनजाति की बोली और तेलुगू लिपि में पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए कार्यकारी दल की एक बैठक की गई। कार्यकारी दल की इस बैठक में पांडुलिपि को विकसित किया गया। दूसरी कक्षा के साओरा प्राईमर भाग-2 को राज्यों और संघशासित प्रदेशों के जिला अधिकारियों के जरिए 120 प्रायोगिक विद्यालयों में प्रयोग करने के लिए बांटा गया।

अनौपचारिक अनुदेशों (महिला) के निर्माण की अनुदेशी सामग्री

गत वर्ष विकसित की गई सामग्री का पुनरीक्षण किया गया और व्यापक रूप से महिलाओं में जागरूकता पैदा करने और विशेष रूप से महिला अनुदेशकों को सक्रिय कार्यकर्ता बनाने के लिए आवश्यक घटकों को जोड़कर इसे अंतिम रूप दे दिया गया है।

लड़कियों की शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों के लिए सूचकों का विकास

आलोच्य वर्ष में लड़कियों की शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों के अभिज्ञापन के लिए परिमाणात्मक और गुणात्मक सूचकों को अंतिम रूप दिया गया। इस रिपोर्ट को उपयोग में लाने के लिए राज्य सरकारों को भेजा जा रहा है।

अंग्रेजी की पाठ्यचर्या में महिलाओं का स्वरूप

दूसरी भाषा के रूप में अंग्रेजी पढ़ने वालों की पाठ-सामग्री में महिलाओं की अवस्थिति के संगतमूल्यों को प्रदर्शित करने के लिए इस पुस्तक की अभिकल्पना की गई है। यह पुस्तक पाठ्यचर्या बनाने वालों और पाठ-सामग्री के लेखकों के लिए उपयोगी होगी। पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है और इसे बांटा जा रहा है।

1986-87

लिंग-भेद की दृष्टि से पुस्तकों का मूल्यांकन

पिछले वर्ष 400 पुस्तकों का पुनरीक्षण किया गया। इस वर्ष लिंग-भेद से संबद्ध मूल्यों की दृष्टि से 270 और पुस्तकों का पुनरीक्षण किया गया। पुस्तक से प्राप्त जानकारी और लेखकों पर इसके प्रभाव को ध्यान में रखकर "आर्केस्ट्रल हार्मोनी" नामक प्रकाशन की पांडुलिपि तैयार की गई है।

स्थायी महिला शिक्षा समिति की बैठक

स्थायी महिला शिक्षा समिति की तीसरी बैठक पिछली दो बैठकों में की गई सिफारिशों पर की गई कार्रवाइयों का लेखा-जोखा करने के लिए की गई। समिति ने एन.पी.ई. 1986 के निहित प्रभावों की भी जाँच की और शैक्षिक सुअवसर समता तथा महिला अधिकार पर इसके प्रभावों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई।

ऊपर उल्लेख किए विकासी कार्यक्रम में देश-भर के शैक्षिक कार्मिकों के भाग लेने का विवरण सारणी–2 में दर्शाया गया है।

सारणी–2

डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस. द्वारा हाथ में लिए गए विकास कार्यक्रम और परियोजनाएँ

कार्यक्रम	भाग लेने वालों की संख्या
प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या के विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यशाला	62
दक्षिणी क्षेत्र के कालेजों के लिए अनुसंधान परियोजनाओं के नियोजन और अभिकल्पना पर कार्यशाला	55
उत्तरी क्षेत्र के कालेजों के लिए अनुसंधान परियोजनाओं के नियोजन और अभिकल्पना पर कार्यशाला	70
शिक्षा विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में आयोजित उत्तरी क्षेत्र के विश्वविद्यालयों के शिक्षा–बोर्ड के अध्यक्षों और शिक्षा के डीनों का सम्मेलन	33
प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या के विकास पर राष्ट्रीय कार्यशाला	62
अनुसूचित जाति की दृष्टि से आपत्तिजनक सामग्री का पता लगाने के लिए पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण	16
आंध्र प्रदेश के जनजातीय बच्चों के लिए गोंड जन-जातीय बोली में पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए कार्यकारी दल की बैठक	18
बाल पुस्तक–I का मूल्यांकन	7
बाल पुस्तक–II का मूल्यांकन	11
बाल पुस्तक–III का मूल्यांकन	3
समता के उद्देश्य की संपूरक रीडरों का विकास	10
महिलाओं का स्वरूप और मातृभाषा में पाठ्यचर्या–I	4
महिलाओं का स्वरूप और मातृभाषा में पाठ्यचर्या–II	10
लड़कियों की शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए क्षेत्र का अभिज्ञापन	10
लड़कियों की अनौपचारिक शिक्षा के अनुदेशक निर्माण की सामग्री पर पुनरीक्षण दल की बैठक	21
शिक्षा के माध्यम से महिलाओं के अधिकार के मूल्यों और प्रक्रिया की पहचान	40
आँखों से विकृत बच्चों के लिए अनुदेशी विधियों और सामग्रियों का अनुकूलन और पाठ्यचर्या का विकास	10
समेकित व्यवस्था–II में दृष्टि की कमी वाले बच्चों के लिए अनुदेशी सामग्री और विधियों का अनुकूलन और पाठ्यचर्या का विकास	30
समेकित व्यवस्था में दृष्टि की कमी वाले बच्चों के लिए अनुदेशी विधियों और सामग्रियों का अनुकूलन और पाठ्यचर्या का विकास	13
समेकित व्यवस्था में विकलांग बच्चों के लिए प्राथमिक विद्यालय अध्यापक शिक्षण के लिए पुस्तिका का विकास	13
विकलांग बच्चों के अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए प्रतिरूपी अनुदेशी सामग्री का विकास वीडियो फिल्मों का विकास	12
कुल जोड़	510

प्रशिक्षण और विस्तार

एन.पी.ई. ने विद्यालय अध्यापकों की निरंतर सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया है। आलोच्य वर्ष में विद्यालय अध्यापक के सेवाकालीन प्रशिक्षण की राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत बड़े पैमाने पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त, विकलांग बच्चों की समेकित शिक्षा में मुख्य व्यक्तियों का प्रशिक्षण, जनजातीय जीवन और संस्कृति के प्रति प्रारंभिक और माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों का अभिविन्यास, जनजातीय बच्चों की शिक्षा की समस्याएँ और नवीन प्रक्रियात्मक शिक्षा कार्यक्रमों में अध्यापक शिक्षकों का अभिविन्यास करने का काम हाथ में लिया गया। विशेष प्रशिक्षण और विस्तार के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं।

व्यापक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम 1986–87

मानव संसाधन विकास मंत्रालय की योजना एन.पी.ई. 1986 को तुरंत लागू करने की थी। इस संबंध में परिषद् द्वारा किया गया पहला कार्यकलाप विद्यालय अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत देश भर के लगभग 5 लाख प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों को प्रशिक्षित करना था। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य कार्यान्वियन 1986 के एन.पी.ई. कार्यक्रम की चर्चा करना और इसे लागू करने में अध्यापकों की विशिष्ट भूमिका को उजागर करना है। परिषद् ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रतिरूपी अनुदेशी सामग्री विकसित की जिसमें टी.वी. का सहयोग लिया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन तीन स्तरों पर किया गया। मुख्य व्यक्तियों को एन.सी.ई.आर.टी. में प्रशिक्षित किया गया जबकि लगभग 10,000 साधन व्यक्तियों को राज्य स्तर पर प्रशिक्षित किया गया। राज्य स्तर पर देश भर में 2,500 प्रशिक्षण केन्द्र खोले गए। 10-10 दिन के 9,000 शिविर आयोजित किए गए।

अतः प्रक्रिया मूल्यांकन एस.सी.ई.आर.टी. ने किए जो कि राज्य और संघशासित प्रदेश के स्तर पर कार्यक्रमों को लागू करने की मुख्य एजेन्सियाँ हैं। इसके अतिरिक्त परिषद् अपने संकाय और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों (आर.सी.ई.) के संकाय के जरिए पुनर्मरण भी प्राप्त करता रहा। पुनर्मरण पर आधारित रिपोर्ट तैयार की गई और पुनरीक्षण बैठक में, जिसमें राज्य स्तर की मुख्य एजेन्सियाँ, परिषद् और क्षेत्रीय शिक्षा कालेज के सदस्यों ने भाग लिया था, रिपोर्ट पर चर्चा की गई। पुनरीक्षण बैठक के आधार पर 1987-88 में प्रयुक्त करने के लिए माड्यूल के परिशोधन का कार्य हाथ में लिया गया।

इस कार्यक्रम के संबंध में मीडिया के सहयोग पर भी चर्चा की गई। नई वीडियो फिल्में विकसित की गईं। 1987-88 के कार्यक्रम की तैयारी पूरी कर ली गई।

विकलांग बच्चों की समेकित शिक्षा में मुख्य व्यक्तियों का प्रशिक्षण

एन.पी.ई.-पी.ओ.ए. से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक एस.सी.ई.आर.टी/एस.आई.ई. से कम से कम तीन व्यक्तियों को विकलांग बच्चों की समेकित शिक्षा में प्रशिक्षित करना चाहिए। सितंबर-नवंबर 1986 में एन.आई.ई. में राज्यों, संघशासित प्रदेशों और स्वैच्छिक एजेन्सियों के मुख्य व्यक्तियों के लिए पाठ्यक्रम आयोजित **किये गए।** बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश के 19 लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अंतर्गत अपंगता अर्थात् हड्डी, दृष्टि, सुनने और मानसिक विकृति के चार क्षेत्रों के नियोजन और प्रबंध में प्रशिक्षित करना था।

लिंग-भेग को दूर करने की दृष्टि से भाषा-सामग्री का मूल्यांकन

आंध्र प्रदेश, मिजोरम, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में से प्रत्येक राज्य में पाँच-पाँच दिन के चार कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य लिंग भेद का पता लगाने के लिए भाषा सामग्री का विश्लेषण करने की क्षमता का विकास और लिंग भेद दूर करने की कार्यान्वियन निर्देशिका का विकास करना था।

जनजातीय जीवन और संस्कृति में अध्यापक शिक्षकों का अभिविन्यास और जनजातीय बच्चों की शिक्षा संबंधी समस्याएँ

प्रारंभिक अध्यापक - शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए जनजातीय क्षेत्रों में सात-सात दिन के तीन कार्यक्रम आयोजित किए गए और माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के मुख्य व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम

जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा के मुख्य व्यक्तियों के लिए सात-सात दिन के तीन कार्यक्रम और सात-सात दिन के तीन अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य मुख्य व्यक्तियों को जनजातीय क्षेत्र की सांस्कृतिक जीवन के प्रति और इनके जीवन तथा संस्कृति उभर कर निकलने वाली विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं के प्रति अभिविन्यस्त करना था। इन कार्यक्रमों में पाठ्यचर्या को लागू करने और उसके कार्यान्वियन पर भी चर्चा की गई।

शिक्षण के मॉडलों पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम

अध्यापक शिक्षकों के लिए एक छह दिन का अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम में अध्यापक-शिक्षकों को शिक्षण के कुछ चुने हुए मॉडलों से परिचित कराया गया और उनके प्रयोग में अनुकारी प्रशिक्षण दिए गए जिससे कि वे इन्हें व्यावहारिक शिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित कर सकें। शिक्षण के मॉडलों के अंतर्गत शिक्षण के संकल्पना प्राप्ति मॉडल, पूछताछ प्रशिक्षण मॉडल, अर्थान्विय मॉडल और विधिशास्त्र मॉडल शामिल थे। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के पश्चिमी क्षेत्रों के अध्यापक शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए सूक्ष्म शिक्षण में अभिविन्यास पाठ्यक्रम

राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, महाराष्ट्र और पंजाब के प्रारंभिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इन अध्यापक शिक्षकों को पाँच शिक्षण कौशल अर्थात आख्यान, सस्वर पाठ, नाटकीकरण, शिष्यों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना और कक्षा प्रबंध के प्रयोग में प्रशिक्षित किया गया। भाग लेने वालों ने सूक्ष्म पाठ विकसित किए और अनुकारी स्थिति में कौशल का अभ्यास किया।

शिक्षा के डीनों और शिक्षा में पूर्व-स्नातक अध्ययन बोर्ड के अध्यक्षों का सम्मेलन

एन.पी.ई.-पी.ओ.ए. शिक्षा का मूल्य अभिविन्यास अनुबंध करता है। उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्र में शिक्षा की पूर्व-स्नातकअध्ययन बोर्ड के अध्यक्षों और डीनों के दो सम्मेलन मूल्य अभिविन्यस्त अध्यापक शिक्षण के कार्यक्रम के विकास के लिए आयोजित किए गए।

1986-87

अनुवर्ती अध्यापक शिक्षा के केन्द्र

अनुवर्ती अध्यापक शिक्षा के केन्द्र (सी.सी.ई.) अध्यापकों की सेवाकालीन शिक्षा से संबद्ध अपने कार्यक्रमों को जारी रखे हुए हैं। 64 अनुवर्ती शिक्षा केन्द्रों ने अपने कार्यक्रम चलाए। आलोच्य वर्ष में पंजाब में तीन और हिमाचल प्रदेश में तीन और अनुवर्ती शिक्षा केन्द्र खोले गए।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्

विभाग राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के लिए सचिवालय का काम करता है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की विभिन्न समितियों की बैठकें आयोजित की गई जिनका विवरण सारणी–3 में दिया गया है।

सारणी–3

एन.सी.टी.ई. समितियों की बैठक

क्रमांक	समिति की प्रकृति	भाग लेने वालों की संख्या
1.	विशेष शिक्षा पर एन.सी.टी.ई. समिति की सातवीं बैठक	15
2.	माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा समिति की ग्यारवीं बैठक	17
3.	विशेष शिक्षा के लिए अध्यापक तैयार करने पर एन.सी.टी.ई. समिति की आठवीं बैठक	13
4.	प्राग्विद्यालय और प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पर एन.सी.टी.ई. समिति की नवीं बैठक	15
5.	माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा पर एन.सी.टी.ई. समिति की दसवीं बैठक	12
6.	एन.सी.टी.ई. की संचालन समिति की बारहवीं बैठक	13
7.	एन.सी.टी.ई. के साधारण निकाय की नवीं बैठक	100

प्रसार

अनुसंधान रिपोर्ट और अन्य पाठ सामग्री का प्रसार करने के अतिरिक्त विभाग त्रैमासिक 'बुलेटिन ऑन इंटिग्रेटेड एजूकेशन फॉर द डिसेबल्ड' और 'कम्यूनिकेशनः इक्वल एजूकेशनल अपोर्चुनिटी फॉर द डिसेबल्ड' और 'एन.सी.टी.ई. न्यूज लैटर' निकालता है। आई.ई.डी. बुलेटिन मुख्य व्यक्तियों और अध्यापक शिक्षकों के लिए है जबकि कम्यूनिकेशन अध्यापकों के लिए भी है। प्रसार की कार्यकलाप संबंधी विशेष सूचनाएं निम्नलिखित हैं:

शीर्षक	अंक
आई.ई.डी. बुलेटिन (मिमिओ)	त्रैमासिक
कम्यूनिकेशनः इक्वल एजूकेशनल अपोर्चुनिटी फॉर डिसेब्ल्ड	पाक्षिक
एन.सी.टी.ई. न्यूज बुलेटिन (मिमिओ)	त्रैमासिक
भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा-विभागों और स्नातकोत्तर अध्यापक संस्थानों की निर्देशिका	वार्षिक
1986 में भारत में माध्यमिक अध्यापक शिक्षा	वार्षिक
1986 में भारत में विश्वविद्यालय, तुल्य विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय महत्ता के संस्थान और विशेष संस्थान	वार्षिक

प्रकाशन

विभाग ने अध्यापकों की सेवाकालीन शिक्षा की प्रशिक्षण सामग्री, विकलांग बच्चों की शिक्षा के साधन अध्यापकों का प्रशिक्षण, सामग्री, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की शिक्षा पर पाठ-सामग्री, अध्यापक शिक्षकों और विद्यार्थी अध्यापकों की अनुदेशी सामग्री और पाठ्यचर्या तथा पाठ्यपुस्तक लिखने वालों के लिए निर्देशिका का प्रकाशन प्रकाशित किया है। विभाग के छपे हुए और मिमियोग्राफिक प्रकाशनों के ब्यौरे सारणी–4 में दिए गए हैं।

सारणी–4

प्रकाशन

क्रमांक	शीर्षक	प्रकाशन तिथि	प्रतियों की संख्या
1.	इमप्लिकेशन्स ऑफ पी.ओ.ए. फॉर टीचर्स (माड्यूल)	मार्च, 1987	65,000
2.	टीचर्स एण्ड एजूकेशन इन इमर्जिंग इंडियन सोसायटी फॉर एलिमेंटरी टी.ई.आई.एस.	प्रेस में	
3.	साओरा प्राइमर फॉर क्लास–II पार्ट–II	जून, 1986	5,000
4.	ए स्टडी ऑफ मेथड्स ऑफ नॉन-फार्मल एजूकेशन प्रोग्राम्स फॉर ट्राइबल स्टूडेण्ट्स	अप्रैल, 1986	1,000
5.	नॉन फार्मल एजूकेशन प्रोग्राम्स इन इंडिया	जनवरी, 1986	1,000.
6.	सोर्स बुक फॉर दी टीचर्स ऑफ हियरिंग इम्पेयर्ड	फरवरी, 1986	3,000 2,000 माड्यूल्स

क्रमांक	शीर्षक	प्रकाशन तिथि	प्रतियों की संख्या
7.	सिलेबस-कम-इनफार्मेशन गाइड फॉर थ्री मन्थ्स ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर द पर्सन्स इन आई.ई.डी.	अगस्त, 1986	200
8.	एडजस्टमेंट ऑफ लैंग्वेज टेक्स्युअल मैटीरियल : रिपोर्ट ऑन एडजस्टमेण्ट इन लैंग्वेज टेक्स्युअल मैटीरियल	जून, 1986	400
9.	वी.आई.सी. मैटीरियल एडप्टेशन इन एन्वायरमेण्टल स्टडीज-1 (सोसल स्टडीज) फॉर विजुअली इम्पेयर्ड अण्डर द स्कीम ऑफ आई.ई.डी.	अगस्त, 1986	150
10.	वी.आइ.सी. मैटीरियल एडप्टेशन सीरीज 3: मैटीरियल एडप्टेशन इन एन्वायरनमेण्टल स्टडीज-1 (सोसल स्टडीज) फॉर वी.आई.सी. अण्डर द स्कीम ऑफ आई.ई.डी.	नवंबर, 86	150
11.	मिनिमम रिसोर्स किट फॉर वी.ई.सी. फॉर टीचिंग सोसल स्टडीज इन इन्टीग्रेटेड क्लास रूम्सः ऐन इनफार्मेशन गाइड	मार्च, 87	100
12.	इमेज ऑफ विमन एण्ड करीकुलम इन इंग्लिश	सितंबर, 86	2,000
13.	सेलेक्टेड रीडिंग मैटीरियल इन इंग्लिश वाल्यूम I पार्ट-2	जून,1987	2,000
14.	-वही- वाल्यूम II पार्ट-2	जून, 1987	2,000
15.	-वही- वाल्यूम III पार्ट-2	जून, 1987	2,000
16.	ऑर्केस्ट्रल हार्मोनी	प्रक्रियाधीन	

परामर्श

विभाग ने राज्यों और संघशासित प्रदेशों, राष्ट्रीय विकलांग संस्थाओं, विश्वविद्यालय शिक्षा विभागों, मानव संसाधन विकास मंत्रालय और कार्मिक प्रशिक्षण से संबद्ध अन्य मंत्रालयों को परामर्श की सुविधा उपलब्ध करायी। आलोच्य वर्ष में विभाग द्वारा विशेष क्षेत्रों में दिए गए परामर्श का संक्षिप्त विवरण सारणी-5 में दिया गया है।

सारणी-5

डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस. द्वारा उपलब्ध करायी गई परामर्श सुविधा

क्रमांक	संगठन का नाम	परामर्श
1.	एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा	प्रारंभिक अध्यापक शिक्षण पाठ्यचर्या विकास
2.	आई.एफ.टी.ओ., बंगलौर	एन.पी.ई. की संगोष्ठी का साधन व्यक्ति
3.	सी.आई.ई.टी.	ई.टी.सी. कार्यकारी दल के सदस्यों की बैठक
4.	कार्यशाला विभाग	विज्ञान किट की यूनेस्को परियोजना पर पेडागोगी दल के सदस्य
5.	विज्ञान विभाग और यूनेस्को	खुली सक्षमता कार्यशाला का साधन व्यक्ति
6.	दो पी.एच.डी. के विद्यार्थी	मार्गनिर्दर्शन
7.	एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा	हरियाणा राज्य की प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या के विकास की कार्यशाला के साधन व्यक्ति
8.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	शिक्षा के माध्यम से महिला-अधिकार पर अनुसंधान आधारित लेख विकसित करना
9.	मदर टेरेसा विश्वविद्यालय, कोदईकनाल	अगले पाँच वर्षों के लिए कार्यान्वियन की योजना
10.	राज्य शिक्षा संस्थान	हाल ही में विकसित महिला कक्ष के लिए चरणशः कार्यक्रम विकसित करना
11.	एन.आई.वी.एच., देहरादून	दृष्टि की कमी वाले बच्चों के अध्यापकों के प्रशिक्षण पर पत्राचार अध्यापक प्रशिक्षण माड्यूल का विकास
12.	एन.आई.एम.एच., हैदराबाद	मानसिक विकृति वाले बच्चों की शिक्षा और पुनर्वास में अध्यापकों को प्रशिक्षण देने वालों के लिए प्रशिक्षण दीपिका का विकास
13.	भारत की पुनर्वास परिषद्	(क) मानसिक विकृति (ख) आँख की विकृति (ग) सुनने में कमी (घ) हड्डी की विकृति वाले बच्चों के साथ कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यचर्या का विकास
14.	शारीरिक विकलांग संस्थान, नई दिल्ली	मानसिक मंदन में विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए व्यावसायिक शारीरिक चिकित्सा के विद्यार्थियों का शिक्षण
15.	एन.आई.ई.पी.ए., नई दिल्ली	विकलांग बच्चों के प्रशिक्षण तथा शिक्षा पर निवेश और प्रशासकों के कार्यक्रम में शैक्षिक सुअवसर समता
16.	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	विश्वविद्यालयों में विशिष्ट शिक्षा के विकास की अध्यापक शिक्षा स्थापना की समिति
17.	अरुणाचल प्रदेश, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, बिहार मध्यप्रदेश,	आई.ई.डी. की राज्य योजनाओं का विकास राज्य स्तर कार्मिक प्रशिक्षण

1986-87

क्रमांक	संगठन का नाम	परामर्श
	नागालैण्ड, तमिलनाडु, एस.आई.ई., दिल्ली	प्राथमिक विद्यालय के बच्चों की उपलब्धि में सुधार लाने की यूनेस्को परियोजना
18.	राष्ट्रीय नेत्रहीन संघ, मानसिक विकृति से पीड़ित व्यक्तियों के लिए कल्याण संघ	विभिन्न कार्यक्रमों के साधन व्यक्तिः शैक्षिक एवं प्रबंध समिति के सदस्य
	श्री कांची कामकोटी सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट, हरिद्वार	विकलांग बच्चों की शिक्षा की संगोष्ठियों के संयोजक
	गुरु नानक फिफ्थ सेंटेनरी पब्लिक स्कूल अखिल भारतीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संघ	
19.	कल्याण मंत्रालय **यू.एस.ए.आई.डी.** परियोजना	विकलांग बच्चों की शिक्षा और पुनर्वास में सूचना और प्रलेखन का विकास

1986-87

अध्याय 8

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज की सेवापूर्व शिक्षक-शिक्षा के प्रक्रियात्मक कार्यक्रमों का विकास चिन्ता का एक मुख्य विषय रहा है। ये सभी कालेज स्कूल स्तर पर ही पाठ्यचर्या पढ़ाने की कार्य प्रणाली, शैक्षिक मूल्यांकन और शैक्षिक प्रशासन से संबद्ध अनुसंधान एवं प्रायोगिक अध्ययनों का निष्पादन करने तथा लागू करने में लगे हुए हैं। प्रशिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से संबद्ध अनुदेशात्मक सामग्री का विकास और स्कूली शिक्षा तथा शिक्षक-शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबद्ध प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यकलापों के अंतर्गत कालेजों के अन्य कार्यकलाप भी आते हैं।

प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अपने अधिकार क्षेत्र के अंदर आने वाले राज्यों/संघीय राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अजमेर का शिक्षा कालेज, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तथा संघीय राज्य चण्डीगढ़ और दिल्ली की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। भोपाल का शिक्षा कालेज गुजरात मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र तथा संघीय राज्य दादर और नगर हवेली एवं गोवा, दमन और दीव की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। भुवनेश्वर के शिक्षा कालेज के अंतर्गत असम, बिहार, मणिपुर, मेघालय, नागालैण्ड, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम और पश्चिमी बंगाल तथा संघीय शासित प्रदेश अण्डमान और निकोबार द्वीप आते हैं जबकि **मैसूर** के शिक्षा कालेज के अंतर्गत आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु तथा संघीय शासित प्रदेश लक्षद्वीप और पांडिचेरी आते हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर

इस कालेज में विज्ञान शिक्षा में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम, जिससे बी.एससी. (आनर्स/पास) बी.एड. की डिग्री प्राप्त होती है, विशेष रूप से विज्ञान/कृषि/वाणिज्य/भाषा (अंग्रेजी/हिंदी/उर्दू) का एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम, जिसे बी.एड. की डिग्री प्राप्त होती है, का अध्यापन कराया जाता है। इस कालेज में शिक्षा एवं विज्ञान में पी-एच.डी. करने के लिए छात्रों को रजिस्टर करने की सुविधा उपलब्ध है।

नामांकन

1986-87 वर्ष के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकन संख्या निम्नलिखित थी :

(क) सेवा-पूर्व पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम	संख्या
प्रथम वर्ष बी.एससी. (आनर्स/पास) बी.एड.	71
द्वितीय वर्ष बी.एससी. (आनर्स/पास) बी.एड.	41
तृतीय वर्ष बी.एससी. (आनर्स/पास) बी.एड.	49
चतुर्थ वर्ष बी.एससी. (आनर्स/पास) बी.एड.	45
बी.एड. (विज्ञान)	60
बी.एड. (कृषि)	22
बी.एड. (वाणिज्य)	25
बी.एड. (हिंदी)	35
बी.एड. (अंग्रेजी)	27
बी.एड. (उर्दू)	21
एम.एड. (विज्ञान/वाणिज्य/भाषा)	14
कुल जोड़	410

(ख) सेवाकालीन पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम	संख्या
बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) I समर	102
बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) II समर	90
कुल जोड़	192

परिणाम

1985-86 के सत्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित छात्रों के 1986 वर्ष के परिणाम निम्नलिखित थे:

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशत
1.	बी.एड. (विज्ञान)	60	59	98.33

1986-87

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशत
2.	बी.एड. (कृषि)	33	32	96.96
3.	बी.एड. (वाणिज्य)	30	30	100.00
4.	बी.एड. (अंग्रेजी)	40	40	100.00
5.	बी.एड. (हिंदी)	46	45	97.82
6.	बी.एड. (उर्दू)	32	31	96.87
7.	बी.एड. (एस.एस.सी.सी.)	90	85	94.44
8.	एम.एड.	16	16	100.00
9.	प्रथम वर्ष बी.एससी. (आनर्स/पास) बी.एड.	79	41	51.89
10.	द्वितीय वर्ष बी.एससी. (आनर्स/पास) बी.एड.	54	49	90.74
11.	तृतीय वर्ष बी.एससी. (आनर्स/पास) बी.एड.	48	47	97.97
12.	चतुर्थ वर्ष बी.एससी. (आनर्स/पास) बी.एड.	68	67	98.52

विस्तार सेवा

कालेज के विस्तार सेवा विभाग ने कालेज के अंतर्गत आने वाले राज्यों/संघीय राज्यों की आवश्यकताओं और मांगों को दृष्टि में रखकर विभिन्न क्षेत्रों में स्कूली शिक्षा से संबद्ध कार्यशालाएं/संगोष्ठियां आयोजित कीं। 1986-87 वर्ष के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए:

सारणी-1

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	भाग लेने वालों की संख्या
1.	विज्ञान क्लब प्रायोजकों की कार्यशाला	36
2.	संस्थागत योजना और नई शिक्षा नीति पर कार्यशाला	36
3.	ग्रामीण विकास के लिए मंयत्र साधनों पर आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम की पहचान पर कार्यशाला	19
4.	ई.एम.डी. के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकों का सम्मेलन	21
5.	एम.सी. शिक्षा की दार्शनिक, समाज-वैज्ञानिक और मानविकीय संकल्पनाओं पर कार्यशाला	26
6.	सरकारी विद्यालयों के प्रिंसिपलों, हेडमास्टरों और अध्यापकों का सम्मेलन	21
7.	विकलांगों की समेकित शिक्षा के प्रति अध्यापक शिक्षकों के अभिविन्यास कार्यक्रम	32
8.	अजमेर जिले के इंजीनियरिंग अध्यापकों की कार्यशाला	21
9.	कृषि कार्यशाला-एस.यू.पी. डब्लू.	14
10.	एस.टी.सी. विद्यालय के प्रिंसिपलों की बैठक	27
11.	ग्रामीण क्षेत्रों के व्यावसायिक कार्यक्रमों में अनुदेशी सामग्री के विकास पर कार्यशाला	25
12.	एम.एड. के लिए विशेष पत्र बनाने पर कार्यशाला	17
	कुल जोड़:	305

ऊपर उल्लेख किए गए कार्यक्रम में भाग लेने वाले राज्यों और उनके सदस्यों की संख्या निम्नलिखित थी:

राजस्थान	239
उत्तर प्रदेश	45
पंजाब	शून्य
हिमाचल प्रदेश	4
हरियाणा	5
चण्डीगढ़	2
जम्मू और कश्मीर	4
दिल्ली	6

अन्य कार्यकलाप और प्रकाशन

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर द्वारा किए गए अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलाप उस क्षेत्र के नवोदय विद्यालयों के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के संबंध में अध्यापकों का प्रशिक्षण/अभिविन्यास, कम्प्यूटर तंत्र के प्रयोग के लिए प्रशिक्षण, फल परिरक्षण, कलात्मक बागवानी और कृषि में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के साथ-साथ रजत जंयती सप्ताह आयोजित करना जिसमें प्रदर्शनी, खेल-कूद, भाषण माला, सांस्कृतिक तथा साक्षरता कार्यकलाप और वन-महोत्सव आदि आयोजित किए गए।

आलोच्य वर्ष में इस कालेज ने कम्प्यूटर शिक्षा के क्षेत्र में "स्कूल साइन्स रिसोर्स लेटर्स" नामक एक विशेषांक "राजस्थान में जनजाति शिक्षा" (हिंदी) और एक रजत जयंती पुस्तिका प्रकाशित की जिसमें विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में परिषद् का योगदान और इस दिशा में अपने क्षेत्र में क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर के प्रयासों का उल्लेख किया गया है।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल में विज्ञान शिक्षा में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एससी.बी.एड. की डिग्री दी जाती है, अंग्रेज़ी में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम जिसमें बी.ए., बी.एड. की डिग्री दी जाती है, विशेष रूप से विज्ञान/वाणिज्य में एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम, विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा में एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम, एक वर्ष का एम.एड. पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एड. की डिग्री दी जाती है, का अध्यापन कराया जाता है।

1986-87

नामांकन

(क) सेवापूर्व पाठ्यक्रम

1.	बी.एससी.बी.एड.	I वर्ष	73
2.	बी.एससी.एड.	II वर्ष	63
3.	बी.एससी.बी.एड.	III वर्ष	74
4.	बी.एससी.बी.एड.	4 वर्ष	63
5.	बी.ए.बी.एड.	I वर्ष	29
6.	बी.ए.बी.एड.	II वर्ष	24
7.	बी.ए.बी.एड.	III वर्ष	31
8.	बी.ए.बी.एड.	4 वर्ष	23
9.	बी.एड. (विज्ञान)		49
10.	बी.एड. (वाणिज्य)		41
11.	बी.एड. (प्रारंभिक)		26
12.	एम.एड.		10
		कुल जोड़:	506

(ख) सेवाकालीन पाठ्यक्रम

1.	बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) I समर	166
2.	बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) II समर	150
	कुल जोड़:	316

परिणामः 1985-86 वर्ष के दौरान क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल में नामांकित छात्रों के 1980 वर्ष के परिणाम निम्नलिखित थेः

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशत
1.	बी.ए.,बी.एड. I वर्ष	28	26	92.86
2.	बी.ए.बी.एड. II वर्ष	31	25	80.64
3.	बी.ए.बी.एड. III वर्ष	23	**19**	82.60
4.	बी.ए.बी.एड. 4 वर्ष	29	24	82.76
5.	बी.एससी.बी.एड. I वर्ष	79	60	76.00
6.	बी.एससी.बी.एड. II वर्ष	76	73	96.05
7.	बी.एससी.बी.एड. III वर्ष	64	63	98.60
8.	बी.एससी.बी.एड. 4 वर्ष	55	49	89.10
9.	बी.एड. (वाणिज्य)	40	38	95.00
10.	बी.एड. (विज्ञान)	44	38	86.36
11.	बी.एड. (प्रारंभिक शिक्षा)	36	31	86.10
12.	एम.एड.	09	07	77.77

विस्तार सेवा

कालेज ने स्कूली शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अध्यापक-शिक्षकों, शिक्षकों और शिक्षा प्रशासकों के प्रशिक्षण से संबद्ध अनेक अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित कीं। 1986-87 (सारणी-2) के दौरान कालेज ने निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किएः

सारणी-2

क्र.सं.	कार्यक्रम	भाग लेने वालों की संख्या
1.	+2 स्तर पर गणित में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली सामान्य गल्तियों पर अध्यापक शिक्षकों की कार्यशाला एवं संगोष्ठी	14
2.	मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों के प्रारंभिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए पाइजेशी विधियों पर अभिविन्यास कार्यक्रम	14
3.	भौतिक विज्ञान के शिक्षण के विशेष संदर्भ में शिक्षण-मॉडल पर महाराष्ट्र और गुजरात के साधन व्यक्तियों/समन्वयकों के लिए अभिविन्यास	16
4.	जनजातीय क्षेत्रों में साधन व्यक्तियों के लिए एन.एफ.ई. में अनुदेशी सामग्री विकसित करने पर कार्यशाला	22
5.	गुजरात के प्रवन माध्यमिक अध्यापकों और विधि मास्टरों के लिए भौतिकी में संगोष्ठी एवं कार्यशाला	02
6.	नेत्र से विकृत बच्चों की समेकित शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान प्रस्तावों के निर्माण पर कार्यशाला	06
7.	+2 स्तर पर रसायन के प्रशिक्षण/अधिगम के माड्यूल का विकास	06
8.	उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा सामान्य रूप से की जाने वाली गल्तियों पर अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों की कार्यशाला	12
9.	गुजराती प्रेस और व्याकरण में आधुनिक शिक्षण प्रवृत्ति और तकनीक पर कार्यशाला	28
10.	गुजरात के जनजातीय क्षेत्रों के प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए पाइजेशी विधियों पर अभिविन्यास कार्यक्रम	28
11.	शिक्षण के विशेष संदर्भ में शिक्षण मॉडलों पर गुजरात और महाराष्ट्र के साधन व्यक्तियों और समन्वयकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	12
12.	लेखाशास्त्र के व्यावसायिक अध्यापकों के लिए सेवाकालीन अध्यापक पाठ्यक्रम	06
13.	सभी पश्चिमी क्षेत्रों के लिए विज्ञान के अध्यापक शिक्षक और पाठ्यचर्या लेखकों की कार्यशाला	10
14.	वैज्ञानिक साक्षरता विकसित करने के लिए मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों के एन.एफ.ई. साधन व्यक्तियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	25
15.	बी.एड. प्रवर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य शिक्षा पाठ्यक्रम और वाणिज्य-अंतर्वस्तु के विकास के लिए वाणिज्य में संगोष्ठी एवं कार्यशाला	10
16.	+2 स्तर पर रसायन की अंतर्वस्तु और विधियों में अध्यापक-शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	29

क्र.सं.	कार्यक्रम	भाग लेने वालों की संख्या
17.	नवीं और दसवीं कक्षा के स्तर पर जैविकी की अंतर्वस्तु और शिक्षण-विधि में मध्य प्रदेश के अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	26
18.	आई.ई.वी.एस. के विशेष संदर्भ में विकलांग बच्चों की शिक्षा पर अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	03
19.	नेत्र से विकृत विद्यार्थियों के साधन अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	13
20.	मध्य प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों के रसायन-अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	33
21.	+2 स्तर पर जैविकी शिक्षण की विधि और अंतर्वस्तु में मध्यप्रदेश के अध्यापक और अध्यापक-शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	36
22.	कुशल बुद्धि और प्रतिभा वाले बच्चों के अभिज्ञापन पर संगोष्ठी	16
23.	रायपुर क्षेत्र के प्रारंभिक स्तर के अध्यापक-शिक्षकों के लिए विज्ञान की प्रकृति पर संगोष्ठी	27
24.	कार्य-अनुभव के मूल्यांकन और कार्यान्वियन की युक्ति विकसित करने पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रिंसिपलों और अध्यापकों की बैठक	49
25.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के अध्यापकों की बैठक	
26.	अध्यापकों की बैठक	36
27.	अध्यापकों की बैठक	35
28.	अध्यापकों की बैठक	25
29.	अध्यापकों की बैठक	34
30.	अध्यापकों की बैठक	12
31.	अध्यापकों की बैठक	10
32.	अध्यापकों की बैठक	36
33.	अध्यापकों की बैठक	26
	राष्ट्रीय शिक्षा नीति	
1.	मुख्य व्यक्तियों (प्राथमिक) के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	70
2.	मुख्य व्यक्तियों (माध्यमिक) के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	36
	नवोदय विद्यालय	
1.	नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	76
	जनसंख्या शिक्षा	
1.	जनसंख्या के कठपुतली नाटक पर कार्यशाला	03
2.	जनसंख्या शिक्षा पर कार्यशाला	28

विस्तार कार्यक्रमों से कुल 723 व्यक्तियों को लाभ हुआ है। राज्यवार भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या यह थी:

मध्यप्रदेश 383, महाराष्ट्र और गोवा 120, गुजरात और दादरा तथा नागर हवेली 115, और देश के अन्य भाग में से 105.

मध्य प्रदेश के जैविकी अध्यापकों के लिए साधन सामग्री उत्पन्न करने के लिए भोपाल के फलोरा 'क' अध्ययन नामक अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत भोपाल के विभिन्न क्षेत्रों से एकत्रित किए गए 250 से भी अधिक एंजियोस्पर्मिस पौधों को 10+2 शिक्षा पद्धति में शामिल कर लिया गया है। इन पौधों की प्रकृति पार्थिव अथवा जलीय होती है। भोपाल का हर्बेरियम नामक फलोरा तैयार किया गया। पौधों को पहचाना गया, उन्हें वर्गों में वर्गीकृत किया गया और पौधों की स्पष्ट संरचना प्रदर्शित करने के लिए उनके विस्तृत चित्र बनाए गए। इसके बाद एकत्रित किए गए पौधों का वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से विवरण दिया गया।

विकासी कार्यक्रम

(क) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति शिक्षा

क्षेत्र के राज्य जनजातीय कल्याण विभाग के परामर्श से कमजोर वर्ग के बच्चों को विद्यालय में दाखिल करने के लिए विशेष प्रावधान किया गया। तदनुसार महाराष्ट्र राज्य जनजातीय कल्याण विभाग द्वारा भेजे गए 22 विद्यार्थियों को दाखिल कर लिया गया। कालेज ने अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम और जनजातीय विद्यालय के लेक्चररों के लिए अनौपचारिक शिक्षा में सेवाकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया।

(ख) जनसंख्या शिक्षा

तीन सेवाकालीन कार्यक्रमों की योजना बनायी गई और उन्हें आयोजित किया गया।

(ग) सतत शिक्षा केन्द्र

कालेज ने महाराष्ट्र और गुजरात के साधन व्यक्तियों को अभिविन्यस्त किया और क्षेत्र के केन्द्रों को आवश्यक सहायता दी गई।

(घ) नयी शिक्षा नीति

कालेज के स्टॉफ ने व्यापक अध्यापक अभिविन्यास कार्यक्रमों का संचालन करने में और नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के चयन में भी राज्यों की सहायता की है।

(ङ) +2 स्तर पर शिक्षा का व्यावसायीकरण

प्रदर्शन विद्यालय में +2 स्तर के प्रवेश में चल रहे (1) टाइपिंग के क्षेत्र में अंग्रेजी स्टेनोग्राफी और (2) आधारभूत इलेक्ट्रॉनिकी प्रौद्योगिकी में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को सी.बी.एस.ई. की पद्धति पर चलाया जाएगा।

(च) कम्प्यूटर विज्ञान कक्ष

कम्प्यूटर साक्षरता के क्षेत्र में स्टाफ के दो सदस्यों को **यू.के.** में प्रशिक्षित किया गया है। कम्प्यूटर विज्ञान कक्ष स्थापित किया जा रहा है।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम जिसमें बी.एससी. (आनर्स), बी.एड. और बी.ए. (आनर्स) बी.एड. की डिग्री दी जाती हैं, एक वर्ष का बी.एड. (प्रारंभिक) पाठ्यक्रम, एक वर्ष का एम.एड. पाठ्यक्रम, दो वर्ष का एम.एससी.एड. (जीवविज्ञान) पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एड. की डिग्री दी जाती है, का अध्यापन कराया जाता है। एम.एससी. (जीवविज्ञान) एड. पाठ्यक्रम पूरे भारत के विद्यार्थियों के लिए है जबकि अन्य सभी पाठ्यक्रम केवल पूर्वी क्षेत्र के छात्रों के लिए हैं। इस कालेज में शिक्षा में पी-एच.डी. के लिए पंजीकृत कराने की सुविधा भी उपलब्ध है।

हालांकि एम.एससी. (जीवविज्ञान) एड. पाठ्यक्रम एक अखिल भारतीय पाठ्यक्रम है, फिर भी इस कालेज में पढ़ाए जाने वाले अन्य सभी पाठ्यक्रम पूर्वी क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए होते हैं। सभी पाठ्यक्रमों में दाखिला मेरिट और राज्य की कोटा के आधार पर किया जाता है जिसमें अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और विकलांग छात्रों के लिए सीटें आरक्षित होती हैं।

नामांकन

1986-87 वर्ष के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों /नामांकन की स्थिति निम्नलिखित थी:

पाठ्यक्रम का नाम		नामांकन
(क) सेवा-पूर्व पाठ्यक्रम		
बी.ए. बी.एड. भाग-I		62
-वही-	भाग-II	57
-वही-	भाग-III	55
-वही-	भाग-4	46
बी.एससी. बी.एड. भाग-1		81
-वही-	भाग-II	75
-वही-	भाग-III	79
-वही-	भाग-4	69
एक वर्ष का बी.एड. (विज्ञान) माध्यमिक		106
एक वर्ष का बी.एड. (कला) माध्यमिक		58
एक वर्ष का बी.एड. (वाणिज्य)		14
एक वर्ष का बी.एड. (विज्ञान) प्रारंभिक		13
एक वर्ष का बी.एड. (कला) प्रारंभिक		8
एम.एड.		19
एम.एससी. (जीवविज्ञान) एड. भाग-I		22
एम.एससी. (जीवविज्ञान) एड. भाग -II		19
	कुल जोड़:	783*
(ख) सेवाकालीन पाठ्यक्रम		
बी.एड. (एस.एस.सी.सी.) (माध्यमिक)	पहला वर्ष	100
	दूसरा वर्ष	142
बी.एड. (एस.एस.सी.सी.) (प्रारंभिक)	पहला वर्ष	53
	दूसरा वर्ष	60
	कुल जोड़:	355**

* जिसमें शारीरिक रूप से विकलांग एक विद्यार्थी शामिल है।

** जिसमें शारीरिक रूप से विकलांग दो विद्यार्थी शामिल हैं।

कालेज ने राज्य में अप्रशिक्षित अध्यापकों की अधिक हो गई संख्या को कम करने के लिए मणिपुर में एक उपकेन्द्र स्थापित किया है जिसमें बी.एड. ग्रीष्मकालीन एवं पत्राचार पाठ्यक्रम के जरिए अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जाता है। इस पाठ्यक्रम को चलाने के लिए अन्य साधन व्यक्तियों का सहयोग लेने के अतिरिक्त इस कालेज के स्टाफ के सदस्यों को गर्मी की छुट्टियों में मणिपुर भेजा गया है।

परिणाम

1985-86 के दौरान क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर में नामांकित छात्रों के 1986 वर्ष की विश्वविद्यालय परीक्षा के पाठ्यक्रम वार परिणाम निम्नलिखित थे:

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशतता %
1.	बी.ए., बी.एड. भाग-I	57	54	94.74
2.	-वही- II	55	52	94.54

1986-87

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशत
3.	-वही- III	45	45	100.00
4.	-वही- 4	29	29	100.00
5.	बी.एससी. बी.एड. भाग-I	78	64	82.00
6.	बी.एससी. बी.एड. भाग-II	78	74	95.00
7.	-वही- भाग-III	73	59	81.00
8.	-वही- भाग-4	61	58	95.00
9.	एक वर्ष का बी.एड.	206*	165	80.00
10.	एम.एड.	23	19	82.60
11.	एम.एससी. (जीवविज्ञान) एड. भाग-II	21*	19	90.50
12.	एम.एससी. (जीवविज्ञान) एड. भाग-II	20*	20	100.00
13.	बी.एड. (एस.एस./सी.सी.)	154*	89+24 (रोका गया)	79.73
14.	बी.एड. (एस.एस./सी.सी.) प्रारंभिक	67*	55	82.00

* भूतपर्व विद्यार्थी शामिल हैं।

विस्तार सेवा

कालेज ने पूर्वी क्षेत्र के संघशासित प्रदेशों और विभिन्न राज्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने विस्तार कार्यकलापों के एक अंग के रूप में विभिन्न सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित **किए**। 1986-87 वर्ष के दौरान आयोजित किए गए सेवाकालीन कार्यक्रमों के ब्यौरे और साल में भाग लेने वालों की संख्या सारणी-3 में दी गई है।

सारणी-3

क्र.सं.	कार्यक्रम	भाग लेने वालों की संख्या
1.	शैक्षिक मनोविज्ञान के शिक्षण में नई पद्धति	17
2.	भारतीय समाज में अध्यापक शिक्षा में उभरती हुई पद्धति और मामले	14
3.	समेकित शिक्षा में विद्यालय पर्यवेक्षकों और प्रशासकों के लिए कार्यशाला	14
4.	एक गूंगे अध्यापक को प्रभावशाली भौतिकी अध्यापक बनाने में सहायता करने के लिए युक्तियों का विकास	7
5.	समेकित विद्यालयों में अध्यापकों के कार्य पर एक कार्यशाला	16
6.	आधारभूत इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी में प्रयोगशाला कार्य दीपिका का निर्माण	10
7.	सिक्किम के माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए दूसरी भाषा के रूप में अंग्रेजी का शिक्षण	29
8.	मणिपुर के माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए जीवविज्ञान में अंतर्वस्तु समृद्धि पाठ्यक्रम	22
9.	अण्डमान और निकोबार द्वीप के अध्यापकों के लिए सामाजिक विज्ञान में अंतर्वस्तु एवं विधि समृद्धि	30
10.	मणिपुर के माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए अंग्रेजी में अभिविन्यास कार्यक्रम	31
11.	उड़ीसा के प्रारंभिक विद्यालयों के अनुसूचित जनजाति के अध्यापकों के लिए कार्यशाला	17
12.	उड़ीसा के प्रारंभिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति के अध्यापकों के लिए कार्यशाला	21
13.	मणिपुर के प्रारंभिक विद्यालयों में कार्यरत अनुसूचित जनजाति के अध्यापकों के लिए कार्यशाला	30
	कुल जोड़:	258

विस्तार कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी 258 व्यक्तियों की राज्यवार स्थिति निम्नलिखित थी:

उड़ीसा 76, पश्चिम बंगाल 14, बिहार 9 और असम तथा अण्डमान निकोबार द्वीप सहित अन्य उत्तर पूर्वी राज्य 159।

अन्य कार्यकलाप

इस कालेज का संकाय नियमित शिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों में भाग लेने के अतिरिक्त राज्य, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तरों पर संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों में भी भाग लिया।

संकाय के सदस्यों ने अपने **शोध** पत्र और लेख राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में भेजे।

उन्हें शिक्षा, मानविकी और विज्ञान में डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त करने के लिए शोध कार्य में मार्गदर्शन दिया गया। आलोच्य वर्ष में इस कालेज के संकाय सदस्यों के मार्गदर्शन में शोधकार्य कर रहे पांच शिक्षुओं को उत्कल विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की डिग्री दी गई हैं।

इस कालेज को क्लास परियोजना का एक साधन केन्द्र माना गया है और यह अध्यापकों को कम्प्यूटर में अल्पकालिक पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

परिषद् के रजत जयंती समारोह के अवसर पर निम्नलिखित कार्यकलाप किए गए: परिषद् की फिल्मों को दिखाना, प्रदर्शनी आयोजित करना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने में परिषद् और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों की भूमिका पर एक चर्चा की गई (आकाशवाणी, कटक), ललित कलाओं की प्रतियोगिता आयोजित की गई, उड़ीसा, बंगाली, हिंदी और अंग्रेजी में नाटक खेले गए, "शिक्षा में उत्कृष्टता", "स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा पर विचार" और "वर्तमान सत्र में नई शिक्षा नीति-उन्नति और **अवनीति**" जैसे विषयों पर सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों की भाषण माला आयोजित की गई और **पत्रिका** का प्रकाशन किया।

1986-87

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर में सेवापूर्व पाठ्यक्रम अर्थात् बी.एससी. एड. और बी.ए.एड. डिग्रियों के लिए 8 सेमस्टर समेकित पाठ्यक्रम, बी.एड. (प्रारंभिक और माध्यमिक दोनों) में 2 सेमस्टर पाठ्यक्रम, रसायन, भौतिकी और गणित में 4 सेमस्टर एम.एससी. एड. पाठ्यक्रम और 2 सेमस्टर एम.एड. पाठ्यक्रम का अध्यापन कराया जाता है। यह विज्ञान और शिक्षा में पी–एच.डी. डिग्री के लिए विद्यार्थियों को पंजीकृत कराने की भी सुविधा प्रदान करता है।

1986–87 वर्ष के दौरान भिन्न-भिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित विद्यार्थियों की संख्या निम्नलिखित थी:

सेवापूर्व पाठ्यक्रम

बी.एससी एड.	पहला वर्ष	76
	दूसरा वर्ष	55
	तीसरा वर्ष	57
	चौथा वर्ष	47
बी.ए.एड.	पहला वर्ष	30
	दूसरा वर्ष	29
	तीसरा वर्ष	26
	चौथा वर्ष	29
बी.एड. (प्रारंभिक)		19
बी.एड. (माध्यमिक)		80
एम.एससी. एड. (भौतिकी)	पहला वर्ष	18
	दूसरा वर्ष	21
एम.एससी. एड.	पहला वर्ष	23
	दूसरा वर्ष	16
एम.एससी एड. (गणित)	पहला वर्ष	18
	दूसरा वर्ष	10
एम.एड.		26
	कुल जोड़:	580

1985–86 वर्ष के शिक्षा सत्र के विभिन्न पाठ्यक्रमों के नामांकित छात्रों के 1986 वर्ष के परिणाम निम्नलिखित हैं:

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशत %
1.	एम.एससी. एड. (रसायन) चौथा सेमस्टर	12	12	100.00
2.	एम.एससी. एड. (गणित) चौथा सेमस्टर	13	12	86.66
3.	एम.एससी. (भौतिकी) चौथा सेमस्टर	14	12	85.71
4.	एम.एड. दूसरा सेमस्टर	19	17	89.47
5.	बी.एड. (माध्यमिक) दूसरा सेमस्टर	71	66	92.95
6.	बी.एससी. एड. आठवां सेमस्टर	52	47	90.38
7.	बी.ए.एड.– आठवां सेमस्टर	29	23	79.31

सेवाकालीन कार्यक्रम और विस्तार

आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित कार्यशालाओं/संगोष्ठियों के जरिए 603 अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों को अभिविन्यस्त/प्रशिक्षित किया गया:

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	तिथि	भाग लेने वालों की संख्या
1.	शिक्षा के व्यावसायीकरण पर किए गए 3 अभिविन्यास कार्यक्रमों की अनुवर्ती कार्यशाला	21–4–86 से 24–4–86	1
2.	कर्नाटक के आई.पी.यू.सी. अंग्रेजी पाठ के निर्माण के लिए अभिविन्यास	9–7–86 से 12–7–86	40
3.	**4 वर्ष के विद्यार्थियों के लिए प्री इण्टरशिप** सम्मेलन	10–7–86 से 11–7–86	36
4.	केरल की अध्यापक शिक्षा के लिए जनसंख्या शिक्षा पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम	26–8–86	35
5.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यालयों के लिए अपनाए गए 8 विद्यालय अध्यापकों का **सप्ताहांत** कार्यक्रम	12–9–86 से 14–9–86 तक और 19–9–86 से 21–9–86 तक	39
6.	समेकित शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक शिक्षकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	22–9–86 से 26–9–86 तक	41
7.	तमिलनाडु में वाणिज्य के व्यावसायिक अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	13–10–86 से 22–10–86	26
8.	मलयालम के शिक्षण में अध्यापक-शिक्षक/अध्यापक अभिविन्यास पाठ्यक्रम	14–10–86 से 18–10–86	20
9.	बी.एड. के विद्यालयों के लिए प्री इंटरशिप सम्मेलन	29–10–86	26
10.	व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में मूल्यांकन प्रविधि के विकास पर कार्यशाला	3–11–86 से 8–11–86	12
11.	तेलुगु के शिक्षण में अध्यापक-शिक्षकों का अभिविन्यास पाठ्यक्रम	17–11–86 से 21–11–86	30
12.	केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय के अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	17–11–86 से 22–11–86	24

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	तिथि	भाग लेने वालों की संख्या
13.	मलयालम के शिक्षण में अध्यापक शिक्षकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	17-11-86 से 21-11-86	33
14.	जैविकी की साधन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	18-11-86 से 27-11-86	20
15.	मैसूर जिले के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के होस्टल के वार्डनों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	24-11-86 से 26-11-86 तक	45
16.	आंध्र प्रदेश में अंग्रेजी के शिक्षण में अध्यापक शिक्षकों का अभिविन्यास पाठ्यक्रम	24-11-86 से 27-11-86	8
17.	कर्नाटक के टी.टी.आई. के अध्यापक शिक्षकों के लिए अंतर्वस्तु समृद्धि पाठ्यक्रम	8-12-86 से 13-12-86	52
18.	ए.पी. के लिए गणित की साधन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	15-12-86 से 19-12-86	25
19.	केरल में गणित की साधन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	15-12-86 से 19-12-86	51
20.	मैसूर जिले के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यालयों के अपनाए गए 8 अध्यापकों के लिए सप्ताहांत कार्यक्रम	23-1-87 से 25-1-87 और 30-1-87 से 1-2-87 तक	46
21.	सह-पाठ्यचर्या के क्षेत्रों पर श्रव्यटेपों के विकास पर कार्यशाला	9-2-87 से 14-2-87 तक	23
22.	जनसंख्या शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तैयार किए गए स्लाइडों के श्रव्य-टेप के विकास पर कार्यशाला	9-3-87 से 11-3-87	5
23.	कर्नाटक की अनौपचारिक शिक्षा के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पैकेजों के विकास पर कार्यशाला	16-3-87 से 25-3-87	45
		कुल जोड़:	683

सेवाकालीन/विस्तार कार्यक्रमों में राज्यवार भाग लेने वालों की संख्या निम्नलिखित थी:

आंध्र प्रदेश-91, कर्नाटक-388, केरल-162, तमिलनाडु-30 और अन्य 12.

अनुसधान कार्यकलाप

आलोच्य वर्ष में कालेज द्वारा हाथ में लिए गए अनुसंधान अध्ययन के ब्यौरे निम्नलिखित थे:

क्र.सं.	अनुसंधान परियोजना का शीर्षक	अन्वेषक इंचार्ज
1.	"शैक्षिक एवं मानसिक दृष्टि से विकृत व्यक्तियों के कन्नड़ पठन में सुधार लाना"	डा० एम.ए. खांदर डा० एस. रामन

(ई.आर.आई.सी. प्रायोजित परियोजना)

प्रकाशन

कालेज द्वारा प्रकाशित कुछ प्रकाशन निम्नलिखित हैं:

1. **पापुलेशन एजुकेशन – ए मैनुअल फॉर टीचर एजुकेटर्स**
   – सी. शेषाद्रि और यू.एस. मध्यस्थ द्वारा संपादित
2. **"नंबर बेसेज"** (कन्नड में) प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए एक स्व-अनुदेशी मॉड्यूल
3. **मल्टीडाइमेन्शनल रोल ऑफ टीचर्स**
   – राष्ट्रीय अध्यापक आयोग द्वारा चलाया गया एक पत्र

प्रदर्शन बहु-उद्देशीय विद्यालय

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज से संलग्न प्रदर्शन बहु-उद्देश्यी विद्यालय इस कालेज द्वारा विभिन्न अध्यापक-शिक्षा पाठ्यक्रमों में लाभांकित किए गए अध्यापक-शिक्षकों के लिए व्यावहारिक विद्यालय के रूप में काम आते हैं। इन विद्यालयों का प्रयोग स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रक्रियात्मक व्यवहारों को लागू करने के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में किया जाता है।

नामांकन

1986-87 वर्ष के दौरान विभिन्न प्रदर्शन बहु-उद्देशीय विद्यालयों में नामांकित विद्यार्थियों की संख्या निम्नलिखित थी:

क्र.सं.	कक्षा	डी.एम.एस. अजमेर	डी.एम.एस. भोपाल	डी.एम.एस. भुवनेश्वर	डी.एम.एस. मैसूर
1.	1	33	70	71	81
2.	2	41	70	81	90
3.	3	34	81	82	88
4.	4	37	84	84	94

क्र.सं.	कक्षा	डी.एम.एस. अजमेर	डी.एम.एस. भोपाल	डी.एम.एस. भुवनेश्वर	डी.एम.एस. मैसूर
5.	5	32	86	113	91
6.	6	104	80	116	86
7.	7	99	75	113	80
8.	8	84	76	103	78
9.	9	118	80	111	76
10.	10	82	67	112	74
11.	11	98	85	89	73
12.	12	92	54	89	57
	कुल जोड़ः	854	908	1164	1968

परिणाम

मार्च-अप्रैल 1986 में हुई बोर्ड परीक्षा के परिणाम निम्नलिखित थेः-

विद्यालय	कक्षा	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्र	प्रतिशत %
डी.एम.एस.	बारहवीं	93	81	87.00
अजमेर	दसवीं	84	83	99.00
डी.एम.एस.	बारहवीं	54	45	83.3
भोपाल	दसवीं	67	(परीक्षा फल अभी निकला नहीं है)	–
डी.एम.एस.	बारहवीं	82	54	65.85
भुवनेश्वर	दसवीं	84	82	97.6
डी.एम.एस.	बारहवीं	47	35	74.47
मैसूर	दसवीं	70	67	94.3

1986-87

अध्याय 9

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक इकाई के रूप में पर्याप्त स्वायत्तता के साथ कार्य करता है। इसका मुख्य उद्देश्य देश में शिक्षा सुधार और प्रसार, विशेषकर जन संचार, तथा शिक्षा की वैकल्पिक प्रणालियों के विकास में शैक्षिक प्रौद्योगिकी को प्रोन्नत करना है। सी.आई.ई.टी. शैक्षिक आवश्यकताओं के प्रासंगिक साफ्टवेयर सामग्रियां विकसित करता है, प्रशिक्षण के द्वारा क्षमताएं और प्रशिक्षित जनशक्ति उत्पन्न करता है, शैक्षिक प्रौद्योगिकी में प्रणालियों, कार्यक्रमों और सामग्रियों का मूल्यांकन तथा अनुसंधान कार्य निष्पादित करता है। देश में शैक्षिक संचार और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में यह प्रलेख देता है और सूचना प्रसारित करता है। उपकरण, परामर्श और प्रशिक्षण के लिए सी.आई.ई.टी. को वित्तीय सहायता यू.एन.डी.पी/यूनेस्को/यूनीसेफ द्वारा भी प्राप्त होती है। संस्थान चार स्थानों पर स्थित है और इसका भवन निर्माणाधीन है।

सी.आई.ई.टी. सात प्रभागों द्वारा अपना कार्य करता है।

(1) सुदूर शिक्षा, नियोजन, समन्वय, अनुसंधान और मूल्यांकन प्रभाग मुख्यतः सुदूर शिक्षा, कार्यक्रम नियोजन और समन्वय गतिविधियों के कार्य से संबंधित है, (2) शैक्षिक टेलीविजन प्रभाग वर्तमान में मुख्यतः इनसेट 1–बी द्वारा ग्रामीण बच्चों व अध्यापकों को स्कूल के अन्दर और बाहर पहुँचाने हेतु शैक्षिक टी.वी. कार्यक्रमों के विकास व उत्पादन से संबंधित है, (3) शैक्षिक रेडियो प्रभाग प्राथमिक व माध्यमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए श्रव्य कार्यक्रम निर्मित करता है, (4) फोटो व फिल्म प्रभाग शैक्षिक फिल्म, स्टिरिओ और फोटोग्राफों के निर्माण के अतिरिक्त प्राथमिक व माध्यमिक कक्षाओं के लाभ के लिए शैक्षिक फिल्में (16 एम एम) निर्मित करता है, (5) लेखाचित्र कला, प्रदर्शनी और मुद्रण विभाग प्रथमतः कम लागत वाली शिक्षण सहायक सामग्रियों और टेप-स्लाइड कार्यक्रमों के उत्पादन से संबंधित है, यह प्रभाग प्रदर्शनियां लगाता है और अपनी मल्टीलिथ आफसेट प्रिंटिंग मशीन का प्रयोग करते हुए सी.आई.ई.टी. – परिषद् के मुद्रण-कार्य को हाथ में लेता है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं में अध्यापकों को प्रशिक्षण देना इस प्रभाग का एक महत्वपूर्ण कार्य रहा है, (6) सूचना, प्रलेखन और केंद्रीय फिल्म पुस्तकालय प्रभाग के पास केंद्रीय फिल्मों का भंडार है जिन्हें सारे देश के लगभग 4250 सदस्य संस्थाओं को निःशुल्क उधार दिया जाता है। संचार प्रलेखन पर सेवा-दौरान प्रशिक्षण/पाठ्यक्रम/संगोष्ठियां और देश के विभिन्न भागों में शैक्षिक फिल्मों के उत्सव आयोजित करने के अतिरिक्त यह प्रभाग शैक्षिक प्रौद्योगिकी में सूचना वितरण केंद्र के रूप में कार्य करता है, और (7) तकनीकी नियोजन, संचालन और रखरखाव प्रभाग सी.आई.ई.टी. के विभिन्न प्रभागों को तकनीकी सहायता प्रदान करता है। इस प्रभाग के पास एक ई.टी.वी. स्टूडियो, एक रेडियो स्टूडियो और एक ओ.बी. वीडियो वैन है। उपर्युक्त स्टूडियों में लगे उपकरण के संचालन और रखरखाव के लिए यह प्रभाग उत्तरदायी है। उ.प्र., महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्रप्रदेश, बिहार और उड़ीसा में लगे एक-एक स्टूडियो अर्थात् एस.आई.ई.टी. के छः स्टूडियों में उपकरण-सज्जा के कार्य को यह प्रभाग समन्वित करता है।

अनुसंधान

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान चल रही परियोजना को जारी रखने के अतिरिक्त सी.आई.ई.टी. ने पाँच नये अनुसंधान अध्ययन हाथ में लिए। दो अध्ययनों की रिपोर्टों को लिखे जाने का कार्य चल रहा है। इन प्रोजेक्टों के विवरण निम्न प्रकार हैं:

प्रोजेक्ट का नाम	शुरू होने की तिथि	प्रधान जांचकर्ता	की गई प्रगति
विकलांग बच्चों (बहरों/गूंगों) के मध्य संकल्पनाएं विकसित करने हेतु शिक्षण सहायक सामग्रियों के प्रयोग संबंधी एक अन्वेषी अध्ययन (ई.आर.आई.सी. प्रोजेक्ट)	मार्च, 83	डा० एम.सी. शर्मा	कार्यदल की दो बैठकें की गईं। विभिन्न संकल्पनाओं संबंधी तैयार उपकरणों को परीक्षित किया गया तथा उन्हें अंतिम रूप दिया गया। सांख्यिकी विश्लेषण और रिपोर्ट लेखन प्रगति पर है।
ई.टी.वी. कार्यक्रमों का टैली-कास्ट पूर्व परीक्षण	1–4–86	डा०एच.एम. कानाडे	दिल्ली के ग्रामीण स्कूल में 15 शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम परीक्षित किए गए। आठ कार्य-क्रम नवनिर्मित अध्यापक कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत परीक्षित किए गये। गणित, कम लागत शिक्षण सहायक सामग्रियों और विक-लांग बच्चों का सामान्य बच्चों

प्रोजेक्ट का नाम	शुरू होने की तिथि	प्रधान जांचकर्ता	की गई प्रगति
			के साथ एकीकरण नामक श्रृंखला के अधीन कार्यक्रम परीक्षित करने के लिए इसी प्रकार का एक अभ्यास तिलोनिया के अनौपचारिक शिक्षा केंद्र में हाथ में लिया गया। ई.टी.वी. अवयव के अनुसरण में उड़ीसा के छः जिलों में विशाल अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम हाथ में लिया गया। रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी गई थी। सी.आई.ई.टी. और एस.आई.ई.टी. द्वारा निर्मित ई.टी.वी. कार्यक्रमों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए महाराष्ट्र के चुने हुए गांवों के वास्तविक टी.वी. प्रयोगकर्ताओं से पुनर्निवेशन प्राप्त किया गया।
प्राथमिक स्कूलों के बच्चों और अध्यापकों के लिए इनसेट के ई.टी.वी. कार्यक्रमों के बारे में मूल्यांकन अध्ययन	1-4-86	डा० जगदीश सिंह	ई.टी.वी. कार्यक्रमों के प्रति बच्चों की प्रतिक्रियाओं तथा पुनर्निवेशन संकलन की प्रविधियों संबंधी एक त्रिदिवसीय अभिविन्यास जून, 1986 में उड़ीसा और महाराष्ट्र के चुने हुए टी.वी. प्रयोगकर्ता अध्यापकों के लिए आयोजित किया गया। पुनर्निवेशन के आधार पर अध्यापकों, निर्माताओं/कथालेखकों से प्राप्त कार्यक्रम के लाभ हेतु रिपोर्टें तैयार की गईं। सुनिश्चित पद्धति से "स्वास्थ्य और स्वास्थ्य विज्ञान" संबंधी एक कार्यक्रम श्रृंखला के विकास हेतु अग्रप्रेषण आंकड़े एकत्रित किए गए। सी.आई.ई.टी. में ई.टी.वी. में अनुसंधान की भावी कार्यनीति खोजने हेतु प्राथमिक स्तर के ग्रामीण बच्चों हेतु ई.टी.वी. में संचार अनुसंधान संबंधी एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी-व-कार्यशाला मार्च 1987 में आयोजित की गई। रिपोर्ट लेखन प्रगति पर है।
इनसेट-1 की ई. टी.वी. सेवा के उपयोग का अनुवीक्षण	1-4-86	डा० जगदीश सिंह	1986-87 में उड़ीसा और महाराष्ट्र के टी.वी. प्रयोगकर्ता अध्यापकों से ई.टी.वी. उपयोगिता रिपोर्ट आमंत्रित की गई। केंद्रीय और राज्य स्तरों पर नीति नियोजकों, प्रशासकों और प्रोजेक्ट प्रबंधकों के लाभ के लिए प्रत्येक राज्य हेतु एक विवरण तैयार किया गया। ई.टी.वी. उपयोगिता के बारे में बिहार के पांच इनसेट जिलों से आंकड़े व्यक्तिगत रूप से संकलित किए गए। उपयोगिता में सुधार लाने के लिए सही उपाय सुझाते हुए एक प्रतिवेदन सभी संबंधितों को भेजा गया।
माध्यमिक शिक्षा स्तर पर सुदूर शिक्षा संस्थानों की संगठनात्मक संरचना और प्रबंधीय प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए	जुलाई, 86	प्रो०ओ.एस. देवल	पत्राचार अध्ययन संस्थान के बारे में संगठनात्मक संरचना और प्रबंधीय प्रक्रियाओं का अध्ययन किया गया। माध्यमिक शिक्षा मंडल, अजमेर और पत्राचार शिक्षा संस्थान (उ.प्र.) इलाहाबाद।
सी.आई.ई.टी. द्वारा निर्मित श्रव्य रेडियो कार्यक्रमों का मूल्यांकन	1-4-86	डा०आर. एल. फुटेला	पुनर्निवेशन प्राप्त करने के लिए दिल्ली के स्कूलों के हिंदी अध्यापकों की एक कार्यशाला में हिंदी कविता श्रृंखला में सात श्रव्य कार्यक्रमों को मूल्यांकित किया गया।

1986-87

विकासात्मक गतिविधियां

कार्यशालाएं/संगोष्ठियां/सम्मेलन

कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	आमंत्रित प्रतिभा-गियों की संख्या	अभ्युक्तियां
एस.आई.ई.टी. शैक्षिक प्रौद्योगिकी सेल अधिकारियों का सम्मेलन	25 से 27 फरवरी 1987	ई.टी. सेल बंगलौर	30	ई.टी.सेलों के कार्य को पुनरीक्षित किया गया तथा एन.पी.ई. 1986 को दृष्टि-गत रखते हुए भावी कार्य-योजन प्रतिपादित किया गया।
सुदूर शिक्षा पाठों की लेखन संबंधी कार्यशाला (उच्च शैक्षिक स्तर पर)	14 से 26 जुलाई, 1986	इंस्टीच्यूट ऑफ कोरेस्पो-डैन्स एन्ड कन्टीन्यू-इंग एजु-केशन, मद्रास, यूनिव-र्सिटी, मद्रास	20	
सुदूर शिक्षा पाठों की लेखन संबंधी कार्यशाला (माध्यमिक शिक्षा स्तर संबंधी)	9–18 दिसंबर 1986	माध्यमिक शिक्षा मंडल	30	सुदूर शिक्षा संबंधी पाठ लिखने के लिए आधुनिकतम प्रविधियों को प्रयोग करते हुए प्रतिभागियों द्वारा आदर्श पाठ तैयार किए गए।
शैक्षिक संचार में सूचना तथा प्रलेखन पद्धति पर संगोष्ठी	8 से 9 सितंबर 1986	सी.आई. ई.टी.	20	विभिन्न संचार साधनों में शैक्षिक साफ्टवेयर के प्रलेखन हेतु एक प्रोफार्मा मानकीकृत किया गया शैक्षिक संचार प्रलेख में कला स्थिति को प्रकाशित किया गया।
"वेलेंसी" पर टेप स्ला-इडों के उत्पादन हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	दिसंबर, 86 और फरवरी 1987	–वही–	70	लेख तैयार करने के लिए विशेषज्ञों की दो बैठकें की गई
परिषद् के संघटक एककों के लिए फोटो टेप स्लाइडों/ए.वी. सामग्रियों का उत्पादन	18 से 20 मार्च 1987	–वही–	21	इस कार्यक्रम के अधीन "कार्बनिक मिश्रण के प्रवेश" पर टेप स्लाइड श्रृंखला तैयार की गई। टेपस्लाइड कार्यक्रम के संशोधन हेतु विषय विशेषज्ञों की तीन भिन्न-भिन्न कार्यशालाएं की गईं।
भौतिकी चार्टों का विकास		सी.आई. ई.टी.	54	इस वर्ष चार्टों के खाके को अंतिम रूप देने के लिए तीन-तीन दिनों की तीन बैठकें जिनमें छः–छः विशेषज्ञ थे, की गईं।
कार्यक्रमों के सारों, श्रृंखलाओं और विषयों के विकास हेतु राष्ट्रीय कार्यशाला	19 से 25 मई, 1986	–वही–	41	चुने हुए ई.टी.वी. कार्यक्रमों संबंधी विषयों के संक्षेप तैयार किये गये।
शैक्षिक प्रयोजनों के लिए श्रव्य/रेडियो कार्य-क्रमों के कथा-लेखन व उत्पादन हेतु ए.आई.बी.डी. सी.आई.ई.टी. एकीकृत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	17 से 12 दिसंबर 1986	–वही–	18	लेखों पर आधारित लगभग आठ कार्यक्रम जो कार्यशाला में विकसित किए गए, निर्मित किए गए।
अध्यापक शिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी में अभिविन्यास पाठ्यक्रम	7 से 18 जुलाई 1986	–वही–	20	शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभिन्न क्षेत्रों में जैसे कार्यक्रम निदेशन, सूक्ष्म शिक्षण, सुदूर शिक्षा, प्रणामी दृष्टिकोण, ए.वी. पद्धतियां आदि अध्यापक शिक्षक प्रशिक्षित किये गये।
ई.टी. में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और चार्ट उत्पादन में इसके प्रयोग	22 सितंबर से 3 अक्तूबर 1986	सी.आई. ई.टी.	20	शैक्षिक प्रौद्योगिकी के सैद्धांतिक पहलुओं तथा ग्राफ-सहायक-सामग्रियों विशेषकर चार्ट और सिल्क स्क्रीन मुद्रण सामग्रियों, के तैयार करने के प्रयोगों में उ.प्र. और हरियाणा राज्यों के प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	आमंत्रित प्रतिभागियों की संख्या	अभ्युक्तियां
फोटोग्राफी में प्रशिक्षण कार्यक्रम	8 से 19 दिसंबर, 1986	–वही–	13	शिल्प फोटोग्राफी, रंगदार और साथ ही साथ काला-सफेद क्षेत्र में सारे देश के प्रतिभागियों को सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों का ज्ञान प्रदान किया गया। प्रतिभागियों ने रचनाओं को विकसित किया तथा प्रारंभिक अध्यापकों हेतु कुछ संगत संकल्पनाओं के स्पष्टीकरण के लिए फोटोग्राफ तैयार किए।
ई.टी. में प्रशिक्षण कार्यक्रम और ए.वी. सामग्रियों, विशेष टेप स्लाइड कार्यक्रमों के उत्पादन में नियमों का प्रयोग	28–7–86 से 8–8–86	–वही–	19	शिक्षा में गुणवत्ता सुधार हेतु माध्यमिक स्तर के सारे देश के अध्यापक शिक्षकों को सिद्धांत तथा साथ ही साथ टेप स्लाइडें तैयार करने में प्रशिक्षित किया गया।
थामसन स्मारक तकनीकी संचालन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम-1	6 से 7 अक्तूबर 1986	–वही–	16	एस.आई.ई.टी. और सी.आई.ई.टी. के प्रतिभागियों ने भाग लिया।
थामसन स्मारक तकनीकी संचालन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम-2	20 से 21 अक्तूबर 1986	–वही–	24	स्टूडियो प्रकाश ध्वनि रिकार्डिंग और कैमरा संचालनों की विशिष्ट प्रविधियों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
थामसन स्मारक तकनीकी संचालन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम-3	3 से 19 नवंबर, 86	–वही–	14	कैमरा पुरुष प्रशिक्षण ए.आई.बी.डी. के सहयोग से भी आयोजित किया गया।
ई.टी.वी. उत्पादन और तकनीकी संचालनों में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	7 अप्रैल से 16 मई 1986	–वही–	43	ए.आई.बी.डी. क्वालालंपुर, के सहयोग से आयोजित किया गया। एस.आई.ई.टी. और सी.आई.ई.टी. के प्रतिभागियों ने भाग लिया।
रेडियो और टेलीविजन उत्पादन केंद्रों का प्रबंध प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	प्रथम चरण 26 मई से 6 जून, 86 द्वितीय चरण 16 से 26 सितंबर, 86 तृतीय चरण 8 से 19 दिसंबर, 86	–वही–	19	पाठ्यक्रम के तृतीय चरण में एस.आई.ई.टी.,टी.टी.टी. आईज, ई.एम.आर.सीज और सी.आई.ई.टी. के प्रतिभागियों की थाईलैंड, सिंगापुर, श्रीलंका, और मलेशिया की अध्ययन यात्रा शामिल थी।
ई.टी.वी. कार्यक्रमों और तकनीकी संचालनों के उत्पादन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	13 अक्तूबर से 21 नवंबर 1986	एस. आई.ई. टी., लखनऊ	40	ए.आई.बी.डी. क्वालालम्पुर, के सहयोग से आयोजित किया गया। एस.आई.ई.टी. और सी.आई.ई.टी. के प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रमों के लिए मैगज़ीन के आकार को विकसित किया गया।

अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा श्रव्य-रेडियो टेपों के लिए साफ्टवेयर का निर्माण

इस परियोजना के अधीन कुल 119 कार्यक्रम बच्चों के लिए निर्मित किये गये। ये कार्यक्रम संगीत शिक्षा, स्वतंत्रता आंदोलन, लोक कथाओं और हंसी-मज़ाक से संबंधित थे। इसमें शिक्षणीय मानसिक रूप से विकलांग बच्चों और नेत्र विकलांग बच्चों के लिए भी कार्यक्रम निर्मित किये गये।

शैक्षिक फिल्मों का उत्पादन

"गोपाल पढ़ने लगा" (हिन्दी) नामक अनौपचारिक शिक्षा पर एक फिल्म दिल्ली, राजस्थान और मद्रास में रची गई। यह पूरी की जा चुकी है। दूसरी फिल्म "सोलर एक्लिप्स" दिल्ली और मद्रास में पूरी की गई। तीन फिल्में देश और निवासी श्रृंखला पर तथा तीन फिल्में पश्चिमी तट पर भी 1986–87 में शुरू की गईं। इनमें से "डेजर्ट गोल्ड" पूरी की जा चुकी थी और अन्य पूरा होने के निकट हैं।

1986-87

हिन्दी में फिल्मों का डबिंग

हिन्दी में दो फिल्में "एटरनल गोल्ड" और "डेजर्ट गोल्ड" डब की गईं।

बिक्री और वितरण हेतु फिल्मों की प्रतियों का निर्माण

परियोजना पूरी की गई: छः टेप स्लाइड कार्यक्रम और 17 फिल्में बेची गईं।

रेडियो का प्रयोग करते हुए हिन्दी को प्रथम भाषा के तौर पर पढ़ाने हेतु रेडियो मार्गदर्शी परियोजना का विस्तार

परियोजना को मध्य प्रदेश तक बढाया गया, 500 टू-इन-वन सेट होशंगाबाद जिला के चुने हुए स्कूलों को दिए गए। श्रव्य टेपों के 77 सेटों की 500 प्रतियां जिसमें प्रत्येक में 308-308 कार्यक्रम हैं, वितरणार्थ डुप्लीकेट की जा रही हैं।

राष्ट्रीय नेताओं के चित्रों का विकास

रिपोर्टाधीन वर्ष में भी परियोजना जारी रखी गई।

प्रारंभिक स्तर पर बच्चों व अध्यापकों के लिए ई.टी.वी. कार्यक्रमों का उत्पादन

139 ई.टी.वी. कार्यक्रम निर्मित किए गए, ब्यौरा निम्न प्रकार है:

5–8 वर्ष की आयु के बच्चे	22
9–11 वर्ष की आयु के बच्चे	28
अध्यापक	66
विविध	23
	139

इसमें विशाल अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए निर्मित 39 कार्यक्रम भी शामिल हैं।

विस्तार कार्यक्रम

1986-87 में आयोजित विस्तार कार्यक्रम निम्न प्रकार हैं:

दो यूनेस्को कार्यशालाएं–

1– लाभवंचित और स्कूल से बाहर जनसंख्या के लिए शैक्षिक और विकासात्मक रेडियो संबंधी कार्यनीतियां और प्रक्रियाएं
2– लाभवंचित और स्कूल से बाहर जनसंख्या के लिए संचार सामग्री का विकास

सी.आई.ई.टी., नई दिल्ली में क्रमशः 4 से 8 अगस्त, 1986 और 11 से 13 अगस्त, 1986 में आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए संचार और शिक्षा संबंधी 50 विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया।

परिषद् के सहयोग से मई 1986 में मणिपुर में शैक्षिक फिल्म उत्सव आयोजित किए गए और दिल्ली में सितंबर 1986 में लगभग 18,500 छात्रों और अध्यापकों ने लाभ उठाया।

परामर्श

सी.आई.ई.टी. द्वारा प्रदान किये गये परामर्श का विवरण निम्न प्रकार है:

परामर्श लेने वाली संस्थाएं	परामर्श का प्रयोजन
शैक्षिक मनोविज्ञान परामर्श और मार्गदर्शन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	रेडियो कथा लेखन के बारे में विचार देना
विक्रम साराभाई विज्ञान केंद्र, अहमदाबाद	ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान शिक्षण के लिए श्रव्य रेडियो कार्यक्रमों के उत्पादन हेतु सुविधा खोजना
तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, चण्डीगढ़	भरती के लिए तकनीकी स्टाफ का चयन
सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र, भावलपुर हाउस, भगवानदास रोड, नई दिल्ली	श्रव्य कैसेट रिकार्डर्स, स्लाइड-व-फिल्मस्ट्रिप प्रोजेक्टर और श्रव्य कैसेट टेपों का तकनीकी मूल्यांकन
क्षेत्र सेवा, विस्तार और समन्वय विभाग	श्रव्य कैसेट रिकार्डरों का तकनीकी मूल्यांकन
राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली	पिछड़े क्षेत्रों के स्कूलों में अध्ययन कर रहे बच्चों की अकादमिक उपलब्धि को ऊपर उठाने के लिए संयुक्त नवोद्भावना प्रोजेक्ट चलाने की सुविधा खोजना
शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	वीडियो रचनालेखन में प्राथमिक अध्यापकों के लिए रचना विकास में व्यावसायिक परामर्श-दाताओं और विशेषज्ञों को सम्मिलित करना

प्रकाशन

1986–87 में सी.आई.ई.टी. द्वारा निकाले गये प्रकाशनों का विवरण निम्न प्रकार है:

1986-87

क्र.स.	शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
1.	महाराष्ट्र में 1985-86 के लिए ई.टी.वी. उपयोगिता संबंधी रिपोर्ट	जून, 86	50
2.	ई.टी.वी. कार्यक्रम पुनरावृत्ति का परिमाण,एक विश्लेषण	-वही-	25
3.	1985-86 में तथा 1986-87 के प्रथम अर्ध में ई.टी.वी. कार्यक्रम उत्पादन, एवं परिमाणात्मक विश्लेषण	-वही-	75
4.	गुजरात में 1985-86 के लिए ई.टी.वी. उपयोगिता संबंधी रिपोर्ट	जुलाई, 86	50
5.	विशाल अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम- ई.टी.वी. अवयव संबंधी पुनर्निवेशन	सितंबर, 86	25
6.	बिहार के इनसेट जिलों में ई.टी.वी. उपयोगिता संबंधी एक अध्ययन रिपोर्ट	दिसंबर, 86	25
7.	ई.टी.वी. कार्यक्रम संबंधी पुनर्निवेशन-एक रिपोर्ट	फरवरी, 87	25
8.	दर्शकों की डाक का विश्लेषण-कुछ प्रेक्षण	मार्च,87	25
9.	ई.टी.वी. पुनर्निवेशन कार्यनीतियां-कुछ प्रेक्षण	मार्च, 87	50
10.	निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा स्थापित कला शिक्षा संबंधी समिति की सिफारिशें	जनवरी, 87	मुद्रणाधीन
11.	यूनेस्को, सी.आई.ई.टी. कार्यशालाओं पर रिपोर्ट (1) लाभवंचित और स्कूल से बाहर जनसंख्या हेतु शैक्षिक और विकासात्मक रेडियो संबंधी कार्यनीतियां व प्रक्रियाएँ (2) लाभवंचित और स्कूल से बाहर जनसंख्या हेतु संचार सामग्री विकास	फरवरी, 87	-वही-
12.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण कार्यक्रम	जून, 86	100
13.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी की पुस्तकों की संदर्शिका	अगस्त, 87	200
14.	कम लागत शिक्षण सहायक सामग्रियों पर कार्यशाला संबंधी रिपोर्ट	मई, 86	100
15.	निम्नानुसार प्रयुक्त फिल्मों के शीर्षक: राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निर्दिष्ट कोर पाठ्यक्रम संबंधी क्षेत्रों में आदर्श अनुदेश निर्देश पैकेजों की संचार सहायता:	दिसंबर, 86 जनवरी, 87	
	श्रृंखला 1 राष्ट्रीय पहचान		100
	श्रृंखला 2 संवैधानिक बाध्यताएँ		100
	श्रृंखला 3 स्वतंत्रता संघर्ष		100
	श्रृंखला 4 लघु परिवार मानदण्ड		100
	श्रृंखला 5 वैज्ञानिक मिज़ाज		100
	श्रृंखला 6 समतावादी		100
	केन्द्रीय फिल्म पुस्तकालय की फिल्म सूची का द्वितीय पूरक 1981-84 में निर्मित किया गया।		1000

1986-87

अध्याय 10

मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़े संसाधन

मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग (डी.एम.ई.एस.डी.पी.) के कुछ मुख्य कार्य हैं– स्कूली शिक्षा के सभी चरणों पर परीक्षा सुधार से संबद्ध शैक्षिक मूल्यांकन, अनुसंधान एवं विकास कार्यकलाप के लिए नवीन प्रक्रियात्मक दृष्टिकोणों और युक्तियों का विकास, शिक्षा के नियोजन से संबद्ध आंकड़ा संचय उपलब्ध कराने के लिए शैक्षिक सर्वेक्षण करना, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा आयोजित करना, मुख्य कार्मिकों और साधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण और विभिन्न शैक्षिक सर्वेक्षणों तथा अनुसंधान परियोजनाओं से संबद्ध आंकड़ों का संसाधन। यह विभाग राज्यों एवं संघशासित प्रदेशों के शिक्षा विभाग/निदेशालयों और विद्यालय/माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के साथ मिलकर अपने कार्यकलाप करता रहा है।

अनुसंधान

सारणी–1

डी.एम.ई.एस.डी.पी. की अनुसंधान योजनाएँ

क्र.सं.	परियोजना का नाम	अवधि	शुरू होने की तारीख	मुख्य अन्वेषक	विवरण
1.	पांचवाँ अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण	1½ वर्ष	नवंबर, 1986	प्रो.एच.एस. श्रीवास्तव प्रो.के.एन. हिरियानिया	अनुसूचियों को अभिकल्पित करके छपने के लिए भेज दिया गया है।
2.	चुने गए चार राज्यों के उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पुस्तकालय सुविधाओं के प्रतिदर्श अध्ययन और उनके उपयोग	2 वर्ष	अप्रैल, 1985	1. डा.सी. एल.कौल 2. श्री जे.के. गुप्ता	गुजरात, हरियाणा, और तमिलनाडु में आंकड़ा एकत्रित करने का कार्य पूरा हो गया है। असम में कार्य प्रगति पर है।
3.	माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं का गहन अध्ययन	2 वर्ष	अगस्त, 1985	1. डा० के. एन. राव 2. श्री एम. के. गुप्ता	आंध्र प्रदेश महाराष्ट्र पश्चिम बंगाल और राजस्थान में परियोजना का प्रथम चरण लगभग पूरा होने वाला है।
4.	चुने गए चार राज्यों में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पर गहन अध्ययन	1½ वर्ष	जनवरी, 1986	1. पुष्पेन्द्र कुमार 2. श्री एस. सी. मित्तल	चुने हुए राज्यों से आंकड़ा एकत्रित करने का काम चल रहा है।
5.	मिडिल और माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण सहायता साधनों पर गहन अध्ययन	2 वर्ष	अप्रैल, 1986	1. डा. सतवीर सिंह 2. श्री जे.पी. अरोरा 3. श्रीमती मंजू त्रेहान	कर्नाटक, बिहार, मध्य-प्रदेश, हिमाचल प्रदेश में यह परियोजना चलाई गई।
6.	तीसरी से पांचवीं कक्षाओं तक के लिए निकष संदर्भित परीक्षणों का विकास	3 वर्ष	दिसंबर, 1983	डा. प्रीतम सिंह	तीसरी कक्षा के पर्यावरण अध्ययन (विज्ञान) पाठ्यपुस्तकों की सभी इकाइयों पर लगभग 20 परीक्षण निर्मित किए गए हैं और इन्हें दिल्ली के 31 विद्यालयों में लागू किया गया है। विकसित की गई सामग्री को परियोजना विद्यालयों में बांट दिया गया है। आंकड़ों पर और विश्लेषण कार्य चल रहा है।
7.	उड़ीसा के समाज के कमजोर वर्गों अर्थात् अनुसूचित जनजातियों की शैक्षिक सुविधाओं का सर्वेक्षण	15 मास	जुलाई, 1985	श्री एस.एम. भार्गव	आंकड़े एकत्रित और विश्लेषित किए गए हैं। रिपोर्ट निर्माणाधीन है।

शिक्षा मूल्यांकन में प्रशिक्षण

वस्तुनिष्ठ आधारित, व्यापक और वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रक्रियाओं को विकसित करने की दृष्टि से डी.एम.ई.एस.डी.पी. राज्यों के विभिन्न माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के विभिन्न बोर्डों की बाह्य परीक्षाओं में सुधार लाने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना और शिक्षा-मूल्यांकन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करने और सह-लेखकों का प्रशिक्षण करने में लगा हुआ है। 1986-87 के दौरान 33 व्यक्ति प्रशिक्षित किए गए। डी.एम.ई.एस.डी.पी. द्वारा संचालित सेवा-पूर्व/सेवाकालीन पाठ्यक्रमों के ब्यौरे सारणी-2 में दिए गए हैं।

सारणी-2

डी.एम.ई.एस.डी.पी. द्वारा संचालित सेवा-पूर्व/सेवाकालीन पाठ्यक्रम के ब्यौरे

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	अवधि (तारीख)	स्थान	पाठ्यक्रम समन्वयक	भाग लेने वालों की संख्या
1.	शिक्षा मूल्यांकन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	3 से 16 जून, 1986 (14 दिन)	शिमला	श्री.जे.पी. अग्रवाल	35
2.	हाई स्कूल और इंटरमीडिएट शिक्षा बोर्ड, उ.प्र. की बाह्य परीक्षा में सुधार	25 से 30 जून, 86 (6 दिन)	नैनीताल	प्रो.एच.एस श्रीवास्तव	33
3.	हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की बाह्य परीक्षा में सुधार	4 से 8 अगस्त, 1986 (5 दिन)	भिवानी	श्री जे.पी. अग्रवाल	53
4.	हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की बाह्य परीक्षा में सुधार	3 से 6 सितंबर 1986 (4 दिन)	भिवानी	श्री जे.पी. अग्रवाल	57
5.	+2 के स्तर के लिए इतिहास के इकाई लेखकों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	1 से 5 दिसंबर, 1986 (5 दिन)	दिल्ली	डा० कमरुद्दीन	23
6.	पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बाह्य परीक्षा में सुधार	10 से 17 दिसंबर, 1986 (8 दिन)	कलकत्ता	प्रो. एच.एस. श्रीवास्तव	50
7.	पाण्डिचेरी (संघ शासित प्रदेश) की दसवीं और बारहवीं कक्षाओं के सह-लेखकों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	18 से 21 फरवरी, 1987 (4 दिन)	पांडिचेरी	श्री जे.पी. अग्रवाल	21
8.	तमिलनाडु की दसवीं से बारहवीं कक्षाओं के इकाई लेखकों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	23 से 26 फरवरी, 1987 (4 दिन)	मद्रास	श्री जे.पी. अग्रवाल	37
9.	मणिपुर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बाह्य परीक्षा में सुधार	21 से 28 मार्च, 1987 (8 दिन)	इम्फाल	श्री जे.पी. अग्रवाल	35

विकास कार्यक्रम

डी.एम.ई.एस.एण्ड डी.पी. ने 1986-87 वर्ष में अनेक विकास कार्यक्रम किए। इन कार्यक्रमों के परिणाम नीचे दिए गए हैं:

(1) निदान और निराकरण के रोज-रोज के शिक्षण में अध्यापकों द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले भौतिकी, रसायन, जैविकी, गणित, इतिहास, अर्थशास्त्र, भूगोल और नागरिक शास्त्र के परीक्षण मद विकसित किए गए।

(2) विभिन्न विद्यालयों के लिए भूगोल में प्रायोगिक कार्य को मूल्यांकन के संरूप विकसित किया गया।

(3) सामान्य बौद्धिक योग्यता परीक्षणों में प्रयुक्त किए जाने वाले मद विकसित किए गए।

(4) अध्यापकों के प्रयोग के लिए परिषद् पाठ्य पुस्तक लर्निंग साइन्स पार्ट-5 पर आधारित भौतिकी, रसायन और जैविकी में इकाई परीक्षण विकसित किए गए।

(5) अध्यापकों के प्रयोग के लिए नवीं कक्षा की जैविकी के इकाई परीक्षण विकसित किए गए।

(6) अध्यापकों के प्रयोग के लिए परिषद् की पाठ्यपुस्तक पर आधारित दसवीं कक्षा की गणित के इकाई परीक्षण विकसित किए गए।

1986-87

(7) "ओपन बुक एक्जामिनेशन-क्वेस्चन्स इन इकोनोमिक्स" नामक पुस्तिका प्रकाशित की गई है और उसे उसकी अंतर्वस्तु और परीक्षण मद का पुनरीक्षण करने के लिए बोर्डों/एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी./प्रशिक्षण कालेजों/विशेषज्ञों के पास भेजी गई है। इसके परीक्षण मद परिषद् की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित हैं।

(8) शिक्षा-मूल्यांकन के पारिभाषिक शब्दों की शब्दावली को अंतिम रूप दिया गया।

सारणी-3

1986-87 वर्ष में आयोजित बैठक/संगोष्ठी/कार्यशाला/सम्मेलन/कार्यकारी दल/विकास कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	अवधि (तारीख)	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या
1.	शिक्षा मूल्यांकन में पारिभाषिक शब्दों की शब्दावली का विकास	16 से 20 जुलाई, 86 (5 दिन)	दिल्ली	6
2.	अर्थशास्त्र में विवृत पुस्तक परीक्षा के लिए प्रश्नों/पाठ्य मदों का विकास	22 से 26 सितंबर, 86 (5 दिन)	दिल्ली	22
3.	नवीं कक्षा की जैविकी के इकाई परीक्षणों का विकास	22 से 24 अक्तूबर, 86 (3 दिन)	दिल्ली	23
4.	राज्य सर्वेक्षण अधिकारियों की पहली बैठक	10 से 12 नवंबर, 86 (3 दिन)	दिल्ली	31
5.	दसवीं कक्षा की गणित में इकाई परीक्षणों का विकास	26 नवंबर से 2 दिसंबर, 1986 (7 दिन)	अजमेर	25
6.	छठी कक्षा के विज्ञान में इकाई परीक्षणों का विकास	26 नवंबर, से 2 दिसंबर, 1986 तक (7 दिन)	अजमेर	24
7.	दसवीं कक्षा के विद्यालय-विषयों में परीक्षण मदों का विकास	26 से 31 दिसंबर (6 दिन)	ग्वालियर	57
8.	राज्य सर्वेक्षण अधिकारियों की दूसरी बैठक	28 जनवरी से 4 फरवरी, 1987 (8 दिन)	दिल्ली	31
9.	नवीं कक्षा की गणित में इकाई परीक्षणों का विकास	25 फरवरी से 3 मार्च, 1987 (7 दिन)	अहमदाबाद	28
10.	ग्यारवीं कक्षा के भूगोल में इकाई परीक्षणों का विकास	2 से 11 मार्च, 87	दिल्ली	11
11.	दसवीं कक्षा की बौद्धिक योग्यता परीक्षण के मदों का विकास	9 से 13 मार्च, 87 (5 दिन)	दिल्ली	11
12.	सी.आर.टी. पर संगोष्ठी	30 मार्च से 1 अप्रैल, 1987 तक	दिल्ली	12

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

1984-85 से राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना का विकेन्द्रीकरण कर दिया गया। संशोधित राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के अंतर्गत पुरस्कार पाने वाले विद्यार्थियों का चुनाव दसवीं कक्षा के अंत में दो चरणों में किया जाता है। पहले चरण में चुनाव के लिए अक्तूबर-नवंबर में लिखित परीक्षा ली जाती है, जिसके आधार पर दूसरे चरण की परीक्षा के लिए परिषद् को तय, की गई संख्या में प्रत्याशियों की सिफारिश की जाती है। अभीष्ट संख्या में पुरस्कार प्राप्त करने वालों को चुनने के लिए परिषद् ने 11 मई 1986 को दूसरे चरण की परीक्षा आयोजित की। यह परीक्षा पूरे भारत के 30 केन्द्रों में आयोजित की गई। इस परीक्षा में विदेश में पढ़ रहे दसवीं कक्षा के विद्यार्थी भी बैठे। इसके ब्यौरे नीचे दिए गए हैं:

1986 में दी गई राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्तियों की संख्या

कक्षा	दूसरे चरण की परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या	दी गई छात्रवृत्तियों की संख्या (सामान्य)	दी गई आरक्षित छात्रवृत्तियाँ अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति
	3047	680	70 (जिसमें अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति शामिल हैं)

सूची में शामिल छात्रवृत्ति प्राप्त व्यक्तियों की कुल संख्या (1986 में छात्रवृत्ति प्राप्त व्यक्तियों सहित)

		सामान्य	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति	कुल जोड़
1.	+2 स्तर	1360	140	1500
2.	यू.सी.	206	17	223
3.	पी.जी.	277	–	277
4.	पी.एम.डी.	50	–	50
5.	आयुर्विज्ञान में प्रथम डिग्री	627	37	664
6.	आयुर्विज्ञान में द्वितीय डिग्री	235	–	235
7.	इंजीनियरिंग में प्रथम डिग्री	1242	80	1322
8.	इंजीनियरिंग में द्वितीय डिग्री	240	–	240
	कुल जोड़ः	4237	274	4511

आलोच्य वर्ष में सामान्य और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति वर्गों में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज पुरस्कार के लिए 72,32,215.53 रु० और 3,83,700.00 रुपये रखे गए।

आंकड़ा संसाधन विंग

विभाग का आंकड़ा संसाधन विंग परिषद् के विभिन्न विभागों/यूनिटों को कम्प्यूटर सेवाएं उपलब्ध कराता है। इस विंग में राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, इलेक्ट्रानिकी विभाग का एक मिनी कम्प्यूटर टर्मिनल और आंकड़ा निर्माण उपकरण लगा हुआ है। 1986-87 वर्ष में कम्प्यूटरीकृत कार्यों को निम्नलिखित संवर्गों में वर्गीकृत किया गया है:

1. अनुसंधान परियोजनाओं से संबद्ध आंकड़ों का कम्प्यूटर संसाधन।
2. प्रविदर्श सर्वेक्षण अध्ययनों से संबद्ध आंकड़ों का कम्प्यूटर संसाधन।
3. (क) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा, 1986 में बैठे विद्यार्थियों के उत्तर पत्रों पर स्वचालित अंक देना।
   (ख) निष्पत्ति का मूल्यांकन, अंकों को क्रम में रखना और राष्ट्रीय प्रतिभा खोज के अंतिम परिणामों (1986) को तैयार करना।
4. अपनी पी-एच.डी. परियोजनाओं में कार्य कर रहे संकाय के सदस्यों को कम्प्यूटर सुविधाओं की व्यवस्था करना।

ऊपर उल्लेख की गई कम्प्यूटर सुविधाओं के अतिरिक्त पांच टर्मिनलों वाला एक नया कम्प्यूटर तंत्र ओमेगा सुपरस्टार एक केन्द्रीय सुविधा के रूप में लगाया जा रहा है, जिसका प्रयोग इससे संबद्ध सभी विभाग आदि कर सकते हैं।

(1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 की दृष्टि से शिक्षा मूल्यांकन के वार्षिक पाठ्यक्रम को व्यापक सतत मूल्यांकन के पाठ्यक्रम में परिवर्तित कर दिया गया। परीक्षा सुधार कार्यक्रम के अंतर्गत गैर पारंपरिक और आलोच्य वर्ष में अभी तक पूरी तरह से अन्वेषित न हुए और तकनीकियों और प्रक्रियाओं के प्रयोग पर विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

(2) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज की परीक्षण समिति की अध्यक्षता प्रो० रईस अहमद ने की और समिति ने इस वर्ष अपनी रिपोर्ट दे दी। इस समिति की सिफारिशों का अध्ययन परिषद् के प्रवर संकाय ने किया और परिषद् के प्रेक्षणों को मंत्रालय अग्रेषित किया गया। ये सिफारिशें मानव संसाधन विकास मंत्रालय के विचाराधीन हैं।

(3) इस वर्ष का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम 30 सितंबर 1986 को आधार मानकर पांचवाँ अखिल भारतीय शिक्षा सर्वेक्षण शुरू किया गया। इस सर्वेक्षण के परिणाम न केवल मध्यावधि पुनरीक्षण के लिए बल्कि केन्द्र और राज्य स्तरों पर भावी शिक्षा योजना से संबद्ध अन्य नीति के निर्णयों में भी मानव संसाधन विकास मंत्रालय और योजना आयोग के लिए उपयोगी होंगे।

(4) आशा की जाती है कि जुलाई 1987 के अंत तक नया कम्प्यूटर ओमेगा सुपरस्टार प्रयोग के लिए उपलब्ध हो जाएगा। तब परिषद् के कार्यक्रम का मानिअरन न केवल अधिक दक्षता और परिशुद्धता से होगा बल्कि परिषद् के कार्यक्रमों में और अधिक सुधार लाने की दृष्टि से निरंतर पुनर्भरण प्राप्त करने के लिए काफी तेजी से भी होगा।

(5) आलोच्य वर्ष में विभाग द्वारा निष्पादित किया गया एक अन्य मुख्य कार्य 83 नवोदय विद्यालयों में दाखिले के लिए चयन-परीक्षण का संचालन करना था।

नवोदय विद्यालय कक्ष (एन.वी.सी.) के कार्यकलाप

प्राथमिक स्तर पर प्रतिभा का पता लगाने और नवोदय विद्यालयों नामक स्कूलों के जरिए उन्हें अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराकर अधिक योग्य बनाने की दृष्टि से मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने नवोदय विद्यालय योजना की संकल्पना की थी। मंत्रालय ने सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान प्रत्येक जिले में एक नवोदय विद्यालय खोलने का निर्णय लिया है। पांचवीं कक्षा पास किए हुए विद्यार्थी ही इन विद्यालयों की छठी कक्षा में दाखिला ले सकते हैं। इन विद्यालयों में जो कि आवासी और सह-शिक्षा वाले होते हैं, दाखिल किए गए विद्यार्थियों को रहने-खाने तथा अन्य सुविधाएं मुफ्त दी जाती हैं। शुरू-शुरू में ऐसे दो विद्यालय 1985 में खोले गए। एक विद्यालय झाजर (हरियाणा) में और दूसरा विद्यालय अमरावत (महाराष्ट्र) में। 1986 में इन दो विद्यालयों के अतिरिक्त 81 और विद्यालय 19 राज्यों/संघशासित प्रदेशों में खोले गए। 1987-88 वर्ष में देश के भिन्न-भिन्न भागों में लगभग 110-120 नवोदय विद्यालय और खोले जाने की आशा है।

नवोदय विद्यालयों से संबद्ध कार्यों को करने के लिए परिषद् में एक नवोदय विद्यालय

1986-87

कक्ष खोला गया है। नवोदय विद्यालय कक्ष (एन.वी.सी.) के मुख्य कार्य हैं– प्रवेश-परीक्षण का संचालन करना, नवोदय विद्यालय के अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित करना, संकल्पनात्मक सामग्री का विकास करना, अनुसंधान कार्य में सहायता पहुँचाना, समन्वयन और संपर्क कार्य करना तथा इन विद्यालयों से संबद्ध प्रकाशन प्रकाशित करना। 1986–87 में ऐसी तीन परीक्षाएं ली गईं। पहली परीक्षा केवल झाजर (हरियाणा) और अमरावती (महाराष्ट्र) के लिए जून, 1986 में ली गई। दूसरी परीक्षा 1986–87 वर्ष में 19 राज्यों/संघशासित प्रदेशों के 81 जिलों के 1172 केन्द्रों पर 1,21,151 विद्यार्थी बैठे। तीसरी परीक्षा पटना उच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार 18 जनवरी, 1987 को बिहार के चम्पारन जिले के बघ्हा–।। के केवल एक केन्द्र पर, एक विशेष परीक्षा के रूप में ली गई।

नवोदय विद्यालयों में दाखिल करने के लिए चयन परीक्षा

81 नवोदय विद्यालयों में दाखिल करने के लिए 28 सितंबर 1986 को मुख्य चयन परीक्षा ली गई। इस परीक्षा से प्रत्येक विद्यालय के लिए 80 विद्यार्थियों का चुनाव करना था, जिनमें से 75 प्रतिशत विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से हों और 25 प्रतिशत शहरी क्षेत्र से और इनमें से कितने विद्यार्थी अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के हों– इस बात का निर्धारण संबंधित जिले में उनकी जनसंख्या के आधार पर किया गया– और यह ध्यान रखा गया कि उनकी संख्या राष्ट्रीय मानक से कम न हो।

चयन परीक्षण में 20-20 प्रतिशत अंक के भाषा और गणित में मौखिक परीक्षण और 69 प्रतिशत अंक का सामान्य बौद्धिक योग्यता का अमौखिक परीक्षण। परीक्षण की सांस्कृतिक उदासीनता सुनिश्चित करने की दृष्टि से प्रवेश परीक्षा के अमौखिक घटक के अंक अधिक अनुपात में रखे गए हैं। परीक्षण के सभी प्रश्न-पत्र बहु-विकल्प प्रकार के रखे गए जिनके उत्तर विद्यार्थियों को उन्हें दी गई पुस्तिका में ही देना था।

परीक्षा निम्नलिखित भाषाओं में ली गई–

1. असमी	8. खासी	14. उड़िया
2. बंगाली	9. कोन्कणी	15. पंजाबी
3. अंग्रेजी	10. मलयालम	16. सिंधी (क) अरबी लिपि
4. गारो	11. मणिपुरी	(ख) देवनागरी लिपि
5. गुजराती	12. मराठी	17. तमिल
6. हिंदी	13. मिजो	18. तेलुगु
7. कन्नड़		19.उर्दू

प्रत्येक जिले के प्रत्येक ब्लाक में कम से कम एक केन्द्र अवश्य रखा गया।

परीक्षा लेने के ठीक पहले एक अति व्यापक प्रारंभिक अभ्यास दिया गया। परिषद् ने प्रत्येक जिला मुख्यालय में एक प्रेक्षक शामिल किया और केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने प्रत्येक परीक्षा केन्द्र पर एक प्रेक्षक भेजा। परिषद् ने प्रेक्षकों को पहले अनुदेशी दीपिका की सहायता से जिसे विशेष रूप से इस कार्य के लिए ही विकसित किया गया था, विस्तृत अभिविन्यस्त किया गया। इसके बाद परिषद् के प्रेक्षकों ने जिला मुख्यालयों पर परीक्षा केन्द्रों के अधीक्षकों, ब्लाक शिक्षा अधिकारियों और केन्द्रीय विद्यालय संगठन के प्रेक्षकों के लिए एक अन्य अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। इस अभिविन्यास कार्यक्रम के पूरा हो जाने के बाद केन्द्रीय विद्यालय संगठन के प्रेक्षकों ने अपने परीक्षा केन्द्र अधीक्षकों के साथ परीक्षा केन्द्र जाकर परीक्षाएं लीं।

उत्तर-पत्रों का मूल्यांकन क्षेत्रानुसार चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में किया गया। अंत में मुख्यालयों में परिणामों की छंटाई करके उन्हें अपने-अपने विद्यालयों में भेजने के लिए नवोदय विद्यालय समिति को भेज दिए गए। प्रवेश परीक्षाओं के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं:

– नवोदय विद्यालयों की कुल संख्या	81
– प्रवेश परीक्षा के लिए एकीकृत केन्द्रों की कुल संख्या	1,172
– प्रवेश परीक्षा में परीक्षार्थियों की कुल संख्या	1,21,151

चुने गए विद्यार्थियों के विवरण

(1) सामान्य	4,459
(2) अनुसूचित जाति	1,129
(3) अनुसूचित जनजाति	639
कुल जोड़:	6,227
(1) लड़के	5,119
(2) लड़कियाँ	1,108
कुल जोड़:	6,227
(1) ग्रामीण	4,810
(2) शहरी	1,417
कुल जोड़:	6,227

नवोदय विद्यालय कक्ष द्वारा किए गए अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलाप

नवोदय विद्यालयों के लिए प्रवेश परीक्षा आयोजित करने के अतिरिक्त नवोदय विद्यालय कक्ष द्वारा आलोच्य वर्ष में किए गए कुछ अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

1986-87

(1) अभिविन्यास कार्यक्रम

1986-87 में स्थापित नवोदय विद्यालय के अध्यापकों के लिए चार अभिविन्यास कार्यक्रम सभी चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में से प्रत्येक में 29 दिसंबर 1986 से 3 जनवरी 1987 तक एक साथ आयोजित किए गए।

(2) परीक्षा दीपिका

परीक्षा कार्मिकों को परीक्षा और परीक्षा प्रक्रियाओं से परिचित कराने की दृष्टि से एक परीक्षा दीपिका प्रकाशित की गई है। इस दीपिका में कार्यकलाप अनुसूची और परीक्षा संयोजन के अतिरिक्त निरीक्षकों, केन्द्र अधीक्षकों और केन्द्र प्रेक्षकों के लिए विस्तृत अनुदेश दिए गए हैं।

(3) प्रवेश परीक्षा के ढाँचे का विकास

परिषद् के निदेशक ने संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में कार्यक्रम परीक्षण के लिए एक सलाहकार समिति गठित की। इस समिति ने परीक्षाओं की प्रकृति और स्वरूप के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए। इसके बाद तीन परीक्षाओं में से प्रत्येक परीक्षा के ढांचे को अंतिम रूप दिया गया।

(4) प्रार्थना-पत्र के स्वरूप का विकास

परिणामों के कम्प्यूटरीकरण की आवश्यकता को ध्यान में रखकर प्रार्थना-पत्र की पांडुलिपि को अंतिम रूप नवोदय विद्यालय संगठन के परामर्श से दिया गया। इस प्रार्थना-पत्र को 19 क्षेत्रीय भाषाओं में अनुदित किया गया और इन्हें अलग-अलग भाषाओं में मुद्रित करने तथा जिला शिक्षा अधिकारियों के जरिए इन्हें बांटने के लिए सभी क्षेत्र सलाहकारों के पास भेजा गया।

(5) जिला आंकड़ों का एकत्रण

उन जिलों से प्रासंगिक आंकड़े एकत्रित किए जा रहे हैं जहां या तो नवोदय विद्यालय कार्य कर रहे हैं या 1987 में खोले जा रहे हैं। यह कार्य 23 अगस्त, 1987 को होने वाली प्रवेश परीक्षा के लिए की जाने वाली आवश्यक व्यवस्था को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। आने वाले वर्ष में नवोदय विद्यालयों के लिए प्रवेश परीक्षा आयोजित करने का एक बहुत ही बड़ा कार्य होने जा रहा है। आशा की जाती है कि अगले वर्ष लगभग 200 नवोदय विद्यालयों में प्रवेश पाने के लिए 3,000 से भी अधिक केन्द्रों पर 2,500 से भी अधिक ब्लाकों से 5 लाख से भी अधिक विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा में बैठेंगे।

प्रकाशन

डी.एम.ई.एस. एण्ड डी.पी. और नवोदय विद्यालय संगठन द्वारा प्रकाशित प्रकाशन नीचे की सारणी में दिए गए हैं:

सारणी

1986-87 के दौरान प्रकाशित प्रकाशन

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
1.	सेमिनार रिपोर्ट ऑन ओपन बुक एक्जामिनेशन	मई, 1986	300
2.	मैनुअल फॉर इन्स्ट्रक्शन्स फार नवोदय विद्यालयाज़ एडमिशन टेस्ट (2 विद्यालयों के लिए)	मई, 1986	100
3.	मैनुअल फॉर इंस्ट्रक्शन्स फॉर नवोदय विद्यालयाज़ एडमिशन टेस्ट (81 विद्यालयों के लिए)	सितंबर, 1986	5000
4.	गाइडलाइन्स फॉर द इवेलुएशन ऑफ स्क्रिप्ट्स एण्ड प्रेपरेशन ऑफ रेजल्ट्स ऑफ नवोदय विद्यालय	सितंबर, 86	50
5.	क्राइटेरियन रेफरेन्स्ड टेस्ट्स फॉर क्लास-III	जनवरी, 86	
		1- अंग्रेजी संस्करण	170
		2- हिंदी संस्करण	150
6.	ओपन बुक एक्जामिनेशन क्वेश्चन्स इन इकोनोमिक्स	जनवरी, 87	300

1986-87

अध्याय 11

नीति अनुसंधान, नियोजन एवं प्रोग्रामन

परिषद् के नीति अनुसंधान नियोजन एवं प्रोग्रामन विभाग (डी.पी.आर.पी.पी.) शिक्षा की सभी शाखाओं में हो रहे अनुसंधान कार्य और नवीन प्रक्रियाओं को अपने हाथ में लेता है, सहायता करता है, संवर्धन करता है और उनका समन्वयन करता है तथा अनुसंधानकर्ता के विचारों और सूचनाओं के लिए निष्कासन गृह का काम करता है। 1986–87 के दौरान डी.पी.आर.पी.पी. द्वारा अपने हाथ में लिए गए कुछ मुख्य कार्यकलापों के संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैं:

अनुसंधान और नवीन प्रक्रियाएं

1974 में स्थापित शैक्षिक अनुसंधान एवं नवीन प्रक्रिया समिति (एरिक) अनुसंधान के क्षेत्र में सहायता प्रदान करने वाला एक मुख्य तंत्र है। इस समिति के सदस्य शिक्षा के सुप्रसिद्ध अनुसंधानकर्ता, एस.आई.ई. और एस.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधि, एन.आई.ई. और आर.सी.ई. के सभी विभाग/एकक अध्यक्ष होते हैं। एन.आई.ई. के विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के प्रोफेसर इसके स्थायी आमंत्रित सदस्य होते हैं।

एरिक अनुसंधान की प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का पता लगाने में सहायता करता है और यह एन.आई.ई. के विभागों, क्षेत्रीय कालेजों, क्षेत्र एककों, सी.आई.ई.टी. और राज्य के अन्य अनुसंधान संस्थाओं और व्यक्तिगत शोध छात्रों को भी वित्तीय सहायता प्रदान करता है। ई.आर.आई.सी. परिषद् में डाक्टेरेट संबंधी कार्य के लिए फेलोशिप देता है और साथ ही देश के अन्य क्षेत्रों में किए गए शोध-पत्र के प्रकाशन की भी मंजूरी देता है।

एन.आई.ई. व्याख्यान माला

एन.आई.ई. व्याख्यान माला के अंतर्गत तीन सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों को "वार्ता" देने के लिए आमंत्रित किया गया। इसका विवरण निम्न सारणी-1 में दिया गया है:

सारणी-1

वक्ता	विषय	तारीख
डा. वलेरी एम. पाइवोवरेर,इंस्टीट्यूट ऑफ जनरल पेडागोगिक्स, यू.एस.एस.आर.	रूसी शिक्षा में हाल ही में किया गया विकास	1 अप्रैल, 86
डा० प्रभजोत,निदेशक, कैप्स्यूल मनोवैज्ञानिक पाठ्यक्रम, कैप्स्यूल प्रकाशन, नई दिल्ली	राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पठन पर महत्व	16 अक्तूबर, 86
प्रो. ए.के. जलालुद्दीन,संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी.	भारत में शिक्षा की तुलना में चीन में शिक्षा	5 नवंबर, 86

पूरी की गई परियोजैनाएं

आलोच्य वर्ष में 6 बाह्य और 3 विभागीय अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की गई। आलोच्य वर्ष में पूरी की नई परियोजनाओं का विवरण सारणी-2 में दिया गया है। पूरी की गई परियोजनाओं का संक्षिप्त लेखा-जोखा,नीति अनुसंधान, नियोजन और प्रोग्रामन विभाग (डी.पी.आर.पी.पी.) में ई.आर.आई.सी. बुलेटिन में प्रकाशित किया है जिसे अध्यक्ष, डी.पी.आर.पी.पी., एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली से मांग कर प्राप्त किया जा सकता है।

सारणी-2

शीर्षक	अवधि	पूरा करने की तारीख	मुख्य अन्वेषक
(क) बाह्य परियोजनाएं			
प्राथमिक विद्यालय के बच्चों की अपयोग्यताओं का अधिगम	2 वर्ष	अप्रैल, 86	डा.के.जी. देसाई, अहमदाबाद
अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभाविता का का अध्ययन	20 महीना	जुलाई, 86	डा०एन. वेंक्टइया, तिरुपति
परिचमी बंगाल के विद्यालयों की तीसरी और चौथी कक्षाओं की पिछड़ी जाति के बच्चों के लिए दो निदानी परीक्षणों- एक मातृभाषा (बंगाली)	2 वर्ष	अप्रैल, 87	डा० एस. आचार्या कलकत्ता

1986-87

शीर्षक	अवधि	पूरा करने की तारीख	मुख्य अन्वेषक
में और दूसरी गणित में- का निर्माण और मानकीकरण			
सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े विद्यालय-पूर्व बच्चों के पूरक भाषा कार्यक्रम की विकास युक्तियां	15 माह	मई, 86	डा० जी. पंकजम, मद्रास
ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने वाले बच्चों के लिए सतत शिक्षा का प्रयोग	2 वर्ष	अप्रैल, 87	डा. एम.जी. माली,गरगोटी (महाराष्ट्र)
माध्यमिक शिक्षा स्तर पर हुई उपलब्धि में अनुसूचित जातियों में परस्पर जाति भेद	8 माह	अक्तूबर, 86	डा० आर.पी. सिंह, पटना
(ख) विभागीय परियोजनाएं			
आकस्मिक प्रबंध से प्रारंभिक विद्यार्थियों का कक्षाओं में व्यवहारों और संज्ञात्मक क्रायों में सुधार लाना	2 वर्ष और 6 माह	मई, 87	डा० आर.के. शर्मा
सी.सी.हाई स्कूल (लड़के) के शैक्षिक एवं व्यावसायिक योजना की दृष्टि से मनोवैज्ञानिक लक्षणों का अध्ययन	3 वर्ष	मार्च, 87	डा.जे.एस. गौड़
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज मैसूर, के कार्यक्रमों की स्वीकृति जागरूकता और प्रभाव	22 माह	जनवरी, 87	डा. डी.एस. बाबू

अविरत परियोजनाएं

आलोच्य वर्ष में इकतीस विभागीय और बारह विभागेतर की अनुसंधान परियोजनाएं चलाई गईं। परियोजनाओं की सूची नीचे दी गई है:

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
विभागीय परियोजना	
उत्तर प्रदेश की दसवीं कक्षा के अनुसूचित जाति के छात्रों और गैर अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक निष्पति का तुलनात्मक अध्ययन।	डा.बी.एस. गुप्ता
प्राथमिक स्तर के जनजातीय छात्र किस विषय में कमजोर हैं और किस विषय में मजबूत यह मालूम करने के लिए उनके विषयवार निष्पति का अध्ययन।	डा.बी.एस. गुप्ता
बच्चों की शिक्षा और उनकी सामाजिक आर्थिक गतिशीलता के संबंध का अध्ययन।	डा. बी. पी. अवस्थी
शिक्षा के अनुदेशात्मक विकास एवं सामाजिक उद्देश्यों की दृष्टि से 10+2 स्तर की पाठ्यचर्या का मूल्यांकन एक प्राथमिक अध्ययन।	डा. बी. मेहदी
खानाबदोश जनजाति समुदाय के लिए आवश्यकता पर आधारित, परिस्थितिगत निर्धारित और परिवर्तन अभिविन्यास शिक्षा प्रणाली।	डा. (कु.) सरोजिनी बिसारिया
शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए लड़कियों और महिलाओं की स्थानीय क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर आधारित व्यवसायों की पहचान।	डा. सुरजा कुमारी
जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों और गैर-जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों की भौतिक सुविधाओं का एक तुलनात्मक अध्ययन।	डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव
शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए लड़कियों और महिलाओं के स्थानीय क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर आधारित व्यवसायों की पहचान।	डा. (कु.) एस. बिसारिया
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय विद्यालय शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन।	डा. जी.एस. आद्या
माध्यमिक विद्यालयों गुरुकुलों तथा पारस्परिक संस्कृत पाठशालाओं के छात्रों की संस्कृत विद्या की संप्राप्ति का मूल्यांकन।	डा. के.के. मिश्रा
शिक्षक गुटका 'नो द प्लांट एराउण्ड यू' का मुद्रण।	डा. (श्रीमती) जी.आर. घोष
(सामाजिकता, विकलांग लड़कियों सहित) लड़कियों की गणित में अवनिष्पत्ति के डिटर्मिनेंट।	डा. सुरजा कुमारी
उपचारी उपाय के रूप में स्तर की गणित के शिक्षण में सरल विधियों और तकनीकों के संकल्पनात्मक साधारण त्रुटियों का विश्लेषण।	डा. एस.सी. दास
संघीय राज्य दिल्ली के विभिन्न प्रबंध के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में होने वाली निजी लागत का एक तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षा की अर्थव्यवस्था का एक अध्ययन।	डा. एस.एल. गुप्ता
अनौपचारिक, शिक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों/व्यवहारों की पहचान	डा. (श्रीमती) एन. शुक्ला
अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों/व्यवहारों की पहचान	डा. एच.एल. शर्मा
शिलांग (मेघालय) के आसपास के हाई स्कूल के जनजातीय बच्चों का शैक्षिक व्यावसायिक नियोजन, शैक्षिक निष्पत्ति और चुने हुए मनोवैज्ञानिक प्राचलों एवं घर की पृष्ठभूमि से संबद्ध प्राचलों का अध्ययन।	डा. (श्रीमती) पी.एच.मेहता
शैक्षणिक एवं व्यावसायिक विषयों में छात्रों के व्यावसायिक व्यवहार और व्यावसायिक समायोजन का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान का एक कार्यक्रम।	डा. स्वदेश मोहन और डा. निर्मला गुप्ता
(तीसरी कक्षा से पांचवीं कक्षा तक) प्राथमिक स्तर के पर्यावरण अध्ययन में निकष संबंधी परीक्षणों का विकास।	डा. प्रीतम सिंह
राजस्थान के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बच्चों की शैक्षिक सुविधाओं का प्रतिदर्श-सर्वेक्षण।	डा. एस.एम. भार्गव
शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े नौ राज्यों में प्राथमिक स्तर पर बीच में पढ़ायी छोड़ देने और आगे पढ़ायी न करने का प्रतिदर्श अध्ययन।	डा. आर.आर. सक्सेना
एन.एफ.ई. के केन्द्रों से संबंधित अध्ययन-सामग्री के अध्यापन कौशल और विकास की पहचान।	श्री एस.एन.एल. भार्गव और श्री जे.एस. ग्रेवाल
प्राथमिक स्तर पर प्रतिवेश दृष्टिकोण लागू करने के लिए शिक्षण	डा. जे.एस. राजपूत

1986-87

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
कौशल और प्रशिक्षण नीति की पहचान का एक शोध अध्ययन।	
मध्य प्रदेश के जैविकी शिक्षकों के लिए साधन सामग्री तैयार करने के लिए भोपाल के फ्लोरा का अध्ययन।	डा. पी.के. खन्ना
स्वच्छ जल में रहने वाले जीवों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए (स्वच्छ जल जैविकी की एक शिक्षक-पुस्तिका)	डा. (श्रीमती) चन्द्र लेखा रघुवंशी
विज्ञान में परिकल्पना निर्माण और परिकल्पना परीक्षण संबंधी योग्यताओं के विकास के लिए स्व-अधिगम प्रक्रिया पर आधारित सामग्री की सक्षमता का विकाससमान्यीकरण और परीक्षण।	डा. ए. ग्रेवाल
किशोरावस्था में विज्ञान का विवेचन करने की योजनाओं का निर्धारण और विकास।	प्रो. एन. वैद्य
उच्च/उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कार्य-अनुभव/व्यावसायिक कार्यक्रम के रूप में खाद्य मशरूमों का सर्वेक्षण और संवर्धन।	डा. जी.वी. कानूनगो
उड़ीसा में जलीय परिस्थिति तंत्र का संरक्षण।	डा. पी. के . दुर्रानी
विशेष रूप से विकलांगों की समेकित शिक्षा में अध्यापक की सक्षमता का अभिज्ञापन।	श्रीमती एस. मुखोपाध्याय
एन.एफ.ई. की प्रशासन संरचना का अध्ययन और मॉनिटरन तथा पर्यवेक्षण की योजना	डा. (श्रीमती) एस.आर. अरोड़ा
नैतिक विज्ञान के अध्ययन में बढ़ावा देने के लिए बेस सामग्री की प्रमाणिता।	डा. बी. प्रकाश

विभागेतर परियोजनाएं

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
ग्रामीण समुदाय की महिला शिक्षा कार्यक्रम में महिला स्वास्थ्य कार्मिक के रूप में भाग लेने की संभावना।	प्रो. पूर्णिमा माथुर, नई दिल्ली
मेढक जिले की लड़कियों और महिलाओं के लिए स्थानीय एवं क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर आधारित व्यावसायी की पहचान और मेढक जिले में इन विद्यालयों का स्थान-निर्धारण।	डा. डोली शिनॉय, हैदराबाद
पठन सुधार कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए पांचवीं, छठी और सातवीं कक्षा के छात्रों का गुजराती में लिए जाने वाले मूक पठन बोध परीक्षणों का निर्माण और मानकीकरण।	डा. बी.वी. पटेल बल्लभ, विद्यानगर
+2 स्तर और पूर्व स्नातक स्तर पर हिन्दी की लघु कहानियों की मूल्यांकन युक्ति और शिक्षण विधि।	डा. आर.एस. शर्मा और डा. (कु.) शशिकान्ता बोहरा, नई दिल्ली
आंध्र प्रदेश के मंदितमना बच्चों के लिए विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रम स्कूलों और सेवाओं का मूल्यांकन संबंधी सर्वेक्षण।	डा. (श्रीमती) डोली शिनॉय, हैदराबाद
प्रतिस्पर्धा के अभिप्रेरण पर और पहल के अभिप्रेरण पर आधारित शिक्षण विधियों की सापेक्ष प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन।	प्रो. एस.बी. मल्हर, जलगांव
गांव के युवाओं के जीवन से संबद्ध विषयों पर आत्म अधिगम की नीतियां और विकल्प निदर्श के विकास से संबद्ध ग्रामीण समृद्धि शिक्षा परियोजना।	डा. एन.के. उपसानी, पुणे
सर्जनात्मक प्रशिक्षण के साथ अध्यापन सामग्री में संरचना की अनोन्य क्रिया।	डा. (श्रीमती) सुदेश गाखर, चण्डीगढ़

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
कालेज के प्रतिभाशाली छात्रों का अनुवर्ती अध्ययन।	डा. गिरजेश कुमार, मुरादाबाद
गांव के कामकाजी बच्चों की शिक्षा जारी रखने पर प्रयोग।	डा. एम.जी. माली, गरगोटा
उड़ीसा के जनजातीय स्कूल छात्रों के सामाजिक मनोविज्ञान पर शिक्षा का प्रभाव।	डा. गिरीश पटेल, फुलबानी
भारत के विकलांग बच्चों के अधिगम के बारे में जानकारी प्राप्त करना और प्रभावी कार्यक्रमों का विकास।	डा. एल.बी. त्रिपाठी, गोरखपुर
पूर्व विद्यालय बच्चों की शिक्षा और व्यक्तित्व के लिए उनकी सर्जनात्मक चिंतन योग्यताओं की युक्तियों का विकास।	
विज्ञान और वैज्ञानिकों के जन संदर्श का अध्ययन और अनौपचारिक शिक्षा पर उसका प्रभाव।	डा. ए. वासन्था, एसोसिएट प्रोफेसर,जे.एन.यू., नई दिल्ली

1986-87 वर्ष में सिफारिश की गई परियोजनाएं

28 और 29 अगस्त, 1986 को आयोजित एरिक की 12 वीं उपसमिति की बैठक में निम्नलिखित परियोजनाओं की सिफारिश की गई:

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
मूल्यों के मतभेदों को हल करने के लिए सामाजिक चेतना और योग्यता के विकास पर शिक्षण की न्यायिक युक्ति का प्रभाव।	डा. एस.के. पाल इलाहाबाद और डा. के. एस. मिश्रा, रीडर
सामाजिक दृष्टि से पिछड़े हुए 9 से 14 वर्ष के बच्चों में तर्कसंगत कारणों का प्रतिनिध्यात्मक अध्ययन।	डा. वी.के.जैन, डी.टी.ई.एस.ई.एस.
समेकित और विशेष विद्यालयों के सुनने की कमी वाले बच्चों की भाषा-सक्षमता और समायोजन प्रतिरूपों का तुलनात्मक अध्ययन	डा. (श्रीमती) पी.एल. शर्मा, डी.टी.ई.एस. ई.एस.

23 और 24 मार्च, 1987 को आयोजित एरिक की तेरहवीं बैठक में की गई परियोजनाओं की सिफारिश

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
माध्यमिक विद्यालयों, अध्यापक शिक्षा का गुणात्मक विश्लेषण।	डा. शिव गणेश भार्गव, भोपाल

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
उत्तर प्रदेश के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कुछ चुने हुए विषयों पर पुस्तक परीक्षा लागू करने के संबंध में अध्ययन।	डा. प्रीतम सिंह एन.सी.ई.आर.टी.
सामाजिक दृष्टि से पिछड़े हुए 9 से 14 वर्ष के बच्चों में तर्कसंगत कारणों का प्रतिनिध्यात्मक अध्ययन।	डा .वी.डी. भट्ट, डी.टी.ई.एस.ई.एस.
सृजनकारी लड़कियों के व्यावसायिक व्यवहार का प्रतिनिध्यात्मक अध्ययन।	डा. (श्रीमती) आशा भटनागर, डी.टी.ई.एस.ई.एस.
पश्चिम बंगाल में शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर गणित के शिक्षण में मास्ट्री अधिगम दृष्टिकोण की प्रभाविता का अध्ययन।	प्रो. के.सी. मंडल, एफ.सी. कालेज
भारत के चुने हुए माध्यमिक विद्यालयों द्वारा इन विद्यालयों की दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के मूल्य निर्णय के मापन और नैतिक मूल्यों के विकास के लिए अपनायी गई विधियों का अध्ययन।	डा० आर.सी. दास, भुवनेश्वर
कर्नाटक के माध्यमिक विद्यालयों के प्रशिक्षण व्यावसायी अध्यापकों की भूमिकाओं और कार्यों का मूल्यांकन संबंधी अध्ययन, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों की उच्च प्राथमिक विद्यालय स्तर पर दी जाने वाली अतिरिक्त सुविधाओं के समाधान पर प्रभाव।	डा. बी. बालचन्द्र डी.ई.पी.सी.जी., एन.सी.ई.आर.टी.
विद्यालय एवं कक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों के व्यवहार संबंधी प्रबंध के कुछ प्रयोगों पर प्राथमिक अध्यापकों का प्रारंभिक सर्वेक्षण।	डा. एस.पी. सिन्हा

1986–87 वर्ष में शुरू की गई नई परियोजनाएं

आलोच्य वर्ष में परिषद् की वित्तीय सहायता से तीन विभागीय और तीन विभागेतर अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की गईं। परियोजनाओं का उल्लेख नीचे किया गया है:

क्र.सं.	परियोजना का नाम	अवधि	शुरू करने की तारीख	मुख्य अन्वेषक	स्वीकृत बजट
विभागीय परियोजनाएं					
1.	विशेष रूप से विकलांगों की समेकित शिक्षा के लिए अध्यापक क्षमताओं का पता लगाना।	18 महीना	2 अगस्त, 86	श्रीमती एस. मुखोपाध्याय डी.टी.ई. एस.ई.एस.	48,900 रु.
2.	एन.एफ.ई. की प्रशासक संरचना का अध्ययन और मॉनिटरन तथा पर्यवेक्षण की योजना।	1 वर्ष	10 अप्रैल, 86	डा. श्रीमती एस.आर. अरोड़ा डी.पी.एस. ई.ई.	47,390 रु.
3.	भौतिक विज्ञान के अधिगम में बढ़ावा देने के लिए ठोस सामग्रियों की प्रभाविता-एक मार्गदर्शी अध्ययन।	6 महीना	जून, 86	डा. बी. प्रकाश	5,000 रु.
विभागेतर परियोजनाएं					
1.	विकलांग भारतीय बच्चों का अधिगम-पहचान और प्रभावी हस्तक्षेप कार्यक्रम का विकास।	2 वर्ष	10 अप्रैल, 86	डा. एल.बी. त्रिपाठी, गोरखपुर	71,820 रु.
2.	विद्यालय पूर्व बच्चों के शिक्षा और व्यक्तित्व के लिए उनके सर्जनात्मक चिंतन योग्यताओं के साधनों का विकास।	2 महीना	अप्रैल, 86	श्री भूदेव सिंह सुल्तानपुर (उ.प्र.)	9,975 रु.
3.	विज्ञान और वैज्ञानिकों के जन संदर्श का अध्ययन और अनौपचारिक शिक्षा में लागू करना	6 महीना	दिसंबर, 1986	डा.ए. वसंत एसोशिएट प्रोफेसर जे.एन.यू. नई दिल्ली	8,000 रु.

पी-एच.डी.थीसिस/मोनोग्राफ का प्रकाशन

एरिक की सहायता से प्रकाशित पी.एच.डी. थीसिस/मोनोग्राफ

थीसिस का शीर्षक	लेखक का नाम
कठिनाई निदान अधिगम और कार्यक्रम।	डा. प्रेरण मोहिते, बड़ौदा
तमिलनाडु में माध्यमिक शिक्षा-गणितीय निदर्शों के प्रयोग से वृद्धि अध्ययन।	डा. एस. पेकियम, टुटीकोरिन
अध्यापक शिक्षा में गैर-मौखिक कक्षा की परस्पर क्रिया।	डा० राकेश जैन, सागर (मध्य प्रदेश)
कार्य से संतुष्टि और अध्यापक।	डा. एस.पी. गुप्ता, इलाहाबाद

1986-87

थीसिस का शीर्षक	लेखक का नाम
बच्चों में हीन भावना का विकास।	डा. नीरजा शर्मा, भोपाल
वैज्ञानिक सर्जनकता पर घर और विद्यालय वातावरण का प्रभाव।	डा. करुणाशंकर मिश्रा, इलाहाबाद
"गरीबी स्तर और शैक्षिक उपलब्धि"– एक मनौवैज्ञानिक अध्ययन।	डा० जगदीश सिंह, छागीपुर
शिक्षा और आधुनिकीकरण–हिंदू और मुस्लिम महिलाओं पर अध्ययन।	ममता अग्रवाल, डी.एम. ई. (एन.सी.ई. आर.टी.)
अध्यापक का व्यक्तित्व और विद्यालय का वातावरण।	डा० वाई.के. गुप्ता, मुरादाबाद
जैव रसायन पदार्थ और शैक्षिक व्यवहार।	अरुणिमा वत्स, एन.सी.ई.आर.टी.
आधुनिक हिंदी में बाल साहित्य का विकास।	डा. (श्रीमती) विजय-लक्ष्मी सिन्हा, जबलपुर, (म.प्र.)
संचार प्रौद्योगिकी और कथा एथोस।	उमेद सिंह, सूरत
गांधीजी का शिक्षा दर्शन	डा० कमला द्विवेदी, कानपुर
अध्यापकों का कार्य समायोजन और कार्य सतुष्टि।	डा० एस. नारायण राव, तिरुपति
श्री अरविन्दो अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा-केन्द्र में विकसित "मुक्त प्रगति तंत्र" के मनोवैज्ञानिक स्थापना का अध्ययन।	डा०सी.पी. पटेल, पोरबन्दर, गुजरात
माध्यमिक विद्यालयों में अनुत्तीर्ण छात्रों के घर की पृष्ठभूमि की मनोवैज्ञानिक सामाजिक जांच।	डा० ए.एस.वाडकर, पुणे
भारतीय कक्षा में लोग/कक्षा की स्थितियों और सामग्रियों का अध्ययन।	डा. के.एस. भारद्वाज, नई दिल्ली
बौद्धिक सर्जनकता और सामाजिक-आर्थिक अवस्थिति के संबंध में परिकल्पना निर्माण और परिकल्पना परीक्षण योग्यताओं का अध्ययन।	डा. (श्रीमती) अविनाश ग्रेवाल
शिक्षण कौशल के समेकन की विभिन्न युक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन।	डा. गीतासिंह, वाराणसी
उड़ीसा की जनजातियों की शिक्षा का स्पष्ट अध्ययन।	डा. एस.सी. पांडे, मैसूर
सत्य साईं संगठन द्वारा संचालित शिक्षा-संस्थाओं में मूल्य अभिविन्यास का अध्ययन।	डा. काशीराम एम. पटेल, गांधीनगर, गुजरात
भारतीय शिक्षा क्षेत्र में केन्द्र-राज्य संबंध।	डा. नरसिंह राय, भुवनेश्वर

पी-एच.डी. थीसिस/मोनोग्राफ के प्रकाशन के लिए परिषद् की सहायता का अनुमोदन

थीसिस का शीर्षक	लेखक का नाम
भौतिक शिक्षा और नगिपुर के माध्यमिक विद्यालयों में किशोर लड़कियों के समायोजन पर इसका प्रभाव।	डा. जामिनी देवी, इम्फाल
महिलाओं में उच्च शिक्षा।	हेमलता टालेसरा, उदयपुर
हिन्दी के क्रिया शासन-प्रबंध संरचना और प्रणाली।	डा. के.एस. शर्मा एन.सी.ई.आर.टी.

अनुसंधान के लिए परीक्षण

1986–87 में चार अनुसंधान विधि कार्य पाठ्यक्रम आयोजित किए गए जिनका ब्यौरा नीचे दिया गया है:

पाठ्यक्रम का स्तर	उद्देश्य	अवधि	भाग लेने वालों की संख्या
आर.एम.सी. स्तर–I	अन्वेषण की रूपरेखा की तैयारी	15 से 24 जुलाई, 86	18
आर.एम.सी. स्तर–II	साधनों का चयन और तैयारी तथा प्रतिचयन	21 से 18 अक्तूबर, 86	16

पाठ्यक्रम का स्तर	उद्देश्य	अवधि	भाग लेने वालों की संख्या
आर.एम.सी. स्तर-।।।	आंकड़ा विश्लेषण	19 से 23 जनवरी, 1987	13
आर.एम.सी. स्तर-4	परिणामों पर चर्चा और अनुसंधान रिपोर्टों की तैयारी	31 मार्च से 3 अप्रैल, 87 तक	10
		कुल जोड़:	57

संकाय में ऊपर उल्लेख किए गए प्रत्येक पाठ्यक्रम में दो से तीन विभागेतर अतिथि लेक्चरर और दो से सात एन.आई.ई. स्टाफ सदस्य शामिल हो गए।

ई.आर.आई.सी. (एरिक) बुलेटिन

अनुसंधान से प्राप्त जानकारियों के प्रसार की महत्ता को देखते हुए एरिक ने 1984 से एक त्रैमासिक अनुसंधान बुलेटिन प्रकाशित करना शुरू कर दिया है। पाठ्यचर्या अनुसंधान के लिए आधारभूत सूचना और आंकड़े उपलब्ध कराने की दृष्टि से डा. ए. शर्मा ने ''ए रेट्रोस्पेक्ट एण्ड प्रास्पेक्ट'' नामक भारत में पाठ्यचर्या अनुसंधान पर बुलेटिन तैयार किया। डा० ए. शर्मा और श्री हेमशंकर शर्मा ने इसके बाद की बुलेटिन में उस पाठ्यचर्या अनुसंधान के क्षेत्र में हुए अनुसंधानों के सारांश का उल्लेख किया जिसे डा० एम.बी. बुच द्वारा संपादित शिक्षा में तीन अनुसंधान सर्वेक्षणों तथा एन.आई.ई. पुस्तकालय में उपलब्ध अन्य स्रोतों से निष्कर्षित किया गया। इस तरह भारतीय विश्वविद्यालयों में 1985 तक पूरे किए गए लगभग सभी अनुसंधान अध्ययनों का समावेश हो गया। सारांश को तीन खंडों में रखा गया अर्थात् (1) 1972 तक हुए अनुसंधान, (2) 1972-78 वर्ष के दौरान हुए अनुसंधान और (3) 1978 के बाद हुए अनुसंधान। अनुसंधानों की सूची निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत तैयार की गई:

1.00 पाठ्यचर्या नियोजन और विकास
2.00 अलग-अलग स्तरों की पाठ्यचर्या
3.00 अलग-अलग विषयों की पाठ्यचर्या

1986-87 वर्ष में प्रकाशित की गई 3 एरिक बुलेटिन के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं:

शीर्षक	लेखक	प्रकाशन मास	प्रतियों की संख्या
रिसर्च बुलेटिन (ई.आर.आई.सी.) खंड-।।। सं. 1 इसमें 1980-81 में पूरी की गई परियोजनाओं का विवरण है	श्री एस.के. बत्रा	अप्रैल-जून, 86	300
रिसर्च बुलेटिन (ई.आर.आई.सी.) खंड-।।। सं.2 भारत में पाठ्यचर्या: अनुसंधान पूर्वव्यापी और भावी	डा. ए. शर्मा	जुलाई-सितंबर 1986	300
रिसर्च बुलेटिन (ई.आर.आई.सी.) खंड-।।। सं.2 पाठ्यचर्या अनुसंधान	डा. ए. शर्मा और श्री एच.एस. शर्मा	अक्टूबर-दिसंबर, 1986	300

विकासी कार्यकलाप

1986-87 वर्ष के दौरान निम्नलिखित दो कार्यकलाप हाथ में लिए गए।

1. शिक्षा के क्षेत्र में केरल की सफल कहानी का वृत्ति अध्ययन

परिषद् के अध्यक्ष के कहने पर शिक्षा के क्षेत्र में केरल का वृत्ति अध्ययन करने की योजना बनायी गई थी। इस संबंध में जनवरी, 1987 में केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम में वृत्ति अध्ययन की अनुसंधान अभिकल्पना विकसित करने की कार्यशाला आयोजित की गई। विशेषज्ञ साधन व्यक्ति और कार्यशाला में भाग लेने वाले व्यक्ति राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, अनुप्रयुक्त जनशक्ति योजना संस्थान और एन.सी.ई.आर.टी. जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं से लिए गए थे। राज्य स्तर पर इस कार्यशाला में शिक्षा विकास और अनुसंधान, केरल में क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) ने भाग लिया। वृत्ति अध्ययन के चरण-1 का काम शुरू हो गया है।

2. +2 स्तर पर शिक्षा का व्यावसायीकरण

संसद द्वारा अनुमोदित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और कार्यान्वियन कार्यक्रम के अनुसार पंच वर्षीय योजनाओं के संदर्भ में नीति निर्णय के अनुसंधान आधार उपलब्ध कराने की + दृष्टि से एन.सी.ई.आर.टी. और ई.आर.आई.सी. ने (1) + 2 स्तर पर शिक्षा का व्यावसायीकरण और (2) देश में प्राथमिक शिक्षा का सर्वीकरण जैसे प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधान कार्य को जारी रखने का निर्णय लिया।

व्यावसायिक शिक्षा के सचिवों, शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के निदेशकों, वार्षिक परीक्षा बोर्डों के सचिवों और अध्यक्षों, व्यावसायिक शिक्षा संस्थाओं/केन्द्रों के प्रबंधकों, कार्यरत अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों, विद्यार्थियों और अभिभावकों के हैदराबाद, बंगलौर, बंबई और पुणे में अनेक बैठकें आयोजित की गईं। ये बैठकें/संगोष्ठियाँ राज्य नीति और प्रशासन, प्रबंध, अध्यापक, विद्यार्थी और अभिभावक, पाठ्यचर्या अधिगम सामग्री आदि जैसे विभिन्न दृष्टिकोणों से आंध्र प्रदेश,

1986-87

कर्नाटक और महाराष्ट्र में शिक्षा के व्यावसायीकरण संबद्ध समस्याओं/कठिनाईयों के निराकरण में सहायक रही हैं। इन कार्यशालाओं के खर्चे का वहन राज्य सरकार ने किया था।

आयोजित कार्यक्रमों के ब्यौरे

कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	मानव दिन	स्थान	भाग लेने वालों की सं.
आंध्र प्रदेश के हैदराबाद नगर (बैठक/संगोष्ठी) में +2 स्तर की शिक्षा का व्यावसायीकरण	3 दिन	150	हैदराबाद	150
कर्नाटक में +2 स्तर की शिक्षा का व्यावसायीकरण (बैठक/संगोष्ठी)	3 दिन	200	बंगलौर	200
महाराष्ट्र में +2 स्तर की शिक्षा का व्यावसायीकरण (बैठक/संगोष्ठी)	3 दिन	200	बम्बई	200
–वही–	1 दिन	60	पुणे	60
			कुल जोड़:	610

अनेक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से संबद्ध विभिन्न स्तर पर आयोजित की गई बैठक से राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधानों की अनुसंधान अभिकल्पनाओं को विकसित करने के लिए प्राथमिकता के आधार पर प्रणोद क्षेत्रों, समस्याओं और मामलों की पहचान में राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी एवं कार्यशाला आयोजित करने पर समृद्ध आंकड़ा/सूचनाएं उपलब्ध हुई हैं।

अध्याय 12

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विषयों के प्रयोग द्वारा शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाना, विशेषकर प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर स्तरों पर, शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग की प्रमुख चिन्ता है। यह विभाग, परामर्श व मार्गदर्शन, प्रतिभा पहचान व विकास, व्यवहार प्रौद्योगिकी तथा पाठ्यविवरणों व अनुदेशी सामग्रियों के विकास से संबंधित अनुसंधान विकास और प्रशिक्षण क्रियाकलापों में रत है। कार्यान्वित किये जा रहे प्रोजेक्टों/कार्यक्रमों का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है, शिक्षार्थी के सभी पहलुओं की क्षमताओं और कार्यकारिता में अधिकतम विकास और स्वतः यथार्थवादिता।

यह विभाग, विशेषकर शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन संबंधी सिफारिशें, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति और कार्य योजना में उल्लिखित हैं, कार्यान्वित करने के पग उठा रहा है।

अनुसंधान

रिपोर्टाधीन वर्ष में निम्नलिखित अनुसंधान अध्ययन पूरे किए गए और ई.आर. आई.सी. (एरिक) द्वारा मूल्यांकित किए जा रहे हैं:

1. मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का एक अध्ययन बनाम अनुसूचित जाति हाई स्कूल के लड़कों के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक नियोजन।
2. प्रासंगिक प्रबंध द्वारा प्रारंभिक विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक कार्यों और कक्षा-कक्ष (क्लास रूम) व्यवहार में सुधार लाना।

उपर्युक्त व्यापक अनुसंधान अध्ययनों के अतिरिक्त दो निम्नलिखित एरिक प्रोजेक्ट पूरा होने के निकट हैं:

1. शिलांग (मेघालय) के इर्दगिर्द जनजातीय हाई स्कूल विद्यार्थियों के शैक्षिक व व्यावसायिक नियोजन अकादमिक उपलब्धि और चुनिंदा मनोवैज्ञानिक और गृह पृष्ठभूमि अस्थिरों का अध्ययन।
2. +स्तर की अकादमिक और व्यावसायिक धाराओं में विद्यार्थियों के व्यावसायिक व्यवहार और समायोजन का अध्ययन।

अनुसंधान परियोजनाओं के विवरण तालिका में दिये गये हैं।

तालिका–1

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग की अनुसंधान परियोजनाओं के विवरण

क्र.सं.	परियोजना का नाम	परियोजना की अवधि	शुरू होने की तिथि	पूर्ण होने की तिथि	प्रधान जांचकर्ता
1.	मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का एक अध्ययन बनाम अनुसूचित जाति हाई स्कूल के लड़कों के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक नियोजन	तीन वर्ष और आठ मास	8 मार्च, 83	31 मार्च, 87	डा० जे.एस. गौड़
2.	प्रासंगिक प्रबंध द्वारा प्रारंभिक विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक कार्यों और कक्षा-कक्ष व्यवहार में सुधार लाना	दो वर्ष और तीन मास	अप्रैल, 1982	जुलाई, 1986	श्री आर.के. शर्मा
3.	शिलांग (मेघालय) के इर्दगिर्द जनजातीय हाई स्कूल विद्यार्थियों के शैक्षिक व व्यावसायिक नियोजन, अकादमिक उपलब्धि और चुनिंदा मनोवैज्ञानिक और गृह पृष्ठभूमि अस्थिरों का अध्ययन।	तीन वर्ष	अप्रैल, 1982	अपूर्ण	श्रीमती पी. एच. मेहता तथा श्रीमती ए. भटनागर
4.	+2 स्तर की अकादमिक और व्यावसायिक धाराओं में विद्यार्थियों के व्यावसायिक व्यवहार और समायोजना का अध्ययन	तीन वर्ष	अगस्त, 1985	जारी	श्रीमती एस. मोहन और श्रीमती एन. गुप्ता

1986-87

प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग ने निम्नलिखित प्रशिक्षण/विस्तार कार्यक्रन आयोजित किए:

(क) शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम मार्गदर्शन ब्यूरो और मार्गदर्शन के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए रचा गया है जो कि कालेजों और विश्वविद्यालयों में कार्य करेंगे। अखिल भारतीय चयन टैस्ट के आधार पर उम्मीदवारों को इस पूरे नौ महीनों के पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है। 1986–87 में 33 व्यक्ति, जिनमें तीन एस.सी./एस.टी. प्रशिक्षणार्थी थे, प्रशिक्षित किये गये। इन 33 प्रशिक्षणार्थियों में 11 व्यक्ति नौ राज्य सरकारों/संघशासित क्षेत्रों– आंध्र प्रदेश, पंजाब, अंडमान और निकोबार, बिहार, केरल, कर्नाटक, मेघालय, नागालैंड और तमिलनाडु द्वारा प्रतिनियुक्त किये, शेष 22 प्रशिक्षणार्थी आंध्र प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, कर्नाटक, उड़ीसा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के थे। 25 प्रशिक्षणार्थियों (एस.सी./एस.टी. सहित) को 325 रु. मासिक वज़ीफा दिया गया। एस.सी./एस.टी. प्रशिक्षणार्थियों के लिए अंग्रेजी में विशेष शिक्षण कक्षाएं व्यवस्थित की गईं। विभिन्न विशेषज्ञों के मेहमान लैक्चरों की व्यवस्था की गई।

डा० शिव के मित्रा, निदेशक, सामाजिक विकास परिषद्, नई दिल्ली की अध्यक्षता में एक समीक्षा समिति ने डिप्लोमा पाठ्यक्रम का पुनरीक्षण किया। समिति ने निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. को मार्च, 1987 में अपनी रिपोर्ट अनुवर्ती कार्रवाई के लिए प्रस्तुत की।

(ख) संगोष्ठियां/कार्यशालाएं/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/अभिविन्यास पाठ्यक्रम

अल्पसंख्यक व्यवस्थित स्कूलों के प्रबंधकों/प्रिंसिपलों और पेशेवर अध्यापकों के लाभ के लिए इस विभाग ने तीन संगोष्ठियां-व-कार्यशालाएं और एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया। इसने संस्थाओं के अध्यक्षों और मार्गदर्शन व परामर्श कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, संवर्द्धन पाठ्यक्रम, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम और अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किए। प्रारंभिक ग्रेडों में सर्जनात्मक क्षमता की पहचान व प्रोत्साहन पर अध्यापक शिक्षकों के लिए स्कूलों और प्रोत्साहन पाठ्यक्रम में व्यवहार संशोधन प्रविधियों के प्रयोग हेतु कार्यशालाएं भी आयोजित की गईं। 1986-87 में डी.ई.सी. और जी. द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/विस्तार कार्यक्रम तालिका–2 में नीचे संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत हैं:

तालिका–2

डी.ई.सी.जी. द्वारा सचालित सेवा-पूर्व/सेवा-दौरान प्रशिक्षण/विस्तार कार्यक्रमों के विवरण

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	अवधि तिथियां	दिवस	स्थान	प्रति-भागियों की संख्या
1.	शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम	1 अगस्त, 86 से 30 अप्रैल, 87	157	डी.ई.सी. व जी.एन.आई.ई. कैम्पस, नई दिल्ली	33
2.	अल्पसंख्यक व्यवस्थित स्कूलों के प्रबंधकों और प्रिंसिपलों के लिए मार्ग-दर्शन सेवाओं पर संगोष्ठियां-व-कार्यशालाएं	18 फरवरी से 20 फरवरी, 1987	3	एन.आई.ई. कैम्पस, नई दिल्ली	19
3.	–वही–	25 से 27 फरवरी, 87	3	–वही–	10
4.	–वही–	2 से 4 मार्च 1987	3	–वही–	22
5.	शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा व्यवस्थित स्कूलों के पेशावर अध्यापकों हेतु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	30 मार्च से 24 अप्रैल, 87	26	–वही–	40
6.	मार्गदर्शन में व्यावसायिक अध्यापकों को अभिविन्यस्त करने हेतु स्रोत व्यक्तियों की संगोष्ठी-व-उत्पादन कार्यशाला	11 से 13 मार्च, 87	3	–वही–	5
7.	मार्गदर्शन व परामर्श में अनुसंधान संबंधी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम-व-उत्पादन कार्यशाला	23 से 27 मार्च, 1987	5	एन.आई.ई. कैम्पस, नई दिल्ली	14
8.	पांडिचेरी के हाई/हायर सैकेंड्री स्कूलों के अध्यक्षों/प्रिंसिपलों के लिए मार्गदर्शन व परामर्श संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम (संघशासित पांडिचेरी द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त)	28 से 29 नवंबर, 1986	2	पांडिचेरी	24
9.	एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. कार्मिकों और प्राथमिक/प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए अधिगम और विकास संबंधी संवर्द्धन पाठ्यक्रम	20 से 29 जनवरी 1987	10	यूनिवर्सिटी कालेज ऑफ एजूकेशन, धारवाड़	28

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	अवधि तिथियां	दिवस	स्थान	प्रति-भागियों की संख्या
10.	एस.आई.ई./एस.सी.ई. आर.टी. कार्मिकों और अध्यापक शिक्षकों के लिए अधिगम और विकास पर संवर्द्धन पाठ्यक्रम	25 अगस्त से 5 सितंबर, 1986	10	तिब्बतन केंद्रीय विद्यालय, कलिनपांग	21
11.	प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए स्कूल/क्लास रूम सेटिंग में व्यवहार संशोधन प्रविधियों के प्रयोग संबंधी कार्यशाला	16 से 25 सितंबर, 86	10	सी.आर. शिक्षा कालेज, हिसार	14
12.	–वही–	20 से 29 नवंबर, 1986	10	डी.एस.ई. आर.टी., बंगलौर	27
13.	प्रारंभिक ग्रेडों में सर्जनात्मक क्षमता की पहचान और प्रोत्साहन हेतु अध्यापक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	11 से 20 फरवरी, 1987	10	एन.आई.ई. कैम्पस, नई दिल्ली	28

विकासात्मक कार्यक्रम

इस विभाग ने व्यवहार उपलझावों सहित बाल केंद्रित दृष्टिकोण के विभिन्न पहलुओं पर एक राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी आयोजित की। चार माड्यूल (क) बढ़ रही बाल आवश्यकताएं और समस्याएं और (ख) स्कूल अध्यापकों की विशाल सेवा-दौरान प्रशिक्षण की योजना के अधीन, प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर अध्यापक प्रशिक्षण हेतु शिक्षा के प्रति नौसिखिया केंद्रित दृष्टिकोण विकसित किए गए। इस विभाग ने विकासात्मक और पेशेवर मार्गदर्शन पर 8 वीडियो और 24 श्रव्य रचनाओं वाला एक बहुसंचार प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया। स्वतः रोजगार प्रोन्नत करने हेतु एक मार्गदर्शन कार्यक्रम विकसित करने के अलावा उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए मनोविज्ञान में आइटम बैंक विकास का कार्य हाथ में लिया गया। प्रतिभा पहचान व विकास संबंधी एक हस्तपुस्तक प्रकाशित की गई। स्कूल वेटिंगों में व्यवहार संशोधन तथा कक्षा बारहवीं के लिए मनोविज्ञान की नई पाठ्यपुस्तक का विकास प्रगति पर है। डी.ई.सी. व जी. द्वारा हाथ में लिए विकासात्मक कार्यक्रमों को नीचे संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है:

1. प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए स्कूल सेटिंग में व्यवहार संशोधन प्रविधियों संबंधी अनुदेशों की एक दीपिका विकसित करने हेतु संपादक मंडल की तीसरी बैठक 2 से 4 मार्च 1987 को एन.आई.ई. में आयोजित की गई। इसमें 8 विषय विशेषज्ञ उपस्थित थे।
2. ग्यारहवीं कक्षा के लिए "मनोविज्ञान : मानव व्यवहार का परिचय भाग–1" नामक मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक के संशोधन हेतु एक तीन दिवसीय बैठक एन.आई.ई. में 22 से 24 अक्तूबर 1986 को आयोजित की गई।
3. कक्षा बारहवीं के लिए "मनोविज्ञान : मानव व्यवहार का परिचय (भाग–2)" नामक मनोविज्ञान की एक नई पाठ्यपुस्तक का प्रथम प्रारूप विकसित करने के लिए एक पांच दिवसीय कार्यशाला 22 से 26 दिसंबर 1986 को एन.आई.ई. में आयोजित की गई।
4. विकासात्मक और पेशेवर मार्गदर्शन पर बहुसंचार प्रशिक्षण पैकेज विकसित करने के लिए कुल 18 दिनों की तीन कार्यशालाएं एन.आई.ई. (1 से 5 सितंबर 1986 और 5 से 7 नवंबर 1986) में और बंबई विश्वविद्यालय (23 मार्च से 1 अप्रैल 1987) में आयोजित की गईं। 55 व्यक्तियों ने भाग लिया।

सांख्यिकी में कुछ चुने हुए विषयों में सी.बी.एल. पैकेजों का विकास

शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के प्रयोग के लिए प्रतिचयन और सांख्यिकीय अनुमीति में कुछ चुनिंदा विषयों पर सी.बी.एल. पैकेजों के विकास के लिए एक माइक्रोकम्प्यूटर इस्तेमाल किया गया। इनके अतिरिक्त कुछ महत्वपूर्ण सांख्यिकीय उपनित्यचर्याओं के लिए भी कुछ कम्प्यूटर कार्यक्रम विकसित किए गए तथा विभाग के अन्दर और बाहर अनेक अनुसंधान परियोजनाओं के आंकड़ों को विश्लेषित करने हेतु इनका उपयोग किया गया।

परामर्श

डी.ई.सी. व जी. द्वारा दिए गए परामर्श के विवरण तालिका–3 में उल्लिखित हैं।

तालिका–3

क्र.सं.	जिन्होंने परामर्श लिया	प्रयोजन	संबद्ध व्यक्ति
1.	पुलिस प्रशिक्षण स्कूल, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली	व्यवहारात्मक विज्ञानों व सुधारात्मक प्रशासन में लैक्चर्स	प्रो. के.एन. सक्सेना
2.	मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास के तत्वावधान में व्यवहार संशोधन संबंधी	(क) व्यवहार संशोधन शैक्षिक सेटिंग पर लैक्चर	प्रो० वी.के. सिंह

1986-87

क्र.सं.	जिन्होंने परामर्श लिया	प्रयोजन	संबद्ध व्यक्ति
	यू.जी.सी. प्रायोजित पाठ्यक्रम	(ख) बाल पालन-पोषण पद्धतियां और व्यवहार संशोधन	-वही-
3.	लोक सहयोग और बाल विकास राष्ट्रीय संस्थान, नई दिल्ली	व्यावसायिक मार्ग-दर्शन और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम संबंधी लैक्चर	प्रो. (श्रीमती) सी.धर
4.	शैक्षिक नियोजन और प्रशासन राष्ट्रीय संस्थान, नई दिल्ली	-वही-	-वही-
5.	जनसंचार अनुसंधान संबंधी अन्त-र्राष्ट्रीय संस्था, नई दिल्ली का वार्षिक सत्र	प्राथमिक स्कूली बच्चों पर उपग्रह टेलीविजन प्रयोग के प्रभाव संबंधी लैक्चर	प्रो. कुलदीप कुमार
6.	भारतीय विज्ञान कांग्रेस का 74 वां सत्र	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्कूलों में शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन सेवाओं के प्रबंध पर लैक्चर	-वही-
7.	लोक सहयोग और बाल विकास राष्ट्रीय संस्थान, नई दिल्ली	बड़े पैमाने पर नमूना सर्वेक्षण और नियंत्रण अप्रतिचयन अशुद्धियों की रचना पर लैक्चर्स	प्रो० आर.के. माथुर
8.	माध्यमिक शिक्षा मंडल,भिवानी, हरियाणा	लोक परीक्षाओं में अंकों के ग्रेडिंग और रीस्के-लिंग संबंधी लैक्चर्स	-वही-
9.	गार्गी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	कालेज छात्रों के लिए "अपना पेशा कैसे चुनना है" पर लैक्चर	डा० (श्रीमती) ए. भटनागर
10.	एल.एस.आर. कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	मनोविज्ञान में पेशों पर लैक्चर	-वही-
11.	ए.पी.जे. पब्लिक स्कूल, शेख सराय, नई दिल्ली	पेशा सम्मेलनों-व-प्रदर्शनियों और मार्ग-दर्शन नुक्कड़ की व्यवस्था के लिए परामर्श प्रदान किया	डा० बी. बालचन्द्र
12	सैनिक पब्लिक स्कूल, धौलाकुआं, दिल्ली	स्कूल मार्गदर्शन एकक की स्थापना एवं उसे चलाने हेतु कार्मिकों की नियुक्ति संबंधी लैक्चर	प्रो० जे.एस. गौड़

प्रकाशन

1986-87 में संकाय सदस्यों द्वारा प्रकाशित अनुसंधान लेख तालिका-4 में उल्लिखित हैं।

तालिका-4

क्र.सं.	लेखक	शीर्षक	प्रकाशन
1.	भटनागर ए. और गुलाटी एस.	सर्जनात्मक किशोरों की व्याव-सायिक परिपक्वता अनुसंधान के लिए प्रस्तावित ढांचा	भारतीय शैक्षिक समीक्षा को प्रकाशनार्थ भेजा गया।
2.	धर सी.	पेशा व शिक्षा संबंधी परामर्श लड़कियां	"मार्गदर्शन और परामर्श में अनुसंधान संबंधी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम-व-उत्पादन कार्यशाला की कार्यवाही" में प्रकाशित की जानी है।
3.	गौड़, जे.एस.	स्वतः रोज़गार के लिए मार्गदर्शन	भारतीय शिक्षा पत्रिका को प्रकाशनार्थ भेजा गया।
4.	गौड़ जे.एस.	व्यावसायिक स्कूलों में +2 स्तर पर विशेषकर बच्चों को दृष्टिगत रखते हुए स्वतः रोज़गार के लिए मार्गदर्शन	सी.बी.एस.ई. त्रैमासिक बुलेटिन "सेनबोसेक" के विशेष अंक में प्रकाशित किया जाना है।
5.	माथुर आर.के.	प्रक्रिया संदर्भित परीक्षण संबंधी निर्णय सैद्धांतिक दृष्टिकोण	मार्च 1987 में नई दिल्ली में एन.आई.ई. कैम्पस में की गई प्रक्रिया संदर्भित परीक्षा संबंधी कार्यशाला की कार्य-वाही में प्रकाशित की जानी है।
6.	मेहता पैरिन एच. और माथुर आर.के.	प्रथम संतति नैसिखियों तथा अप्रथम संतति नौसिखियों की कुछ ज्ञानात्मक क्षमताएं और अकादमिक उपलब्धि	मनोमिति व शिक्षा की भारतीय पत्रिका खंड 17 से 1 व 2,1986
7.	सारस्वत आर.के.	किशोरों का समायोजन	भारतीय शैक्षिक समीक्षा खंड 31, सं. 4, अक्तूबर 1986
8.	सिन्हा एस.पी.	क्लासरूम सेटिंग और स्कूली स्थितियों में व्यवहार संशोधन प्रविधियों का महत्व	भारतीय शिक्षा पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेजा गया।
9.	भटनागर ए.	स्कूलों में व्यावसायिक मार्गदर्शन	सेनबोसेक को प्रकाशनार्थ भेजा गया।
10.	भटनागर ए. व गुप्ता एन.	भारत के माध्यमिक छात्रों की पेशेवर परिपक्वता पर एक मार्ग-दर्शन मध्यस्थता कार्यक्रम का प्रभाव	भारतीय शैक्षिक समीक्षा को प्रकाशनार्थ भेजा गया।

अध्याय 13

क्षेत्रीय सेवाएँ और समन्वय

क्षेत्र सेवा और समन्वय विभाग (डी०एफ०एस०सी०) विभिन्न राज्यों/संघशासित प्रदेशों के क्षेत्रीय शिक्षा-कालेजों और परिषद् के क्षेत्र कार्यालयों के कार्यकलापों का समन्वय करता है। यह परिषद् के क्षेत्र कार्यालयों के जरिए राज्यों और संघशासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों और अन्य संस्थाओं के साथ संपर्क बनाए रखता है और विद्यालय शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंध स्थापित करने में सहायता करता है।

1986–87 वर्ष में विभाग ने, विद्यालय शिक्षा से संबंधित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में कुछ कार्यक्रमों में उपलब्ध प्रगति, आवश्यकताओं और समस्याओं का पता लगाने और इन समस्याओं के निराकरण के लिए राज्यों/संघशासित प्रदेशों में अपनायी गई युक्तियों के बारे में सूचना एकत्रित करने के लिए "राज्यों/संघशासित प्रदेशों के साथ परस्पर क्रिया" कार्यक्रम के अंतर्गत पश्चिम बंगाल, अण्डमान और निकोबार द्वीप, गुजरात और दादर तथा नागर हवेली के जिला शिक्षा अधिकारियों की चार बैठकें आयोजित कीं।

राष्ट्रीय एकता परियोजना–समूह गान

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा चलायी गई राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में समूह गान के विकास की योजना के अंतर्गत परिषद् देश के विभिन्न भागों के संगीत में रुचि रखने वाले अध्यापकों के लिए संगीत के समूह-गान शिविर आयोजित कर रही है। 1986–87 वर्ष में विद्यालय पद्धति में समूह गान को संस्थागत करने और राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने के लिए इस विभाग ने राज्य स्तर की विभिन्न एजेन्सियों और संस्थाओं के साथ मिलकर अध्यापकों को समूह गान की कला और विधि में प्रशिक्षण देने के लिए 27 राज्य/क्षेत्रीय शिविर और 4 राष्ट्रीय शिविर आयोजित किये। इन शिविरों के जरिए 16 राज्यों के लगभग 850 अध्यापक प्रशिक्षित किए गए। इस शिविर से प्रशिक्षण प्राप्त किए प्रत्येक अध्यापक को अपने विद्यालय और अपने आस-पास के विद्यालयों में लगभग 1,000 बच्चों को समूह गान सिखाने का निर्देश दिया गया है। परिषद् ने देश के विभिन्न राज्यों के लगभग 175 अध्यापक-शिक्षकों को भी प्रशिक्षित किया है।

परिषद् शिविर में भाग लेने वाले सभी अध्यापकों को "लेट अस सिंग टूगेदर" नामक पुस्तक, विभिन्न भाषाओं में रेकार्ड किए गए 15 गीतों के कैसेट और टेप-रेकार्डर बांटे हैं जिससे कि ये अध्यापक पुस्तक में बताए गए स्वर के अनुसार स्कूली बच्चों को प्रशिक्षित कर सकें। संविधान की 8वीं अनुसूची के अनुसार "लेट अस सिंग टूगेदर" नामक पुस्तक के संशोधित संस्करण में उड़िया, कशमीरी और पंजाबी में तीन और गीत जोड़े गए हैं।

1985 से गणतंत्र दिवस परेड में स्कूली बच्चों का समूह गान एक सामान्य प्रक्रिया बन गई है। इस वर्ष परिषद् ने 1987 के गणतंत्र दिवस परेड के लिए दिल्ली के 76 विद्यालयों के 10,000 बच्चों के समूह गान का आयोजन किया था। बच्चों ने परेड के विशाल फाइनल के रूप में एक साथ मिलकर एन.सी.सी. का सुप्रसिद्ध गीत "हम सब भारतीय हैं" गाया।

इस बात से सुनिश्चित होने के लिए एक योजना के अनुसार परियोजना ठीक से चल रही है कि नहीं– परिषद् ने भाग लेने वाले अध्यापकों के मूल्यांकन के लिए एक मूल्यांकन प्रोफार्मा और प्रशिक्षित अध्यापकों से पुनर्मरण प्राप्त करने के लिए एक प्रश्नोत्तरी विकसित की है। समूह गान की योजना को और अधिक व्यापक बनाने के लिए परिषद् ने समूह गान की एक सलाहकार समिति का गठन किया है। इस समिति की पहली बैठक 27 नवंबर, 1986 को हुई। इस योजना को आगे बढ़ाने के लिए इस बैठक में कुछ सिफारिशें की गई जिन पर कार्रवाई की जा रही है।

क्षेत्रीय कार्यालय

राज्यों और संघशासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों/निदेशालयों तथा अन्य संस्थाओं के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए परिषद् ने 17 क्षेत्र कार्यालय स्थापित किए हैं। ये कार्यालय परिषद् के विभिन्न संघटक यूनिटों के कार्यकलापों और कार्यक्रमों से संबद्ध आवश्यक सूचनाएं राज्य के शिक्षा विभागों को देते हैं। ये कार्यालय अपने कार्य-क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्यों/संघशासित प्रदेशों की विशिष्ट आवश्यकताओं से संबद्ध सूचनाओं को एकत्रित करके परिषद् तथा इसके संघटक यूनिट को देते हैं और साथ ही ये कार्यालय प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रमों को आयोजित करने में परिषद् के विभिन्न संघटक यूनिटों की आवश्यक सहायता करते हैं। ये कार्यालय विद्यालय के अध्यापकों द्वारा हाथ में ली गई लघु क्रिया अनुसंधान परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराते हैं और राज्य शिक्षा विभाग के अनुरोध पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

1986–87 वर्ष में क्षेत्र कार्यालयों ने एन.आई.ई. के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान को राज्यों और संघशासित प्रदेशों में उनके कार्यक्रमों को आयोजित करने में सहायता करते हैं। ये कार्यालय राज्य/संघशासित प्रदेश के स्तर पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा कराने में राज्य के शिक्षा विभागों/परिषदों को आवश्यक निर्देशन देते हैं और सहायता करते हैं। एक कार्य को सभी क्षेत्र कार्यालयों को करना पड़ा था– वह था कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन करना जिसमें

1986-87

1986-87 वर्ष के कार्यक्रमों के प्रस्ताव को अंतिम रूप दिया गया। इन कार्यकलापों के अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालयों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने की जिम्मेदारी भी ली जिसमें विशाल सेवा-कालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने, नवोदय विद्यालयों में दाखिल करने के लिए प्रवेश-परीक्षा आयोजित करने और राज्यों तथा संघशासित प्रदेशों में नए नवोदय विद्यालय खोलने का कार्य शामिल था।

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

अहमदाबाद के क्षेत्र कार्यालय ने 1986-87 वर्ष में निम्नलिखित कार्यकलाप किए:

गुजरात और संघशासित प्रदेश दादर और नागर हवेली के प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए शिक्षा संबंधी खिलौने बनाने की प्रतियोगिता की गई और प्रदर्शनी लगायी गई। इसमें एक सौ अध्यापकों ने भाग लिया और लगभग 37 खिलौने प्राप्त हुए।

27 जनवरी 1987 से 1 फरवरी 1987 तक सूरत में अध्यापन सहायता साधन तैयार करने के लिए एक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में नगर पालिका विद्यालय बोर्ड के 24 अध्यापक और 10 साधन व्यक्तियों ने भाग लिया।

19 से 31 मार्च 1987 तक तकनीकी विषयों अर्थात् विद्युत, इलैक्ट्रानिकी और कम्प्यूटर में अनुदेशी सामग्री तैयार के विशेष संदर्भ में शिक्षा के व्यावसायीकरण पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

13 अक्टूबर, 1986 को बी०टी०सी० शिक्षा कालेज, सूरत में व्यावसायिक मार्गदर्शन पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें सूरत और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के 50 अध्यापकों और प्रिंसिपलों ने भाग लिया।

20 फरवरी 1987 को उत्तम और प्रभावशाली कक्षा-शिक्षण के लिए अध्यापकों को अभिप्रेरित करने पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में 25 से भी अधिक शिक्षाशास्त्री, अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रिंसिपल और अध्यापकों ने अपने लेख प्रस्तुत किए। इसमें 100 शिक्षाशास्त्रियों ने भाग लिया।

क्षेत्र कार्यालय ने पार्दी तालुका की दसवीं कक्षा के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन देने पर एक अनुसंधान परियोजना अपने हाथ में ली। इस परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यकलाप किए गए:

6 अगस्त, 1986 को एन०बी० पाटिल विद्या मंदिर हाई स्कूल नरौदा में एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में भाग ले रहे 40 अध्यापकों ने अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लाभ के लिए विद्यालयों में व्यावसायिक मार्गदर्शी सुविधाएं प्रदान करने तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन कक्ष की व्यवस्था करने पर बल दिया।

15 से 27 दिसंबर 1986 तक, 24 से 25 फरवरी, 1987 तक, 23 से 24 मार्च, 1987 तक पार्दी तालुका के विद्यालय प्रिंसिपलों और अध्यापकों के लिए तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में पार्दी तालुका के इन विद्यालयों के चार सौ प्रिंसिपलों और अध्यापकों ने भाग लिया।

सूरत के बी०टी०सी० सार्वजनिक शिक्षा कालेज में एवेक्स का प्रयोग जैसे शिक्षण सहायता साधन और विशेष अनुदेशी सामग्री के विकास पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में ग्रामीण एवं गंदी बस्तियों के विद्यालयों के चालीस अध्यापकों ने भाग लिया।

इन कार्यकलापों के अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय प्रायोगिक परियोजना को भी लागू करता रहा। भाषा, गणित, विज्ञान तथा अन्य विषयों के अध्यापन में उन्नत विधियों का विकास करने में विद्यालयों ने नवीन प्रक्रियात्मक कार्य किए हैं।

क्षेत्रीय कार्यालय, इलाहाबाद

इलाहाबाद के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित मुख्य कार्यकलाप किए:

क्षेत्र कार्यालय ने पर्यावरण स्वच्छता पर एक चार दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में 17 व्यक्तियों ने भाग लिया।

19 से 22 जनवरी, 1987 तक + 2 स्तर की गृह विज्ञान पाठ्यचर्या का पुनरीक्षण तथा संशोधन करने के लिए एक चार दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 56 लोगों ने भाग लिया। व्यावसायिक क्षेत्र के अंतर्गत निम्नलिखित पर विचार किया गया: (1) खाद्य परिरक्षण, (2) लांड्री और डाइंग, (3) कूकरी और (4) ड्रेस निर्माण और सज्जा।

23 से 26 फरवरी, 1987 तक की गई एक अन्य चार दिवसीय कार्यशाला में इंटरमीडिएट कालेजों के 18 प्रिंसिपलों/लेक्चररों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में 15 प्रायोगिक परियोजनाएं विकसित की गईं।

2 से 4 मार्च, 1987 तक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदाय को महिला शिक्षा से संबद्ध समस्याओं का पता लगाने के लिए एक तीन दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में 60 व्यक्तियों ने भाग लिया।

ऊपर उल्लेख किए गए कार्यक्रमों के अतिरिक्त परिषद् के रजत जयंती समारोह के अवसर पर इलाहाबाद जनपद के 500 से भी अधिक अध्यापकों और लेक्चररों को "स्कूली शिक्षा पर परिषद् के कार्यक्रमों का प्रभाव" और "उत्तर प्रदेश की स्कूल शिक्षा के कार्यक्रमों पर शिक्षा संबंधी नवीन प्रक्रिया का प्रभाव" जैसे विषयों पर फिल्में दिखाईं।

क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलौर

बंगलौर के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित कार्यकलाप किए:

10 से 13 फरवरी, 1987 तक बंगलौर में विषय निरीक्षकों, सहायक शिक्षा अधिकारियों और अध्यापकों के लाभ के लिए प्रारंभिक स्तर के विद्यालय विषयों में मूल्यांकन सामग्री तैयार करने पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

परिषद् की विकेन्द्रीकरण नीति के अंतर्गत धारवाड़ में एक वार्षिक खिलौना निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई।

ऊपर उल्लेख किए गए कार्यक्रमों के अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय ने कर्नाटक में नवोदय विद्यालयों की स्थापना में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अंतर्गत विशाल अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में, राष्ट्रीय एकता शिविर लगाने में और परिषद् के रजत जयंती समारोह में भी अपना सहयोग दिया।

क्षेत्रीय कालेज, भोपाल

1986-87 वर्ष में भोपाल के क्षेत्र कालेज ने निम्नलिखित कार्यकलाप किये:

5 से 14 फरवरी, 1987 तक देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर में प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए अनुदेशी सामग्री विकसित करने पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

19 से 25 फरवरी, 1987 तक एम०एच० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ग्वालियर में जनजातीय क्षेत्रों के अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रभावशाली कक्षा-शिक्षण के लिए पचास अध्यापकों को अभिविन्यस्त किया गया।

इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त 11 और कार्यक्रम, जिनमें से अधिकांश जनजातीय शिक्षा पर केन्द्रित थे, आर०सी०ई०, भोपाल, एस.आई.ई. भोपाल, एस.आई.एल.टी. भोपाल, एस.आई.एस.ई., जबलपुर और जनजातीय कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश सरकार ने आयोजित किए। इन कार्यक्रमों में कुल 640 अध्यापक अभिविन्यस्त किए गए। क्षेत्र कार्यालय के महत्वपूर्ण प्रकाशनों में "गैर मौखिक परीक्षा सामग्री" और दसवीं तथा ग्यारहवीं कक्षा के लिए विज्ञान और गणित में शिक्षण परीक्षण कैप्स्यूल थे।

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

भुवनेश्वर के क्षेत्रीय कार्यालय ने निम्नलिखित मुख्य कार्यकलाप किए:

फुलवानी में 16 से 20 दिसंबर, 1986 तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत जनजातीय सेवाश्रमों में सार्वजनिक नामांकन और अभिग्रहण पर एक पांच दिवसीय कार्यशाला। इस कार्यशाला में उन्नीस व्यक्तियों ने भाग लिया।

13 से 17 जनवरी, 1987 तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत शिक्षा के सर्वीकरण के प्रति सार्वत्रिक नामांकन और अभिग्रहण पर प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए प्रायोगिक परियोजनाओं पर एक पांच दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में तीस व्यक्तियों ने भाग लिया।

राउरकेला में 17 से 21 फरवरी 1987 तक माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए गणित और विज्ञान में प्रायोगिक परियोजना पर एक पांच-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में उन्तीस अध्यापकों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर खिलौना-निर्माण प्रतियोगिता आयोजित करने के अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय ने नवोदय विद्यालय, राष्ट्रीय विज्ञान निबंध प्रतियोगिता और आपरेशन ब्लैक बोर्ड जैसे राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों में सहयोग दिया। सहायक क्षेत्र सलाहकार ने 11 बाल शिक्षा केन्द्रों का दौरा किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कलकत्ता

आलोच्य वर्ष में कलकत्ता के क्षेत्रीय कार्यालय ने निम्नलिखित मुख्य कार्यकलाप किए:

प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए वार्षिक खिलौना निर्माण प्रतियोगिता। इसमें नौ अध्यापकों ने भाग लिया।

12 से 16 जनवरी, 1987 तक माध्यमिक विद्यालयों में उत्तम जैविकी प्रयोगशाला के प्रबंध और रख-रखाव की साधारण विधियों पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम। इस कार्यक्रम में चौबीस व्यक्तियों ने भाग लिया।

16 से 20 फरवरी, 1987 तक प्राथमिक विद्यालय जाने वाले बच्चों में सर्जनात्मक शक्ति के समेकित उद्भासन पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में अट्ठाईस व्यक्तियों ने भाग लिया।

28 फरवरी, 1987 को 'सर्जनात्मक शिक्षा में टैगोर' पर एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में 22 व्यक्तियों ने भाग लिया।

25 से 28 मार्च, 1987 तक पश्चिम बंगाल के स्वैच्छिक संगठनों द्वारा चलाए जा रहे ई.सी.ई. केन्द्रों के लिए सामान्य पाठ्यचर्या ढांचा विकसित करने पर एक कार्यशाला। इस कार्यशाला में सत्ताईस व्यक्तियों ने भाग लिया।

प्रायोगिक परियोजना – योजना के अंतर्गत सात परियोजनाओं को वित्तीय सहायता दी गई। इसके अतिरिक्त एस.सी.ई.आर.टी., कलकत्ता में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया जिसमें डेढ़ सौ लोगों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़

1986-87 में चण्डीगढ़ के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित कार्यकलाप किए:

9 से 14 मार्च, 1987 तक एस.सी.ई.आर.टी., गुड़गांव में पंजाब और हरियाणा के अनुसूचित जाति के अध्यापकों के लिए सामान्य विज्ञान में एक पांच दिवसीय अंतर्वस्तु एवं विधि समृद्धि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में बीस अनुसूचित जाति के अध्यापकों ने भाग लिया।

शिवालिक पब्लिक स्कूल, मोहाली में माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए प्रायोगिक परियोजनाओं की अभिकल्पना में एक तीन दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

पंजाब, हरियाणा और संघशासित प्रदेश चण्डीगढ़ के लिए खिलौना-निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई।

प्रायोगिक परियोजना की योजना के अंतर्गत क्षेत्र कार्यालय को सत्ताईस परियोजनाएं प्राप्त हुईं जिनमें से सोलह परियोजनाएं अनुमोदित हुईं तथा उनके लिए वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। क्षेत्रीय कार्यालय ने पंजाब और हरियाणा की अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायकि आकांक्षाओं पर की गई कार्यकारी दल की बैठक की रिपोर्ट, पंजाब के साधन व्यक्तियों की एक निर्देशिका और 'हरियाणा का शैक्षिक स्वरूप' प्रकाशित किए।

क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

गुवाहाटी का क्षेत्रीय कार्यालय अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर और नागालैण्ड

की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। आलोच्य वर्ष में गुवाहाटी के क्षेत्रीय कार्यालय ने निम्नलिखित मुख्य कार्यकलाप किए:

17 से 21 फरवरी, 1987 तक एस.आई.ई. यांगलांग (अरुणाचल प्रदेश) में मूल्य शिक्षा पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में इक्कीस अध्यापकों ने भाग लिया।

20 जनवरी, 1987 से क्षेत्रीय कार्यालय में खिलौना-निर्माण प्रतियोगिता 1987 में पुरस्कार जीतनेवाले असम के अध्यापकों के लिए पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह का अंश दूरदर्शन पर भी दिखाया गया था।

इन कार्यकलापों के अतिरिक्त, गुवाहाटी का क्षेत्रीय कार्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) को लागू करने से संबद्ध कार्यक्रमों को विशेष रूप से अध्यापकों के लिए विशाल सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, नवोदय विद्यालयों में दाखिले के लिए प्रवेश-परीक्षा आयोजित करना और राज्यों में नए नवोदय विद्यालय खोलने जैसे कार्यकलापों को लागू करने में लगा रहा।

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

हैदराबाद के क्षेत्रीय कार्यालय ने आंध्रप्रदेश में नवोदय विद्यालय खोलने में सहायता प्रदान की, और विद्यालय अध्यापकों के लिए विशाल अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें अध्यापकों की भूमिका की दृष्टि से 29,647 अध्यापकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं कार्यान्वियन कार्यक्रम 1986 के प्रति अभिविन्यस्त किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

राजस्थान में नवोदय विद्यालय खोलने में सहायता प्रदान करने के अतिरिक्त जयपुर के क्षेत्रीय कार्यालय ने राज्य स्तर पर खिलौना निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की।

क्षेत्रीय कार्यालय, मद्रास

मद्रास के क्षेत्र कार्यालय के अंतर्गत तमिलनाडु और संघशासित प्रदेश पाण्डिचेरी आते हैं। 1986–87 वर्ष के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय ने निम्नलिखित मुख्य कार्यकलाप किए:

2 से 6 फरवरी, 1987 तक चिदाम्बरम में प्रारंभिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए पर्यावरण अध्ययन उपगमन पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में तमिलनाडु के आदि द्रविद्रम एवं जनजातीय कल्याण अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विद्यालयों के इकतालिस अध्यापकों ने भाग लिया।

25 से 26 फरवरी, 1987 तक त्रिची में मानव संसाधन विकास के लिए उच्च/उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यक्षों की भूमिका पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में तमिलनाडु सरकार के आदि द्रविद्रम और जनजातीय कल्याण (अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति) विद्यालयों के तरेसठ अध्यक्षों ने भाग लिया।

9 से 13 मार्च, 1987 तक नागरकोयल में, और 24 से 28 मार्च 1987 तक ऊटी में गैर–पी.ई.सी.आर. विद्यालयों, प्रारंभिक विद्यालय अध्यापकों के पर्यावरण अध्ययन उपगमन पर तीन कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। कक्षा में प्रयोग के लिए नई उपगमन और विकसित सामग्री के प्रति एक सौ पंद्रह अध्यापक उद्भाषित हुए।

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

1986–87 वर्ष में पटना के क्षेत्रीय कार्यालय ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्यकलाप किए:

3 से 5 मार्च, 1987 तक राजकीय शिक्षा प्रशिक्षण कालेज, भागलपुर में प्राथमिक पूर्व और प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए शैक्षिक खिलौने के निर्माण पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में प्राथमिक और मिडिल स्कूल के अट्ठाईस अध्यापकों ने भाग लिया।

9 से 12 मार्च, 1987 तक राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण कालेज, रांची में पर्यावरण के द्वारा विज्ञान के अध्यापन में रांची जिले के चुने हुए अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के अध्यापकों की एक अभिविन्यास कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें उन्नीस व्यक्तियों ने भाग लिया।

राज्य स्तर पर एक खिलौना निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई और 31 मार्च, 1987 को नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र बांटे गए।

इन कार्यकलापों के अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय प्रायोगिक परियोजनाओं की योजना लागू करने में लगा रहा। प्राप्त हुए 13 परियोजना प्रस्तावों में से परियोजनाओं को वित्तीय सहायता के लिए चुना गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे

पुणे के क्षेत्रीय कार्यालय ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य किए:

21 से 24 मार्च, 1987 तक एस.यू.पी.डब्लू. और गृह विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए फूड क्रैफ्ट और खाद्य परिरक्षण के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पर एक कार्यशाला आयोजित की जिसमें 37 अध्यापकों ने भाग लिया।

27 फरवरी से 2 मार्च, 1987 तक नई शिक्षा नीति के प्रति जनजातीय क्षेत्र के अध्यापकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 45 व्यक्तियों ने भाग लिया।

14 से 15 मार्च, 1987 तक विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक अभिकल्पना के विकास पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें 100 अध्यापकों ने भाग लिया।

ऊपर उल्लेख किए गए कार्यकलापों के अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय ने अपने कार्य क्षेत्र के राज्यों/संघशासित प्रदेशों में नवोदय विद्यालय खोलने में सहायता की और राज्य स्तर पर खिलौना निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की।

1986-87

क्षेत्रीय कार्यालय, शिलांग

शिलांग के क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यक्षेत्र में मेघालय और त्रिपुरा और संघशासित प्रदेश मिजोरम आते हैं। आलोच्य वर्ष में शिलांग के क्षेत्रीय कार्यालय ने निम्नलिखित मुख्य कार्यकलाप किए:

19 से 24 जनवरी, 1987 तक अध्यापक-शिक्षकों, एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. के कार्मिकों और बोर्ड के कार्मिकों के लिए शिक्षा-अनुसंधान क्रियाविधि पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 18 व्यक्तियों ने भाग लिया।

17 से 21 फरवरी, 1987 तक शिलांग में एस.यू.पी.डब्ल्यू./कला और अभिव्यंजना में माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पच्चीस अध्यापकों ने भाग लिया।

23 से 27 फरवरी, 1987 तक शिलांग में शिक्षक व्यावसायीकरण विभाग (एन.आई.ई.) के सहयोग से मेघालय के मुख्य व्यक्तियों के लिए कार्य-अनुभव में एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया जिसमें तिहत्तर व्यक्तियों ने भाग लिया।

23 से 28 मार्च, 1987 तक जनजातीय क्षेत्रों में अंग्रेजी के शिक्षण-अधिगम पर अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए एक गहन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बाईस व्यक्तियों ने भाग लिया।

ऊपर उल्लेख किए गए कार्यक्रमों के अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) को लागू करने के लिए अध्यापकों के विशाल अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करने में और अपने कार्यक्षेत्र के राज्यों में नवोदय विद्यालय खोलने में मुख्य भूमिका निभायी।

क्षेत्रीय कार्यालय, त्रिवेन्द्रम

त्रिवेन्द्रम का क्षेत्रीय कार्यालय केरल और संघशासित प्रदेश लक्षद्वीप की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। क्षेत्रीय कार्यालय ने निम्नलिखित मुख्य कार्यकलाप किए:

12 से 15 नवंबर, 1986 तक उन्नत शिक्षण सहायता साधन के निर्माण में अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बीस अध्यापकों ने भाग लिया।

19 से 21 फरवरी, 1987 तक अध्यापकों के लिए प्रायोगिक परियोजनाओं का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पैंतीस अध्यापकों ने भाग लिया।

23 से 26 फरवरी, 1987 तक नई शिक्षा नीति में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें इक्कीस अध्यापकों ने भाग लिया।

10 से 13 मार्च, 1987 तक साधन व्यक्तियों के लिए मुख्य शिक्षा में एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बावन व्यक्तियों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय, शिमला

शिमला के क्षेत्रीय कार्यालय ने समाचार-पत्रों से कक्षा में शिक्षण करने के लिए समृद्ध सामग्री के विकास पर एक चार दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया और गणित के मुख्य व्यक्तियों के लिए पांच दिन के अभिविन्यास कार्यक्रम का संचालन किया। इन कार्यक्रमों में क्रमशः 15 और 10 व्यक्तियों ने भाग लिया। प्रथम कार्यक्रम के परिणाम के रूप में एक भूगोल में और एक हिन्दी में दो चित्र सहित पत्रिकाएं तैयार की गईं। क्षेत्रीय कार्यालय ने विशाल अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में और राज्य में नवोदय विद्यालय खोलने में भी सहायता की।

क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू और कश्मीर

1986-87 वर्ष में जम्मू और कश्मीर के क्षेत्रीय कार्यालय ने निम्नलिखित मुख्य कार्यकलाप किए:

10 से 14 फरवरी 1987 तक राजकीय शिक्षा कालेज, जम्मू में जम्मू और कश्मीर की अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर एक पांच दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में प्रारंभिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबद्ध अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की समस्याओं पर चर्चा की गई।

16 से 20 फरवरी, 1987 तक एस.आई.ई. जम्मू में मूल पाठ्यचर्या पर एक पांच दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें पैंतालीस अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया।

12 से 14 मार्च, 1987 तक डी.आई.ई. जम्मू में माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए प्रायोगिक परियोजनाओं पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें विज्ञान, गणित और समाज विज्ञान में अठारह प्रायोगिक परियोजनाएं विकसित की गईं।

31 मार्च से 2 अप्रैल, 1987 तक राजकीय शिक्षा कालेज, श्रीनगर में व्यावसायीकरण पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। जम्मू और कश्मीर में शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए विभिन्न आवश्यकता पर आधारित पाठ्यक्रमों की रूपरेखा विकसित की गई।

राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न कार्यक्रमों में सहयोग देने के अतिरिक्त क्षेत्रीय कार्यालय ने राज्य में सात नवोदय विद्यालय खोलने में सहायता प्रदान की।

1986-87

अध्याय 14

प्रकाशन और प्रलेखन

परिषद् का एक अति महत्वपूर्ण कार्यकलाप विद्यालय स्तर के पाठ्यपुस्तक, अभ्यास पुस्तिका, अध्यापकों के लिए अध्यापक गाइड तथा अन्य अनुदेशी सामग्री, अनुसंधान मोनोग्राफ, पत्रिकाएं आदि का प्रकाशन है। परिषद् का प्रकाशन विभाग और पत्रिका कक्ष परिषद् के प्रकाशन संबंधी कार्यों को करता है। परिषद् के प्रकाशनों को निम्नलिखित वर्गों में रखा जाता है:

1. विद्यालय पाठ्यपुस्तक, अभ्यास पुस्तिका, निर्धारित पूरक रीडर।
2. 14-17 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों के लिए पूरक पठन सामग्री।
3. अध्यापक गाइड, अध्यापक गुटिका और अन्य अनुदेशी सामग्री।
4. अनुसंधान अध्ययन और मोनोग्राफ।
5. शिक्षा-सम्मेलन, संगोष्ठियों की कार्रवाई, पर्चे, पुस्तिकाएं, पुस्तिका फोल्डर आदि।
6. शैक्षिक पत्रिकाएं।

आलोच्य वर्ष में कुल 298 प्रकाशन प्रकाशित हुए जिनका विवरण नीचे दिया गया है:

प्रकाशन-वर्ग	प्रकाशनों की संख्या
प्रथम संस्करण पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिका/निर्धारित पूरक रीडर	17
पाठ्य पुस्तक/अभ्यास पुस्तिका/निर्धारित पूरक रीडर	199
अनुसंधान मोनोग्राफ/रिपोर्ट	9
अन्य प्रकाशन	47
पत्रिकाएं (अंक)	26
	298

पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग सामान्य पुस्तकालय सेवाएं उपलब्ध कराने के अतिरिक्त प्रलेखन सेवाओं की भी देखभाल करता है। इन प्रकाशनों की, पत्रिकाओं को छोड़कर, एक सूची इस अध्याय के अंत में दी गई है।

विद्यालय सत्र 1986-87 के लिए नई पाठ्यपुस्तकें

नई पाठ्यपुस्तकों को लगाने के निर्णय के अंतर्गत परिषद् ने नवीं-दसवीं कक्षाओं के लिए विज्ञान और गणित में नई पाठ्य पुस्तक विकसित करने के लिए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) के साथ मिलकर काम किया और ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षाओं की भाषा और सामाजिक विज्ञान की पाठ्य पुस्तकें परिषद् के संकाय सदस्यों ने विकसित की हैं। हालांकि दसवीं और बारहवीं कक्षाओं को पिछले वर्ष की नई पाठ्य पुस्तकें (जिनका उल्लेख पिछली वार्षिक रिपोर्ट में किया गया है) आलोच्य वर्ष में प्रकाशित हुई हैं, पर इन कक्षाओं की प्रकाशित हुई शेष पाठ्य पुस्तकों का ब्यौरा नीचे दिया गया है:

दसवीं कक्षा

1. फिजिक्स पार्ट-II
2. भौतिकी भाग-II
3. कैमिस्ट्री पार्ट-II
4. रसायन विज्ञान भाग-II
5. बेसिक बायोलॉजी पार्ट-II
6. आधारिक जीव विज्ञान भाग-II
7. गणित भाग-II

बारहवीं कक्षा

8. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास
9. द वैब आफ आवर लाइफ
10. संस्कृत गद्य मंदाकिनी
11. भारतीय संविधान और शासन
12. नेशनल इन्कम एकाउन्टिंग
13. राष्ट्रीय आय लेखा पद्धति
14. ऐन इन्ट्रोडक्शन टू इकोनामिक थ्यौरी
15. आर्थिक सिद्धांत का परिचय

1986-87

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1984 और विद्यालय सत्र 1987-88 के लिए नई पाठ्य पुस्तकें

नई शिक्षा नीति के निर्देशों के अनुसार परिषद् ने पहली से बारहवीं कक्षा तक की नई पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण करने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ली है। अपने कार्यक्रम के प्रथम चरण में परिषद् शिक्षा सत्र 1987-88 के लिए पहली, तीसरी और छटी कक्षाओं की नई पाठ्य पुस्तकें/अभ्यास पुस्तकें/अध्यापक दीपिकाएं विकसित करेगी। परिषद् ने पहली बार पहली और तीसरी कक्षाओं के लिए हिन्दी भाषा में वैकल्पिक पाठ्यपुस्तकें और राज्यों की तीसरी कक्षा के लिए सोशल स्टडीज में एक निदर्श पाठ्य पुस्तक प्रकाशित करने का निर्णय लिया था। कार्यक्रम लागू करने के प्रथम चरण में लगभग 45 नई पाठ्य पुस्तकें निर्माणाधीन हैं।

निदर्शनी/अनुदेशी सामग्री

परिषद् ने विद्यालय शिक्षा के मुख्य कार्य अनुभव क्षेत्र पर 20 निदर्शनी/अनुदेशी सामग्री का एक सैट विकसित किया है। आलोच्य वर्ष में छः शीर्षक प्रकाशित हो चुके हैं।

रीडिंग टू लर्न सीरीज

परिषद् ने 'रीडिंग टू लर्न प्रोजेक्ट' के अंतर्गत विभिन्न कक्षाओं के लिए अंग्रेजी में एक नई पुस्तकमाला निकाली है। इस माला के अंतर्गत प्रकाशित की जा रही पुस्तकों का उद्देश्य बच्चों के अंदर पढ़ने की रुचि पैदा करना, पुस्तकों से प्यार करना और उन्हें आस-पास की सुन्दर और आश्चर्यमयी दुनिया से परिचित कराना है। प्राथमिक रूप से परियोजना की अभिकल्पना पढ़ने वालों में रुचि पैदा कराना, उसके अंदर आगे जानने की इच्छा पैदा करना और प्रश्न करके उत्तर प्राप्त करने की भावना जागृत करने की दृष्टि से की गई है। इस तरह की पुस्तकों में अन्तर्वस्तु के रूप में कथा-कहानियां, कविताएं, लोकामप्रेम, वैज्ञानिक रचनाएं और खेल-कूद होते हैं।

पढ़ें और सीखें

इस माला के अंतर्गत परिषद् ने विभिन्न आयु-वर्ग के बच्चों के लिए रोचक एवं ज्ञानवर्धक विषयों पर हिन्दी में लगभग 50 पुस्तकें निकालने का निर्णय लिया है। इन सामग्रियों को विकसित करने के लिए प्रोफेसरों, वैज्ञानिकों, डाक्टरों और अनुभवी अध्यापकों से कहा गया है। इस पुस्तक-माला का मुख्य ध्येय बच्चों में पुस्तकों के प्रति प्रेम की भावना जागृत करना और अपने आस-पास के वातावरण से उन्हें परिचित कराना है।

एजूकेशन इन वैल्यूज

बच्चों के अंदर सही मूल्य पैदा करने की दृष्टि से परिषद् ने 'एजूकेशन इन वैल्यूज' नामक परियोजना चलाने का निर्णय लिया है। इस परियोजना के अंतर्गत परिषद् की योजना अध्यापकों और विद्यार्थियों से ऐसी सामग्री विकसित करने की है जो मूल्यों के संदर्श एवं भावना जागृत करने में सहायक होगी।

लोटस सीरीज

परिषद् ने 'लोटस सीरीज' नामक लोकप्रिय पुस्तकों की एक नई माला चलायी है। इस माला का उद्देश्य 11-16 के आयु-वर्ग के युवा पाठकों को इतिहास, विज्ञान, संस्कृति, समकालीन भारत और विश्व की समस्याएं और विश्व के महान पुरुषों और महिलाओं,जीवनियां जैसे विभिन्न विषयों पर कम दामों पर पुस्तकें उपलब्ध कराकर उन्हें ज्ञान के जगत से परिचित कराना है। मिडिया ने इसे परिषद् का 'एक रुपया पुस्तक क्रांति' कहा है।

इस माला के अंतर्गत प्रकाशित की जाने वाली पुस्तकों के दो संस्करण होंगे-1, एक रुपया वाला पेपर बैक संस्करण होगा और दूसरा अधिक मूल्य के दफ्ती के जिल्द वाला पुस्तकालय संस्करण होगा। पुस्तकों के अंग्रेजी और हिन्दी संस्करण परिषद् प्रकाशित करेगा और इन पुस्तकों को क्षेत्रीय भाषाओं में अनुदित करने के लिए संबद्ध राज्यों को कापीराइट दिया जाएगा।

परिषद् इस माला के अंतर्गत लगभग 100 पुस्तकें प्रकाशित करना चाहता है और इन पुस्तकों की सामग्री विकसित करने के लिए प्रो० डी०एस० कोठारी और डा० मुल्क राज आनंद जैसे सुप्रसिद्ध लेखकों को निमंत्रित किया गया है।

वितरण

गत वर्षों की तरह अभी भी परिषद् के प्रकाशनों का वितरण और बिक्री सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के जरिए की जाती है जोकि परिषद् का राष्ट्रीय वितरक है और जिसके बिक्री केन्द्र नई दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, मद्रास, पटना,लखनऊ और हैदराबाद में हैं जो पूरे देश की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

गत वर्षों की तरह परिषद् की पत्रिकाओं के वितरण और बिक्री का काम स्वयं परिषद् करती है।

ऊपर उल्लेख किए गए बिक्री और वितरण व्यवस्था के अतिरिक्त भारत के बड़े-बड़े समाचार-पत्रों में परिषद् द्वारा निकाले गए विज्ञापन के आधार पर विद्यालयों और अन्य शैक्षिक संस्थाओं से परिषद् की पाठ्य पुस्तकों को उनके पास भेजने का आर्डर सीधे परिषद् लेता है। आलोच्य वर्ष में कुल 1,174 आर्डर प्राप्त हुए जिनमें से 635 केन्द्रीय विद्यालयों से, 25 सैनिक स्कूलों से, 58 केन्द्रीय विद्यालयों से, 81 नवोदय विद्यालयों से, 346 अन्य विद्यालयों से और 29 अरुणाचल प्रदेश के जिला शिक्षा अधिकारियों और

विद्यालयों से सीधे आर्डर प्राप्त हुए और उन पर कार्रवाई की गई। परिषद् ने 1987-88 सत्र के लिए शिक्षा निदेशालय, सिक्किम को भी पाठ्यपुस्तकें भेजीं। इसके अतिरिक्त ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकें विद्यालय शिक्षा बोर्ड, हिमाचल प्रदेश को भी भेजी गईं।

इसके अतिरिक्त जम्मू और कश्मीर विद्यालय शिक्षा बोर्ड की ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें छापी गईं जिन्हें परिषद् के राष्ट्रीय वितरकों से उपलब्ध किया जा सकता है।

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उड़ीसा के+2 स्तर की गणित की पाठ्यपुस्तकें भी भेजी गई हैं।

राजस्थान विश्वविद्यालय के अनुरोध पर परिषद् ने राजस्थान विश्वविद्यालय के बी०ए० के प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तक इंग्लिश रीडर-II (कोर) को मुद्रित किया और उसकी बिक्री राजस्थान के कुछ चुने हुए पुस्तक विक्रेताओं से करवाई।

पुस्तक मेला/प्रदर्शनी में भाग लेना

परिषद् ने निम्नलिखित पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में अपने प्रकाशन प्रदर्शित किए:-

संसद अनेक्सी में एक पुस्तक प्रदर्शनी	मई, 1986 में प्रकाशन विभाग द्वारा आयोजित
शिक्षक दिवस के अवसर पर विज्ञान भवन में पुस्तक प्रदर्शनी	5 सितंबर, 1986 को प्रकाशन विभाग द्वारा आयोजित
विज्ञान प्रदर्शनी, गुवाहाटी	नवंबर, 1986 में परिषद् द्वारा आयोजित

ऊपर उल्लेख की गई प्रदर्शनियों के अतिरिक्त परिषद् ने तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में भी भाग लिया।

परिषद् ने राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट, भारत सरकार, के जरिए अपने कुछ चुने हुए प्रकाशनों को भेजकर निम्नलिखित पुस्तक मेले/प्रदर्शनियों में भी भाग लिया:

बंगलादेश पुस्तक मेला, ढाका	जनवरी, 1987
काउडन अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला	अप्रैल, 1987
भारत महोत्सव, रूस	मार्च, 1987
17 वां अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, सोफिया	मई, 1986
बाल पुस्तक प्रदर्शनी, घाना	जुलाई, 1986
भारतीय व्यापार प्रदर्शनी, रंगून	दिसंबर, 1986
भारत प्रदर्शनी, पोर्टलुईस, मॉरिशस	अक्टूबर, 1986
बीजिंग अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, चीन	सितंबर, 1986

पुरस्कार

परिषद् के प्रकाशनों के उत्पादन स्तर में निरंतर सुधार हो रहा है। ऐसा होने का कारण आधुनिक टेक्नोलॉजी के प्रयोग, परिष्कृत अभिकल्पना और टाइपोग्राफी का मिलाजुला प्रभाव है। इन सभी प्रयासों के फलस्वरूप भारतीय प्रकाशक संघ द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रतियोगिता में परिषद् की निम्नलिखित पुस्तकों ने 'पुस्तक उत्पादन में दक्षता' के लिए पुरस्कार जीते।

1.	गद्य संचयन (हिन्दी)	प्रथम पुरस्कार
2.	गौतम बुद्ध (उर्दू)	,,
3.	अभिनव कथा भारती (हिन्दी)	,,
4.	स्टडी गाइड फ़ार क्लास	दूसरा पुरस्कार
5.	अरुण भारती भाग-3 (हिन्दी)	योग्यता प्रमाण-पत्र

प्रधान मंत्री द्वारा पुस्तकों का विमोचन

प्रधान मंत्री ने निम्नलिखित पूरक रीडरों का विमोचन किया और उनके अच्छे उत्पादन के लिए परिषद् को बधाई दी:

1. थिंकिंग टूगेदर
2. कंट्रर्स आफ करेज
3. दि शिप आफ दि डेजर्ट
4. मिस्टर मुग्गर एण्ड मिस्टर स्ट्राइप्स
5. वेयर इज माई हम्प?
6. एवरेस्टः वैयर दि स्नो नैवर मैल्ट्स
7. पेंग्विन के देश में
8. चिकित्सा विज्ञान की कहानियाँ
9. विश्व की प्रसिद्ध लोक कथाएँ।

प्रधानमंत्री नई पेपर बैक माला (लोट्स सीरीज) से काफी प्रभावित हुए जिसकी पहली पुस्तक 'दि हिस्टोरिकल ट्रायल आफ महात्मा गांधी' का विमोचन उन्होंने 30 जनवरी, 1987 को किया।

व्यय

आलोच्य वर्ष में मुद्रित की गई पुस्तकों की प्रतियों की संख्या 1.50 करोड़ मार्क से भी अधिक थी। कागज पर कुल खर्चा रु० 1,56,33,150.10 का और मुद्रण पर कुल खर्चा रु० 95,60,533.61 का था।

बिक्री

आलोच्य वर्ष में परिषद् को प्रकाशनों से रु० 5,13,55,838.00 (रुपये पांच करोड़ तेरह लाख पचपन हजार आठ सौ अड़तीस मात्र) प्राप्त हुए।

कापीराइट की अनुमति

राज्य स्तर की अनेक एजेन्सियों ने परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में अपनी अभिरुचि दिखलाई है। नीचे दी गई सारणी में उन एजेन्सियों के नाम दिए गए हैं जिन्हें आलोच्य वर्ष में परिषद् ने अपनी पाठ्य पुस्तकों और अन्य प्रकाशनों को प्रकाशित करने के लिए स्वीकरण/अनुकूलन करने की अनुमति दी है।

निदेशक, विद्यालय शिक्षा, हरियाणा राज्य साधन केन्द्र, चण्डीगढ़

आठवीं कक्षा की परिषद् की पाठ्य पुस्तक 'त्रिविधा' के प्रकाशन और वितरण की अनुमति दी गई।

सचिव, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी (हरियाणा)

दसवीं कक्षा की परिषद् की निम्नलिखित पाठ्य पुस्तकों का स्वीकरण/अनुकूलन करने की अनुमति दी गई:

1. नागरिक और शासन
2. फिफ्थ स्टेज टू इंग्लिश रीडर (बी कोर्स)
3. वर्क बुक फार फिफ्थ स्टेज टू इंग्लिश रीडर (बी कोर्स)
4. फिफ्थ स्टेज टू इंग्लिश सप्लीमेंट्री रीडर (बी कोर्स)
5. गणित भाग–II
6. रसायन विज्ञान भाग–II
7. आधारिक जीवविज्ञान भाग–II
8. भौतिकी भाग–II
9. सभ्यता की कहानी भाग–II
10. भारत विकास की ओर

सचिव, हि०प्र० विद्यालय शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला (हि०प्र०)

ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं की परिषद् की निम्नलिखित पाठ्य पुस्तकों के स्वीकरण और पुनर्मुद्रण की कापीराइट अनुमति दी गई:

1. प्रारंभिक सांख्यिकी
2. भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास
3. प्राचीन भारत
4. राजनीतिक विज्ञान के आधार
5. राजनीतिक व्यवस्था
6. केमिस्ट्री पार्ट–I
7. फिजिक्स फार क्लास 11–12
8. साहित्य का स्वरूप
9. काव्य संचयन भाग–I
10. गद्य संचयन भाग–I
11. कहानी संचयन भाग–I
12. आई–दि पिपुल
13. स्टोरीज, प्लेज एण्ड टेल्स आफ एडवेन्चर
14. ए कोर्स इन रिटन इंग्लिश

सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, भोपाल (म०प्र०)

परिषद् की निम्नलिखित पाठ्य पुस्तकों के स्वीकरण की कापीराइट अनुमति दी गई:

1. आई–दि पिपुल क्लास 11
2. फाइव वन ऐक्ट प्लेज क्लास 11
3. डियर टू आल दि म्यूज़िज फार क्लास 12
4. आन टाप आफ द वर्ल्ड, क्लास 12

निदेशक, विद्यालय और शारीरिक शिक्षा, कोहिमा, नागालैण्ड

परिषद् की निम्नलिखित पाद्यपुस्तकों के स्वीकरण/अनुकूलन की कापीराइट अनुमति दी गई:

1. लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-I (एस.एस.)
2. लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-II (एस.एस.)
3. लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-III (एस.एस.)
4. इंग्लिश रीडर बुक-I (एस.एस.)
5. इंग्लिश रीडर बुक-II (एस.एस.)
6. इंग्लिश रीडर बुक-III (एस.एस.)
7. इंग्लिश रीडर बुक-4 (एस.एस.)
8. इंग्लिश रीडर बुक- (एस.एस.)
9. बाल भारती भाग-I
10. बाल भारती भाग-II
11. बाल भारती भाग-III
12. बाल भारती भाग-4
13. सोशल स्टडीज (इंडिया एण्ड वर्ल्ड) क्लास 5
14. सोशल स्टडीज क्लास I
15. सोशल स्टडीज क्लास II
16. सोशल स्टडीज क्लास III
17. रीड फार प्लेजर बुक-I
18. रीड फार प्लेजर बुक-II
19. रीड फार प्लेजर बुक-III

समन्वयक, प्रवर माध्यमिक शिक्षा, पंजाब विद्यालय शिक्षा बोर्ड, मौहाली, पंजाब

20. रीड फार प्लेजर बुक-4
21. रीड फार प्लेजर बुक-5

परिषद् की निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों के स्वीकरण करने की अनुमति दी गई:

1. इंग्लिश रीडर बुक-6 (एस.एस.)
2. डियर टू आल दि म्यूजिज फार क्लास 12

पत्रिकाओं का प्रकाशन

पत्रिका-कक्ष का मुख्य कार्य परिषद् की 6 लक्ष्य-अभिविन्यस्त पत्रिकाएं निकालने का है। पत्रिका-कक्ष कुछ शैक्षिक कार्यक्रम और शोध कार्यकलाप भी अपने हाथ में लेता है। पत्रिका-कक्ष द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं का विवरण नीचे दिया गया है:

इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू (त्रैमासिक)

एक शोध पत्रिका है जो शैक्षिक अनुसंधानकर्ताओं और छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह भारत और विदेशों में शोध लेख, शिक्षा और संबद्ध विषय में डाक्टरी तथा डाक्टरोत्तर अनुसंधान के संक्षिप्त विवरण, अनुसंधान टिप्पणी और शैक्षिक अनुसंधान की पुस्तकों की समीक्षा के रूप में किए गए शैक्षिक अनुसंधान से संबद्ध सूचना का प्रचार-प्रसार करता है। शैक्षिक/अनुसंधान संस्थाओं द्वारा किए गए संस्थागत अनुसंधान कार्य का भी इस पत्रिका के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाता है।

जर्नल आफ इंडियन एजूकेशन (पाक्षिक)

यह पत्रिका माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए है जिससे उन्हें विशेष रूप से कक्षा के अध्यापन में और सामान्य रूप से विद्यालय के वातावरण में सुधार लाने में सहायता मिलती है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यालय शिक्षा की नवीन प्रक्रियाओं का प्रचार-प्रसार करना तथा उत्तम पढ़ाई के लिए शिक्षा की नवीन प्रक्रियाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है। किसी विशेष तथ्य की ओर ध्यान दिलाने के लिए इस पत्रिका के विशेषांक भी निकाले जाते हैं।

भारतीय आधुनिक शिक्षा (हिन्दी में त्रैमासिक)

यह पत्रिका शोधकर्ताओं और माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए है। इस पत्रिका में कक्षा संबंधी समस्याओं को हल करने, शिक्षा में नवीन प्रक्रियाओं का प्रचार-प्रसार करने और विद्यालय शिक्षा से संबद्ध शोध कार्य करने पर बल दिया गया है।

स्कूल साइंस (त्रैमासिक)

इस पत्रिका का उद्देश्य माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान-शिक्षण के स्तर में सुधार लाना और व्यापक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से विभिन्न विद्यालयों में किए जा रहे अद्यतन प्रयोगों से प्राप्त तथ्यों का उद्भासन करना है। जनसाधारण को विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे अद्यतन विकासों से परिचित कराने के लिए इस पत्रिका में लोकप्रिय वैज्ञानिक लेख भी होते हैं।

दि प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक)

यह पत्रिका प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए है जो उन्हें कक्षाओं से संबद्ध समस्याओं को हल करने और अध्यापन में सुधार लाने में सहायक होती है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा से संबद्ध नवीन प्रक्रिया के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से स्वयं विद्यालय के अध्यापकों द्वारा लिखे गए लेखों और शिक्षा संबंधी समाचारों और दृष्टिकोणों को इस पत्रिका में नियमित रूप से दिया जाता है।

प्राइमरी शिक्षक (हिन्दी में एक त्रैमासिक)

यह पत्रिका मुख्यतः प्राइमरी टीचर का हिन्दी संस्करण है। यह पत्रिका प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए है और इसमें प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई के स्तर में सुधार लाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

स्पष्ट है कि इन लक्ष्य अभिविन्यस्त पत्रिकाओं का आधारभूत उद्देश्य शिक्षा के प्रासंगिक क्षेत्रों/स्तरों में अद्यतन जानकारी का प्रचार-प्रसार करने के अतिरिक्त विभिन्न स्तरों पर विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना है। आलोच्य वर्ष में इन पत्रिकाओं के निम्नलिखित अंक निकाले गए:

इंडियन एजूकेशनल रिव्यू	जनवरी, 86 से अक्टूबर, 86 तक (चार अंक)
जर्नल आफ इंडियन एजूकेशन	जनवरी, 86 से नवंबर, 86 तक (छः अंक)
भारतीय आधुनिक शिक्षा	जनवरी, 86 से अक्टूबर, 86 तक (चार अंक)
स्कूल साइंस	मार्च, 86 से दिसंबर, 86 तक (चार अंक)
दि प्राइमरी टीचर	अप्रैल, 86 से जनवरी, 87 तक (चार अंक)
प्राइमरी शिक्षक	अप्रैल, 86 से जनवरी, 87 तक (चार अंक)

शैक्षिक कार्यक्रम (विकासात्मक)

पत्रिका कक्ष ने आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित कार्यक्रम अपने हाथ में लिए:

(1) शैक्षिक पत्रकारिता की गुटिका का निर्माण

'शैक्षिक पत्रकारिता गुटिका' विकसित करने के लिए तीन कार्यशालाएं आयोजित की गई। ये कार्यशालाएं (11 से 13 अगस्त, 1986 तक) उदयपुर, (23 से 25 सितंबर, 1986 तक) शिमला और (1 से 3 दिसंबर, 1986 तक) पुणे में आयोजित की गई। मूलतः यह गुटिका कौशल अभिविन्यस्त होगी और शैक्षिक समाचारों और सूचनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए प्रवृति एवं कौशल विकसित करने की दिशा में इसे बहुत कुछ करना है।

(2) 'शैक्षिक पत्रकारिता की वार्षिकी' विकसित करना

'शैक्षिक पत्रकारिता की अंतराष्ट्रीय वार्षिकी' में लेख विकसित करने के लिए तीन कार्यशालाएं आयोजित की गई। ये कार्यशालाएं (20 से 22 जनवरी, 1987 तक) पुरी, (25 से 27 मार्च, 1987 तक) त्रिवेन्द्रम और (30 से 31 मार्च, 1987 तक) ऊटी में आयोजित की गई। यह वार्षिक अनुसंधान पर आधारित होगी और एक संदर्भ सामग्री होने के कारण यह सार्वत्रिक संदर्श में शैक्षिक पत्रकारिता की अवस्थिति और स्थान के बारे में जानकारी उपलब्ध करा सकती है।

(3) शैक्षिक पत्रकारिता में राष्ट्रीय पुरस्कार की योजना बनाना

विद्यालय और कालेज की पत्रिकाओं की शैक्षिक पत्रकारिता में राष्ट्रीय पुरस्कार की योजना बनाने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई।

अनुसंधान संबंधी कार्यकलाप

शैक्षिक पत्रिकाओं का राष्ट्रीय सर्वेक्षणः सर्वेक्षण से संबद्ध कुछ सूचनाएँ एकत्रित कर ली गई हैं। शेष संस्थाओं से सूचना एकत्र करने का काम चल रहा है।

प्रलेखन

पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग (डी.एल.डी.आई.) परिषद् के एक सूचना साधन केन्द्र के रूप में कार्य करता है। इसके मुख्य कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों की दृष्टि से पठन-सामग्री एकत्रित और आयोजित करने के साथ-साथ उसका प्रचार-प्रसार भी करना है:

(1) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के संकाय के सदस्यों और देश भर के शिक्षा क्षेत्र से संबद्ध विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
(2) शिक्षा संबंधी सूचनाओं के लिए एक वितरण केन्द्र का काम करना।
(3) अनुसंधान और अध्ययन का संवर्धन।
(4) विद्यालय एवं अध्यापक प्रशिक्षण कालेज के व्यावसायिक स्टाफ को सेवाकालीन अभिविन्यास कार्यक्रम उपलब्ध कराकर इन संस्थाओं के पुस्तकालयों में उन्नत स्तर की पुस्तकालय सेवा के जरिए शिक्षा के स्तर में सुधार लाना।

शिक्षा के तुलनात्मक और अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं पर सूचना एकत्रित करने तथा प्रचार-प्रसार करने के लिए विभाग में एक अलग यूनिट 'अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक साधन और प्रलेखन केन्द्र' स्थापित किया गया है। यह केन्द्र भारत और अन्य देशों में जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम पर भी प्रलेख एकत्रित करता है।

संग्रह

31-3-1986 को पुस्तकों की संख्या		
1986-87 में बढ़ायी गई पुस्तकों की संख्या	:	1,18,352
(क) खरीदकर	:	1,321
(ख) उपहार के रूप में प्राप्त	:	254
(ग) जिल्दबंद पत्रिकाएं	:	646
(घ) कुल जोड़ (क + ख + ग)	:	2,221
(ङ) हटायी गई पुस्तकें	:	357
(च) 31-3-87 को कुल पुस्तकों की संख्या	:	1,20,216
पत्रिकाएं		
अभिदत्त पत्रिकाओं की संख्या	:	402
अभिदत्त समाचार-पत्रों की संख्या	:	16

समाचार कतरन

आलोच्य वर्ष में शिक्षा संबंधी समाचारों और संपादकीय के लिए 14 समाचार-पत्र नियमित रूप से पढ़े गए और 1,250 समाचार कतरन आगे के संदर्भ के लिए संभाल कर रख दिए गए।

प्रकाशन

1986-87 वर्ष में निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित हुए:

1.	परिग्रहण सूची	2 अंक
2.	वर्तमान विषयवस्तु	11 अंक
3.	पुस्तकालय में आने वाली पत्रिकाओं में छपे लेखों की सूची	2 अंक

1986-87

ग्रंथ-सूची

(क) एन.आई.ई. पुस्तकालय में कम्प्यूटर पर पुस्तकें।
(ख) शिक्षा के सार : आई.ई.आर.डी.ओ.सी. में आई.आई.ई.पी.– यूनेस्को प्रलेखों की एक सूची।
(ग) (20-23 जनवरी, 1987 को) ए.पी.ई.आई.डी. पर दक्षिणी एशिया के देशों की उप-क्षेत्रीय बैठक में प्रदर्शित प्रलेखों की सूची।
(घ) नवोदय विद्यालय के पुस्तकालय के लिए चुनी हुई पुस्तकों की सूची।
(ङ) लोकप्रिय शिक्षा– आई.ई.आर.डी.ओ.सी. में चुने हुए प्रलेखों की एक सूची।
(च) ग्रामीण विकास में शिक्षा की भूमिका– एक चुनी हुई ग्रंथ सूची।
(छ) शैक्षिक अनुसंधान और नवीन प्रक्रिया समिति के अनुसंधान बुलेटिन के लिए तैयार किए गए पाठ्यचर्या विकास पर अनुसंधानों की एक ग्रंथ सूची : खंड II, सं० 2, जुलाई-सितंबर, 1986

पैम्फलेट संग्रह

विभाग ने शिक्षा और संबद्ध विषयों से संबंधित 5,000 से भी अधिक पैम्फलेटों का एक संग्रह बनाया है।

परिचालन

1986–87 वर्ष में सदस्यता	2,697
आलोच्य वर्ष में आने वाले छात्रों को दी गई परामर्श सुविधाएँ	524

फोटोकापी सेवाएँ

मांग करने पर प्रलेखों की 1,15,000 फोटोकापियां वाचकों और प्रशासन को उपलब्ध करायी गईं।

कार्य के घंटे

पुस्तकालय का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों की सुविधा को ध्यान में रखकर सभी काम के दिन पुस्तकालय को 8 बजे सुबह से 8 बजे रात तक खुला रखा जाता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए:

1. 17–4–86 से 22–4–1986 तक श्रीनगर में जम्मू और कश्मीर के विद्यालय पुस्तकालय अध्यक्षों के लिए एक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम।
2. 3 मार्च से 7 मार्च, 1987 तक मिर्जा, गुवाहाटी में पूर्वी क्षेत्र, के अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों (प्रारंभिक स्तर) के पुस्तकालयाध्यक्षों की एक कार्यशाला।
3. 2–6–86 से 11–6–86 तक भुवनेश्वर में माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, उड़ीसा के सहयोग से उड़ीसा के विद्यालय-पुस्तकालयाध्यक्षों और कार्यकारी पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए एक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम।
4. केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अनुरोध पर परिषद् ने जुलाई 86 में नई दिल्ली में आयोजित किए गए केन्द्रीय विद्यालय पुस्तकालयाध्यक्षों के सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए साधन व्यक्ति उपलब्ध कराए।

संलग्न कार्यक्रम

कुमारी मौक्षदा गोपी, प्रलेखन अधिकारी, शिक्षा-मंत्रालय, मॉरिशस ने डी.एल.डी.आई. द्वारा 19 मार्च से 3 अप्रैल, 1987 तक आयोजित किए गए तीन सप्ताह के संलग्न कार्यक्रम में भाग लिया। इसके अतिरिक्त उन्हें डी.ई.एस.एम. की सहायता से सूचना के उपयोजन में कम्प्यूटरों के प्रयोग से संबंधित जानकारी दी गई।

1986–87 में परिषद् के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित प्रकाशन

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
	पाठ्यपुस्तक, अभ्यास पुस्तिका और निर्धारित पूरक रीडर		
पहली कक्षा			
पाठ्य-पुस्तक			
1.	लेट अस लर्न इंग्लिश बुक–1 (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	2,70,000
अभ्यास-पुस्तिका			
2.	वर्कबुक फार लेट अस लर्न इंग्लिश बुक–1 (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	2,36,000
दूसरी कक्षा			
पाठ्य-पुस्तक			
3.	बाल भारती भाग–II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	2,30,000
4.	लेट अस लर्न इंग्लिश बुक–II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	2,40,000
5.	मैथेमेटिक्स फार प्राइमरी स्कूल बुक–II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1987	1,85,000

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
	अभ्यास पुस्तिका		
6.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	1,75,000
7.	वर्कबुक फार लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	2,35,000
	तीसरी कक्षा		
8.	लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-III (पुनर्मुद्रित) (विशेष माला)	नवंबर, 1986	2,35,000
	अभ्यास पुस्तिका		
9.	वर्कबुक फार लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-III (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,60,000
	चौथी कक्षा		
	पाठ्यपुस्तक		
10.	बाल भारती भाग-4 (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,80,000
11.	इंग्लिश रीडर बुक-I (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	2,05,000
12.	मैथेमेटिक्स फार प्राइमरी स्कूल्स बुक-4 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	1,50,000
13.	एनवायरनमेण्टल स्टडीज फार क्लास-4 पार्ट-1 (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	65,000
14.	पर्यावरण अध्ययन चौथी कक्षा के लिए भाग-I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1987	37,000
15.	एन्वायरनमेण्टल स्टडीज फार क्लास 4 पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	90,000
16.	पर्यावरण अध्ययन चौथी कक्षा के लिए भाग-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	6,000
	अभ्यास पुस्तिका		
17.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-4 (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,40,000
18.	वर्कबुक फार इंग्लिश रीडर बुक-I (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	2,00,000
	निर्धारित पूरक रीडर		
19.	रीड फार प्लेजर बुक-I (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	90,000
	पाँचवीं कक्षा		
20.	बाल भारती भाग-5 (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	2,16,000
21.	स्वस्ति भाग-I (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	70,000
22.	इंग्लिश रीडर बुक-II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	1,85,000
23.	मैथेमेटिक्स फार प्राइमरी स्कूल्स बुक-5 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	1,20,000
24.	सोशल स्टडीज़ बुक-III इंडिया एण्ड दि वर्ल्ड (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	75,000
25.	सामाजिक अध्ययन पुस्तक-III भारत और संसार (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	35,000
26.	लर्निंग साइंस थ्रू एन्वायरनमेण्ट (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,10,000
	अभ्यास पुस्तिका		
27.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-5 (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,50,000
28.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-I (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	50,000
29.	वर्क बुक फार इंग्लिश रीडर बुक-II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,95,000
	निर्धारित पूरक रीडर		
30.	रीड फार प्लेजर बुक-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	80,000
	छठी कक्षा		
	पाठ्यपुस्तक		
31.	स्वस्ति भाग-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	46,000
32.	इंग्लिश रीडर बुक-III (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,35,000
33.	देश और उनके निवासी भाग-I (पुनर्मुद्रित)	अक्तूबर, 1986	3,000
34.	हिस्टरी एण्ड सिविक्स पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	अक्तूबर, 1986	5,000
35.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	36,000
36.	वर्क बुक फार इंग्लिश रीडर बुक-III (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,30,000
	निर्धारित पूरक रीडर		
37.	रीड फार प्लेजर बुक-III (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	60,000
	सातवीं कक्षा		
	पाठ्य-पुस्तक		
38.	भारती भाग-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	80,000
39.	स्वस्ति भाग-III (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1987	42,000

1986-87

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
40.	इंग्लिश रीडर बुक-4 (पुनर्मुद्रित) (विशेषमाला)	नवंबर, 1986	75,000
41	मैथेमेटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक-II, पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	87,000
42.	गणित माध्यमिक विद्यालयों के लिए पुस्तक-II भाग-I (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	5,000
43.	मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक-II पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	70,000
44.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए पुस्तक-II भाग-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	5,000
45.	हिस्टरी एण्ड सिविक्स पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	60,000
46.	इतिहास और नागरिक शास्त्र भाग-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	32,000
47.	लैन्ड्स एण्ड पिपुल पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	58,000
48.	देश और उनके निवासी भाग-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	33,000
49.	लर्निंग साइन्स पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	90,000
अभ्यास पुस्तिका			
50.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-III (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1987	27,000
निर्धारित पूरक रीडर			
51.	नया जीवन (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1987	28,000
52.	रीड फार प्लेजर बुक-4 (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1987	46,000
आठवीं कक्षा			
पाठ्यपुस्तक			
53.	भारती भाग-III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	[illegible]0,000
54.	स्वस्ति भाग-4 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	55,000
55.	इंग्लिश रीडर बुक-5 (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	80,000
56.	मैथेमेटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक-III, पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	1,05,000
57.	मैथेमेटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक-III पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,00,000
58.	हिस्टरी एण्ड सिविक्स पार्ट-III (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	66,000
59.•	इतिहास और नागरिक शास्त्र भाग-III (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1987	40,000
60.	लैन्ड्स एण्ड पिपुल पार्ट-III (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	65,000
61.	देश और उनके निवासी भाग-III (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1987	30,000
62.	लर्निंग साइन्स पार्ट-III (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,00,000
अभ्यास पुस्तिका			
63.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-4 (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1987	30,000
निर्धारित पूरक रीडर			
64.	त्रिविधा (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	55,000
65.	जीवन और विज्ञान (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1987	27,000
66.	रीड फार प्लेजर बुक-5 (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	45,000
नवीं कक्षा			
67.	फोर्थ स्टेज टू इंग्लिश रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	25,000
68.	फिजिक्स पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,25,000
69.	भौतिकी भाग-I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	50,000
70.	भौतिकी भाग-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	85,000
71.	कैमिस्ट्री पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	1,39,000
72.	कैमिस्ट्री पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1987	1,18,000
73.	रसायन विज्ञान भाग-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	85,000
74.	बेसिक बायोलाजी पार्ट-I वाल्यूम-1 (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,00,000
75.	बेसिक बायोलाजी पार्ट-I वाल्यूम-II (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	1,33,000
76.	बेसिक बायोलाजी पार्ट-I वाल्यूम-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	90,000
77.	आधारिक जीवविज्ञान भाग-I खंड-I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	77,000
78.	आधारिक जीवविज्ञान भाग-I खंड-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	67,000
79.	मैथेमेटिक्स पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	जून, 1986	38,000
80.	मैथेमेटिक्स पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,40,000
81.	गणित भाग-I, खंड-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	60,000
82.	गणित भाग-I, खंड-II (पुनर्मुद्रित)	मई, 1986	1,30,000

1986-87

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
83.	गणित भाग-I, खंड-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	32,000
84.	द स्टोरी आफ सिविलाइजेशन खंड-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	70,000
85.	सभ्यता की कहानी भाग-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	45,000
86.	मैन एण्ड एन्वायरनमेण्ट (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	70,000
87.	मनुष्य और वातावरण (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	30,000
	अभ्यास पुस्तिका		
88.	वर्क बुक फार फोर्थ स्टेज टू इंग्लिश रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	26,000
89.	वर्क बुक फार फोर्थ स्टेज टू इंग्लिश रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	40,000
	निर्धारित पूरक रीडर		
90.	फोर्थ स्टेज टू इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1987	29,000
	नवीं और दसवीं कक्षा		
91.	सिटिजन एण्ड दि गवर्नमैण्ट (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	95,000
92.	सिटिजन एण्ड दि गवर्नमैण्ट (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	1,00,000
93.	नागरिक और शासन (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	85,000
	दसवीं कक्षा		
	पाठ्य पुस्तक		
94.	फिफ्थ स्टेज टू इंग्लिश रीडर (बी कोर्स)	नवंबर, 1986	40,000
95.	फिजिक्स पार्ट-II (प्रथम संस्करण)	मई, 1986	2,00,000
96.	फिजिक्स पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,70,000
97.	भौतिकी भाग-II (प्रथम संस्करण)	जुलाई, 1986	1,30,000
98.	कैमिस्ट्री पार्ट-II (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1986	2,00,000
99.	कैमिस्ट्री पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,70,000
100.	रसायन विज्ञान भाग-II (प्रथम संस्करण)	मई, 1986	1,30,000
101.	रसायन विज्ञान भाग-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,00,000
102.	बेसिक बायोलाजी पार्ट-II (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1986	2,00,000
103.	बेसिक बायोलाजी पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,70,000
104.	आधारिक जीवविज्ञान भाग-II (प्रथम संस्करण)	जून, 1986	1,30,000
105.	आधारिक जीवविज्ञान भाग-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,25,000
106.	मैथमेटिक्स पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	1,70,000
107.	गणित भाग-II (प्रथम संस्करण)	मई, 1986	1,30,000
108.	गणित भाग-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,16,000
109.	दि स्टोरी आफ सिविलाइजेशन पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,10,000
110.	सभ्यता की कहानी भाग-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	78,000
111.	इंडिया आन द मूव (पुनर्मुद्रित)	जून, 1986	45,000
112.	इंडिया आन द मूव (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	80,000
113.	भारत विकास की ओर (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,30,000
	अभ्यास पुस्तिका		
114.	वर्क बुक फार फिफ्थ स्टेज टू इंग्लिश रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	40,000
	निर्धारित पूरक रीडर		
115.	फिफ्थ स्टेज टू इंग्लिश सप्लीमेण्टरी रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	40,000
	नवीं कक्षा		
	पाठ्यपुस्तक		
116.	अभिनव काव्य भारती भाग-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	15,000
117.	अभिनव गद्य भारती भाग-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	17,000
118.	अभिनव कथा भारती भाग-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	16,000
119.	साहित्य का स्वरूप (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	10,000
120.	गद्य संचयन भाग-I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	25,000

1986-87

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
121.	कहानी संचयन भाग-। (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	65,000
122.	आई-दि पिपुल (इंग्लिश रीडर कोर) (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	80,000
123.	स्टोरीज, प्लेज एण्ड टेल्स आफ एडवेन्चर (इंग्लिश सप्लीमेण्टरी रीडर कोर) (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	1,45,000
124.	स्टोरीज़, प्लेज एण्ड टेल्स आफ एडवेन्चर (इंग्लिश सप्लीमेण्टरी रीडर कोर) (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,70,000
125.	संस्कृत साहित्य परिचय (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	4,000
126.	केमिस्ट्री पार्ट-। (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	25,000
127.	केमिस्ट्री पार्ट-। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	27,000
128.	रसायन विज्ञान भाग-। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,500
129.	बायोलाजी पार्ट-। (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	40,000
130.	मैथेमेटिक्स बुक-। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	38,000
131.	मैथेमेटिक्स बुक-।। (पुनर्मुद्रित)	अगस्त, 1986	5,000
132.	मैथेमेटिक्स बुक-।। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	35,000
133.	एन्शिएन्ट इंडिया (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	14,000
134.	मेडिवल इंडिया पार्ट-। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	23,000
135.	मध्यकालीन भारत भाग-। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	5,000
136.	फाउन्डेशन आफ पोलिटिकल साइन्सेज (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	12,000
137.	पोलिटिकल सिस्टम (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	15,000
138.	एलिमेण्टरी स्टेटिस्टिक्स (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	17,000
139.	ऐलिमेण्टरी स्टेटिस्टिक्स (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	10,000
140.	अण्डरस्टैंडिंग सोसायटी (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	5,000
141.	फिजिकल जियोग्राफी (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	9,000
142.	फिजिकल जियोग्राफी (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	7,000
143.	फील्ड वर्क एण्ड लेबोरेटरी टेकनीक इन जियोग्राफी (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	4,000
144.	जनरल जियोग्राफी आफ इंडिया पार्ट-। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	16,000
145.	भारत का सामान्य भूगोल भाग-। (पुनर्मुद्रित)	मई, 1986	8,000
146.	भारत का सामान्य भूगोल भाग-। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	8,000
147.	साइक्लोलाजी-एन इन्ट्रोडक्शन टू ह्यूमन बिहेवियर (पुनर्मुद्रित)	मई, 1986	25,500
ग्यारवीं-बारहवीं कक्षा			
148.	व्याकरण सौरभम (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	20,000
149.	व्याकरण सौरभम (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	1,500
149.	(क) फिजिक्स (पुनर्मुद्रित)	जुलाई, 1986	5,000
	(ख) फिजिक्स (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986,	40,000
150.	अभिनव काव्य भारती भाग-।। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	45,000
151.	अभिनव गद्य भारती भाग-।। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	45,000
152.	काव्य संचयन भाग-।। (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	1,12,000
153.	गद्य संचयन भाग-।। (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	1,12,000
154.	हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1986	15,000
155.	हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	38,000
156.	ए कोर्स इन रिटन इंग्लिश (पुनर्मुद्रित)	मई, 1986	20,000
157.	ए कोर्स इन रिटन इंग्लिश (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	65,000
158.	दि वैन आफ आवर लाइफ (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1986	1,55,000
159.	द वैब आफ आवर लाइफ (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	2,50,000
160.	संस्कृत गद्य मंदाकिनी (प्रथम संस्करण)	मई, 1986	4,000
161.	संस्कृत गद्य मंदाकिनी (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	12,000
162.	संस्कृत काव्य तरंगिणी (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	7,000
163.	केमिस्ट्री पार्ट-।। (पुनर्मुद्रित)	जुलाई, 1986	30,000

1986-87

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
164.	केमिस्ट्री पार्ट-।। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	53,000
165.	बायोलाजी पार्ट-।। खंड-। (पुनर्मुद्रित)	मई, 1986	12,000
166.	बायोलाजी पार्ट-।। खंड-। (पुनर्मुद्रित)	अगस्त, 1986	5,000
167.	बायोलाजी पार्ट-।। वाल्यूम-। (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1986	50,000
168.	बायोलाजी पार्ट-।। वाल्यूम-।। (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	18,000
169.	बायोलाजी पार्ट-।। वाल्यूम-।। (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1987	50,000
170.	जीवविज्ञान भाग-।। खंड-।। (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	1,500
171.	मैथेमेटिक्स बुक-।।। (पुनर्मुद्रित)	जुलाई, 1986	15,000
172.	मैथेमेटिक्स बुक-।।। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	65,000
173.	मैथेमेटिक्स बुक-4 (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	65,000
174.	मैथेमेटिक्स बुक-5 (पुनर्मुद्रित)	जुलाई, 1986	25,000
175.	मैथेमेटिक्स बुक-5 (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	65,000
176.	गणित भाग-5 (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	18,000
177.	मेडिवल इंडिया पार्ट-।। (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1986	12,000
178.	मेडिवल इंडिया पार्ट-।। (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	65,000
179.	मध्यकालीन भारत भाग-।। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	30,000
180.	माडर्न इंडिया (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	15,000
181.	माडर्न इंडिया (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	55,000
182.	आधुनिक भारत (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	28,000
183.	भारतीय संविधान और शासन (प्रथम संस्करण)	जनवरी, 1987	27,000
184.	इंडियन डेमोक्रेसी ऐट वर्क (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1987	15,000
185.	भारत में लोकतंत्र (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	15,000
186.	नेशनल इन्कम एकाउन्टिंग (प्रथम संस्करण)	जुलाई, 1986	26,000
187.	राष्ट्रीय आय लेखा पद्धति (प्रथम संस्करण)	सितंबर, 1986	32,000
188.	राष्ट्रीय आय लेखा पद्धति (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1987	13,000
189.	ऐन इन्ट्रोडक्शन टू एकोनोमिक थ्यौरी	जुलाई, 1986	18,000
190.	आर्थिक सिद्धांत का परिचय (प्रथम संस्करण)	अगस्त, 1986	35,000
191.	आर्थिक सिद्धांत का परिचय (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	13,000
192.	ह्यूमन एण्ड एकोनोमिक जियोग्राफी (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	5,000
193.	ह्यूमन एण्ड एकोनोमिक जियोग्राफी (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	12,000
194.	मानव एवं आर्थिक भूगोल (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	11,000
195.	जियोग्राफी आफ इंडिया पार्ट-।। (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	14,000
196.	जियोग्राफी आफ इंडिया पार्ट-।। (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1986	30,000
197	चाइल्ड साइकोलाजी (पुनर्मुद्रित)	जुलाई, 1986	3,500
198.	सोशल चेन्ज	अप्रैल, 1986	3,000
199.	सोशल चेन्ज (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1987	4,000
उर्दू पाठ्यपुस्तक			
पहली कक्षा			
200.	रियाजी (मैथेमेटिक्स) बुक-। (पुनर्मुद्रित)	मई, 1986	9,000
201.	रियाजी (मैथेमेटिक्स) बुक-।। (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1987	6,000
चौथी कक्षा			
202.	हिसाब (मैथेमेटिक्स) पार्ट-। (पुनर्मुद्रित)	सितंबर, 1986	4,000
203.	साइन्स सीखना (लर्निंग साइन्स) पार्ट-। (पुनर्मुद्रित)	जून, 1986	2,500
204.	तारीख और इल्म-ए-शैरियत (हिस्टरी एण्ड सिविक्स) पार्ट-।, (पुनर्मुद्रित)	मई, 1986	3,000
205.	मुमालिक और उनके बाशिन्दे (लैण्ड्स एण्ड पिपुल) पार्ट-। (पुनर्मुद्रित)	मई, 1986	2,500
सातवीं कक्षा			
206.	हिसाब (मैथेमेटिक्स) बुक-।। पार्ट-।। (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	2,000
207.	मुमालिक और उनके बाशिन्दे	जून, 1986	2,000

1986-87

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
	(लैण्ड्स एण्ड पिपुल) पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)		
208.	मुमालिक और उनके बाशिन्दे (लैण्ड्स एण्ड पिपुल) पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	1,000
आठवीं कक्षा			
209.	साइन्स सीखना (लर्निंग साइन्स) पार्ट-III (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	1,500
210.	मुमालिक और उनके बाशिन्दे (लैण्ड्स एण्ड पिपुल) पार्ट-III (पुनर्मुद्रित)	जून, 1986	1,200
नवीं कक्षा			
211.	उर्दू की नई किताब (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1986	5,000
दसवीं कक्षा			
212.	हिन्दुस्तान तरक्की की राह पर (इंडिया आन दि मूव) (पुनर्मुद्रित)	अक्टूबर, 1986	1,500
213.	तहजीब की कहानी (स्टोरी आफ सिविलाइजेशन) खंड-II (पुनर्मुद्रित)	जून, 1986	1,500
ग्यारहवीं कक्षा			
214.	उर्दू की नई किताब (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1986	5,000
अन्य राज्यों/सगठनों के लिए पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिका			
215.	अरुण भारती भाग-I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	28,000
216.	न्यू डान रीडर-I फार क्लास-I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	27,000
217.	वर्क बुक फार न्यू डान रीडर-फार क्लास-I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	23,000
218.	सप्लीमेन्टरी रीडर फार न्यू डान, रीडर-I फार क्लास-I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	31,000
आदर्श विद्यालयों के लिए पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिका/पूरक रीडर			
219.	माई फेमिली एण्ड फ्रेन्ड्स-इंग्लिश टैक्स्ट बुक	अक्टूबर, 1986	10,000
220.	माई फेमिली एण्ड फ्रेंन्ड्स-इंग्लिश वर्क बुक	अक्टूबर, 1986	10,000
221.	माई फेमिली एण्ड फ्रेन्ड्स-इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर	जनवरी, 1987	14,000
सातवीं कक्षा			
222.	माई स्माल वर्ल्ड-इंग्लिश टेक्स्ट बुक	जनवरी, 1987	14,000
नवीं-दसवीं कक्षा			
223.	ऐन इन्ट्रोडक्शन टू आवर एकोनामी	अप्रैल, 1986	5,000
कार्य अनुभव के लिए निदर्शन अनुदेशी सामग्री			
224.	बेसिक स्किलस इन कार्पेण्टरी (क्लास-6)	मार्च, 1987	10,000
225.	क्रिएटिव प्रिंटिंग (क्लास 7/8)	फरवरी, 1987	10,000
226.	लेदर वर्क (क्लास 6/7/8)	फरवरी, 1987	10,000
227.	इलेक्ट्रीसिटी एट वर्क (क्लास 6/8)	मार्च, 1987	10,000
228.	मिल्क एण्ड मिल्क प्रोडक्ट्स (क्लास 9/10)	मार्च, 1987	10,000
229.	प्लांट प्रोटेक्शन (क्लास 9/10)	मार्च, 1987	10,000
पूरक रीडर			
230.	थिंकिंग टूगेदर	जुलाई, 1986	10,000
231.	कण्टूर्स आफ करेज	जनवरी, 1987	10,000
रीडिंग टू लर्न सीरीज			
232.	दि शिप आफ डेजर्ट	दिसंबर, 1986	10,000
233.	मि० मुगर एण्ड मि० स्ट्राइप्स	जनवरी, 1987	10,000
234.	वेयर इन माई हम्प	जनवरी, 1987	10,000
235.	वाई इज फैटी हैप्पी	जनवरी, 1987	10,000
236.	एवरेस्टः वेयर द स्नो नेवर मेल्ट्स	जनवरी, 1987	10,000
लोटस सीरीज			
237.	दि हिस्टारिक ट्रायल आफ महात्मा गांधी	जनवरी, 1987	8,000
पढ़े और सीखें माला			
238.	पेंग्विन के देश में	फरवरी, 1987	10,000
239.	चिकित्सा विज्ञान की कहानियाँ	फरवरी, 1987	10,000
240.	विश्व की प्रसिद्ध लोक कथाएँ	फरवरी, 1987	15,000
241.	बाबा आमटे	जनवरी, 1987	15,000
अनुसधान मोनोग्राफ और अन्य प्रकाशन			
242.	लेखा परीक्षा रिपोर्ट 1984-85	अप्रैल, 1986	500
243.	इवेलुएशन आफ टेक्स्ट बुक्स फ्राम द स्टेण्ड पाइंट आफ नेशनल इंटीग्रेशन गाइडलाइन्स	अप्रैल, 1986	2,000

1986-87

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
244.	रिपोर्ट आफ इन कन्ट्री ट्रेनिंग वर्कशाप इन कामर्स एजूकेशन	अप्रैल, 1986	1,000
245.	नेशनल टैलेन्ट सर्च स्कीम (रूल्स एण्ड रेगुलेशन्स)	जून, 1986	50,000
246.	एफेक्टिवनेस आफ माइक्रोटीचेज कम्पोनेन्ट्स स्टडीज ऐट द एलिमेण्टरी लेवल	जुलाई, 1986	1,000
247.	एन.सी.ई.आर.टी. वार्षिक रिपोर्ट 1986-87 (हिन्दी)	दिसंबर, 1986	1,000
248.	डाइरेक्टरी आफ सेकण्डरी स्कूल्स इन इंडिया	जून, 1986	2,000
249.	एन.सी.ई.आर.टी. एनुअल रिपोर्ट 1985-86 (इंग्लिश)	दिसंबर, 1986	1,600
250.	आडिट रिपोर्ट 1985-86	फरवरी, 1987	400
251.	नान-फार्मल एजूकेशन प्रोग्राम्स फार ट्राइबल स्टूडेन्ट्स	अप्रैल, 1986	1,000
252.	हिन्दी शब्द भंडार का आकलन तथा विश्लेषण	जनवरी, 1987	1,000
253.	थर्ड सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेशन 1978-83	मार्च, 1987	3,000
254.	एन.सी.ई.आर.टी. वर्ड प्रोसेसर		3,000
255.	रोल आफ दि टीचर इन दि डेवलपमेण्ट आफ दि चाइल्ड	अप्रैल, 1986	20,000
256.	बच्चों के विकास में अध्यापक की भूमिका (हिन्दी)	अप्रैल, 1986	2,30,000
257.	-वही- (असमी)	अप्रैल, 1986	20,000
258.	-वही- (उड़िया)	अप्रैल, 1986	30,000
259.	-वही- (गुरुमुखी)	अप्रैल, 1986	25,000
260.	-वही- (मराठी)	अप्रैल, 1986	63,000
261.	-वही- (गुजराती)	अप्रैल, 1986	34,000
262.	-वही- (बंगाली)	अप्रैल, 1986	50,000
263.	-वही- (उर्दू)	अप्रैल, 1986	15,000
264.	-वही- (तमिल)	अप्रैल, 1986	45,000
265.	-वही- (तेलुगु)	अप्रैल, 1986	36,000
266.	-वही- (मलयालम)	अप्रैल, 1986	39,000
267.	-वही- (कन्नड़)	अप्रैल, 1986	31,000
268.	स्कूल एजूकेशन इन इंडिया	सितंबर, 1986	5,000
269.	भारत में विद्यालयी शिक्षा	सितंबर, 1986	5,000
270.	25 इयर्स आफ एन.सी.ई.आर.टी.	सितंबर, 1986	5,000

1986-87

अध्याय 15

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध और सहायता

परिषद् का अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक (आई०आर०यू०) अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ सहयोगात्मक गतिविधियों/कार्यक्रमों के समन्वयन के लिए उतरदायी है और भारत में स्कूली शिक्षा संबंधी सूचना अन्य देशों तथा अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों को देने के लिए एक सूचना प्रसार केंद्र के रूप में कार्य करता है।

द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

1986–87 वर्ष में परिषद् ने सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अन्तर्गत अनेक देशों के साथ शैक्षिक कार्यक्रमों का आदान-प्रदान किया। शैक्षिक सामग्रियां अमन (जोर्डन), कुवैत और लिस्बन में भारतीय दूतावासों तथा सूवा (फ़ीज़ी) में भारतीय उच्चायोग को भेजी गईं। इसके अतिरिक्त विज्ञान किटों जैसी सूचना व सामग्री मारिशस को और शैक्षिक सामग्री स्वीडन और मालदीव को प्रेषित की। यूनेस्को, बैंकाक को भी सूचना व सामग्री भेजी गईं। 1986–87 में निम्नलिखित सांस्कृतिक विनिमय किए गए:

भारत-कीनिया सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री जे.ए. लिजैम्बो, उपसचिव, नियोजन और विकास, शिक्षा, विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंत्रालय, कीनिया की अध्यक्षता में एक चार-सदस्य शिष्ट मंडल ने पाठ्यपुस्तक-निर्माण शैक्षिक सर्वेक्षण और कम-लागत शिक्षण सहायक सामग्रियों और किटों आदि के निर्माण हेतु 2 से 5 अप्रैल, 1986 तक परिषद् का दौरा किया। उपर्युक्त शिष्टमंडल के एक सदस्य के दौरे के अतिथि-सत्कार के लिए यू०जी०सी० को भी सम्मिलित किया गया।

भारत-मारिशस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत प्राथमिक-पूर्व शिक्षा कार्यक्रमों के अध्ययन हेतु श्री राजेश्वर गुराह, स्कूल निरीक्षक, शिक्षा, कला और संस्कृति मंत्रालय, तथा श्री नारायण दत्त भौवन, सहायक पर्यवेक्षक, प्राथमिक-पूर्व स्कूल, दो मारिशस अधिकारियों की टीम ने 1 से 21 अगस्त, 1986 तक परिषद् का निरीक्षण किया।

भारत-मैक्सिकन सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अंतर्गत सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्रों, विशेषकर सामाजिक विज्ञान की अनुसंधान पद्धति, किसान और प्रजातीय समूह, ग्रामीण विकास, सामाजिक अर्थव्यवस्था, शिक्षा और सामाजिक अभियान, में एक मैक्सिकन विशेषज्ञ डा० एडुकार्डो अलमीडा एकोस्टा, मनोविज्ञान विभाग, राष्ट्रीय स्वायत्त विश्वविद्याल.य, मैक्सिको ने 13 से 14 अगस्त, 1986 को परिषद् का निरीक्षण किया।

भारत-फिनिश सांस्कृतिक विनिमय-कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत की शैक्षिक प्रणाली का अध्ययन करने के लिए एक फिनिश विशेषज्ञ, श्री पी०जे०पैवनसेलो ने 28 अक्टूबर से 8 नवंबर, 1986 तक परिषद् का निरीक्षण किया।

भारत-चीन सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षा क्षेत्र में अनुभवों के विनिमय के लिए श्री लियूज़ोंगडे, उपमंत्री राज्य शिक्षा आयोग, चीन लोक गणराज्य राज्य परिषद्, की अध्यक्षता में एक छः सदस्य शिष्ट मंडल ने 29 नवंबर से 12 दिसंबर, 1986 तक परिषद् का निरीक्षण किया। शिष्ट मंडल के अन्य सदस्य थे– श्री ली जिनेई, उपनिदेशक, उच्वतर शैक्षिक संस्थाओं, एस०ई०डी०सी० हेतु मानवता पाठ्यक्रमों संबंधी शिक्षण सामग्री कार्यालय, श्री ली चेंगज़ुंग, चीन उच्चतर शिक्षा के उपसंपादक, श्री चेन बिंगहेंग, उपाध्यक्ष, शंघाई चिकित्सा विश्वविद्यालय, श्री ये किपिंग, उपप्रभाग प्रधान, विदेश कार्य ब्यूरो एस०ई०डी०सी० और श्री ज़ेंग जियानजिंग।

भारत-कोरिया गणराज्य सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत शैक्षिक प्रसार प्रणाली का अध्ययन करने के लिए कु० इन्दु सेठ, रीडर, राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना, क्षेत्र सेवाएं व समन्वयन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. ने 29 जून से 12 जुलाई, 1986 तक गणराज्य कोरिया का निरीक्षण किया।

भारत और चीन के मध्य द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत स्कूली शिक्षा के सर्वीकरण के क्षेत्र में चीन की शैक्षिक प्रणाली तथा अनौपचारिक शिक्षा से परिचय प्राप्त करने हेतु प्रो०ए०के० जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने दो सप्ताह के लिए 4 अक्टूबर, 1986 से चीन का निरीक्षण किया। उन्होंने श्री अनिल बोर्डिया, अपर सचिव, भारत सरकार, शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की अध्यक्षता में भेजे गये 5 सदस्य भारतीय शिष्ट मंडल के एक सदस्य के रूप में चीन का निरीक्षण किया।

परिषद् में विदेशी निरीक्षक

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत किए गए निरीक्षणों के अतिरिक्त परिषद् ने विभिन्न देशों से आए शिक्षाविदों का स्वागत किया और अपने संकाय सदस्यों को दूसरे देशों में अध्ययन भ्रमणों व अन्य कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रतिनियुक्त किया, जिसके कारण रिपोर्टाधीन वर्ष में निम्नलिखित निरीक्षण हुए।

श्रीमती जोन्न पी० डिमनैरो, निकोवर स्मारक के कार्यकारी निदेशक ने पारस्परिक रुचि वाले मामलों पर निदेशक/संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. तथा विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग, मापांकन और मूल्यांकन सर्वे तथा आंकड़ा संसाधन व कम्प्यूटर केन्द्र विभाग के संकाय के साथ चर्चा हेतु 1 अप्रैल, 1986 को परिषद् का निरीक्षण किया।

श्री सैयद इब्राहिम अबदाली, अफ़गानिस्तान के यूनेस्को फेलो को प्राथमिक स्कूलों

संबंधी साक्षरता शिक्षण परिचय के क्षेत्र में स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग में प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए 15 दिनों, 23 अप्रैल से 7 मई, 1986 तक रखा गया।

श्री त्रान वन बा, हनोई अध्यापक प्रशिक्षण कालेज, स्कूल स्तर पर जीवविज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में एक अध्ययन यात्रा के संबंध में परिषद् आए और उन्हें विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. में 5 से 8 मई, 1986 तक रखा गया।

सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में स्टाफ प्रशिक्षण योजनाओं के विकास का अध्ययन करने के लिए तथा प्रोजेक्ट प्रबन्धन, अनुवीक्षण व मूल्यांकन, अध्यापकों के स्टाफ विकास प्रशिक्षण, प्रशासकों व पर्यवेक्षकों और पाठ्यचर्या विकास में अनुभवों के आदान-प्रदान हेतु प्राथमिक शिक्षा की राष्ट्रीय अकादमी से एक 10 सदस्य बांग्ला देश शिष्टमंडल ने 25 मई से 5 जून, 1986 तक परिषद् का निरीक्षण किया।

अपने को परिषद् के कार्यक्रमों/गतिविधियों से अवगत कराने के लिए बांग्ला देश के छात्रों और लैक्चररों ने परिषद् का निरीक्षण किया।

यू०एस०ए० के सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम पर्यवेक्षकों संबंधी नीपा कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों ने, यू०एस०ई०एफ०आई० के सहयोग से, 16 जुलाई, 1986 को परिषद् का निरीक्षण किया। उन्होंने खासकर परिषद् के सामाजिक विज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों व गतिविधियों पर चर्चा की।

शिक्षा क्षेत्र में उपलब्ध सुविधाओं, विशेषकर स्कूली पाठ्यपुस्तकों के निर्माण व वितरण, स्कूली विज्ञान उपकरणों के निर्माण, कम्पयूटर साक्षरता कार्यक्रम और शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम, से अपने को अवगत कराने के लिए श्री मयनजा नकांगी, शिक्षक मंत्री, उगांडा, ने 16 अक्टूबर, 1986 को परिषद् का निरीक्षण किया।

तीन-सदस्य जाम्बिया शिष्टमंडल ने 6 नवंबर, 1986 को परिषद् का निरीक्षण किया। शिष्टमंडल ने सी०आई०ई०टी० (केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान) तथा विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. की गतिविधियों व कार्यक्रमों पर चर्चा की।

कीनिया की शिक्षा और मानवशक्ति की सात-सदस्य अध्यक्षीय कार्यकारी पार्टी ने 11 नवंबर, 86 को परिषद् का निरीक्षण किया तथा परिषद् की गतिविधियों व कार्यक्रमों पर चर्चा की।

सामाजिक विज्ञान व मान.शि. विभाग तथा व्यावसायिक शिक्षा विभाग के संकाय के साथ परिषद् के कार्यक्रमों व गतिविधियों पर चर्चा करने हेतु श्री उत्तम बिसन दयाल, निदेशक, महात्मा गांधी संस्थान, मारिशस ने 17 नवंबर, 1986 को परिषद् का निरीक्षण किया। उन्होंने भारतीय भाषाओं, भारतीय सांस्कृतिक सभ्यता तथा एस०यू०पी०डब्ल्यू० कार्यक्रम संबंधी सामग्रियों की पहचान में विशेष रुचि दिखाई।

श्री लूईस होनिग, कैलीफोरनिया राज्य की लोक शिक्षा के अधीक्षक, ने 24 नवंबर, 1986 को परिषद् के संकाय को 21 वीं शताब्दी संबंधी शैक्षिक नियोजन पर सम्बोधित किया।

डा० गैल एविला, मैक्सिको के भाषाविज्ञान के प्रोफसर, ने 8 दिसंबर, 1986 को परिषद् का निरीक्षण किया और शैक्षिक प्रणाली, भाषाविज्ञान पर विशेष बल देते हुए, संबंधी विचारों व अनुभवों का आदान-प्रदान किया।

साक्षरता कार्यक्रम क्षेत्र संबंधी कार्यक्रमों व गतिविधियों पर चर्चा हेतु श्री एन्ड्री इसाकसन, यूनेस्को कार्यकारी मंडल, सदस्य ने 9 जनवरी, 1987 को परिषद् का निरीक्षण किया।

विदेशी भाषा प्रेस और अनुवाद अधिकार विशेषज्ञ सहित एक सात-सदस्य चीनी शिष्टमंडल ने 14 जनवरी, 1987 को परिषद् का निरीक्षण किया तथा परिषद् के प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष से चर्चा की।

श्री जी०के० अरप कोइच, वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी, शिक्षा, विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंत्रालय, नैरोबी (कीनिया) ने 5 फरवरी, 1987 को परिषद् का निरीक्षण किया तथा विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग, प्रकाशन विभाग, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान तथा कम्प्यूटर सेल के संकाय के साथ अनुभवों का आदान-प्रदान किया।

श्री गुलाम नबी और मोहम्मद आरिफ, राष्ट्रीय विज्ञान व श्रव्य-दृश्य केंद्र के सदस्य, काबुल (अफगानिस्तान), ने कार्यशाला विभाग में 9 से 27 फरवरी, 1987 को तीन सप्ताह का अटैचमेंट कार्यक्रम ग्रहण किया।

श्री कानो बो, विदेशी सेवा विभाग के निदेशक और श्री एन० सागारा, अनुसंधान व नियोजन के समन्वयकर्ता, सीनियर स्टाफ आफ एन०आई०ई०आर०, जापान, ने 2 मार्च, 1987 को परिषद् का निरीक्षण किया तथा संयुक्त निदेशक, डीन (अकादमिक), विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग तथा केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी के संकाय के साथ परिषद् के कार्यक्रमों व गतिविधियों पर चर्चा की।

श्री प्रेमदास कुमारश्री, श्रीलंका स्टाफ कालेज फार एजूकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन नेशनल इंस्टीट्यूट आफ एजूकेशन, महारागमा, श्रीलंका ने 19 मार्च, 1987 को परिषद् का निरीक्षण किया तथा शैक्षिक अनुसंधान नवोद्भावना समिति, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान और अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की अनुसंधान व नवोद्भावना गतिविधियों पर चर्चा की।

परिषद् के संकाय सदस्यों की विदेशों में प्रतिनियुक्ति

श्री के० रामचन्द्रन लैक्चरर, स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. को 10 मई 1986 से 8 जून, 1986 तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तक मंडल बंगला देश और यूनिसेफ, बंगला देश, परामर्श सेवा हेतु प्रतिनियुक्त किया गया।

श्रीमती आदर्श खन्ना, प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, विशेष शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी. ने 3 अप्रैल, 86 से एक मास की परामर्श सेवा यूनिसेफ, बंगला देश और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तक मंडल को प्रदान की।

प्रो० ए०के० जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने सिंगापुर में सी०ए०एस०टी०एम०ई० की 11 वीं द्विवार्षिक कार्यशाला में 7 से 11 अप्रैल, 1986 में भाग लिया।

प्रो०ओ०एस० देवल, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., ने ए.पी.ई.आई.डी. के अन्तर्गत 16 से 25 अगस्त, 1986 तक नानजिंग, चीन में सुदूर अधिगम परियोजनाओं की मूल्यांकन संबंधी अध्ययन दल की बैठक में भाग लिया।

1986-87

श्री जी०गुरु, रीडर, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. ने 9 से 18 सितंबर, 1986 तक फिलीपीन विश्वविद्यालय, क्योज़न शहर में शिक्षा कालेज में प्रशिक्षण सामग्रियों के विकास पर केंद्रित अध्यापक प्रशिक्षण में संचालनीय परियोजनाओं में संलग्न शैक्षिक कार्मिकों की एक क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

श्री जी०एन० व्यास, पुस्तकाध्यक्ष, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल, ने बैंकाक में 1 से 30 अक्टूबर, 1986 तक जनसंख्या शिक्षा संबंधी प्रलेखन व सूचना सेवाओं के एक अटैचमैंट कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रो० एम०एम० चौधरी, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी. ने टोकियो में 15 से 24 सितंबर, 1986 तक शैक्षिक प्रौद्योगिकी (ए०पी०ई०आई०डी० के तृतीय कार्यक्रम चक्र) संबंधी संगोष्ठी में भाग लिया।

प्रो० अर्जुन देव, सामाजिक विज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी. ई.आर.टी. ने टोकियो, जापान, में 17 जून से 10 जुलाई, 1986 तक एशिया और प्रशांत में माध्यमिक शिक्षा के अध्ययन संबंधी प्रथम क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

प्रो० पी०एन० दवे, अध्यक्ष, स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी. ई.आर.टी. ने 26 अगस्त से 4 सितंबर, 1986 तक चिमंगमई, थाईलैंड, में प्राथमिक शिक्षा कार्मिकों के प्रशिक्षण संबंधी सामग्रियों के विकास हेतु तकनीकी कार्यदल की बैठक में भाग लिया।

प्रो० एन०के० अम्बष्ट, स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी. ई.आर.टी. ने 11 से 28 नवंबर, 1986 तक टोकियो, जापान में एशिया और प्रशांत में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों संबंधी क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

प्रो० बी० गांगुली, अध्यक्ष, विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. ने 27 नवंबर से 6 दिसंबर, 1986 तक पेनंग, मलेशिया, में एक स्रोत व्यक्ति के रूप में एकीकृत विज्ञान के मूल कार्मिकों के प्रशिक्षण और सामग्रियों के विकास संबंधी क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया। इस दौरे के अनुक्रम में प्रो० गांगुली ने 7 से 13 दिसंबर, 1986 तक आस्ट्रेलिया में विज्ञान शिक्षा में अटैचमैंट कार्यक्रम में भी भाग लिया।

श्री एन०एन० स्वामी, रीडर, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर, ने 18 से 28 नवंबर, 1986 तक मनीला में भौतिकी अध्यापकों की प्रशिक्षण संबंधी एक एपियड क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

डा० आर०एल० फुटेला, लैक्चरर, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, एन.सी. ई.आर.टी. ने ओपन विश्वविद्यालय और यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय के सहयोग से एशियाई विकास बैंक द्वारा बैंकाक में 26 नवंबर से 3 दिसंबर, 1986 तक आयोजित सुदूर शिक्षा संबंधी क्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

डा० वी०पी० गोयल, लैक्चरर, विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग, एन०सी० ई०आर०टी०, ने लिवरपूल यू०के० में 1 से 5 दिसंबर, 1986 तक संसाधन दृष्टिकोण प्रयोग वाली प्राथमिक विज्ञान अध्यापक प्रशिक्षण से संबंधित एक परियोजना पर, एक पाँच दिवसीय सम्मेलन में भाग लिया।

प्रो० पी०एल० मल्होत्रा, निदेशक, एन०सी०ई०आर०टी०, ने माननीय शिक्षा मंत्री, भारत सरकार, की फरवरी 1986 की मारिशस यात्रा की अनुवर्ती कार्रवाई हेतु 19 से 26 जून, 1986 तक मारिशस का भ्रमण किया।

परिषद् के 5 सदस्य पाठ्यचर्या विशेषज्ञों की टीम ने जिसमें श्रीमती एस० लूथरा, रीडर, सामाजिक विज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग, श्रीमती जमीला बेगम, रीडर, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर, डा०पी० वीरप्पन, लैक्चरर, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर, डा० पी०वी० सत्यनारायण मूर्ति, रीडर, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर, और डा०पी०वी० नलादकर, सम्पादक, महाराष्ट्र राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पुणे ने 26 सितंबर से 8 अक्टूबर, 1986 तक मारिशस का भ्रमण किया।

श्रीमती एस० शुक्ला, अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, विशेष शिक्षा व विस्तार सेवाएं, एन०सी०ई०आर०टी०, ने 4 से 10 दिसंबर तक हार्बर्ट, आस्ट्रेलिया, में अध्यापक शिक्षा संबंधी क्षेत्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

प्रो० एच०एस० श्रीवास्तव, अध्यक्ष, मापांकन व मूल्यांकन विभाग, सर्वे और आंकड़ा संसाधन, एन०सी०ई०आर०टी०, ने 19 से 26 नवंबर, 1986 तक कैफिंग, चीन में वैज्ञानिक व प्रौद्योगिकीय प्रतिभा की पहचान एवं पोषण संबंधी अध्ययन दल की बैठक में भाग लिया।

डा० डी० लहरी, रीडर, विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग ने 21 से 31 जुलाई, 1986 तक भारतीय उच्चायोग से सम्बद्ध स्कूलों के अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु बंगला देश का भ्रमण किया।

प्रो० जे०एस० राजपूत, प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल, ने एक स्रोत व्यक्ति के रूप में एन०डी०जी०, एन०सी०ई०टी०, द्वारा आयोजित शैक्षिक नवोद्भावनाओं के विकास से संबंधित संगोष्ठी में भाग लिया। यह संगोष्ठी भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में 1-7-86 से 5-7-86 तक की गई थी।

प्रो० जे०एस० राजपूत, प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल, ने 2-1-86 से 8-11-86 तक ढाका (बंगला देश) में आयोजित भौतिकी शिक्षा हेतु कम लागत उपकरण के देशज विकास पर यूनेस्को/ए०एस०पी०ई०एन०/आई०सी०टी०पी० क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

यूनेस्को/ए०पी०ई०आई०डी० परियोजनाएं

एशिया और प्रशांत के विभिन्न देशों के मध्य बहुपक्षीय सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण यंत्र एपियड (विकास हेतु शैक्षिक नवोद्भावना संबंधी एशिया और प्रशांत कार्यक्रम) हैं।

राष्ट्रीय विकास की समस्याओं के साथ संबद्ध शैक्षिक नवोद्भावनाओं को हाथ में लेने हेतु तथा साथ ही सदस्य देशों के लोगों के जीवन में गुणवत्ता सुधार लाने के लिए एपियड का मुख्य ध्येय राष्ट्रीय सक्षमताओं के निर्माण में योगदान करना है। यूनेस्को/एपियड कार्यक्रमों के संदर्भ में, परिषद् ने वर्ष 1986-87 में निम्नलिखित परियोजनाओं/अध्ययनों को हाथ में लेने के लिए यूनेस्को के साथ अनुबंध हस्ताक्षरित किए:

क्र.सं.	शीर्षक	परिषद् में स्थित
1.	अध्यापक शिक्षा का सर्वे	अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा व विस्तार सेवा विभाग
2.	ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान व प्रौद्योगिकी के शिक्षण पर पायलट प्रोजेक्ट	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर व अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक
3.	युवा लोगों की स्कूल से बाहर वैज्ञानिक गतिविधियों से संबंधित मूल कार्मिकों की क्षेत्रीय कार्यशाला	विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग
4.	विश्व स्वास्थ्य दिवस पर शिक्षण मार्गदर्शी सिद्धांतों का उत्पादन	अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक, एन०सी०ई०आर०टी०
5.	खुली सक्षमता विकसित करने हेतु विज्ञान अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों की अनुवर्ती शिक्षा संबंधी उच्च स्तरीय राष्ट्रीय कार्यशाला	विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग
6.	जीवविज्ञान शिक्षण उपकरण की प्रयोगशाला प्रविधियों व रखरखाव संबंधी क्षेत्रीय संगोष्ठी-व-कार्यशाला	विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग
7.	ग्रामीण क्षेत्रों में एक कक्षा स्कूलों में बहुउद्देशीय शिक्षण हेतु क्रियाविधीय गाइडों को तैयार करना	अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग
8.	ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान व प्रौद्योगिकी के शिक्षण हेतु परामर्श बैठक	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर और आई०आर० एकक
9.	विज्ञान पाठ्यचर्या विकासकर्ताओं व अध्यापक शिक्षकों के लिए क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल
10.	पांचवें, छठे, नौवें और दसवें स्तरों पर सामान्य शिक्षा की कथावस्तु के वितरण व संतुलन संबंधी राष्ट्रीय केस अध्ययन तथा प्राथमिक व माध्यमिक स्तरों पर परीक्षण और मूल्यांकन में इस वितरण के प्रभाव का विश्लेषण	सामाजिक विज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग
11.	औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा के मध्य समन्वय व संपूरकता संबंधी एपियड अनुवर्ती राष्ट्रीय कार्यशाला	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल
12.	एशिया के लिए औद्योगिक शिक्षा के बीच तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा में पर्यावरणीय शिक्षा में प्रवेश संबंधी उपक्षेत्रीय प्रशिक्षण संगोष्ठी	व्यावसायिक शिक्षा विभाग

राष्ट्रीय विकास दल (एन०डी०जी०) के अन्तर्गत गतिविधियां

एपियड के सन्दर्भ में शैक्षिक नवोद्भावनाओं के लिए भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय विकास दल (एन०डी०जी०) स्थापित किया है। एशिया और प्रशांत के 25 देश एपियड में सम्मिलित हो गये हैं। छः राष्ट्रीय स्तरीय संगठनों और दो संस्थाओं को भारत में एपियड के सम्बद्ध केन्द्रों के रूप में मान्यता दी गई है।

एन०डी०जी० का सचिवालय अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक, एन०सी०ई०आर०टी० में स्थित है।

भारत में एपियड से सम्बद्ध केंद्र केवल छः राज्यों व दो संघशासित क्षेत्रों में स्थित है। 31 जनवरी, 1986 को हुई शैक्षिक नवोद्भावनाओं संबंधी अपनी बैठक में राष्ट्रीय विकास दल (एन०डी०जी०) ने फैसला किया कि एन०डी०जी० के क्षेत्र को व्यापक बनाने के लिए इन्हीं चिह्नों पर एस०डी० जी० (शैक्षिक नवोद्भावनाओं संबंधी राज्य विकास दल) स्थापित करने हेतु राज्यों व संघशासित क्षेत्रों को परामर्श दिया जाए। एस०डी०जीज़ उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश राज्यों तथा संघशासित क्षेत्र चण्डीगढ़ में स्थापित किये गये हैं। अन्य राज्य व संघशासित क्षेत्र एस०डी०जी० स्थापित करने संबंधी योजना बना रहे हैं।

विकास हेतु शैक्षिक नवोद्भावनाओं संबंधी राष्ट्रीय संगोष्ठी

विकास हेतु शैक्षिक नवोद्भावनाओं के क्षेत्र में अन्तरक्षेत्रीय सहयोग व समन्वय को प्रेरित करने के लिए एक सीधी-सादी शुरुआत के रूप में एन०डी०जी०, एन०सी० ई०आर०टी०, ने विकास संबंधी शैक्षिक नवोद्भावनाओं पर क्षेत्रीय व राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित करना शुरू कर दिया है। इसी श्रृंखला में क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल, में 1 से 5 जुलाई, 1986 तक विकास संबंधी शैक्षिक नवोद्भावनाओं पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी की गई। इसमें विभिन्न विकास क्षेत्रों जैसे सामान्य शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, कृषि शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, स्वास्थ्य व परिवार कल्याण शिक्षा, कृषि शिक्षा व ग्रामीण शिक्षा के 23 व्यक्तियों ने भाग लिया। संगोष्ठी की उपलब्धियां एन०डी०जी० के समाचार-पत्र, शैक्षिक नवोद्भावना के जुलाई-दिसंबर, 1986 अंकों में दी गई है।

दक्षिण एशियाई देशों की एपियड संबंधी उपक्षेत्रीय बैठक

यू०डी०जी० सचिवालय ने यूनेस्को सहयोग संबंधी इंडियन नेशनल कमीशन के साथ मिलकर एक यूनेस्को प्रायोजित दक्षिण एशियाई देशों की एपियड संबंधी उपक्षेत्रीय बैठक 20 से 23 जनवरी, 1987 को आयोजित की। 50 व्यक्ति, जिनमें अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, श्रीलंका के शिष्टमंडल थे, बैठक में उपस्थित थे।

उपक्षेत्रीय बैठक ने एपियड (1987–91) की कार्ययोजना का गहन अध्ययन किया तथा उपक्षेत्रीय सहयोग हेतु कार्रवाइयों की पहचान की। उपक्षेत्रीय बैठक की सिफारिश में अनेक कार्यक्रमों व परियोजनाओं में कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे असाक्षरता उन्मूलन, प्राथमिक शिक्षा सर्वीकरण, शिक्षा को सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना एवं सभी शैक्षिक स्तरों व पद्धतियों को समान सहायक गतिविधियां व आधारिक संरचना प्रदान करना सम्मिलित था और ये सब एपियड के ढांचे में दक्षिण एशियाई क्षेत्र के देशों द्वारा संयुक्त रूप से हाथ में लिए जा सकेंगे।

एन०डी०जी० समाचार-पत्र

एन०डी०जी० सचिवालय, एन०सी०ई०आर०टी०, ने 'शैक्षिक नवोद्भावनाएं' नामक छमाही समाचार-पत्र का प्रकाशन जारी रखा। समाचार-पत्र, अन्य बातों के अतिरिक्त, अनेक विकास क्षेत्रों में महत्वपूर्ण नवोद्भावनाओं संबंधी सुस्पष्ट सूचना प्रदान करता है।

1986-87

अध्याय 16

प्रशासन और कल्याण कार्यकलाप और वित्त

परिषद् के नियमों, विनियमों और प्रक्रियाओं के अनुसार परिषद् के सचिवालय ने अपना गृह-व्यवस्था संबंधी कार्य करना जारी रखा।

प्रशासनिक और कल्याण कार्यकलाप

स्टाफ-कल्याण की दृष्टि से परिषद् अपने कर्मचारियों को खेल-कूद की सुविधाएं उपलब्ध कराता रहा है।

26 दिसंबर, 1986 से क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल में छठा अंतर-क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और एन०आई०ई० स्टाफ टूर्नामेण्ट आयोजित किया। इसमें बालीबाल, बास्केटबाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, फुटबाल, हाकी, शतरंज आदि की प्रतियोगिता हुई जिसमें 200 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया।

मुख्यालयों, क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और एफ०ए० कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों से विकल्प लेकर उनके लाभ के लिए 20 जनवरी, 1987 से केन्द्रीय सरकार कर्मचारी ग्रुप बीमा योजना के प्रतिमान पर जीवन बीमा निगम ग्रुप बचत से संबद्ध बीमा योजना लागू की गई।

दिल्ली में परिषद् के कर्मचारियों की जोरदार मांग को ध्यान में रखकर विभिन्न टाइप के 104 और स्टाफ क्वार्टरों का निर्माण कार्य शुरू हो गया है। एन०आई०ई० के स्टाफ और कैम्पस में रहने वालों की सुविधा के लिए कैम्पस में 24 दूकानों का एक शापिंग कम्प्लेक्स और एक कम्यूनिटी हाल बनाने का प्रस्ताव है। इस काम को शुरू करवाने के संबंध में केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग से बातचीत चल रही है। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने एन०आई०ई० अतिथि गृह में 10 कमरे और बनाने का काम पूरा कर लिया है। अतिथि गृह में लिफ्ट लगाने का काम चल रहा है।

एन०आई०ई० कैम्पस में पार्क, लान आदि विकसित करने में केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने कुछ और पंप लगाकर बिना छने पानी की सप्लाई में काफी राहत प्रदान कर दी है।

1986–87 वर्ष में आंतरिक कार्य अध्ययन एकक ने निम्नलिखित अध्ययनों को अपने हाथ में लिया और उन्हें पूरा किया।

1. नियमित आधार पर विशेष अधिकारी के पद को जारी रखने के संबंध में कार्य अध्ययन रिपोर्ट।
2. राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षकों को विशाल सेवाकालीन प्रशिक्षण योजना 1987: इसे लागू करने के लिए अतिरिक्त स्टाफ का निर्धारण।

आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित अध्ययनों पर कार्य चल रहा है:

1. परिषद् के स्टाफ की आवश्यकता के निर्धारण द्वारा नवोदय विद्यालय में दाखिले के लिए चयन परीक्षा का आयोजन।
2. डी.पी.आर.जी.जी. में परीक्षण पुस्तकालय की स्टाफ आवश्यकताएं।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से क्षेत्रीय शिक्षा कालेज के संबंध में पहले आयोजित किए अध्ययनों के पूरक के रूप में निम्नलिखित अध्ययन हाथ में लिए गए हैं:

1. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर के पुस्तकालय स्टाफ का निर्धारण।
2. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल में चौकीदारों का निर्धारण।
3. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर में चौकीदारों का निर्धारण।

ऊपर उल्लेख किए गए अध्ययनों के अतिरिक्त आई.डब्लू.एस.यू. पिछले वर्ष किए गए अध्ययनों, विशेष रूप से परिषद् के मुख्यालयों पर हिन्दी पदों की आवश्यकताओं और प्रकाशन विभाग के अध्ययनों के अनुवर्ती कार्य को पूरा करने में भी लगा रहा। परिषद् में चौकीदारों और दफ्तरियों के अतिरिक्त पदों से संबंधित अध्ययनों के संबंध में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आई.एफ.डी. को भेजने के लिए यूनिट ने सूचनाएं एकत्रित/संकलित कीं।

हिन्दी सैल के कार्यकलाप

परिषद् के हिन्दी सैल ने कार्यालय के कामों में हिन्दी के अधिक से अधिक प्रयोग के लिए निम्नलिखित कार्य किए:

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

परिषद् में राजभाषा कार्यान्वयन समिति 1980 में स्थापित हुई। इसी पद्धति पर चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में राजभाषा उपसमिति भी गठित हो गई है। हिन्दी सैल ने राजभाषा कार्यान्वयन समिति की एक त्रैमासिक बैठक 4 नवंबर, 1986 को आयोजित की। संसदीय

1986-87

राजभाषा समिति की पहली उपसमिति ने 14 अक्टूबर, 1986 को परिषद् का निरीक्षण किया। हिन्दी सैल ने उन्हें वांछित सूचना उपलब्ध कराई।

सामग्री का वितरण

आलोच्य वर्ष में 'मानक हिन्दी कोश' के चार सेट चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों को बांटे गये।

प्रशिक्षण

1986–87 वर्ष में परिषद् के आठ कर्मचारियों को हिन्दी टंकण में प्रशिक्षित किया गया।

अनुवाद

1986–87 वर्ष में हिन्दी सेल ने निम्नलिखित अनुवाद कार्य किए:

(1) परिषद् के मुख्यालय में उपलब्ध 156 अंग्रेजी फार्म।
(2) प्रशासन संबंधी पत्र, परिपत्र फार्म, नियम आदि।
(3) परिषद् को वार्षिक डायरी में दी गई भूमिका।
(4) क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर में प्रशासन संबंधी 108 फार्म/परिपत्र अनुदित किए गए और क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल के 85 फार्मों का अनुवाद किया जा रहा है।

हिन्दी के पद बनाना

परिषद् के मुख्यालय में सहायक जनसंपर्क अधिकारी (हिन्दी) का पद भर लि गया है। परिषद् के समाचार-पत्रों को हिन्दी में भी प्रकाशित करने का प्रस्ताव है।

हिन्दी सप्ताह

1 सितंबर, 1986 को परिषद् में हिन्दी सप्ताह मनाया गया। इस अवसर निम्नलिखित प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं:

(1) हिन्दी में टिप्पणी और मसौदा लेखन
(2) हिन्दी में भाषण और कविता पाठ
(3) हिन्दी टंकण
(4) हिन्दी स्टेनोग्राफी और
(5) अनुवाद

में प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

हिन्दी और हिन्दीतर भाषी कर्मचारियों को कुल 27 पुरस्कार दिए गए। 'परिषद टिप्पणी' की 5,000 प्रतियां छापी गईं और उन्हें परिषद् के प्रत्येक घटक के कर्मचारि अधिकारियों में बांटा गया। विजेताओं को शील्ड भी दिए गए। प्रशासनिक अनुभ लिए की गई प्रतियोगिताओं में सी.आई.ई.टी., आर.सी.ई., भोपाल और स्था चार अनुभागों ने क्रमशः 1983, 1984, 1985 और 1986 में शील्ड जीते। विभागों की प्रतियोगिता में 1985 वर्ष में आर.सी.ई., भोपाल ने शील्ड जीती।

1986-87

1986-87 वर्ष की प्राप्तियां और भुगतान का समेकित लेखा

(अंक पूरे रुपये में)

प्राप्तियां					भुगतान
रोकड़ जमा			बजट खर्चे		
रोकड़ और बैंक में	11,94,26,290		अधिकारियों के वेतन		
संचालन निधि	25,40,000		गैर-योजना	1,32,16,379	
जी०पी०एफ०/सी०पी०एफ०	12,19,601		योजना	1,95,183	
टी/39 बचत खाते में		12,31,85,891			1,34,11,562
निधि					
बजट खर्चे के लिए मानव			स्थापना का वेतन		
संसाधन विकास मंत्रालय			गैर-योजना	1,77,64,514	
से प्राप्त अनुदान			योजना	2,49,953	
गैर योजना	10,30,35,000				1,80,14,467
योजना	3,85,50,000				
		14,15,85,000			
विशिष्ट योजनाएं (सूची संलग्न)		16,32,94,106	भत्ते और मानदेय		
अनुदान और वापिसी			गैर योजना	3,94,73,057	
परिषद् की प्राप्तियां			योजना	4,87,136	
परिषद् के भवनों का किराया		12,38,849			3,99,60,193
ऋण एवं अल्पकालिक निवेश पर ब्याज		2,98,260	यात्रा भत्ता		
अन्य भुगतान की वसूली		11,22,855	गैर योजना	10,42,771	
विज्ञान किटों की बिक्री		9,25,336	योजना	30,672	
शुल्क और प्रभार		5,91,722			10,73,443
पुस्तकों और प्रकाशनों की बिक्री		5,13,55,838			
			अन्य प्रभार		
			गैर योजना	1,76,60,801	
			योजना	4,10,784	
					1,80,71,585
अवकाश वेतन और			छात्रवृत्तियां/फैलोशिप		
पेंशन योगदान		81,694	गैर योजना	7,02,189	
सी०जी०एच०एस०		5,13,43,010	योजना	5,76,239	
जी०पी०एफ०/सी०पी०					12,78,428,
एफ० निवेश पर ब्याज					
चालू खाते में	1,86,087		कार्यक्रम	22902	
टी/39 में	58,34,453		गैर योजना	4,48,81,816	
बचत खाते में	2,02,095	62,22,635	योजना	1,82,80,602	6,31,85,320
रायल्टी		5,768			
विविध प्राप्तियां		17,28,686	उपस्कर और फर्नीचर		
			गैर योजना	18,92,121	
			योजना	17,42,742	36,34,863

प्राप्तियां			भुगतान
	भूमि और भवन		
	गैर योजना	47,19,319	
	योजना	60,82,885	1,08,02,204
	विविध भुगतान		
	पेंशन और ग्रेजुएटी		31,55,128
	(मुख्यालय आर.सी.ई.,एफ.ए.) अवकाश वेतन और पेंशन		44,463
	सी०जी०एच०एस०		4,41,693
	मकान भत्ता का भुगतान		32,294
	लेखा शुल्क		91,625
	विज्ञापन		1,40,767
	जमा में जुड़ी बीमा योजना		5,277
	अन्य		25,000
	जी०पी०एफ०/सी०पी०एफ०		37,00,000
	नियोक्ता शेयर पर ब्याज		
	सी.आई.ई.टी.द्वारा अन्य भुगतान (योजना)		4,900
	विशिष्ट परियोजनाएं		19,58,74,003

परिषद् के स्टाफ को ऋण और पेशगियों का भुगतान और वसूली

प्राप्तियां			भुगतान		
स्कूटर/कार पेशगी		3,40,810	स्कूटर/कार पेशगी		13,96,864
साइकिल पेशगी		79,872	साइकिल पेशगी		70,800
पंखा पेशगी		42,123	पंखा पेशगी		35,920
भवन निर्माण पेशगी		19,81,176	भवन निर्माण पेशगी		21,97,076
त्यौहार पेशगी		5,71,678	त्यौहार पेशगी		5,44,930
बाढ़ पेशगी		54,780	स्थानांतरण पर यात्रा भत्ता/वेतन पेशगी		80,769
स्थानांतरण पर यात्रा भत्ता/वेतन पेशगी		14,243	स्थायी पेशगी		6,600
स्थायी पेशगी		6,700			
			निधि		
जी०पी०एफ०		1,57,22,957	**जी०पी०एफ०**		
			चालू लेखा	30,78,484	
			टी/39 लेखा	48,91,078	
					79,69,562
सी०पी०एफ०	(-)	10,80,962	**सी०पी०एफ०**		
			चालू लेखा	4,10,877	
			टी/39 लेखा	3,19,364	7,30,241

1986-87

प्राप्तियां			भुगतान		
वेतन जी०पी०एफ० का बकाया		54,563			
		जमा			
बयाना धन और सुरक्षा जमा		3,09,743	बयाना धन और सुरक्षा जमा		1,58,431
जमानत जमा		1,09,043	जमानत जमा		1,29,819
अन्य जमा		(−) 6,737	अन्य जमा		19,13,173
सामूहिक बीमा योजना		5,54,643	सामूहिक बीमा योजना		11,11,229
जी०पी०एफ०/सी०पी०एफ० निवेश			जी०पी०एफ०/सी०पी०एफ० निवेश		
चालू खाता		14,50,000	चालू खाता	2,47,566	
टी 39 खाता			टी 39 खाता	2,43,587	14,82,153
निधि का टी 39 खाते में स्थानांतरण		1,13,64,150	निधि का टी 39 खाते में स्थानांतरण		1,13,64,150
उचंत		6,27,138	उचंत		6,62,064
अल्पकालिक निवेश		6,63,00,000	अल्पकालिक निवेश		6,63,00,000
			विप्रेषित धन राशि		
जी०पी०एफ०/सी०पी०एफ० विप्रेषण		1,61,946	जी०पी०एफ०/सी०पी०एफ० विप्रेषण		1,67,327
पी.एल.आई./एल.आई.सी. विप्रेषण		82,837	पी.एल.आई./एल.आई.सी. विप्रेषण		94,598
विविध विप्रेषण		42,573	विविघ विप्रेषण		45,856
उपकार्यालय विप्रेषण		45,26,399	उपकार्यालय विप्रेषण		49,05,766
आयकर विप्रेषण		4,40,358	आयकर विप्रेषण		4,40,043
मृत्यु राहत योजना		3,33,595	मुत्यु राहत योजना		12,362
टी.सी.एस. विप्रेषण		3,36,186	टी.सी.एस. विप्रेषण		3,29,028
आवधिक विप्रेषण			**आवधिक विप्रेषण**		
	15,11,30,000			14,92,30,000	
	25,40,000	14,85,90,000		6,40,000	14,85,90,000
			रोकड़ बाकी		
			नकद और खाते में	11,24,74,767	
			संचालन में निधि	6,40,000	
			टी 39 में शेष	85,88,722	
					12,17,03,489
		74,43,89,465			74,43,89,465

परिशिष्ट (क)

व्यावसायिक शिक्षा संगठनों की सहायता योजना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने शिक्षा और शिक्षा संबंधी नवीन प्रक्रियाओं के क्षेत्र में स्वैच्छिक प्रयासों को हमेशा महत्व देता रहा है। देश में शिक्षा-रूपांतरण के संबंध में व्यावसायिक शिक्षा संगठनों का संस्थाओं और अध्यापक/शिक्षकों के साथ संपर्क बनाए रखना एक उत्प्रेरक का कार्य करता है। इस बात को ध्यान में रखकर परिषद् शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय में प्रचालित योजना के अनुसार पिछले कुछ वर्षों से व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को वित्तीय सहायता देने की योजना चलाती आ रही है। इस योजना के बारे में और जानकारी तथा वित्तीय सहायता से संबद्ध आवेदन-पत्र प्रोफेसर (कार्यक्रम), एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली-16 से मंगाकर प्राप्त किया जा सकता है।

पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए 1986-87 में व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को परिषद् द्वारा दिया गया अनुदान

क्र.सं.	संगठन का नाम	पत्रिका का नाम	स्वीकृत राशि
1.	भारतीय भूगोल शिक्षक संघ 60, 1 मेन रोड, राजा अन्नमलायीपुरम, मद्रास-28	'द जियोग्राफी टीचर इंडिया'	5,000
2.	भारतीय भौतिकी शिक्षक संघ 2ए/229, आजाद नगर, कानपुर-208002	'फिजिक्स टीचर'	5,000
3.	शैक्षिक अनुसंधान एवं विकास सोसायटी, 46, हरी नगर, गौत्री रोड, बड़ौदा-350007	'पर्सपेक्टिवज़ इन एजूकेशन'	5,000
4.	युवा शिक्षा अनुसंधानकर्ता संघ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	'अयरे'	1,500
5.	विज्ञान शिक्षा संवर्धन संघ 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट मंडवेलिपक्कम,मद्रास-28	'जूनियर साइन्टिस्ट'	4,500
6.	भारतीय अंग्रेजी भाषा शिक्षक संघ, 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट मंडवेलिपक्कम, मद्रास-28	'द जर्नल आफ इंग्लिश लैंग्वेज टीचर'	4,000
7.	भारतीय भौतिक संघ द्वारा टाटा मौलिक अनुसंधान संस्थान, होमी भाभा रोड, बंबई-400005	'फिजिक्स न्यूज'	5,000
8.	एस.आई.टी.यू. शैक्षिक अनुसंधान परिषद् 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट मंडवेलिपक्कम, मद्रास-28.	'एक्सपैरीमेन्ट्स इन एजूकेशन'	3,000

1986-87 वर्ष में वार्षिक सम्मेलन/सगोष्ठी आयोजित करने के लिए परिषद् द्वारा व्यावसायिक शिक्षा सगठनों को दिए गए अनुदान

क्र.सं.	संगठन का नाम	उद्देश्य	स्वीकृत राशि
1.	भारतीय पर्यावरण सोसायटी बी एम-150 (पश्चिम) शालीमार बाग, दिल्ली-58	'पर्यावरण शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'	5,000
2.	भारतीय भौतिकी शिक्षक संघ, 2ए/229, आजाद नगर, कानपुर।	'व्यापार भौतिकी प्रयोगशाला की अभिकल्पना और पाठ्य सामग्री का निर्माण' पर दूसरा सम्मेलन	5,000
3.	भारतीय पूर्व-विद्यालय शिक्षा संघ, एम०एस० बड़ौदा विश्वविद्यालय, बड़ौदा	युवा बच्चों और उनके कार्यक्रमों की जानकारी पर 21 वां सम्मेलन	5,000
4.	भारतीय संचार प्रशिक्षण और अनुसंधान परिषद्, अंतरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र, एस०ए०सी०, अहमदाबाद-380058.	15 वां अंतर्राष्ट्रीय जनसंचार अनुसंधान संघ (आई.ए.एम.सी.आर.)	10,000
5.	अखिल भारतीय महिला असाक्षरता उन्मूलन समिति, भगवान दास रोड, नई दिल्ली-11000।	'महिला असाक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम'	4,000
6.	भारतीय मधुमेह संघ, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली-110029	'राष्ट्रीय मधुमेह निदान और शिशु पोषण सम्मेलन'	5,000
7.	भारतीय समाज विज्ञान अकादमी, ईश्वर शरण डिग्री कालेज कैम्पस, इलाहाबाद-211004	'ग्यारहवां कांग्रेस'	5,000
8.	अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षक संघ, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली-110001	'वार्षिक सम्मेलन'	10,000
9.	भारतीय अध्यापक शिक्षक संघ, शिक्षा संकाय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)	'25 वां सम्मेलन'	5,000

परिशिष्ट (ख)

राज्यों में क्षेत्र सलाहकारों के पते

			दूरभाष कार्यालय	निवास
1.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्) 3-6-69/बी/7, अवन्ती नगर, बशीर बाग, हैदराबाद	आंध्र प्रदेश	35878	227207
2.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्) जू नारंगी रोड, साहेब तिल्ला, गुवाहाटी	असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर तथा नागालैंड	87003	
3.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्) कंकरबाग, पत्रकार नगर, पटना	बिहार	53243	53243
4.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्) कोठी नं. 23, सैक्टर-8ए, चण्डीगढ़	चण्डीगढ़ और पंजाब	26923	26923
5.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्) 1-बी, चंद्र कालोनी, (ला कालेज के पीछे), अहमदाबाद	गुजरात, दादर और नागर हवेली	445992	445992
6.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), हिमरस, सर्कुलर रोड, शिमला-171002 (हि.प्र.)	हिमाचल प्रदेश	4548	4548
7.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), 57 रावलपोरा, श्रीनगर-190005	जम्मू व कश्मीर	31490	
8.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), 621, 80 फुट रोड, 11 ब्लाक राजाजी नगर, बंगलौर	कर्नाटक	350006	350006

			दूरभाष कार्यालय	निवास
9.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), एस.आई.ई., भवन, पूजापुरा, त्रिवेन्द्रम	केरल तथा लक्षद्वीप	64389	64948
10.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), एम.आई.जी., 161 सरस्वती नगर, जवाहर चौक, भोपाल	मध्य प्रदेश	64465	76014
11.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), 128/2, कोठरुड कर्वे मार्ग, पुणे	महाराष्ट्र तथा गोआ, दमन व दिऊ	447314	447314
12.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), बायस रोड, लैटुमखरा, शिलांग	मेघालय,मिजोरम, त्रिपुरा	26317	
13.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), होमी भाभा छात्रावास, आर.सी.ई. कैम्पस, भुवनेश्वर	उड़ीसा	50516	52224
14.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), 55 बी, यश पथ, तिलक नगर, जयपुर	राजस्थान	40265	40265
15.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), 32, हिंदी प्रचार सभा, टी नगर, मद्रास	तमिलनाडु एवं पांडिचेरी	443414	72939
16.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), 555 ई, ममफोर्ड गंज, इलाहाबाद	उत्तर प्रदेश	52212	2131
17.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद्), पी-23, सी. आई.टी.रोड स्कीम-55 कलकत्ता	पश्चिम बंगाल, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह तथा सिक्किम	245310	361510

परिशिष्ट (ग)

1986-87 के लिए रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् की समितियां

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सदस्य (सामान्य सभा)
(परिषद् के नियमों के नियम 3 के अन्तर्गत)

1.	शिक्षा मंत्री, अध्यक्ष-पदेन	1.	श्री पी.वी.नरसिंह राव केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री शास्त्री भवन, नई दिल्ली
2.	अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-पदेन	2.	प्रो. यशपाल, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
3.	सचिव, शिक्षा मंत्रालय –पदेन	3.	श्री आनंद स्वरूप, सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
4.	भारत सरकार द्वारा, प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक के आधार पर मनोनीत विश्वविद्यालयों के चार कुलपति	4.	प्रो.वी.जी. भिडे, कुलपति, पूना विश्वविद्यालय, पुणे
		5.	डा. एन.एस. बोस, कुलपति, विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन-731235
		6.	डा० एस.एस.बाल, कुलपति, गुरु नानक विश्वविद्यालय, अमृतसर
		7.	प्रो. वी.सी. कुलंदाइस्वामी, कुलपति, अन्ना विश्वविद्यालय, मद्रास
5.	प्रत्येक राज्य सरकार/संघशासित प्रदेश का एक-एक प्रतिनिधि विधायक जो राज्य/संघशासित प्रदेश का शिक्षा मंत्री (या उसका प्रतिनिधि) होना चाहिए और दिल्ली का मुख्य कार्यकारी पार्षद (या उनका प्रतिनिधि)	8.	शिक्षा मंत्री, आंध्रप्रदेश, सचिवालय भवन, हैदराबाद
		9.	शिक्षा मंत्री, असम सचिवालय भवन, गुवाहाटी
		10.	शिक्षा मंत्री, बिहार, नया सचिवालय, पटना
		11.	शिक्षा मंत्री, गुजरात सरकार, ब्लाक नं०1 सचिवालय, गांधीनगर-382010
		12.	शिक्षा मंत्री, हरियाणा सरकार, हरियाणा सिविल सचिवालय, 26/4 चंडीगढ़
		13.	शिक्षा मंत्री, हिमाचल प्रदेश, शिमला,-171002
		14.	शिक्षा मंत्री, जम्मू व कश्मीर सरकार, श्रीनगर
		15.	शिक्षा मंत्री, केरल सरकार, अशाका नंथेन्कोएड, त्रिवेन्द्रम
		16.	शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश, भोपाल
		17.	शिक्षा मंत्री, महाराष्ट्र सरकार, बम्बई
		18.	शिक्षा मंत्री, मणिपुर सरकार, इम्फाल
		19.	शिक्षा मंत्री, मेघालय सरकार, मेघालय सचिवालय, शिलांग
		20.	शिक्षा मंत्री, कर्नाटक सरकार, विधान सौध, बंगलौर
		21.	शिक्षा मंत्री, उड़ीसा सरकार, उड़ीसा सचिवालय भुवनेश्वर
		22.	शिक्षा मंत्री, नागालैण्ड सरकार, कोहिमा
		23.	शिक्षा मंत्री, पंजाब सरकार, चण्डीगढ़
		24.	शिक्षा मंत्री. राजस्थान सरकार सचिवालय, जयपुर
		25.	शिक्षा मंत्री तमिलनाडु सरकार, पोर्ट सेंट जार्ज, मद्रास
		26.	शिक्षा मंत्री, त्रिपुरा सरकार, सिविल सचिवालय, अगरतला
		27.	शिक्षा मंत्री, सिक्किम सरकार सचिवालय, गंगटोक
		28.	शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ
		29.	शिक्षा मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार, राइटर्स बिल्डिंग, कलकत्ता
		30.	शिक्षा मंत्री, अरुणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर-791111
		31.	श्री जगप्रवेश चन्द्र, मुख्य कार्यकारी पार्षद, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली
		32.	शिक्षा मंत्री, गोआ, दमन और दीव सरकार सचिवालय, पणजी (गोआ)
		33.	शिक्षा मंत्री, मिजोरम सरकार, ऐजाबल
		34.	शिक्षा मंत्री, असेम्बली सचिवालय, विक्टर साइमोनल स्ट्रीट, पांडिचेरी
6.	कार्यकारिणी समिति के वे सभी सदस्य जो ऊपर सम्मिलित नहीं है	35.	श्रीमती कृष्णा साही, राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
		36.	डा.पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
		37.	प्रो. डी.एस. कोठारी, कुलाधिपति, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नया महरोली मार्ग, नई दिल्ली
		38.	डा. सी.एल. आनंद, शिक्षा प्रोफेसर, उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, लोअर लच्छूमोर, शिलांग-793001 (मेघालय)

1986-87

	39.	श्री एम.एल. बब्बर, प्रिसिपल, एन.डी.एम.सी. नवयुग स्कूल, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली
	40.	श्री डी.पी. सिंह, प्रिसिपल, नेतारहाट स्कूल, नेतारहाट, वाया राँची-835218
	41.	डा.ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु.. एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
	42.	प्रो. (श्रीमती) एस. शुक्ला,, अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवा, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्
	43.	डा. ए.के. शर्मा, प्रिसिपल क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर
	44.	डा. जी.एल. अरोड़ा, रीडर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, नई दिल्ली
	45.	श्री वाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन नई दिल्ली
	46.	श्री एल.एस. नारायणन, वितीय सलाहकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
7. (क) अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली	47.	अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 17-बी इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली
(ख) आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली-पदेन	48.	आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
(ग) निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक), नई दिल्ली-पदेन	49.	निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक) निर्माण भवन, नई दिल्ली
(घ) उप महानिदेशक, कृषि शिक्षा प्रभारी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली –पदेन	50.	उप महानिदेशक, कृषि शिक्षा प्रभारी, भा.कृ. अनु. परिषद् कृषि मंत्रालय डा. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली
(ङ) प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण तथा रोजगार-महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय, नई दिल्ली-पदेन	51.	प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण तथा रोजगार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली
(च) योजना आयोग के शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि नई दिल्ली-पदेन	52.	शिक्षा सलाहकार, योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001
8. ऐसे अन्य व्यक्ति जिन्हें भारत सरकार समय-समय पर मनोमीत करना चाहे, छः से अधिक नहीं। इनमें से कम से कम चार स्कूल अध्यापक होने चाहिएँ	53.	प्रो. टी. सुब्बाराव, प्रिसिपल तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, मद्रास
	54.	प्रो. पी.डी. कुलकर्णी, प्रिंसिपल, तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, चण्डीगढ़
	55.	श्री तुषार कांजीलाल, मुख्याध्यापक रंगबेलिया हाई स्कूल, डाकघर रंगबेलिया, 24 परगना, पश्चिम बंगाल
	56.	श्री मुहम्मद हुसैन आब्दी, राजकीय शिक्षा शास्त्रीय संस्थान, इलाहाबाद
	57.	श्री डोमिस डि सूजा, मुख्याध्यापक, संत फिलोमेना बॉयस हाई स्कूल, पुत्तूर, जिला डी.के., कर्नाटक
	58.	श्रीमती विनोदनी शाह, प्रिंसिपल, श्री आर.पी. पटोदिया, गर्ल्स हाई स्कूल, सुरेन्द्र नगर, गुजरात
विशेष आमंत्रित	59.	सचिव, भारतीय स्कूल प्रमाण-पत्र, परीक्षा परिषद्, प्रगति हाउस, तीसरा तल, 47 नेहरु प्लेस, नई दिल्ली
	60.	श्री ओ.पी. केलकर, सचिव राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

कार्यकारिणी समिति

1. परिषद् के अध्यक्ष, जो कार्यकारिणी समिति के पदेन अध्यक्ष होंगे	1.	श्री पी.वी. नरसिंह राव, मा.सं.वि.मंत्री, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
2. (क) शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री जो कार्यकारिणी समिति के पदेन उपाध्यक्ष होंगे	2.	श्रीमती कृष्णा साही, मा.सं.वि. राज्य मंत्री, शास्त्री, भवन, नई दिल्ली
(ख) शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री, रा.शै. अनु.प्र. परिषद् के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत	3.	
(ग) परिषद् के निदेशक	4.	डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, नई दिल्ली
(घ) शिक्षा मंत्रालय के सचिव -पदेन	5.	श्री आनंद स्वरूप, सचिव, मानव स.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
3. अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-पदेन	6.	प्रो. यशपाल, अध्यक्ष, वि.वि. अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
4. स्कूल शिक्षा में अनुभूत रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद् (जिनमें से दो स्कूल अध्यापक होने चाहिए) अध्यक्ष द्वारा मनोमीत	7.	प्रो. डी.एस. कोठारी, कुलपति जवाहरलाल नेहरु, वि.वि., नई दिल्ली
	8.	डा. सी.एल. आनंद, शिक्षा प्रोफेसर, उत्तर-पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, लोअर लच्छूमोर शिलांग-793001 (मेघालय)
	9.	श्री एम.एल. बब्बर, प्रिसिपल एन.डी.एम.सी. नवयुग स्कूल, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली
	10.	श्री डी.पी. सिंह, प्रिसिपल नेताराहट स्कूल, नेताराहट-वाया रांची-835218
5. परिषद् के संयुक्त निदेशक	11.	डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु.और प्र. परिषद्, नई दिल्ली
6. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, परिषद् के संकाय के तीन सदस्य, जिनमें से कम से कम दो, प्रोफेसर तथा विभाग अध्यक्षों के स्तर के होने चाहिए	12.	प्रो. (श्रीमती) एस. शुक्ला, अध्यक्ष अध्यापक शिक्षा विभाग, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं रा.शै.अनु.प्र. परिषद्
	13.	डा. ए.के. शर्मा, प्रिसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर-590066

		14.	डा. जी.एल. अरोड़ा, रीडर, डी.ई.एस.एस. एव., रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, नई दिल्ली
7.	शिक्षा मंत्रालय के एक प्रतिनिधि	15.	श्री वाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूल) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन नई दिल्ली
8.	वित्त मंत्रालय से एक प्रतिनिधि, जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा	16.	श्री एल.एस. नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
		17.	सचिव, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, नई दिल्ली।

स्थापना समिति (परिषद् के विनिमय 10 के अधीन)

1.	निदेशक, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, अध्यक्ष	1.	डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, अध्यक्ष
2.	संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्	2.	डा. ए.के. जलालुद्दीन संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र.प.
3.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, शिक्षा मंत्रालय से नामित व्यक्ति	3.	श्री वाई.एन. चतुर्वेदी. संयुक्त सचिव (स्कूल) मा.सं.वि. मंत्रालय
4.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत चार शिक्षा-विद जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक हो	4.	प्रो. एन.एस. बोस, कुलपति विश्वभारती, शांति निकेतन
		5.	प्रो. एम.एम. पुरी, राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर, जी-16 पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
		6.	डा. के. वेंकट सुब्रामनियम, कुलपति, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 212 अन्नासलाई, पांडिचेरी
		7.	श्रीमती वी.ए. गांगुली, प्रिंसिपल, 35 क्रैफ्ट संस्थान, शिवाजी नगर, पुणे
5.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत क्षेत्रीय महा-विद्यालय से एक प्रतिनिधि	8.	श्री एन. बोहरे सहायक कार्यक्रम समन्वयन, आर.सी.ई., भुवनेश्वर
6.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान से एक प्रतिनिधि	9.	प्रो. के.एन. सक्सेना, एस.ई.ई., रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् नई दिल्ली
7.	परिषद् के शैक्षिक तथा गैर शैक्षिक स्टाफ में से विनिमय के परिशिष्ट में बताए अनुसार अपने-अपने वर्ग में से एक-एक चुनकर दो प्रतिनिधि	10.	श्री जे.एस. सक्सेना, रीडर, क्षेत्रीय शिक्षा महा-विद्यालय, अजमेर
		11.	श्री एम.एस. विष्ट, भंडारपाल वर्ग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्, नई दिल्ली
8.	वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु. प्र. परिषद्, नई दिल्ली	12.	श्री एल.एस. नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु. और प्र परिषद्, मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
9.	सचिव, रा.शै.अनु. एवं प्र. परिषद्	13.	श्री ओ.पी. केलकर सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्, सदस्य संयोजक

वित्त समिति

(परिषद् के नियम 62 के अधीन)

1.	रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् के निदेशक	1.	डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, नई दिल्ली
2.	वित्तीय सलाहकार (पदेन)	2.	श्री एल.एस. नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् मा.सं.वि. मंत्रालय, नई दिल्ली
3.	संयुक्त सचिव (स्कूली शिक्षा), मा.सं.वि. मंत्रालय	3.	श्री वाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूली शिक्षा) मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
		4.	श्री जे.वीरा राघवन, सलाहकार (शिक्षा) योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली
		5.	डा.वी.पी. दत्त, चीनी तथा जापानी अध्ययन विभागाध्यक्ष, कला संकाय भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
4.	सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्, सदस्य आयोजक	6.	सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्, नई दिल्ली

भवन एवं निर्माण समिति

1.	निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्	अध्यक्ष	डा.पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्
2.	संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्-पदेन	उपाध्यक्ष	डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु.प्र. प्ररिषद्
3.	के.लोक नि.वि. के मुख्य इंजीनियर या उनका प्रतिनिधि	सदस्य	डा. एम.सी. जोसेफ, मुख्य इंजीनियर, के.लो. नि.वि. रामाकृष्णपुरम, नई दिल्ली
4.	वित्त मंत्रालय (निर्माण) का एक प्रतिनिधि	,,	श्री एम.आर. राव, सहा. वित्त सला. (निर्माण), वित्त मंत्रालय, (निर्माण), निर्माण भवन, नई दिल्ली
5.	रा.शै.अनु. और प्र. परि. के परा-मर्शदाता, वास्तुकार	,,	श्री वाई.डी. रस्तोगी, वरिष्ठ वास्तुकार, के.लो. नि.वि. डी.जेड-4 (कमरा नं.426) ए-विंग निर्माण भवन, नई दिल्ली
6.	परिषद् के वित्तीय सलाहकार या उनका प्रतिनिधि	,,	श्री एल.एस. नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली
7.	शिक्षा मंत्रालय द्वारा नामित	,,	श्री बाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूल) शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
8.	प्रख्यात सिविल इंजीनियर	,,	श्री आर.के. भंडारी, मुख्य इंजीनियर, दिल्ली विकास प्राधिकरण, नई दिल्ली
9.	प्रख्यात विद्युत इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	,,	श्री आर.डी.जॉन, मुख्य इंजीनियर, कावेरी भवन, एफ ब्लाक, नवां तल, कोम्पागोडा रोड, बंगलौर
10.	कार्यकारिणी समिति का एक सदस्य (समिति द्वारा मनोनीत)	,,	प्रो. जे.एस. राजपूत, प्रिंसिपल क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, श्यामला हिल्स, भोपाल
11.	सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परि.	सदस्य-सचिव	श्री ओ.पी. केलकर, सचिव रा.शै.अनु. और प्र. परि.

1986-87

कार्यक्रम सलाहकार समिति

1.	निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र परिषद्	अध्यक्ष
2.	संयुक्त निदेशक " " " "	उपाध्यक्ष
3.	प्रो. एस.शुक्ल, अध्यक्ष शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 33 छात्र मार्ग, दिल्ली-110007	सदस्य
4.	प्रो. सी.एल.कुंडु, शिक्षा संकाय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, (हरियाणा)	–वही–
5.	प्रो. एच. मल्ला रेड्डी, शिक्षा संकाय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद	–वही–
6.	प्रो. एस. नारायण राव, मनोविज्ञान विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति	–वही–
7.	प्रो. (श्रीमती) एस जैदी, शिक्षा संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़	–वही–
8.	निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, महेन्द्रू, पटना	–वही–
9.	निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, सोलन, (हि.प्र.)	–वही–
10.	निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.) मेघालय, भवख्वार मुख्य मार्ग, शिलांग-2	–वही–
11.	निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर (राज.)	–वही–
12.	निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, 6-डी.पी.आई. प्रांगण, कालेज रोड, मद्रास	–वही–
13.	प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर, (राज.)	–वही–
14.	प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल, (म.प्र.)	–वही–
15.	प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर, (उड़ीसा)	–वही–
16.	प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर (कर्नाटक)	–वही–
17.	प्रो. ए.एन. महेश्वरी, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर-570006	–वही–
18.	प्रो. के.सी. पाण्डा, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर, (उड़ीसा)	–वही–
19.	प्रो. एन. वैद्य, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर (राज.)	–वही–
20.	प्रो. एस.टी.वी. गोविंदाचार्युलु, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)	–वही–
21.	अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्, नई दिल्ली	–वही–
22.	अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्	–वही–
23.	अध्यक्ष, स्कूल पूर्व तथा प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्	–वही–
24.	अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवा विभाग, रा.शै.अनु. एवं प्र. परि.	–वही–
25.	अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग, रा.शै.अनु.प्र. परि., नई दिल्ली	–वही–
26.	अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान, परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग, रा.शै.अनु. एवं प्र. परिषद्, नई दिल्ली	–वही–
27.	अध्यक्ष, नीति अनुसंधान नियोजन एवं कार्यक्रम विभाग, रा.शै.अनु. एवं प्र. परिषद्, नई दिल्ली	सदस्य
28.	अध्यक्ष, पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना विभाग, रा.शै.अनु. एवं प्र. परिषद्	–वही–
29.	अध्यक्ष, क्षेत्र सेवा एवं समन्वय विभाग, रा.शै.अनु. एवं प्र. परि., नई दिल्ली	–वही–
30.	अध्यक्ष, मापन मूल्यांकन, सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग, रा.शै. अनु. एवं प्र. परि. नई दिल्ली	–वही–
31.	अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग, रा.शै.अनु. एवं प्र परि., नई दिल्ली	सदस्य
32.	अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग, रा.शै.अनु. एवं प्र. परि. नई दिल्ली	–वही–
33.	संयुक्त निदशेक, केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) रा.शै.अनु.प्र. परि.	–वही–
34.	डा. के.वी. राव, प्रोफेसर, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परि., नई दिल्ली	–वही–
35.	डा. (कु.) एस.के. राम, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. एवं प्र. परि.	–वही–
36.	डा. (श्रीमती) आर. मुरलीधरन, प्रोफेसर, स्कूल-पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु.प्र. परि., नई दिल्ली	–वही–
37.	डा. (श्रीमती) एस.पी. पटेल, प्रोफेसर, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, नई दिल्ली	–वही–
38.	डा. वी.के. सिंह, प्रोफेसर, शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग रा.शै.अनु. एवं प्र परिषद्, नई दिल्ली	–वही–
39.	डा० प्रीतम सिंह, प्रोफेसर, मापन मूल्यांकन सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग, रा.शै.अनु.प्र परि., नई दिल्ली	–वही–
40.	डा. पी.एम. पटेल, प्रोफेसर, कार्यक्रम विभाग रा.शै.अनु. एवं प्र. परिषद्, नई दिल्ली	–वही–
41.	डा. ओ.एस. देवल, प्रोफेसर, केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अनु. एवं प्र. परिषद्, नई दिल्ली	–वही–
42.	डा. आर.एम. कालरा, अध्यक्ष, आई.आर.एकक, रा.शै.अनु. एवं प्र. परिषद्	–वही–
43.	प्रो. आई.एस.चौधरी, प्रोफेसर, पी.सी.ई. एकक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्, नई दिल्ली	–वही–
44.	डा. आर.पी. सिंह, अध्यक्ष, पत्रिका सैल, रा.शै.अनु. और प्र. परि.	–वही–
45.	डा. सी.एस. सुब्बाराव, प्रोफेसर, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस., रा.शै.अनु. और प्र. परिषद्, नई दिल्ली	–वही–

शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति

1. डा. पार्था एन. मुखर्जी,
   प्रोफेसर, भारतीय सांख्यिकीय संस्थान,
   सनसनबाल मार्ग, नई दिल्ली
2. डा. (श्रीमती) टी. ठाकुर,
   प्रिंसिपल, राज्य शिक्षा संस्थान, जोरहाट (असम)
3. डा. टी.बी. नायक,
   निदेशक, जनजातीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
   गुजराती विद्यापीठ अहमदाबाद (गुजरात)
4. डा. बी.के. राय बर्मन,
   वरिष्ठ प्रोफेसर, समाज विकास परिषद्,
   29, राजपुर रोड, दिल्ली-110054
5. प्रो. बी.आर. काम्बले,
   अध्यक्ष, इतिहास विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय,
   कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

6. डा. वाई. रवि,
निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, आलिया प्राथमिक स्कूल प्रांगण, (आंध्र प्रदेश खेलकूद परिषद् के सामने)
7. डा. आर. श्रीनिवासन,
प्रोफेसर शिक्षा, लक्ष्मी शिक्षा महाविद्यालय, गांधीग्राम जिला मदुरै, तमिलनाडु
8. प्रो. (श्रीमती) वी. अग्रवाल,
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)
9. प्रो. आगा अशरफ अली,
डीन एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर शिक्षा विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, हजरतबाग, श्रीनगर, (जम्मू व कश्मीर)
10. प्रो. ए.एल. नागर,
दिल्ली स्कूल ऑफ इकानामिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
11. डा. एन.वैद्य,
प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर-305001 (राज.)
12. डा. जी.वी. कानूनगो,
प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर-751007 (उड़ीसा)
13. डा.ए.एन. महेश्वरी,
प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर-570006 (कर्नाटक)
14. डा० जे.एस. राजपूत,
प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल-462013 (म.प्र.)
15. डा. (श्रीमती) अमृत कौर,
प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर (राज.)
16. डा. के.एस. पांडा,
शिक्षा प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर-751007 (उड़ीसा)
17. डा. सी. शेषाद्री,
प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर-570006
18. डा० एस.टी.वी.जी. आचार्यूलु,
शिक्षा प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल-462013 (म.प्र.)

अकादमिक समिति

1. निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् — अध्यक्ष
2. संयुक्त निदेशक -वही- — उपाध्यक्ष
3. डीन (अकादमी) — संयोजक
4. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. — सदस्य
5. डीन (अनुसंधान) — -वही-
6. डीन (समन्वय) — -वही-
7. अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
8. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
9. अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग
10. अध्यक्ष, मापन मूल्यांकन, सर्वेक्षण तथा आंकड़ा संसाधन विभाग
11. अध्यक्ष, स्कूल-पूर्व तथा प्रारंभिक शिक्षा विभाग
12. अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग
13. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग
14. अध्यक्ष, नीति अनुसंधान, नियोजन एवं कार्यक्रमण विभाग
15. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग
16. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग
17. अध्यक्ष, क्षेत्र सेवा एवं समन्वय विभाग
18. अध्यक्ष, पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना विभाग
19. अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एकक
20. अध्यक्ष, योजना समन्वय और मूल्यांकन एकक
21. प्रोफेसर (प्रोग्राम)
22. श्री आर.सी. सक्सेना, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम.
23. डा. अर्जुन देव, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस.एच.
24. डा. (श्रीमती) एस.पी. पटेल, प्रोफेसर, डी.वी.ई.
25. कुमारी आई मलानी, प्रोफेसर, डी.पी.एस.एण्ड.ई.ई.
26. डा.आर.के. माथुर, प्रोफेसर, डी.ई.पी.सी.जी.
27. डा. प्रीतम सिंह, प्रोफेसर, डी.एम.ई.एस.एण्ड.डी.पी.
28. डा. एन. मल्लारेडी, प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आं.प्र.)
29. डा. सुरेश शुक्ल, प्रोफेसर शिक्षा, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. शिक्षा मनोविज्ञान, परामर्श तथा मार्गदर्शन विभाग (डी.ई.पी.सी. एण्ड जी.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा. (श्रीमती) पेरिन एच. मेहता, प्रोफेसर एवं अध्यक्षा — संयोजक
2. डा. (श्रीमती) सी.धर, प्रोफेसर
3. डा. आर.के. माथुर, प्रोफेसर
4. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवा विभाग
5. अध्यक्ष, मापन मूल्यांकन सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग
6. अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग
7. डा. (कुमारी) एम.डी. बंगाली,
प्रोफेसर व अध्यक्षा, शिक्षा विभाग बम्बई विश्वविद्यालय, कालिना प्रांगण, बम्बई
8. डा. एस. नारायण राव,
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, एस.डी. विश्वविद्यालय, तिरुपति (आं.प्र.)

1986-87

2. अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवा (डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.) विभाग के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. श्रीमती एस. शुक्ला, प्रो. एवं अध्यक्ष — संयोजक
2. डा. (कुमारी) एस. बिसारिया, प्रोफेसर
3. डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव, प्रोफेसर
4. डा. एन.के. जंगीरा, रीडर
5. अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग
6. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
7. अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग
8. प्रो. दुर्गानन्द सिन्हा, निदेशक, ए.एन. सिन्हा सामाजिक विज्ञान संस्थान, पटना।
9. डा. (कुमारी) यशु सेन मेहता, अध्यक्ष, विशेष शिक्षा विभाग, एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय, बम्बई

3. शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा. ए.के मिश्रा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष — संयोजक
2. डा.पी. रायज़ादा, रीडर
3. डा. जी.गुरु, रीडर
4. अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग
5. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी.
6. अध्यक्ष, स्कूल-पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग
7. अध्यक्ष, मापन मूल्यांकन सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग
8. डा. यू.सी. उपाध्याय, सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, कृषि भवन, डा. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली-110001
9. प्रो. ब्रज किशोर, प्रबन्ध विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

4. विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग हेतु विभागीय सलाहकार मंडल

1. डा० बी०गांगुली, प्रोफेसर और अध्यक्ष — संयोजक
2. डा० बी०डी० अत्रेय, प्रोफेसर
3. डा० छोटन सिंह, प्रोफेसर
4. श्री आर०सी० सक्सेना, प्रोफेसर
5. डा० जे० मित्रा, रीडर
6. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग
7. संयुक्त निदेशक, सी०आई०ई०टी०
8. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा व विस्तार सेवा विभाग
9. अध्यक्ष, स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग
10. प्रो० एल०एन० व्यास, वनस्पति विभाग, एम०एल०एस० विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज०)
11. प्रो० आर०सी० मेहरोत्रा, रसायन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
12. प्रो० एस०पी० पुरी, भौतिकी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
13. प्रो० एन०पी० सिंह, गणित विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली-110016

5. स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग हेतु विभागीय सलाहकार मंडल

1. डा०पी०एन० दवे प्रोफेसर और अध्यक्ष — संयोजक
2. डा० के०जी० रस्तोगी, प्रोफेसर
3. श्रीमती ए० खन्ना, प्रोफेसर
4. कु० आई० मलानी, प्रोफेसर
5. डा० एस०डी० रोका, प्रोफेसर
6. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
7. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
8. अध्यक्ष, व्यावसायीकरण शिक्षा विभाग
9. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग
10. संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान

**11. प्रो० सत्य भूषण, राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन और प्रशासन संस्थान, एन०आई०ई०कैम्पस, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-16.

**12. डा० सच्चिदानंद, अध्यक्ष, नृविज्ञान और समाजशास्त्र विभाग, ए० एन० सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, गोल घर के निकट, पटना-800001 (बिहार)

**13. श्री आई०एस० गौड़, अतिरिक्त निदेशक (मौलिक), शिक्षा निदेशालय, इलाहाबाद (उ०प्र०)

6. सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग हेतु विभागीय सलाहकार मंडल

1. डा० अनिल विद्यालंकार — संयोजक
   प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
2. कु० एस०के० राम, प्रोफेसर
3. डा० जी०एल० अरोड़ा, रीडर
4. डा० एच०एल० बछोटिया, लैक्चरर
5. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
6. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग
7. अध्यक्ष, मापांकन मूल्यांकन सर्वे तथा आंकड़ा संसाधन विभाग

**8. प्रो० के०एस० गिल, अर्थशास्त्र के प्रोफेसर,
   गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)

**9. प्रो० आर०एन० घोष, केन्द्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा संस्थान,
   हैदराबाद (आंध्रप्रदेश)।

**10. प्रो० नामवर सिंह,
   जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय,
   न्यू महरौली रोड, नई दिल्ली।

7. क्षेत्र सेवा और समन्वय विभाग हेतु विभागीय सलाहकार मंडल

1. डा० बाकर मेहदी — संयोजक
   प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
2. डा० एस० प्रसाद, रीडर

**3. डा० वैलफ्लेग, निदेशक
   एस०सी०ई०आर०टी०,
   मेघालय, शिलांग

**4. डा० एस०सी० दास, निदेशक,
   एस०सी०ई०आर०टी०,
   भुवनेश्वर (उड़ीसा)।

8. कार्यशाला विभाग हेतु विभागीय सलाहकार मंडल

1. डा० पी०के० भट्टाचार्य — संयोजक
   रीडर और अध्यक्ष
2. श्री अबू बशर, तकनीकी अधिकारी
3. श्री आर०आर० शर्मा, तकनीकी अधिकारी
4. श्री वेद रत्न, प्रोफेसर,
   विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
5. श्रीमती एस० भट्टाचार्य, रीडर,
   स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग
6. श्री एस०एन० राय, लैक्चरर,
   शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग

**7. प्रो० एन०के०तिवारी,
   यांत्रिकी इंजीनियर विभाग,
   भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
   नई दिल्ली-110016

**8. श्री एच०एन०पी० पोद्दार, वैज्ञानिक प्रभारी,
   कार्यशाला, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला,
   हिल साइड रोड, नई दिल्ली-110014

9. मापांकन, मूल्यांकन, सर्वे और आंकड़ा संसाधन विभाग हेतु विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा० एच०एस० श्रीवास्तव — संयोजक
   प्रोफेसर और अध्यक्ष
2. डा० ए०डी० बनर्जी, रीडर
3. श्री जे०पी० अग्रवाल रीडर
4. डा० सी०एल० कौल, लैक्चरर
5. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
6. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग

पुस्तकालय सलाहकार समिति

1. प्रो० पी०एन० दवे (डीन ए०), — अध्यक्ष
   अध्यक्ष, डी०पी०एस०ई०ई०
2. प्रो० (श्रीमती) पेरिन एच० मेहता — सदस्य
   अध्यक्ष, डी०ई०पी०सी० व जी०
3. प्रो० एच०एस० श्रीवास्तव — ,,
   अध्यक्ष, डी०एम०ई०एस० व डी०पी०
4. प्रो० अनिल विद्यालंकार — ,,
   अध्यक्ष, डी०ई०एस०एस०एच०
5. प्रो० ए० के मिश्रा — ,,
   अध्यक्ष, डी०वी०ई०
6. प्रो० बी० गांगुली — ,,
   अध्यक्ष, डी०ई०एस०एम०
7. श्री जयपाल नांगिया — ,,
   अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग
8. प्रो० (श्रीमती) आदर्श खन्ना — ,,
   अध्यक्ष की प्रतिनिधि,
   डी०टी०ई०एस०ई० व ई०एस०
9. डा० पी०के० भट्टाचार्य — ,,
   अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग
10. प्रोफेशनल सीनियर — ,,
   (उप पुस्तकाध्यक्ष)
   पुस्तकालय प्रलेखन और सूचना विभाग
11. श्री एफ०सी० कत्याल — ,,
   प्रोफेशनल सहायक,
   पुस्तकालय संस्था के प्रतिनिधि
12. अध्यक्ष, — संयोजक
   पुस्तकालय प्रलेखन और सूचना विभाग

1986-87

प्रचार-प्रसार समिति

1. प्रो० आर०पी० सिंह — अध्यक्ष
2. संयुक्त निदेशक, सी०आई०ई०टी० — सदस्य
3. डीन (अकादमिक) — ,,
4. डीन (अनुसंधान) — ,,
5. डीन (समन्वयन) — ,,
6. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग — ,,
7. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग — ,,
8. अध्यक्ष, डी०ई०एस०एम० — ,,
9. अध्यक्ष, डी०वी०ई० — ,,
10. डा० सी०एल० कुण्डु, शिक्षा के प्रोफेसर, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र — ,,
11. डा० वी० के० कूल, मनोविज्ञान के प्रोफेसर, आई०आई०टी०,पवई, बम्बई-400076 — ,,
12. श्री सी०एम० चावला, प्रबंध निदेशक, यू०बी०एस०, प्रकाशक वितरक लि० 5, अंसारी रोड, नई दिल्ली-2 — ,,
13. श्रीमती मधु चौधरी मैसर्स दिलीप चौधरी एसोसिएट्स, पी०बी० नं० 517, एन-79, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001 — ,,
14. श्री सैम्युल इज़राइल, नैरोसा पब्लिशिंग हाउस, 2/35, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-6 — ,,
15. श्री सी०एन० राव सी०पी०ओ०, प्रकाशन विभाग, एन०सी०ई०आर०टी० — संयोजक

शैक्षिक विस्तार और समन्वय समिति

समिति के सदस्य निम्न प्रकार हैं:

1. डीन (समन्वयन) — अध्यक्ष और संयोजक
2. डीन (अनुसंधान) — सदस्य
3. डीन (अकादमिक) — ,,
4. अध्यक्ष, डी०ई०पी०सी० व जी० — ,,
5. अध्यक्ष, डी०पी०एस०ई०ई० — सदस्य
6. अध्यक्ष, डी०टी०ई०एस०ई०ई०एस० — ,,
7. संयुक्त निदेशक, सी०आई०ई०टी० द्वारा नामित व्यक्ति — ,,
8. प्रिंसिपल, आर०सी०ई० अजमेर — ,,
9. प्रिंसिपल, आर०सी०ई०, भुवनेश्वर — ,,
10. प्रिंसिपल, आर०सी०ई०, मैसूर — ,,
11. प्रिंसिपल, आर०सी०ई०, भोपाल — ,,
12. डा० के०एस० खिची, एफ०ए० (एन०सी०ई०आर०टी०), जयपुर — ,,
13. डा० डब्ल्यू०ए०एफ० हॉपर एफ०ए० (एन०सी०ई०आर०टी), मद्रास — ,,
14. डा० आर०पी० कथूरिया, एफ०ए० (एन०सी०ई०आर०टी०), भोपाल — ,,
15. श्री एस०के० गुप्ता, एफ०ए० (एन०सी०ई०आर०टी०), गुवाहाटी — ,,
16. शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश सरकार, 10 पार्क रोड,लखनऊ — ,,
17. लोक शिक्षा निदेशक, केरल सरकार, डी पी आई आफिस, वजहूथाकुड, त्रिवेंद्रम-695014 — ,,
18. निदेशक (प्राथमिक शिक्षा) नया सचिवालय, बिहार सरकार, पटना-800015 — ,,
19. शिक्षा निदेशक, (प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा) महाराष्ट्र सरकार, सेन्ट्रल बिल्डिंग, पुणे-1 — ,,
20. डा० एन० मल्ला रेड्डी, शिक्षा के प्रोफेसर, ओस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) — ,,
21. डा० सुरेश शुक्ला, शिक्षा के प्रोफेसर जामिया मिलिया इस्लामिया दिल्ली — ,,

कला शिक्षा समिति

1. श्री मुल्कराज आनन्द 25 कुफे परेड, बम्बई-400005 — अध्यक्ष
2. श्री राजिन्दर नाथ सी-5, प्रेस एन्कलेव, साकेत, नई दिल्ली-17 — सदस्य

3. श्री जे० स्वामीनाथन्, सदस्य
निदेशक, रूपांकर,
ललित कला संग्रहालय,
भारत भवन, श्यामला रोड,
भोपाल-462002 (म०प्र०)
4. प्रो० देबू चौधरी,
जे-1852, चितरंजन पार्क,
नई दिल्ली-110019
5. श्री केशव मलिक, „
डी-5/90 कनाट सर्कस,
नई दिल्ली-110001
6. श्री एच०ए० गाडे, „
70-टी, सेन्ट्रल एविन्यू,
चैम्बूर, बम्बई-400071
7. श्रीमती मृणालिनी साराभाई, „
निदेशक,
दर्पण कला प्रदर्शन अकादमी,
अहमदाबाद-380013
8. श्री बी० सान्याल, „
बी-15, निजामुद्दीन ईस्ट,
नई दिल्ली-110015
9. श्रीमती सुमति मुतातकर „
सी-33, छत्र मार्ग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली-7.
10. श्रीमती उमा शर्मा „
52, समुदाय केन्द्र,
ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली-110065.
11. डा० एल०जी० सुमित्रा, सदस्य सचिव
रीडर व अध्यक्ष,
रेडियो प्रभाग,
सी०आई०ई०टी०,
एन०सी०ई०आर०टी०,
नई दिल्ली-16.

निम्नलिखित विशेष आमंत्रित समिति के पदेन सदस्य हैं:

1. डा० ए० के० जलालुद्दीन,
संयुक्त निदेशक,
एन०सी०ई०आर०टी०,
नई दिल्ली-110016
2. डा० एम०एम० चौधरी,
संयुक्त निदेशक,
सी०आई०ई०टी०,
एन०सी०ई०आर०टी०,
नई दिल्ली-110016.
3. डीन अकादमिक (पदेन),
एन०सी०ई०आर०टी०,
नई दिल्ली।
4. प्रो० स्नेहलता शुक्ला
अध्यक्ष, डी०टी०ई०एस०ई०ई०एस०,
एन०सी०ई०आर०टी०,
नई दिल्ली।
5. डा० ए०के० मिश्रा,
अध्यक्ष,
शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग,
एन०सी०ई०आर०टी०,
नई दिल्ली।

परिशिष्ट (घ)

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय फैलो

1. श्री अमादो महतर एम्बो (जनरल यूनेस्को के निदेशक)
2. श्री पी०वी० नरसिंह राव
3. श्री के०एल० श्रीमाली
4. प्रो० डी०एस० कोठारी
5. डा० मनमोहन सिंह
6. प्रो० एम०जी०के० मेनन
7. प्रो० राजा रामन्ना
8. प्रो० यशपाल
9. प्रो० सी०एन०आर० राव
10. प्रो० वी०वी० जॉन
11. डा० पी०एन० कृपाल
12. प्रो० एस०वी०सी० अय्या
13. प्रो० रईस अहमद
14. प्रो० शिव के० मित्रा
15. प्रो० (श्रीमती) चित्रा नायक
16. प्रो० (श्रीमती) राजामल पी० देवदास
17. श्री ए०आर० दावूद
18. प्रो० वी०के०आर०वी० राव
19. प्रो० डी०पी० चट्टोपाध्याय

परिशिष्ट (ङ)

1 अप्रैल 1987 को संस्वीकृत स्टाफ की संख्या

सारांश

क्र.सं.	सूचना स्रोत	अकादमिक			अनाकादमिक (प्रशासनिक)			अनाकादमिक (तकनीकी)				
		ग्रेड 'ए'	ग्रेड 'बी'	ग्रेड 'सी'	ग्रेड 'ए'	ग्रेड 'बी'	ग्रेड 'सी'	ग्रेड 'ए'	ग्रेड 'बी'	ग्रेड 'सी'	ग्रुप 'डी'	कुल
1.	परिषद् मुख्यालय	296	2	3	25	108	603	80	98	267	385	1867
2.	आर०सी०ई० अजमेर	66	27	46	1	6	43	4	4	40	82	319
3.	आर०सी०ई० भोपाल	62	25	47	1	6	43	4	5	38	81	312
4.	आर०सी०ई० भुवनेश्वर	83	32	62	1	6	40	4	5	45	89	367
5.	आर०सी०ई० मैसूर	86	25	50	1	6	48	4	5	39	82	346
6.	एफ०ए०कार्यालय	32	–	–	–	–	54	–	–	18	36	140
	जोड़:	625	111	208	29	132	831	96	117	447	755	3351